[मुँ]हणोत नैणसी की ख्यात

द्वितीय खंड

अर्थात्

[..]हा, राठौड़, बुँदेला, जाड़ेचा (यदुवंशी), सरवहिया (यादव), भाटी, [..]के गोहिल, झाला, तँवर, चावड़ा आदि राजवंशों का इतिहास

अनुवादक

रामनारायण दूगड़, उदयपुर

संपादक

[मह]ापाध्याय राय बहादुर गौरीशंकर हीराचंद ओझा, अजमेर

काशी-नागरीप्रचारिणी सभा की ओर से
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग द्वारा प्रकाशित

संस्करण
१०

संवत् १९९१

मूल्य ४)

माला का परिचय

जोधपुर के स्व० मुंशी देवीप्रसादजी मुंसिफ इतिहास और विशेषतः मुसलिम काल के भारतीय इतिहास के बहुत बड़े ज्ञाता और प्रेमी थे तथा राजकीय सेवा के कामों से वे जितना समय बचाते थे, वह सब वे इतिहास का अध्ययन और खोज करने अथवा ऐतिहासिक ग्रंथ लिखने में ही लगाते थे। हिंदी में उन्होंने अनेक उपयोगी ऐतिहासिक ग्रंथ लिखे हैं जिनका हिंदी-संसार ने अच्छा आदर किया है।

श्रीयुक्त मुंशी देवीप्रसादजी की बहुत दिनों से यह इच्छा थी कि हिंदी में ऐतिहासिक पुस्तकों के प्रकाशन की विशेष रूप से व्यवस्था की जाय; इस कार्य के लिए उन्होंने ता० २१ जून १९१८ को ३५०० रु० अंकित मूल्य और १०५०० रु० मूल्य के बंबई बं० लि० के सात हिस्से सभा को प्रदान किये थे और आदेश किया था कि इनकी आय से उनके नाम से सभा एक ऐतिहासिक पुस्तकमाला प्रकाशित करे। उसी के अनुसार सभा यह 'देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला' प्रकाशित कर रही है। पीछे से जब बंबई बंक अन्यान्य दोनों प्रेसिडेंसी बंकों के साथ सम्मिलित होकर इंपीरियल बंक के रूप में परिणत हो गया तब सभा ने बंबई बंक के ७ हिस्सों के लाभ के बदले में इंपीरियल बंक के चौदह हिस्से, जिनके मूल्य का एक निश्चित अंश चुका दिया गया है, और खरीद लिये और अब यह पुस्तकमाला उन्हीं हिस्सों से होनेवाली तथा स्वयं अपनी पुस्तकों की बिक्री से होनेवाली आय से चल रही है। मुंशी देवीप्रसादजी का वह दानपत्र काशी-नागरीप्रचारिणी सभा के २६वें वार्षिक विवरण में प्रकाशित हुआ है।

भूमिका

राजपूताने का पिछला इतिहास लिखने के लिए मुँहणोत नैणसी की ख्यात एक महत्त्वपूर्ण वस्तु है। इसमें राजपूताना, काठियावाड़, कच्छ, मालवा, बघेलखंड आदि के राजवंशों का वृत्तांत मिलता है। इस ऐतिहासिक ग्रंथ का निर्माण मारवाड़ी भाषा में आज से लगभग २७५ वर्ष पूर्व हुआ था। आज जितने साधन प्राप्त हैं उतने उस समय न होने पर भी नैणसी ने जनश्रुति या भाटों आदि की पुस्तकों से जितना भी वृत्तांत मिल सका, संग्रह किया जो उपयोगी है। इसमें इतिहास के अतिरिक्त भौगोलिक वृत्तांत भी दिया है, जिससे तत्कालीन परिस्थिति का अच्छा ज्ञान हो जाता है।

मुग़ल बादशाह अकबर के समय उसके मंत्री अबुलफ़ज़ल द्वारा "आईन-अकबरी" का निर्माण हुआ। उसके पश्चात् देशी राज्यों में भी ख्यातों का लिखा जाना आरंभ हुआ। उसी समय नैणसी ने भी अपनी ख्यात को लिखना आरंभ किया। उसने इतिहास-प्रेम के कारण दूर दूर से इतिहास के जानकारों द्वारा अपने संग्रह को बढ़ाना आरंभ कर दिया। उसने इस अमूल्य संग्रह में सभी आवश्यक बातों का उल्लेख कर राजपूताने के पिछले इतिहास-लेखकों के लिए बहुत कुछ सामग्री तैयार कर दी और जिन बातों में उसको मतभेद जान पड़ा उन्हें ज्यों का त्यों दे दिया। राजा-महाराजाओं के इतिहास तो कई प्रकार से मिलते हैं पर उनकी छोटी-छोटी शाखाओं, सरदारों आदि के युद्ध में काम आने का वृत्तांत मिलने के साधन कम हैं तो भी किसी अंश में उसकी पूर्ति नैणसी के संग्रह से होती है। मेवाड़ राज्य का बृहत् इतिहास 'वीर-

विनोद' लिखते समय महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदास ने कितने ही वृत्त नैणसी की ख्यात के आधार पर दिये हैं और स्वर्गीय मुंशी देवीप्रसाद तो नैणसी की ख्यात पर इतने अधिक मुग्ध थे कि उन्होंने उसको राजपूताने का 'अबुलफ़ज़ल' मान लिया। तात्पर्य यह है जिस प्रकार मुग़ल-कालीन इतिहास के लिए "आईन-अकबरी" उपयोगी वस्तु है, उसी तरह राजपूत जाति का पिछला इतिहास लिखने के लिए नैणसी का संग्रह उपयोगी है। यद्यपि पहले का जितना वृत्तांत है, वह अधिकांश में जनश्रुतियों की भित्ति पर खड़ा किया गया है, तथापि सोलहवीं शताब्दी से अठारहवीं शताब्दी तक के वृत्तांत में शंकाओं की अधिक गुंजाइश नहीं है।

ऐसे उपयोगी संग्रह का हिंदी अनुवाद प्रकाशित न होना इतिहास-प्रेमियों को खटकता था। काशी की नागरी-प्रचारिणी सभा ने उक्त ग्रंथ को प्रकाशित करने का संकल्प किया, परंतु उसकी भाषा मारवाड़ी होने से सर्व-साधारण को उसके समझने में कठिनाइयाँ होती थीं। अतएव सभा ने उसका सरल हिंदी अनुवाद करने का कार्य उदयपुर-निवासी बाबू रामनारायण दूगड़ को सौंपा। उन्होंने परिश्रमपूर्वक हिंदी भाषा में अनुवाद कर उसे दो भागों में विभक्त किया। प्रथम भाग—जिसमें उदयपुर, डूँगरपुर, बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़, रामपुरा एवं चौहान, सोलंकी, परमार, पड़िहार (प्रतिहार) आदि राजवंशों की प्रसिद्ध-प्रसिद्ध शाखाओं का वर्णन है—उक्त सभा द्वारा वि० सं० १९८२ में प्रकाशित हो चुका है।

दूसरा भाग—जिसमें कछवाहा, राठोड़, भाटी, खेड़ के गोहिल[1], झाला, चावड़ा आदि राजवंशों का वर्णन है—प्रथम भाग

---

(१) खेड़ के गोहिलों का वृत्तांत मेवाड़ के गुहिल-वंशियों के साथ रहना चाहिए था, परंतु भूल से वैसा न हो सका। अतएव उसे दूसरे भाग में रखना पड़ा।

की भाँति इतिहास के लिए बड़ा उपयोगी है। इसमें उपर्युक्त राज-वंश की विस्तृत वंशावलियाँ भी दी गई हैं तथा और भी कितनी ही प्रसिद्ध-प्रसिद्ध घटनाओं का उल्लेख हुआ है। दूगड़जी ने अनुवाद के समय मूल पुस्तक के कुछ अंशों का क्रम पलटा है, जिसका कारण यह है कि उसमें एक ही वंश से संबंध रखनेवाला सारा वर्णन एक ही स्थल पर नहीं आया और भिन्न-भिन्न स्थानों में लिखा गया है, जिससे उसको एक ही सूत्र में गूँथना पड़ा। तेरहवीं शताब्दी के पूर्व का वृत्तांत अपूर्ण और कुछ अशुद्ध भी है, इसलिए टिप्पणियाँ लगाकर उसको शुद्ध करने का प्रयत्न किया है जिससे ग्रंथ की उपयोगिता बढ़ गई है। मूल पुस्तक में वंशावलियाँ वंश-वृत्तों के रूप में, नहीं, किन्तु अंक-संकेत के साथ चलती पंक्तियों में दी हैं और कहीं-कहीं नामों के साथ उनका विशेष परिचय भी दिया है। यह क्रम पाठकवर्ग को रुचिकर न होने से वंशावलियाँ वंश-वृत्तों के रूप में कर दी गई हैं और उनमें से किसी नाम के संबंध में कुछ अधिक लिखा है तो वह अंक लगाकर नीचे टिप्पणियों में दिया गया है। टिप्पणियाँ दो प्रकार के टाइपों में हैं। मूल ग्रंथ की त्रुटियाँ बतलाने या अधिक परिचय देने के लिए जो टिप्पणियाँ दी गई हैं वे पुस्तक की अपेक्षा छोटे टाइप में हैं और बड़े टाइप में केवल वे ही टिप्पणियाँ हैं, जो वंशावलियों के कतिपय नामों का अधिक परिचय करानेवाले मूल ग्रंथ का ही अंश होने पर भी वंश-वृत्तों के नामों के साथ नहीं आ सकती थीं। वंशावलियाँ भी, जो मूल ग्रंथ का अंश हैं, नाम अधिक होने से छोटे टाइप में दी गई हैं। टिप्पणियों के इन दो प्रकार के टाइपों से विदित हो जायगा कि वंशावलियों के अतिरिक्त जो टिप्पण छोटे टाइप में हैं वे अनुवादक के हैं। शेष सब मूल के हैं।

यद्यपि इस ग्रंथ का अनुवाद दूगड़जी ने अपने जीते ही कर लिया था, परंतु संपादन का काम मुझे करना पड़ा। मूल ग्रंथ की मारवाड़ी भाषा का अनुवाद मैंने मूल ग्रंथ से मिलाकर ठीक कर दिया है। जहाँ कहीं दूगड़जी को भ्रम हुआ और कोई बात छोड़ दी गई उसे भी यथासाध्य मैंने ठीक कर दिया है। इसके अतिरिक्त वंशवृक्ष क्रमपूर्वक कर दिये गये हैं, जिससे पाठकों को सुवीता होगा।

अजमेर से काशी प्रूफ़ भेजने और वापस आने में समय की आवश्यकता होती है। फिर मेरी वृद्धावस्था, अस्वस्थता एवं समयाभाव से इस दूसरे भाग को प्रकाशित करने में आवश्यकता से अधिक विलंब हुआ है, जिसका मुझको खेद है। नैणसी का ब्लाक जोधपुर-निवासी श्रीयुत जगदीशसिंह गहलोत से प्राप्त हुआ है और नैणसी का पिछला वंश-विवरण उसके एक वंशधर, जोधपुर-निवासी, मुँहणोत विरधराज वकील से प्राप्त हुआ है, जिसमें से आवश्यक अंश उद्धृत किया है। प्रूफ़-संशोधन एवं मूल ग्रंथ से मिलान करने में मेरे इतिहास विभाग के कर्मचारी पंडित किशनलाल दुवे, पं० चिरंजीलाल व्यास तथा पं० नाथूलाल व्यास ने योग दिया है, जिसका उल्लेख करना उचित है।

गौरीशंकर हीराचंद ओझा

मुँहणोत नैणसी का वंश-परिचय

नैणसी और उसके वंश का परिचय, जो कुछ पहले ज्ञात हो सका वह, प्रथम भाग के प्रारंभ में दिया गया है, तदनंतर जो कुछ और मालूम हुआ वह नीचे लिखे अनुसार है—

मुँहणोत गोत्र के महता अपनी वंश-परंपरा राठोड़ राव सीहा से मिलाते हैं। सीहा का पुत्र आसथान और उसका पुत्र धूहड़ था, जिसके रायपाल हुआ। रायपाल का दूसरा पुत्र मोहन था, जिसके ज्येष्ठ पुत्र भीम के वंशजों से राठोड़ों की एक शाखा 'मोहनिया राठोड़' प्रसिद्ध हुई। मोहन ने अपनी वृद्धावस्था में जैन धर्म ग्रहण कर लिया था, इसलिए उसके वंशज जैन रहे और ओसवालों में मिल गये।

मोहन का छोटा पुत्र सुभटसेन था, जिसका १९वाँ वंशधर जयमल हुआ, जो जोधपुर के राजा सूरसिंह और गजसिंह के समय राज्य के प्रतिष्ठित पदों पर रहा तथा वि० सं० १६९६ में मारवाड़ राज्य का मंत्री बना। उसके नैणसी, सुंदरदास, आसकरण, नरसिंहदास और जगमाल नामक पाँच पुत्र हुए। नैणसी का जन्म वि० सं० १६६७ में हुआ। बाईस वर्ष की वय होने पर उसने राज्य-सेवा में प्रवेश किया और वि० सं० १६८९ में वह मेरों का दमन करने को भेजा गया। वि० सं० १६९४ में नैणसी फ़लोधी का हाकिम हुआ जहाँ उसको बिलोचों से लड़ना पड़ा।

वि० सं० १७०६ में पोकरण का परगना बादशाह शाहजहाँ ने महाराजा जसवंतसिंह को प्रदान किया; परंतु उक्त परगने पर जैसलमेर के भाटियों का अधिकार था, इसलिए महाराजा के कर्मचारियों

के पहुँचने पर रावल रामचंद्र ने अपना क़ब्ज़ा उठाना स्वीकार न किया। इस पर महाराजा ने उसको दबाने के लिए सेना भेजी, जिसमें नैणसी भी था। अनन्तर भाटियों से लड़ाई कर राठोड़ों ने पोकरण पर अधिकार कर लिया। जैसलमेर के रावल मनोहरदास के पश्चात् सबलसिंह वहाँ का स्वामी होना चाहता था। अस्तु, उसने जैसलमेर पर अधिकार करने का यह उपयुक्त अवसर समझा। तब महाराजा जसवंतसिंह ने उसके सहायतार्थ नैणसी को भेजा। इस सेना के पहुँचने पर रावल रामचंद्र वहाँ से भाग गया और सबलसिंह जैसलमेर का स्वामी बना।

वि० सं० १७१४ में महाराजा जसवंतसिंह ने मियाँ फरासत की जगह नैणसी को अपना दीवान बनाया, तदनुसार वह वि० सं० १७२३ तक उस पद का कार्य करता रहा। फिर महाराजा ने उसको तथा उसके छोटे भाई सुंदरदास को क़ैद कर दिया और वि० सं० १७२५ में उससे एक लाख रुपये दंड लेने की तजवीज कर छोड़ा, परंतु नैणसी ने ताँबे का पैसा भी दंड में देना स्वीकार न किया। निदान जब उन दोनों भाइयों से दंड के रुपये प्राप्त होने की आशा न देखी तो वि० सं० १७२६ में महाराजा ने उन दोनों को फिर बंदी करवा लिया। इस क़ैद की अवस्था में उन पर दंड के रुपये लेने के लिए कठोरता होती थी, परंतु इस कठोरता का कुछ भी फल नहीं निकला। उन दिनों महाराजा जसवंतसिंह, प्रसिद्ध वीर छत्रपति महाराजा शिवाजी को दबाने के लिए, बादशाह औरंगज़ेब के आज्ञानुसार दक्षिण में औरंगाबाद के थाने पर नियत थे। कठोरता का व्यवहार करने पर भी नैणसी और उसके भाई से दंड की वसूली का कोई उपाय न सूझ पड़ा तो महाराजा ने विवश हो उन दोनों को जोधपुर के लिए रवाना किया। मार्ग में उनके साथ-

वालों ने उनके साथ और भी अधिक कठोर व्यवहार किया तब उनको जीवन से ग्लानि हो गई और फूलमरी नामक ग्राम में वि० सं० १७२७ भाद्रपद वदि १३ को उन दोनों ने अपने-अपने पेट में कटार मार अपनी जीवन-लीला समाप्त की।

नैणसी और उसका भाई सुन्दरदास दोनों कवि थे। बंदी अवस्था के कष्टों से दुखी होकर उन्होंने परस्पर एक-एक दोहा कहकर अपनी वेदना प्रकट की जो नीचे लिखे अनुसार है—

नैणसी—दहाड़ो जितरे देव, दहाड़े विन नहीं देव है।
सुर नर करता सेव, नेड़ा न आवे नैणसी॥

इस पर सुंदरदास ने नीचे लिखा उत्तर दिया—

नर पै नर आवत नहीं आवत है धन पास।
सो दिन कोम पिछाणिये कहते सुंदरदास॥

उपरोक्त दोहों से उनकी तत्कालीन स्थिति एवं उनके विचारों का पता चलता है।

नैणसी के तीन पुत्र करमसी, वैरसी और समरसी हुए। करमसी ने अपने पिता की जीवित अवस्था में मारवाड़ राज्य की कई सेवाएँ कीं और जब उसके पिता नैणसी की आत्मघात से मृत्यु होने का समाचार सुना तो महाराजा जसवंतसिंह ने इन तीनों भाइयों तथा सुंदरदास के पुत्रों को भी छोड़ दिया। इन लोगों ने भी मारवाड़ में रहना अच्छा न समझा जिससे कि नागोर के राव रामसिंह (जो महाराजा गजसिंह के पुत्र अमरसिंह का बेटा था) के पास चले गये, परंतु थोड़े ही दिनों में वि० सं० १६३२ के आसपास शोलापुर में रामसिंह की अकस्मात् ही मृत्यु हो गई। उनके सेवकों आदि को करमसी द्वारा विष देने का झूठा संदेह होने पर उन्होंने करमसी को जीवित ही दीवार में चुनवा दिया और उसके

पुत्र आदि को रामसिंह के पुत्र इन्द्रसिंह ने मरवा डाला। उस समय नरसी के पुत्र सामंतसिंह और संग्रामसिंह भागकर कृष्णगढ़ और वहाँ से बीकानेर जा रहे।

महाराजा जसवंतसिंह के पुत्र अजीतसिंह ने जब मारवाड़ राज्य पर अपना अधिकार स्थिर कर लिया तो उसने सामन्तसिंह व संग्रामसिंह को पुनः मारवाड़ में बुलाकर धैर्य दिया और राज्य-सेवा में दाखिल किया। फिर महाराजा अभयसिंह ने जागीर आदि जीविका, जो जब्त हो गई थी, लौटा दी। संग्रामसिंह का पुत्र भगवंतसिंह और पौत्र सूरतराम हुआ।

महाराजा विजयसिंह के राज्य-काल में सूरतराम ने मारवाड़ राज्य की अच्छी सेवा की, जिसपर महाराजा ने वि० सं० १८२० में उसे अपना मुख्य मंत्री (दीवान) बनाकर उसकी प्रतिष्ठा बढ़ाने के अतिरिक्त यथेष्ट आय की जागीर प्रदान की। वि० सं० १८३० में वह उक्त महाराजा का मुसाहब नियत हुआ और जागीर तथा प्रतिष्ठा-वृद्धि होकर उसको राव की उपाधि मिली। उसके पाँच पुत्र—सवाईराम, ज्ञानमल, सवाईकरण, शुभकरण और फतह-करण—थे।

ज्ञानमल ने महाराजा विजयसिंह, भीमसिंह और मानसिंह के समय राज्य के उच्च पदों पर काम किया। वह महाराजा मान-सिंह का बड़ा विश्वासपात्र सेवक था। जब महाराजा मानसिंह वि० सं० १८६० में मारवाड़ की गद्दी पर बैठा तो उसने गद्दी पाते ही ज्ञानमल को अपना दीवान बनाया और जागीर देकर सम्मानित किया। यद्यपि मानसिंह अस्थिर-चित्त था और उसके समय में मारवाड़ में मंत्री-वर्ग की बड़ी दुर्दशा हुई, परंतु ज्ञानमल की प्रतिष्ठा में कोई अंतर नहीं आया। इसका कारण यही है कि वह अपने

कार्य के अतिरिक्त राजकीय प्रपंचों से सदा दूर रहता था। ज्ञानमल की वि० सं० १८७७ में मृत्यु हुई। उसका पुत्र नवलमल पिता को जीवित अवस्था में ही वि० सं० १८७६ में गुजर गया था, इसलिए रामदास (नवलमल का पुत्र) ज्ञानमल का उत्तराधिकारी हुआ। वि० सं० १८६१ में महाराजा मानसिंह ने सिरोही के राव वैरिशाल पर सेना भेजी उसके साथ नवलमल भी था।

जोधपुर, कृष्णगढ़ एवं मालवे के मुलथाण में अब भी नैणसी के वंशजों का निवास बतलाया जाता है और जोधपुर में तो उन लोगों के जागीरें भी हैं। उनमें से कतिपय राज्य-सेवा भी करते हैं।

गौरीशंकर हीराचंद ओझा

सूचीपत्र

पहला प्रकरण

दूसरा प्रकरण

तीसरा प्रकरण

चौथा प्रकरण

पंद्रहवाँ प्रकरण

सोलहवाँ प्रकरण

सत्रहवाँ प्रकरण

अठारहवाँ प्रकरण

विषय पृष्ठ

उन्नीसवाँ प्रकरण

बीसवाँ प्रकरण

इक्कीसवाँ प्रकरण

विषय | पृष्ठ

बाईसवाँ प्रकरण

तेईसवाँ प्रकरण

चौबीसवाँ प्रकरण

विषय			पृष्ठ

पच्चीसवाँ प्रकरण

छब्बीसवाँ प्रकरण

मुँहणोत नैणसी

मुँहणोत नैणसी की ख्यात

द्वितीय खंड

पहला प्रकरण

आँबेर का कछवाहा वंश

चवदह चाल ढूंढाड़ कही जाती है जिसमें १४४० गाँवों की संख्या है अर्थात् ३६० आँबेर, ३६० अमृतसर (साँभर), ३६० चाटसू, १५० द्यौसा, ५० मोजाबाद नींवांई लवाइण, आदि।

कछवाहों की पीढ़ियाँ उदैहीं के भाट राजपाण की लिखाई हुई—

आदिनारायण	अनैना	कुम्भ
कमल	पृथु	सांखतुव
ब्रह्मा	वैणराजा	अकृतासु
मरीच	चंद्र	प्रसेनजित
कश्यप	जोवनार्थ	जोवनार्थ (दू०)
सूर्य	सुवांसु	मांधाता
मनु	बृहद्रथ	परुपत
इक्ष्वाकु	धुंधमार	ब्रहसत
संस्याद (शशाद)	इंद्रस्रवा	सुधानैव
काकुत्स्थ	हरजस	नृधानव

त्रियारोन
त्रिसाख
हरिचंद
रोहितास
हरित
चाच
विजयराय
रूणाकराय
विक्रसाज
सुबाहु
सगर
असमंज
अंशुमान
दिलीप
भागीरथ
नाभाग
अम्बरीष
संघदीप
अमितासु
पाणराज
सुदर्थराज
अंगराज
अस्मक
पहयक
दसरथ

इवार
वीवर
विश्वसेन
खट्वांग
दीर्घबाहु
रघु
प्रथुश्रवा
अज
दशरथ
रामचंद्र
कुश
अतरथ
निषगराय
बाल
वलनाभ
पाण्डवरिष
प्रसेनधन्वा
देवानीक
अहिनाग
सुधन्वा
सलराज
धर्मांद
आनंदराय
पारियात्रराय
वालरथ

वज्रधाम
सुँगराय
वद्रोथ
हिरण्यनाभ
ध्रुवसंध
सुदर्शन
अग्निवर्ण
सिद्धगराय
सुरतराज
अमर्षण
सहसमान
विश्व
बृहद्रथ
उरुक्रिय
बछवधराय
प्रतिबिम्ब
भान
सहदेव
ब्रहदा
भूभान
प्रताक
प्रतकप्रवेश
मानदेव
छत्रराज
अतिरिष

भूपभीच	पद्मपाल	सोढ़सिंह
आमंत्र	सूरपाल	दूलहदेव
वैहँद्रभाज	महीपाल	(भाणेजतँवरनूँ
वरही	अमीपाल	ग्वालेरदियो)
कृतांगराज	नीतपाल	हणुमान
राणकराय	श्रीपाल	काकलदेव (आँबेर वसाया)
सुजसराय	अनंतपाल	नरदेव
चतुरंग	धनकपाल	जान्हड़देव
समपु	क्रमपाल	पज्जून (सामंत)
सुधोन	शिशुपाल	मलयसी
लालरंग	वलिपाल	बीजल
प्रसेनजित	सूरपाल	राजदेव
छुद्रकराय	नरपाल	कल्याण
सोमेश	गंधपाल	राजकुल
नल (नरवर गढ़ कराया)	हरपाल	जवणसी
ढोला	राजपाल	उदयकर्ण
लक्ष्मण	भीमपाल	नरसिंह
वज्रदामा	सूर्यपाल	वणवीर
(ग्वालियर गढ़ कराया)	इन्द्रपाल	नुद्धरण
	वस्तुपाल	चन्द्रसेन
मंगलराय	मुक्तपाल	प्रथीराज
क्तिराय	रेवकाहीन	(वालवाई
मूलदेव	ईससिंह	बीकानेरी का बेटा)

(दूसरी वंशावली)—कछवाहा सूर्यवंशी आदि, अनादि, चंद्र, कमल, ब्रह्मा, मरीच, कश्यप, काश्यप, सूर्य। रघु से रघुवंशी कहलाये।

रघोष, धर्मोघ, त्रसिंघ, हरिचंद; रोहितास, राजा शिवराज, संतोष, खदंल, कल्मष, धुंधमार चक्कवै (चक्रवर्ती), सगर, असमंज, भगीरथ, कउ-कुस्त (काकुत्स्थ) दिलीप दिल्ली बसाई, शिवधन, कैवांध, अज अजोध्या बसाई, अजयपाल चक्कवै, दशरथ, रामचंद्र, कुश से कछवाहा हुए, बुधसेन, चंद्रसेन चाटसू बसाई, श्रीठठ, स्वर, वीरचरित, अजयबांध, उग्रसेन, सूरसेन, हरनाभ, हरजस, दढ़हास, प्रसेनजित, सुसिद्ध, अमरतेज, दीर्घबाहु, विवस्वान, विवस्वत, रुरुक, रजमाई, गौतम, नलराजा नरवर वसाई, ढोला, लक्ष्मण, वज्रदीप (वज्रदामा) मांगल मांगलोद वसाया, सुमित्र, सुधिब्रह्म, राजा कुहनी, देवानी, राजाउसै, सोढ़, दूलराज, काकिल, राजा हणु आँवेर, जोजड़, राव पज्जून।

(तीसरी वंशावली)—राजा हरिचंद त्रिशंकु का, राणी तारादे कुँवर रोहितास, रोहितास गढ़ वसाया। श्रीरामचंद्र राजा दशरथ के, उनके लव और कुश हुए। लव ने लाहोर वसाया और कुश के (वंशज) कछवाहे हुए। राजा ढोला नल राजा का जिसने ग्वालियर बसाया* और गढ़ पर गोलोराव तालाब बनाया। ढोला की एक स्त्री मारवणी बैण राजा की बेटी, और दूसरी स्त्री पंवार भोज (धारा नगरी का) की कन्या थी। राजा सुमित्रसंगल का जिसने ग्वालियर पर राज किया ग्वालियर का गढ़ बनवाया और गढ़ पर गालीराव तालाव कराया†। राजा सोढ़ उसै (ईस) राजा का, नरवर छोड़कर ढुंढाड़ में आया। राजा काकिल व उसका पुत्र हणूंत (हनुमंत) आँवेर आया; अलधरो जिसकी संतान में कछवाहा हैं। राजण के राज-णोत; देलण जिसके लाहरका। राजामलयसी, राणी मेल्हणदेवी

---

* ग्वालियर यागोपगिरि ढोलाराय या दुलेराय के पहले बसा था, यह प्राचीन लेखों से सिद्ध है।

† यह ऊपर के लेख से विरुद्ध है।

खीचण आनलखीची की बेटी जो अपने पीहर से खांथड़िये पुरोहित गुरु को लाई। पहले पुरोहित गांगावत थे सो उनको अलग किये। मलयसी के ४ पुत्र—१ बीजलदे आंबेरपाटवी, २ बालोजी जिसने चेत्रपाल (भैरव) को जीतकर सात तवे फोड़े, ३ जैतल जिसने अपने शरीर से मांस काट अपने स्वामी के शरीर पर बैठी हुई गिद्धन को फैंककर उड़ाई; ४ भीम और लाखणसी का पिता पज्जवन जिसके (वंशज) प्रधान के कछवाह कहलाते हैं। पज्जून राजा पृथ्वीराजा चौहाण का सामन्त था। राजदेव बीजलदेव का आँबेर का राजा, इसके पुत्र-राजा कल्याण आँबेर ठाकुर; भोजराज और दल्ला जिनके वंशज लवाणागढ़ को कछवाहा (इसकी सन्तान में से) केशोदास राजा जयसिंह के पास है। सोमेश्वर के वंशज राणावत और सोहा के सोहाणी कछवाहा हैं।

राजा कील्हण या कल्याणदेव। पुत्र—कुंतल आंबेरपाट, रावत अखैराज जिसकी संतान धीरा के वंशज धीरावत कछवाहा। धीरा का पुत्र नापा, नापा का खान, खान का चांदा, चांदा का ऊदा, ऊदा का रामदास दर्बारी। यह रामदास पहले सलहदी के नौकर था फिर बादशाह अकबर की उस पर बहुत कृपा हुई और अर्ज पहुँचाने-वाले के पद पर नियत किया गया। वह बड़ा दातार था। बादशाह की मृत्यु के पीछे जहाँगीर ने उसको बंगस के थाने पर भेज दिया और वहीं मरा। जहाँगीर उससे प्रसन्न न रहा। जब अकबर ने गुजरात फतह की उस वक्त रामदास सांगानेर का कोतवाल था, वहाँ से त्वरा के साथ बादशाह के पास पहुँचा और अच्छी चाकरी बजाई, वहीं उसका मुजरा हुआ। रामदास के पुत्र—दिनमणिदास, सुंदर-दास, दलपत, और नारायण।

राव कील्हण के एक पुत्र रावल जरसी (जसराज ?) के वंशज जसके कछवाहे जो पूर्व में हैं। राजदेव के दूसरे पुत्र भोजराज के

वंश में लवाण गढ़ के कछवाहे हैं—केशोदास, राजा जयसिंह का चाकर। (वंशावली नं० ३ में लवाणगढ़ के कछवाहों को भोजराज व उसके भाई दला के वंशज कहे हैं)।

राव काकल के पुत्र—राजा हणूं आंबेर पाट, अलोधरी (नाम शुद्ध नहीं है) के वंशज मेड़ के व कुंडल के कछवाहे कहलाते जिनकी चौथड़ मनोहरपुर में जागीर है। मेड़ व कुंडल की जागीर में अमृतसर में १२ गांव बारह लाख दाम की आय के थे। अब वे गांव बैराठ के ताल्लुक लगाए गए हैं। काकल के एक पुत्र रालण के वंशज रालणोत कछवाहा मनोहरपुर चौथड़ में चाकर हैं। एक पुत्र देलण की संतान लहरका कछवाहा जो गंगा जमुना के बीच अंतर्वेद में है। झालेर मालेर के बीस गावों में कछवाहे भूमियों के ४०० सवार हैं जो बहुत समय बीता वहां जा बसे।

राव मलैसी (इसको पहली वंशावली में राव हणु का; और दूसरी जगह राव पज्जून का उत्तराधिकारी कहा है) के पुत्र बाला ने बादशाह अलाउद्दीन (खिलजी ?) के सामने सात तवे (तीर से) बेधे थे। उसका विवाह मोहिल राजपूतों में हुआ था जिनमें यह रीति चली आती थी कि नववधू प्रथम रात्रि को क्षेत्रपाल (भैरव देवता) के पास जावे। बाला ने क्षेत्रपाल से युद्ध किया और उसे मारकर भगा दिया। मलैसी के एक दूसरे पुत्र जैतल ने युद्ध में घायल पड़े हुए देखा कि गिद्ध उसके स्वामी के शरीर पर बैठा है, तब उसने अपना मांस काट काटकर बोटियां फेंकी और गिद्ध को स्वामी के शरीर पर से उड़ाया। मलैसी के ३२ पुत्र हुए थे।

राव पज्जून के पुत्र भीमड़ व लाखण जिनके वंशज प्रधान के कछवाहे कहलाते हैं।

राजा कुंतल के पुत्र भड़सी के भाखरोत व कीतावत कछवाहे। भड़सीपोते वेणीदास का पुत्र साहवखान अच्छा राजपूत हुआ। पहले तो आसिफखाँ के पास था, फिर वादशाही चाकरी की। साहिव का वेटा किशनसिंह राजा अनिरुद्ध गौड़ के पास नौकर था। कुंतल के एक पुत्र आल्हणसी के वंशज जोगी कछवाहे जो पहले जोवनेर के ठाकुर थे, अव तो आंवेर वनराणी चाकरी करते हैं। रामदास वणवीर का राजा जयसिंह के पास और थानसिंह खांडराव का भी वहीं नौकर है। कुंतल के एक पुत्र हमीर के हमीरपोते कहलाते हैं (दूनी के गोगावत) इनके वहुत डील हैं जो आँवेर वनराणी चाकरी करते हैं। पत्ता, इसका एक पुत्र श्यामसिंह और दूसरा रामसिंह राजा जयसिंह के पास थे।

राजा जूणसी के पुत्र—राजा उदयकर्ण आँवेर, कुम्भा के कुम्भाणी, (वाँसखोह में)[1] इनकी वड़ी पीठ (अरोसा), आंवेर चाकरी करते हैं। महेशदास पोथा का, किशनसिंह, राजा जयसिंह के पुत्र कीरतसिंह के पास रहता था, वह सं० १७०८ में कावुल में पिचकर मर गया।

वाला या वालू के शेखावत, वरसिंह के नरूका, शिव ब्रह्म के निदड़का कछवाहा[2] हैं इनको यहाँ नहीं लिखे हैं। ये आँवेर चाकरी करते हैं।

राजा उदयकर्ण का पुत्र नरसिंह; राजा वणवीर राजा नरसिंह का—आँवेर राजा, उसके वंशज राजावत और वणवीर पोते कहलाते हैं[3]।

---

(१) राव जूणसी का देहांत सं० १४२४ वि० में हुआ।

(२) राव उदयकर्ण का देहांत सं० १४४९ वि० में हुआ।

(३) राजा नरसिंह का देहांत सं० १४७० वि० में हुआ। कर्नल टाड ने राजा नरसिंह के एक और पुत्र पातल या प्रतापसिंह भी लिखा है जिसके वंशज पातल पुत्र। राव वणवीर का देहांत सं० १४८१ में हुआ।

राजा उद्धरण (उदयकर्ण दूसरा) के पुत्र—राजा चंद्रसेन, राजा चंद्रसेन का पुत्र राजा पृथ्वीराज व कुम्भा[१]।

राजा पृथ्वीराज—बड़ा हरिभक्त था, द्वारिका की यात्रा के लिये प्रस्थान किया। एक दो मञ्जिल गया होगा कि श्री ठाकुरजी ने दर्शन देकर आज्ञा की कि "हमने तेरी यात्रा स्वीकारी, अब पीछा लौट जा तू तो यहीं हमारी बहुत सेवा करता है, जो मैं यात्रा से भी अधिक समझता हूँ।" राजा ने कहा कि मैं तो आपके आज्ञा-नुसार पीछा फिर जाऊँगा परन्तु लोक इसका विश्वास न करेंगे। ठाकुरजी बोले—"तेरी इच्छा हो सो माँग।" राजा ने निवेदन किया कि मेरे कंधों पर चक्र (के चिह्न) हो जावें, और जहां महादेव का मन्दिर है वहां गोमती (नदी) का समुद्र से संगम हो जावे, और सब यात्री यहाँ नित्य स्नान करें। तदनुसार राजा के कंधों पर चक्र पड़ गये, मंदिर के पास संगम भी हो गया। यह बात सारे भारतवर्ष में प्रसिद्ध हुई और राणा साँगा ने भी सुनी तो उसे इच्छा हुई कि ऐसे हरिभक्त राजा के दर्शन किसी प्रकार होवें तो बहुत ठीक हो। विचार किया कि जो अपनी कन्या राजा को ब्याह दूँ तो राजा का आना यहाँ होवे। राणा ने नारियल भेजे, और पृथ्वीराज ब्याहने को आया। राजा ठाकुरजी की मानसी सेवा किया करता था, एक दिन सेवा में बैठा था कि राणा का पुत्र बुलाने को आया। उस वक्त राजा मन ही मन में सोने के कटोरे में ठाकुर जी को शिखण्ड पिला रहा था, राणा के पुत्र ने पीछे से पुकारा तो राजा ने पीछे फिरकर देखा कि तुरंत सुवर्ण पात्र उसके हाथ से गिर पड़ा और शिखण्ड बिखर गया। यह

(१) राव उद्धरण या उदयकर्ण दूसरा, देहांत सं० १५१० वि०। राव चंद्रसेन, देहांत सं० १५४५ वि०।

चमत्कार देख लोक आश्चर्यान्वित हुए, और जब राणा ने सुना तो वह भी आकर राजा के पाँवों लगा।

राजा पृथ्वीराज की रानी बालबाई, और पुत्र—राजा भारमल टीकैत, राजा पूर्णमल, बलभद्र, पँचायण, चतुर्भुज, जगमाल के खंगारोत और रायसेोवाले, रामसिंह, कल्याणसिंह, प्रतापसिंह, रूपसिंह, भीखमसी, सांईदास, भीमसिंह, गोपालदास, नाथावत कहलाए सांगा, सुरताण[1]।

---

(१) राजा पृथ्वीराज सं० १५४५ वि० में पाट बैठा, देहांत सं० १५८५ वि०। इसके १२ पुत्रों के नाम से राज जयपुर में बारह कोठरियां हैं। पृथ्वीराज का पाटवीपुत्र राजा भीमराज या भीमसिंह था, उसे अपना उत्तराधिकारी न बनाकर पृथ्वीराज ने अपने दूसरे पुत्र पूरणमल को गद्दी दी। इसलिये पृथ्वीराज की मृत्यु के पीछे उसके पुत्रों में परस्पर झगड़ा चला। पूरणमल ६ वर्ष ही राज करने पाया था कि भीमसिंह ने उसे मारकर राज लिया। एक ख्यात में ऐसा भी लिखा है कि पूरणमल किसी गनीम के साथ लड़ाई में सीकर में मारा गया। उसका पुत्र सूजा राज लेने की नीयत से अजमेर के शाही सूबेदार शर्फुद्दीनहुसैन मिर्जा से मिला और उसे आंबेर पर चढ़ा लाया। भीमसिंह केवल २॥ मास ही राज करने पाया था कि मारा गया, और उसका बेटा रत्नसिंह पाट बैठा। इसने ग्यारह वर्ष राज किया। राजा पृथ्वीराज की एक रानी बीकानेरी के पेट से सांगा नामी पुत्र हुआ था। उसने राव लूणकर्ण के पुत्र राव जैतसी बीकानेरी की सहायता से आंबेर लिया परंतु अंत में कान्हा नामी एक चारण के हाथ से मारा गया और भीमसिंह का दूसरा पुत्र आसकर्ण गद्दी पर बैठ गया। थोड़े ही समय पीछे राजा भारमल ने आसकर्ण से आंबेर ले ली और नरवर का राज दिया। एक ख्यात में ऐसा भी लेख है कि आसकर्ण ने सरे दर्बार अपने साले के पुत्र को गोद में बिठा

राजा भारमल आँबेरपाट बैठा। उसके पुत्र—राजा भगवंतदास, भगवानदास, सोपत, सलहदी, शार्दूलसिंह, सुंदरदास, पृथ्वीदीप, रूपचंद, परशुराम, राजा जगन्नाथ*।

बणवीरोत कछवाहा
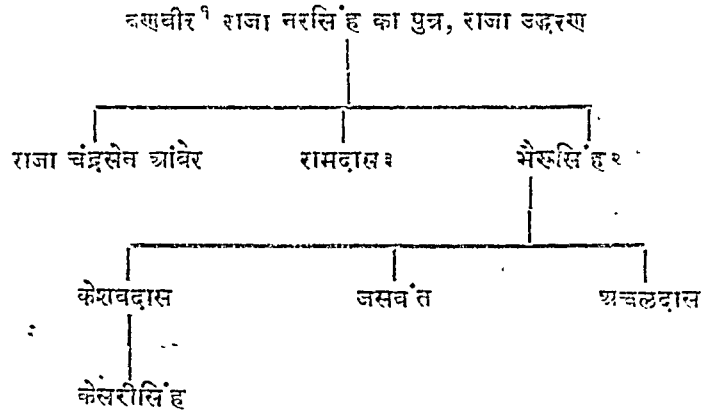
(१) इसका परिवार बहुत है, यहाँ सब नहीं लिखा गया।

(२) राजा मान के हाथियों का दारोगा था।

(३) राजा जैसिंह के पास।

लिया था इससे सामंत गणों ने अप्रसन्न होकर, जब वह गंगाजी की यात्रा को गया था तो पीछे से, भारमल को गद्दी पर बिठा दिया।

* राजा भारमल को बादशाह अकबर की कृपा से बड़ी इज्जत और दौलत मिली। उसने अपनी बड़ी कन्या सांभर के मुकाम बादशाह को सं० १६१८ वि० में ब्याह दी थी जब कि वह ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की ज्यारत के वास्ते अजमेर जाता था।

राजा पृथ्वीराज का भाई, कुंभा चंद्रसेनोत का वंश, निवास गांव मोहारी में
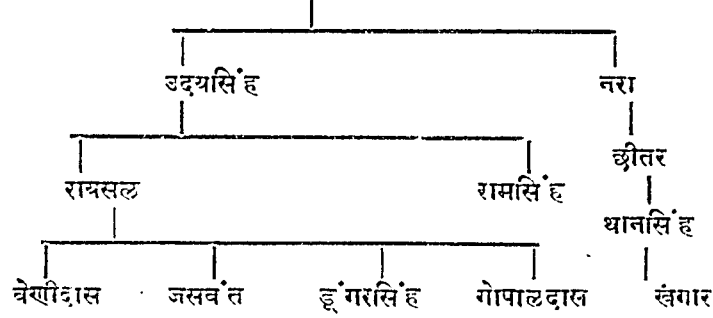
राजा पृथ्वीराज* चंद्रसेनोत के पुत्र—पूरणमल, भारमल, बलभद्रबांकुड़ा, गोपालदास, सुरताण, पंचाइण, जगमाल, सांगा, चतुर्भुज, कल्याणदास, रूपसी वैरागी, भीमसिंह, सांईदास† ।

राजा पूरणमल का वंश‡ राजाभीमसिंह[1] पृथ्वीराजोत का वंश§

(१) बीकानेर के राव लूणकर्ण का दोहिता ।
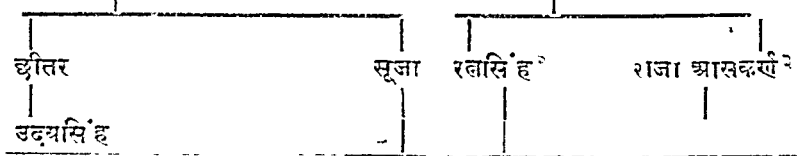
* सं० १५४६ में गद्दी बैठा, सं० १५५६ कार्तिक सुदी १२ को काल किया। इससे पहले आंबेर के राजा शैव थे। कृष्णदास पयाहारी रामावत गलते की पहाड़ी में आया, रानी बालबाई बीकानेरी उसकी शिष्या हुई और पीछे राजा ने भी कंठी बँधाई तब से रामानुजी मत राज में चला।

† ख्यात में रामसिंह, प्रतापसिंह, भीखा, तेजसी, सहसमल, और रामसहाय के नाम भी राजा पृथ्वीराज के पुत्रों में लिखे हैं।

‡ राजा पूरणमल राजा पृथ्वीराज के पीछे आंबेर की गद्दी पर बैठा था। एक वर्ष राज किया फिर उसके भाई भीम ने उसको मारकर राज्य लिया। एक ख्यात में लिखा मिलता है कि सीकर में किसी ग़नीम के साथ लड़ाई में मारा गया।

§ थोड़े ही अर्से राजा रहा, उसके भाई आसकर्ण ने मारा।
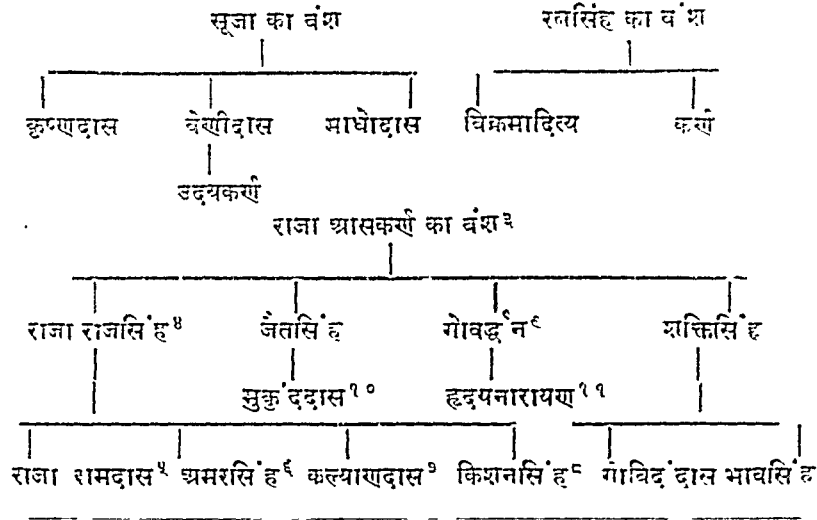
(२) आँबेर का राजा हुआ।

(३) ग्वालियर राजधानी, नरवर पट्टै, वैष्णव, श्रीठाकुर का परम भक्त। राव मालदेव की बेटी इंद्रावती व्याहा। राजा आसकर्ण की बेटी का विवाह (मारवाड़ के) मोटे राजा (उदयसिंह) के साथ हुआ था, जिसके उदर से राजा सूरसिंह ने जन्म लिया।

(४) नरवर का राजा हुआ, मोटे राजा की बेटी राजकुमारी को व्याहा सं० १६७१ वि० में दक्षिण में मरा।

(५) नरवर पट्टै मोटे राजा ने अजमेर में बादशाह जहाँगीर को हाथी नज़र करके इसको नरवर का टीका दिलवाया। सं० १६७६ में मरा।

(६) नरवर की गद्दी पर बैठा था, मोटे राजा का दोहिता शक्तिसिंह बालकपन में मरा तब नरवर उतरा।

(७) दक्षिण में जाकर मुसलमान हो गया।

(८) रायकुमारी का पुत्र था।

राजा भारमल* पृथ्वीराजोत का वंश

राजा भारमल के पुत्र—भगवंतदास, राजा भगवानदास, भोपत, सलहदी, सादूल, सुंदर, पृथ्वीद्वीप, रूपचंद, परशुराम और राजा जगन्नाथ।
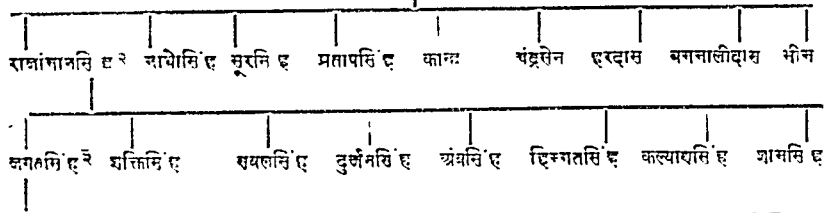
(९) मारवाड़ के महाराज के पास नौकर, गाँव कुड़की जागीर में था।

(१०) इसका विवाह (मारवाड़ के) राव चंद्रसेन की पुत्री कमलावती के साथ हुआ था।

(११) मारवाड़ के महाराज ने १४ गाँवों सहित मेड़ते का गाँव गाँगरड़ा जागीर में दिया था।

(१) बड़ा ठाकुर हुआ अकबर बादशाह की बड़ी कृपा थी। (जोधपुर के) राव मालदेव की कन्या दुर्गावती के साथ विवाह हुआ था। (कितनेक ख्यातों में भगवंतदास को आंबेर का राजा और मानसिंह को उसका पुत्र बतलाया है परंतु प्रायः भगवानदास ही का राज्य पर होने का

* सं० १६०४ में आसकर्ण से गद्दी ली, आसकर्ण दिल्ली जाकर हाजी खाँ पठान को अपनी मदद पर लाया, परंतु भारमल ने उसको मिला लिया और आसकर्ण को नरवर का राज्य दिया गया। भारमल पहला ही राजा था जिसने मुगलों की अधीनता स्वीकार साँभर के मुकाम अपनी बेटी को अकबर के साथ ब्याह दिया। सं० १६३० माघ सुदी ४ को मरा।
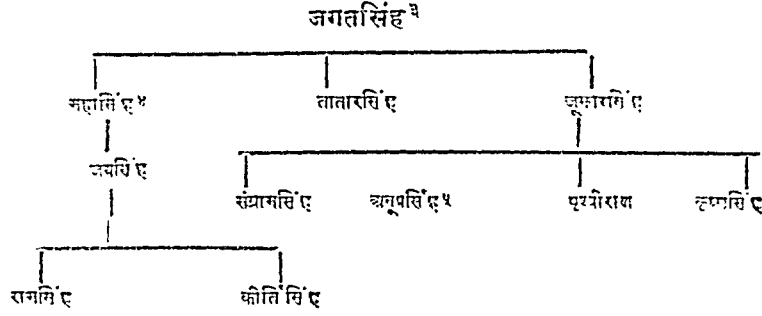
लेख मिलता है। राजा की कन्या शाहजादे सलीम के साथ हिंदुओं की रीति के अनुसार सं० १६४१ में व्याही गई।)

(२) महाराजा हुआ, अकबर बादशाह ने पूर्व का सूबा दिया था। राव चंद्रसेन की बेटी आसकुमारी के साथ विवाह हुआ। जन्म सं० १६०७ पौष वदि १३; सं० १६७१ (आषाढ़ सुदी १०) को दक्षिण में मृत्यु हुई। (वृंदावन में वल्लभी मत स्वीकारा और श्रीगोविन्द की सेवा ली)।

(३) अकबर बादशाह ने नागोर दिया था। इसका विवाह कनकावती बाई के साथ हुआ। रत्नसिंह कनकावती की बेटी का बेटा था। जगतसिंह कुँवरपदे ही में मर गया। (इसके पुत्र जूझारसिंह के वंश में झलायवाले हैं)

(४) चौसा पट्टे में था, मोटे राजा की बेटी रुक्मावती व्याहा। सं० १६७३ वि० में दक्षिण में वालापुर के थाने में मृत्यु हुई तब रुक्मावती साथ जली। (राजा मानसिंह के पीछे महासिंह को गद्दी मिलनी चाहिए थी, परंतु पादशाह जहाँगीर ने मानसिंह के दूसरे पुत्र भावसिंह को टीका दिया)।

(५) पूर्व में एक बुलाकी शाहजादा उठ खड़ा हुआ, अनूपसिंह उसके पास था, अब राजा जयसिंह के पास है।

राजा भारमल का वंश

(मिर्ज़ा राजा) जयसिंह महासिंहोत भावसिंह के पीछे सं० १६७८ में आंबेर पाया। सिसोदिया राणा उदयसिंह का दोहिता था; जन्म सं० १६६८ आषाढ़ वदी १; सं० १६७६ में जोधपुर के राजा सूरसिंह की पुत्री मृगावती को व्याहा (शिवाजी को जेरकर दिल्ली पहुँचाया। बादशाह औरंगजेब ने शिवाजी को राजा जयसिंह के कुँवर रामसिंह की निगरानी में रक्खा था, रामसिंह ने उसको टोकरे में बिठाकर निकाल दिया। इससे बादशाह रामसिंह से नाराज हो गया। एक दिन शिकार में उसे बिना शस्त्र सिंह को मारने को भेजा। रामसिंह ने उसे मार लिया और यह वृत्तांत अपने पिता को लिखा। तब राजा जयसिंह ने बादशाह को अर्जी में कुछ कठोर शब्द लिखे। बादशाह ने अप्रसन्न होकर राजा के दूसरे पुत्र कीर्तिसिंह को राज्य का लोभ दे जयसिंह को मरवाया। दखन से लौटते बुरहानपुर के मुकाम कीर्तिसिंह ने तेजा नाई के द्वारा राजा को भोजन में विष खिलाया जिससे सं० १७२४ आश्विन वदी ५ को वहीं राजा का शरीर छूटा। राज्य रामसिंह ही को मिला, कीर्तिसिंह ने केवल कामां का परगना पाया)।

सबलसिंह मानसिंहोत, पूर्व में भट्टी की लड़ाई में काम आया। राव चंद्रसेन की पुत्री रायकुमारी के साथ विवाह हुआ था, वह सती हुई।

दुर्जनसिंह मानसिंहोत, पुत्र पुरुषोत्तमसिंह राजा भावसिंह के पास रहता था और वहीं मरा। पुरुषोत्तमसिंह के बेटे—भारतसिंह, शिवसिंह, जयकृष्णसिंह और रामचंद्र जो बहादुरशाह के साथ काम आया।

राजा भावसिंह महासिंहोत (राजा मान का पौत्र) मानसिंह के के पीछे आँबेर की गद्दी पर बैठा। बड़ा महाराजा हुआ। रानी गौड़ का पुत्र था। जहाँगीर बादशाह का बड़ा कृपापात्र हुआ। जन्म सं० १६३३ आश्विन वदि ३, सं० १६७८ पौष वदि ९ को बुरहानपुर में काल किया। राजा सूरसिंह की बेटी आसकुमारी व्याहा था जो साथ सती हुई। पुत्र नहीं, एक पुत्री सूरज देवी का विवाह (मारवाड़ के) राजा गजसिंह के साथ सं० १६७६ में हुआ था, वह पति के साथ सती हुई।

हिम्मतसिंह मानसिंहोत, पुत्र--शामसिंह, कल्याणसिंह। कल्याणसिंह का बेटा उग्रसिंह।

---
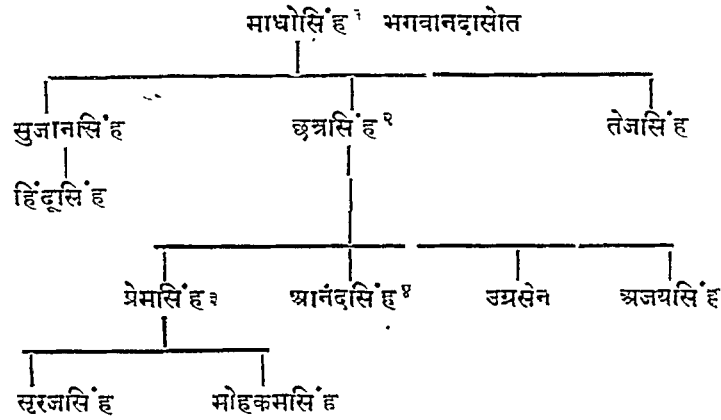
(१) अकबर बादशाह ने अजमेर मालपुरा पट्टे में दिया था। आंबेर के महलों की पोल पर के झरोखे से गिरकर मर गया।

(२) भाणगढ़ जागीर में था, सं० १६८६ के आषाढ़ में खानेजहाँ पठान से लड़कर घायल हुआ, वहाँ से किसी ने उठाया, तदुपरांत बादशाही चाकरी में मरा।

(३) खानजहाँ की लड़ाई में काम आया।

सूरजसिंह भगवानदासोत बड़ा वीर राजपूत था। बादशाह अकबर ने जब सीकरी का कोट बनवाया तब सूरजसिंह का डेरा कोट की नींव पर था। उसने डेरा नहीं उठाया। बादशाह ने उसे कुछ न कहा और कोट को टेढ़ा करवा दिया। वह सदा बादशाह का सच्चा सेवक बना रहा। मोटे राजा की बेटी, जैत्रसिंह की बहन, जसोदाबाई का विवाह उसके साथ हुआ था जो पति के शव के साथ सती हुई। स्यालकोट में, जो दरया अटक और काँगड़े के बीच में है, शादमाँ सुलतान से लड़ाई हुई। वहाँ से (पंजाब की) गुजरात भी पास ही है। शादमाँ हुमायूँ बादशाह का पोता, असकरी कामराँ का बेटा और हिंदाल का भतीजा था। सूरजसिंह उसको मारकर सही सलामत चला आया। पुत्र चाँदसिंह। चाँदसिंह के बेटे अचलसिंह, ज्ञानसिंह, अगरसिंह। अचलसिंह के पुत्र मनरूप और गजसिंह।

राजा जगन्नाथ भारमलोत बड़ा महाराजा हुआ, रणथंभोर टोडा और दूसरे भी कई परगने जागीर में थे। राजस्थान टोडा। जन्म सं० १६०६ पौष वदि ६; सं० १६६५ में मांडल (मेवाड़ में) के थाने पर था, वहीं मरा। वहाँ तालाब पर उसकी छतरी बनी हुई है। पुत्र—करमचन्द[१] टीकेत, जगरूप[२], अभयकर्ण, जसा, बीजल[३],

(४) छत्रसिंह के साथ मारा गया।

(१) बड़ा दातार था, राजा जगन्नाथ के पीछे ४ वर्ष अपनी जागीर में रहा फिर मलिकपुर के थाने पर भेज दिया गया और वहीं मरा।

(२) कुँवर पदे हो में अकबर बादशाह की सेवा में दक्षिण में मारा गया। बेटा नहीं, एक बेटी कल्याणदेवी राजा गजसिंह (मारवाड़) को व्याही।

(३) बादशाही चाकर था; जब महाबतखाँ का बेटा बाँकीबेग रणथंभौर का सूबेदार था तब शाहज़ादा ख़ुर्रम अपने पिता से बाग़ी

मनरूप[१], वाला और बलकर्ण[२]। मनरूप के बेटे सुजानसिंह, केसरीसिंह, हरीसिंह।

भोपत भारमलोत—बादशाह अकबर जब गुजरात को गया और सुलतान मुज़फ्फरशाह गुजराती के साथ उसका युद्ध हुआ तब भोपत बादशाही फौज के साथ अकबर के रूबरू शत्रु से लड़कर मारा गया।

सलहदी भारमलोत—बड़ा राजपूत, पहले रामदास ऊदावत के पास था फिर बादशाही चाकर हुआ।

भगवंतदास भारमलोत के पुत्र मोहनदास और अखैराज। अखैराज के बेटे अभयराम[३] शामराम[४], हिरदैराम और विजयराम। हिरदैराम के बेटे जगराम[५] और रामसिंह[६]।

हुआ। शाहज़ादे के हुक्म से गोपालदास गौड़ ने रणथंभौर गढ़ की तलहटी तक दख़ल कर लिया और बाँकीबेग गढ़ में जा बैठा। शाहज़ादे और गोपालदास के लौट जाने पर बाँकीबेग ने उनका पीछा किया। गोपालदास ने शबखून मारा उसमें बाँकीबेग और बीजल दोनों मारे गए।

(१) भीम (सीसोदिया) का टोडा जागीर में था।

(२) जोधपुर नौकर, मेड़ते का रेयाँ गाँव पट्टे में था।

(३) अपनी जागीर में एक मुगल को मारा, इसलिए बादशाह जहाँगीर ने भरे दर्बार रोककर बेड़ी पहनाना चाहा, तब अभयराम ने तलवार चलाई और मारा गया।

(४) भाई के साथ काम आया।

(५) बादशाही चाकर, लवाणा की जागीर और पैसर के थाने पर रहता था।

(६) उदेही के गाँव बाघोर में रहता था।

राजा पृथ्वीराज के पुत्र बलभद्र का वंश

बलभद्र के पुत्र—अचलदास, दुर्जनसाल, गोविंददास, दयालदास, शामदास और वेणीदास। अचलदास के बेटे मोहनदास और गिरधर। दुर्जनसाल के बेटे केसरीसिंह और शामदास। (इनका मुख्य ठिकाना अचरोल है)।

गोपालदास पृथ्वीराजोत का वंश (इसके वंशज चोमू सामोत आदि के नाथावत हैं)
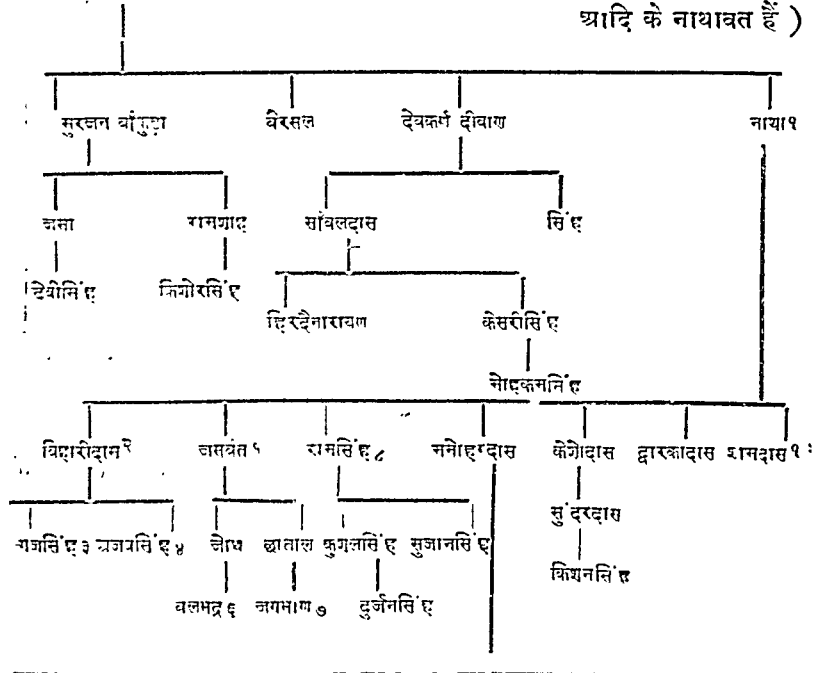
(१) नाथा की संतान नाथावत कछवाहा।

(२) प्रतिष्ठित और बहुत धनाढ्य पुरुष था। राजा भावसिंह को छोड़के मोहबतखाँ के पास जा रहा, फिर बादशाही चाकर हुआ।

(३) गौड़ों ने मारा।

(४) मोहब्बतखाँ के पास जाते हुए दखनियों ने मारा।
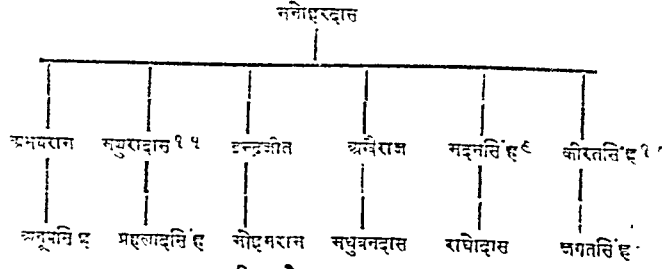
सुरताण पृथ्वीराजोत का वंश (चांदसेण सुरोठ आदि में व टोंक राज्य में है)
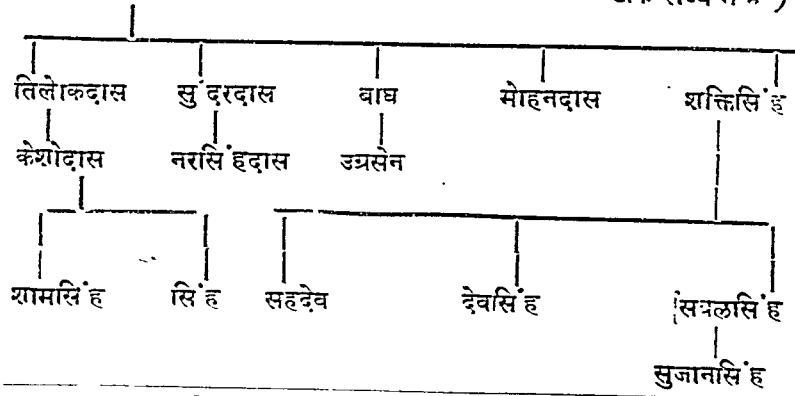
(५) पहले राजा भावसिंह के और पोछे राजा जयसिंह के पास नौकर हुआ।

(६) जोधपुर के महाराजा का चाकर रहा।

(७) काबुल में मरा।

(८) राजा जयसिंह का चाकर।

(९) राजा जयसिंह का चाकर।

(१०) राजा जयसिंह का चाकर।

(११) राजा जयसिंह का चाकर था फिर बादशाही सेवा में गया, कंदहार में मरा।

(१२) पूर्व में लड़ाई में मारा गया।

पंचायण पृथ्वीराजोत (सांभेर, अमरगढ़, पिपलाई आदि में हैं)
किशनदास
नरहरदास
सांवलदास
विट्ठलदास
नारायणदास
मुरारिदास
कल्याणदास
सुंदरदास
चतुरसिंह
कान्ह
जदराम
भारत०
राम०
राव
रावीदास
उदयसिंह
हरीदास
शामदास
सादूल
छीतरदास
बलकर्ण
मुकुंददास
वंशीदास
गोविंददास
मोहनदास
जसकर्ण
उदयराम
वृंदावन-दास
नरसिंह-दास
माधो-दास
चतुर्भुज
वेणीदास
रामसिंह
रामचंद्र
अनूपराम
हरनाथ
गिरधर
किशोरदास
परशुराम
सबलसिंह
सुंदरदास
शक्तिसिंह
मोहकमसिंह
अजबसिंह
फतहसिंह
आनंदसिंह
किशनसिंह
रामचंद्र
अजयसिंह
अभयराम
जूझारसिंह
शिवराम
किशनसिंह
सूरसिंह
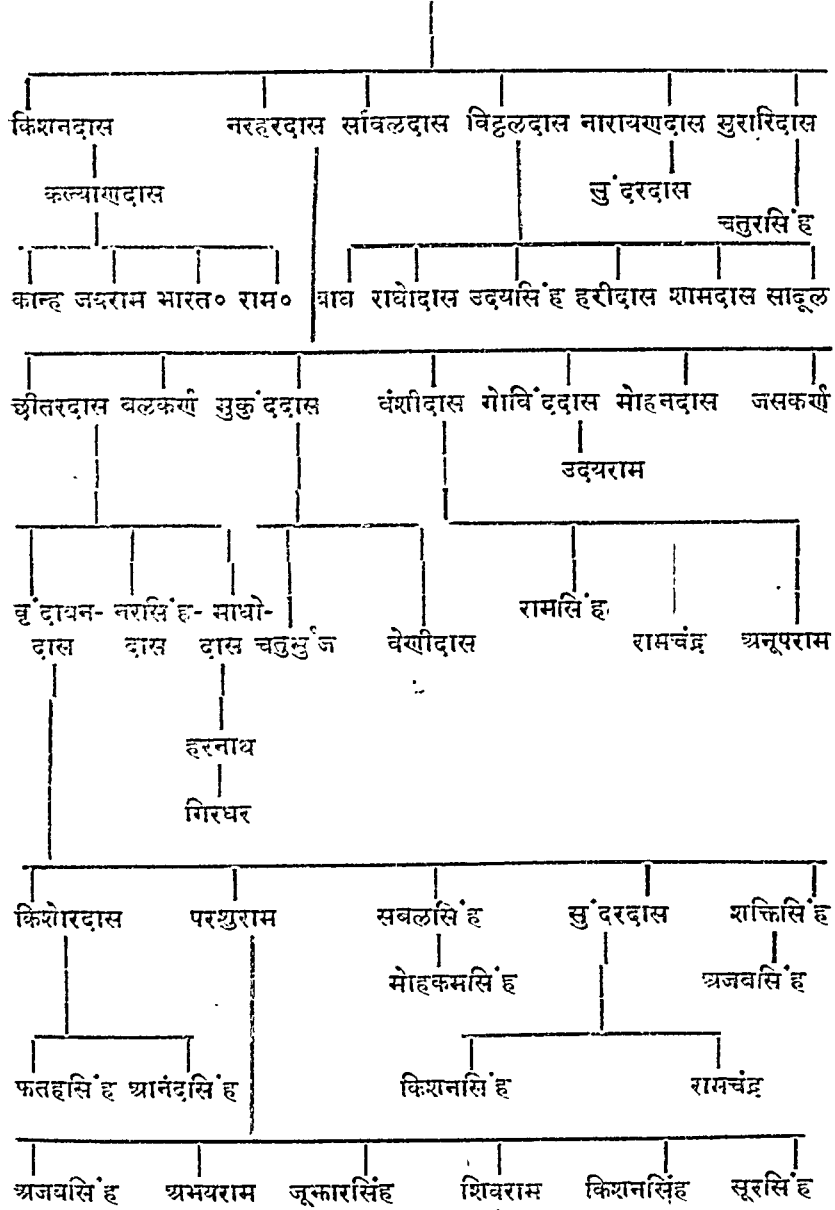
विट्ठलदास पंचायणोत के पुत्र बाघ के बेटे हरराम, वुधसिंह[१], रामचंद्र।

राघेदास विट्ठलदासोत का बेटा हृदयराम। हृदयराम के पुत्र श्यामसिंह[२] और जयकृष्ण[३]। उदयसिंह विट्ठलदासोत के बेटे—जगन्नाथ,[४] सुजानसिंह, शिवराम, विजयराम।

सुजानसिंह उदयसिंहोत के पुत्र—वल्लू, सूरतसिंह, गजसिंह, परशुराम, वुधरथ, प्रेमसिंह, अजबसिंह।

हरीदास विट्ठलदासोत के पुत्र—गोयंददास, भोजराज। गोयंददास के—मथुरादास,[५] गोकुलदास[६] कनकसिंह। भोजराज[७] के—आसमल, फतहसिंह, केसरीसिंह, देवीसिंह, सवलसिंह, सूरसिंह। शामदास[८] विट्ठलदासोत का बेटा लाडखाँ[९]। लाडखाँ के बेटे—कुशलसिंह, किशनसिंह, अजबसिंह, अनोपसिंह।

सादूल[१०] विट्ठलदासोत के बेटे—सुंदरदास, दयालदास, कान्हदास। सुंदरदास के जैतसिंह, अनोपसिंह। दयालदास के जोधसिंह, फतहसिंह। कान्हदास के राजसिंह, गुमानसिंह। नारायण-

---

(१) लड़ाई में मारा गया।

(२) राजा (जयसिंह) का चाकर।

(३) राजा का चाकर।

(४) राजा का चाकर।

(५) राजा का चाकर।

(६) राजा का चाकर।

(७) उदेही की नादोती में रहता था।

(८) कटहड़ में मारा गया।

(९) उदेही में वसा था, जोधपुर चाकरी करता था।

(१०) वड़ा दातार हुआ।

दास पंचायणोत का पुत्र सुंदरदास। सुंदरदास के किशनसिंह, रामचंद्र, कुशलसिंह।

राजा पृथ्वीराज के पुत्र जगमाल का वंश (यह खंगारोत कहलाते हैं इनका मुख्य ठिकाना डिग्गी है)

जगमाल के पुत्र खंगार[1] और जैसा। खंगार के पुत्र—नारायणदास, मनोहरदास, भोजराज, हमीर, राघोदास, वाघ, वैरसल, सुजानसिंह, उदयसिंह, अमरा, किशनसिंह, रत्नसिंह, भाखरसी, जसकर्ण, केशोदास, कल्याणसिंह और साँवलदास।

भोजराज[4] खंगारोत के बेटे गोपीनाथ, हरीसिंह। गोपीनाथ का सूरसिंह।

(१) खंगार के वंशज खंगारोत कहलाए. नराणे के स्वामी।

(२) अकबर बादशाह ने नराणा का पट्टा देकर वतन कर दिया था।

रावोदास खंगारोत, पुत्र—नरसिंहदास। वाघ[६] खंगारोत। वैरसल[७] खंगारोत पुत्र केसरीसिंह।

सुजानसिंह खंगारोत, पुत्र—दलपत, विजयराम,[८] विजयराम का हरीराम[९]।

अमरा खंगारोत, पुत्र—उग्रसेन,[११] जगन्नाथ[१२]।

किशनसिंह खंगारोत, पुत्र—सवलसिंह, हरराम। सवलसिंह का शामसिंह।

राजसिंह खंगारोत, पुत्र—वलराम[१३]।

भाखरसी[१४] खंगारोत।

---

(३) लड़ाई में मारा गया।

(४) नराणा पट्टै, वाव की लड़ाई में काम आया, बुद्धिमान् सरदार था।

(५) किशनसिंह के साथ काम आया।

(६) वादशाही चाकर, भोजराज को गोद रखा, सं० १६८६ में दक्षिण में छत्रसिंह के साथ ख़ानेजहाँ की लड़ाई में मारा गया।

(७) मोहम्मद मुराद नराणे पर चढ़ आया तव लड़ाई में काम आया।

(८) नाथावतों की लड़ाई में मारा गया।

(९) साँभर के किरोड़ी (वादशाह की तरफ से कर उगाहने-वाले) से लड़ाई हुई जिसमें मारा गया।

(१०) केसरीसिंह के साथ काम आया।

(११) शामसिंह कर्मसेनोत की सेवा में मारा गया।

(१२) राजा रायसिंह की सेवा में मारा गया।

(१३) मालपुरे में काम आया।
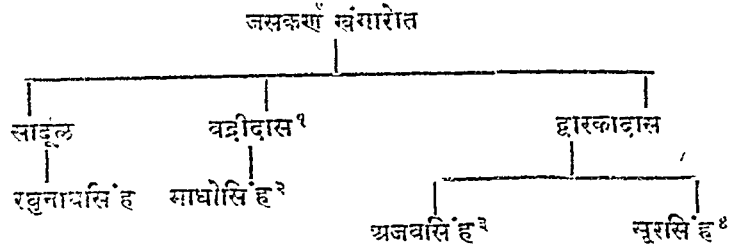
केशोदास खंगारोत। कल्याणसिंह[5] खंगारोत।

जैसा जगमालोत (खंगार का भाई) पुत्र—केशोदास, वल्लू। केशोदास का मनरूप।

साँगा पृथ्वीराजोत*।

चतुर्भुज पृथ्वीराजोत (मुख्य ठिकाना बगरू) पुत्र- कीर्तिसिंह[6] और जूझारसिंह। कीर्तिसिंह के बेटे—किशनसिंह,[7] गजसिंह[8]

---

(१४) अच्छा राजपूत, जोधपुर की तरफ से मेड़ते का गाँव ओवाल पट्टे में था।

(१) राजा जयसिंह का चाकर।

(२) जोधपुर नौकर था।

(३) जोधपुर नौकर।

(४) जोधपुर नौकर राव हरीसिंह के साथ काम आया।

(५) राजा विट्ठलदास गौड़ के पास रहा था।

(६) पठानों ने मारा।

---

* बीकानेर के राव लूणकर्ण का दोहिता था। भीम पृथ्वीराजोत के पुत्र रत्नसी से राज छीनने को बीकानेर से फौज लाया। रत्नसिंह के अय्याश होने से राजकाज तेजसी करता था, वह सांगा से मिल गया और उसके विरोधी कर्मचंद नरूका को मारा। कर्मचंद के भाई ने तेजसी को मार डाला और सांगा ने भी भागकर प्राण बचाए। साँगानेर का कसबा बसाया।

और प्रतापसिंह[९]। प्रतापसिंह का सूरसिंह। जूझारसिंह का हिम्मतसिंह[१०]; हिम्मतसिंह के फतहसिंह और शक्तिसिंह।

कल्याणदास पृथ्वीराजोत (कालवाड़ रामगढ़ आदि में) पुत्र—करमसी, मोहनदास, रायसिंह और कान्ह। करमसी के खड्गसेन[११] और सुंदरदास[१२]। रायसिंह के जोधसिंह और जगन्नाथ।

---
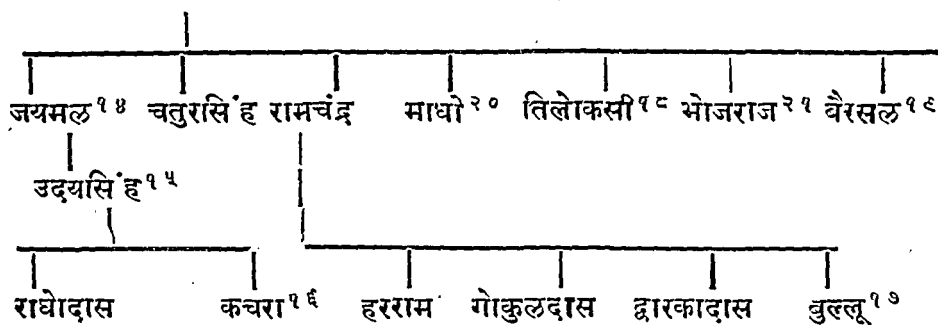
(७) राजा जयसिंह का चाकर, कीर्तिसिंह के बैर में साँगानेर में पठानों के घोड़े छीन लिए, वे बादशाह को जाकर पुकारे। बादशाही हुक्म से राजा जयसिंह ने सं० १६७६ में किशनसिंह को मारा।

(८) सं० १६८६ में जोधपुर रहा, रु० १७०००) की जागीर पाई, सं० १६६५ में पीछा राजा की चाकरी में चला गया।

(६) राजा जयसिंह का चाकर।

(१०) मोहबतखाँ ने लदाणा पट्टे में दिया था, पीछा राजा जयसिंह के पास गया और १५०००) का पट्टा पाया। यहाँ उसने झगड़ा किया। सं० १७०० में उदेही गाँव में रखा।

(११) राजा का चाकर।

(१२) बिहारी पठानों ने मारा।

(१३) अकबर का सेवक, पर्वत सर जागीर में था।

नरूकों की वंशावली

बरसिंह (आँबेर के राजा उदयकर्ण का पुत्र)

|

मेहराज (मेघराज)

|

नरू (के वंशज नरूका कहलाए)
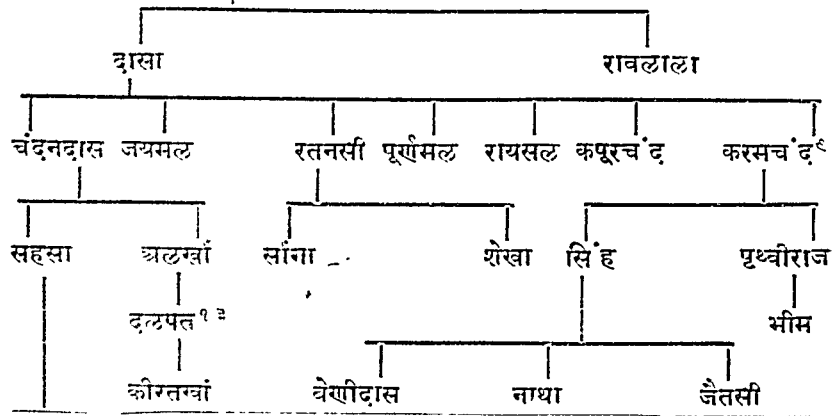
(१४) सं० १६४० में अकबर ने फतहपुर जागीर में दिया। परम भक्त था, बीमार होने पर मथुरा में जाकर मरा। मोटे राजा की बेटी दमयंती को ब्याहा था।

(१५) सांखलों का भांजा था।

(१६) राठोड़ बाघ पृथ्वीराजोत ने मारा।

(१७) शेखावतों ने मारा।

(१८) मोटे राजा की बेटी कृष्णकुमारी को ब्याहा था, वह सती हुई।

(१९) बड़गूजरों का भांजा।

(२०) मैणी जाति की स्त्री के पेट का था।

(२१) करमा खवास का बेटा।
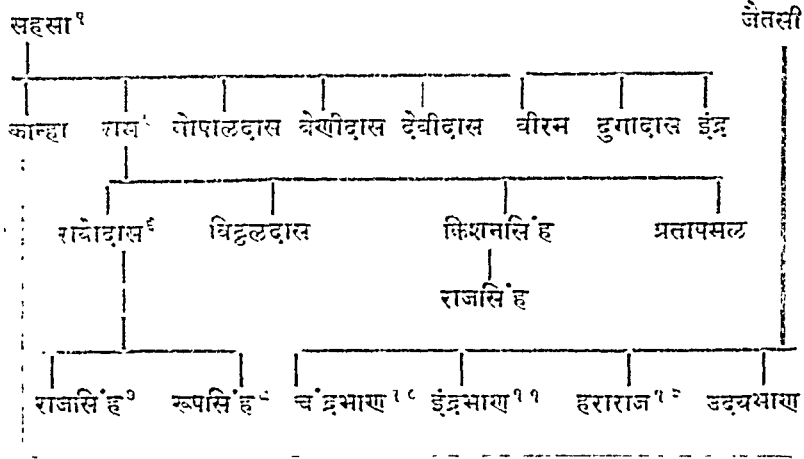
(१) नींवाई का ठाकुर।

(२) प्रतिष्ठित पुरुष था, मोहवतखाँ ने लाल सोट पट्टे में दी थी।

(३) बड़ा राजपूत, मोहवतखाँ के पास रहता था, फिर जोधपुर महाराज का नौकर हुआ, रीवाँ और रायपुर की जागीर पाई थी।

(४) नींवाई पट्टे में थी।

(५) वणहटा गाँव बसाया, राजा जगन्नाथ का सेवक था।

(६) मोहवतखाँ के नौकरों से दरया अटक पर झगड़ा हुआ वहाँ मारा गया।

(७) मोहवतखाँ का नौकर।

(८) टीकायत, मोहवतखाँ ने वणहटा दिया था।

(९) नैजाबाद का स्वामी, राजा पृथ्वीराज के पुत्र साँगा ने मारा।

(१०) पनवाड़ पट्टे, सं० १६६८ में जोधपुर रहा और राइण गाँव पाया, फिर बादशाही चाकरी में गया। इसकी पुत्री केसर
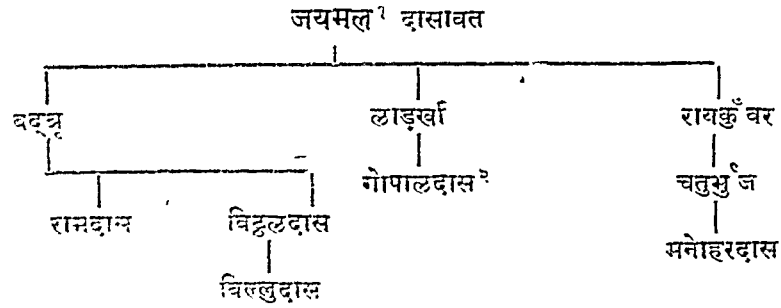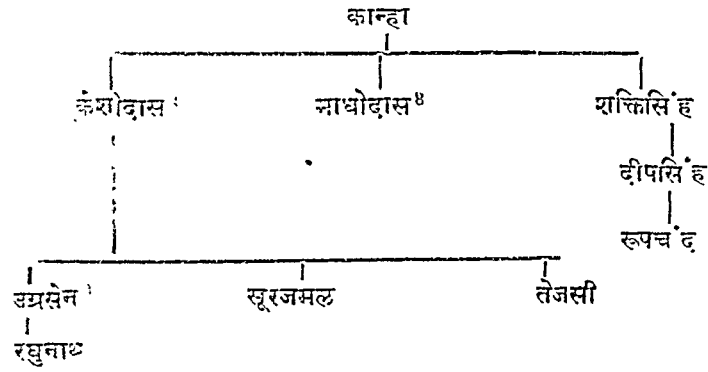
रायसल दासावत का पुत्र रामचंद्र। रामचंद्र का वलभद्र। वलभद्र का गोविंददास। गोविंददास[३] का वेटा जोगीदास।

देवी का विवाह (जोधपुर के) राजा गजसिंह के साथ हुआ था, वह सती हुई।

(११) रावर का ठाकुर।

(१२) राव केशवदास ने मारा।

(१३) राजा जयसिंह का चाकर।

(१) वड़ा राजपूत था, मृत्यु के दिन वड़ा उत्सव मनाया।

(२) मारोठ में काम आया।

(३) ईसरदास कूंपावत का दोहिता, जोधपुर महाराज के नौकर, जागीर में रेवाड़ी के गांव थे।

कपूरचंद दासावत के पुत्र रूपसिंह और वैरिसिंह।

रत्नसिंह दासावत के पुत्र साँगा का परिवार—साँगा का पुत्र कचरा। कचरा के बेटे—परशुराम, मालदेव, रुद्र और भोपत।
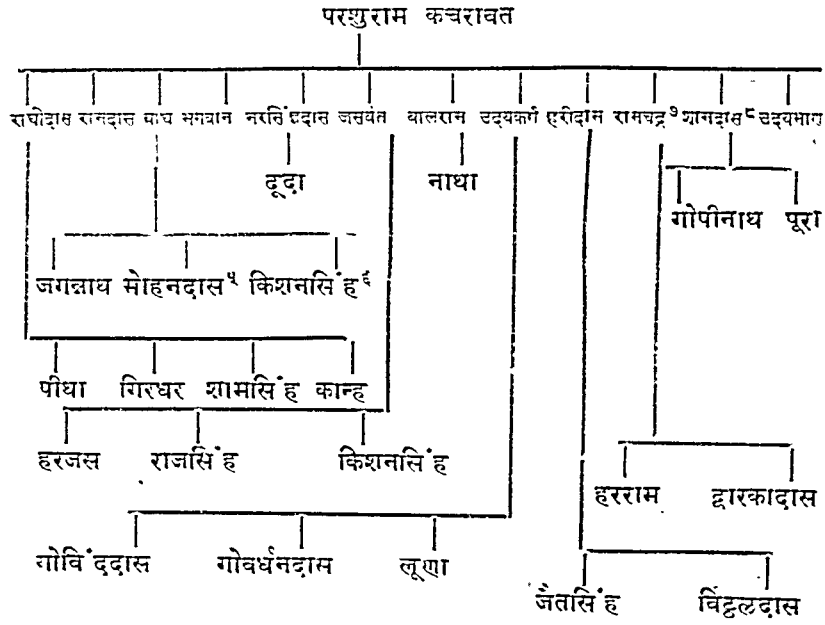
मालदेव कचरावत के बेटे—सुर्जन, सादूल, प्रतापसिंह, रायसिंह, चतुर्भुज, माधोसिंह, केशोदास[9], सुरजन के बेटे—रायकुँवर, रामकुँवर, चतरसाल, दूदा। सादूल के कान्हा, जैतसिंह, हरीसिंह। प्रतापसिंह के जगरूप।

---

(४) पूरब में भाटियों की लड़ाई में काम आया।

(५) जोधपुर महाराजा का नौकर।

(६) पँवारों ने मारा।

(७) पवारों की लड़ाई में मारा गया।

(८) पँवारों की लड़ाई में मारा गया।

रुद्र[८] कचरावत के बेटे—सूरसिंह, कुंभकर्ण, मनोहरदास। मनोहरदास के राजसिंह और हरकर्ण।

भोपत[९] कचरावत के बेटे—देवीदास[११], मुकुंददास। देवीदास के सूजा और उग्रसेन। मुकुंददास के राजसिंह और किशनसिंह।

रतना दासावत के पुत्र शेखा का परिवार
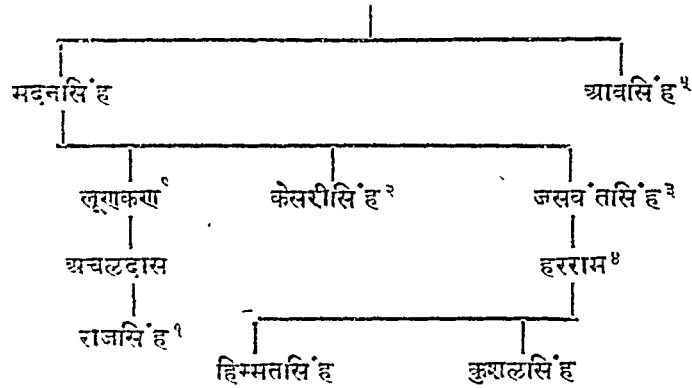
राव लाला* नरूका—पुत्र ऊदा। ऊदा का लाडखाँ। लाडखाँ

(९) किशनसिंह राठोड़ का साला, उन्हीं के साथ मारा गया।

(१०) किशनसिंह राठोड़ के पास था, उन्हीं के साथ मारा गया।

(११) जगमाल भारमलोत के साथ काम आया।

(१) राजा जयसिंह का सेवक, कुँवर रामसिंह के पास रहता था।

(२) राजा जयसिंह की सेवा में वड़गूजरों की लड़ाई में मारा गया।

(३) राजा जयसिंह को छोड़ सं० १६८९ में जोधपुर महाराज के पास आ रहा।

(४) जोधपुर महाराजा का नौकर।

(५) जगन्नाथ गोविंददासोत ने मारा।

* राज्य अलवर के महाराजा राव लाला के वंशज हैं। राव लाला से चौथी पीढ़ी में राव कल्याणमल हुआ। नैणसी ने कल्याणमल के पुत्रों के

का फतहसिंह। फतहसिंह[६] का कल्याणमल[७]। कल्याणमल के बेटे—रणसिंह, आणंदसिंह और अजबसिंह।

शेखावत कछवाहे, वतन अमरसर

आँबेर के राजा उदयकर्ण के पुत्र बाला के वंशज हैं। बाला के पुत्र मोकल पर शेख़ बुरहान चिश्ती ने कृपा की (उसकी दुआ से) मोकल के पुत्र हुआ, नाम शेखा दिया गया। शेखा की संतान शेखावत कहलाते हैं।
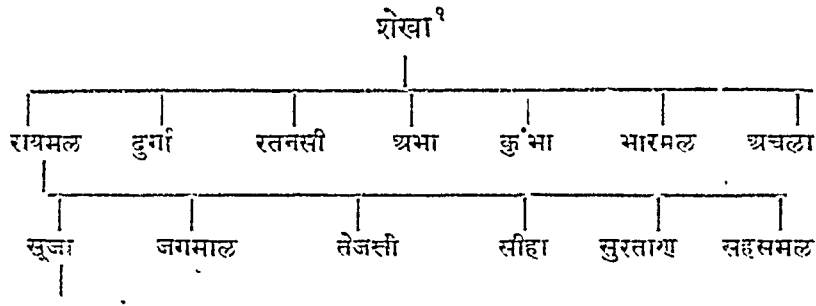
(६) इसको राजा जयसिंह ने बेटा कहकर गोद लिया था।

(७) राजा जयसिंह इसे अपने पुत्र तुल्य रखता था, कामा पहाड़ी का सूबेदार था।

(१) अमरसर शेखा ने बसाया, पहले वहाँ अमरा अहीर की ढाणी (छोटा गाव) थी। शिखरगढ़ भी शेखा ने बसाया।

नाम रणसिंह, आणँदसिंह और अजबसिंह लिखे हैं और अलवर के इतिहास में कल्याणसिंह के ५ पुत्र—अगरसिंह पाटवी, अमरसिंह, शामसिंह, ईसरीसिंह और जोधसिंह होना लिखा है, जिनकी संतान की जागीरें अलवर राज की बड़ी कोटड़ियां कहलातीं अर्थात् खाड़ा, पाड़ा, पलवा और पेई।

राव बाला से ११वीं पीढ़ी में होनेवाले रावराजा प्रतापसिंह ने सं० १८३२ वि० में अलवर का स्वतंत्र राज स्थापन किया। सं० १८५७ में रावराजा का देहांत होने उपरांत, १३७ वर्ष के अर्से में, पांच राजा अलवर की गद्दी पर बैठे।
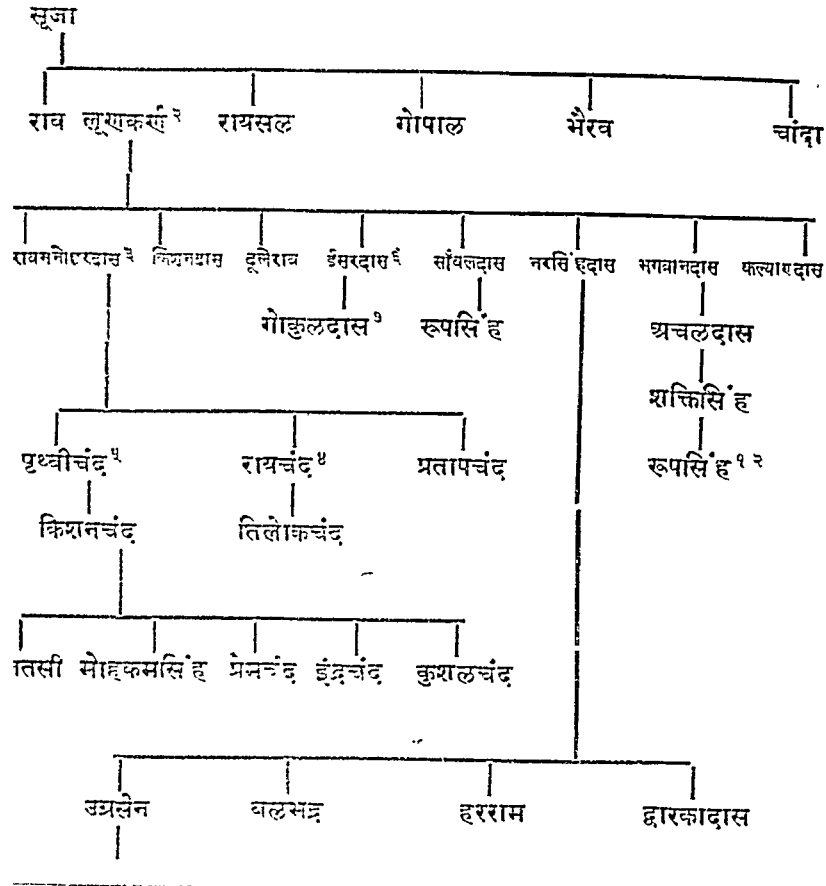
(२) राव मालदेव की बेटी हंसबाई ब्याहा था।

(३) हंसबाई का पुत्र, मनोहरपुर बसाया।

(४) बंगश के थाने में काम आया।

(५) राजा विक्रमादित्य के साथ काँगड़े की लड़ाई में मारा गया।

(६) सबलसिंह का सुसरा था सं० १६७३ में बुरहानपुर में मरा।

(७) खवास का बेटा।

---
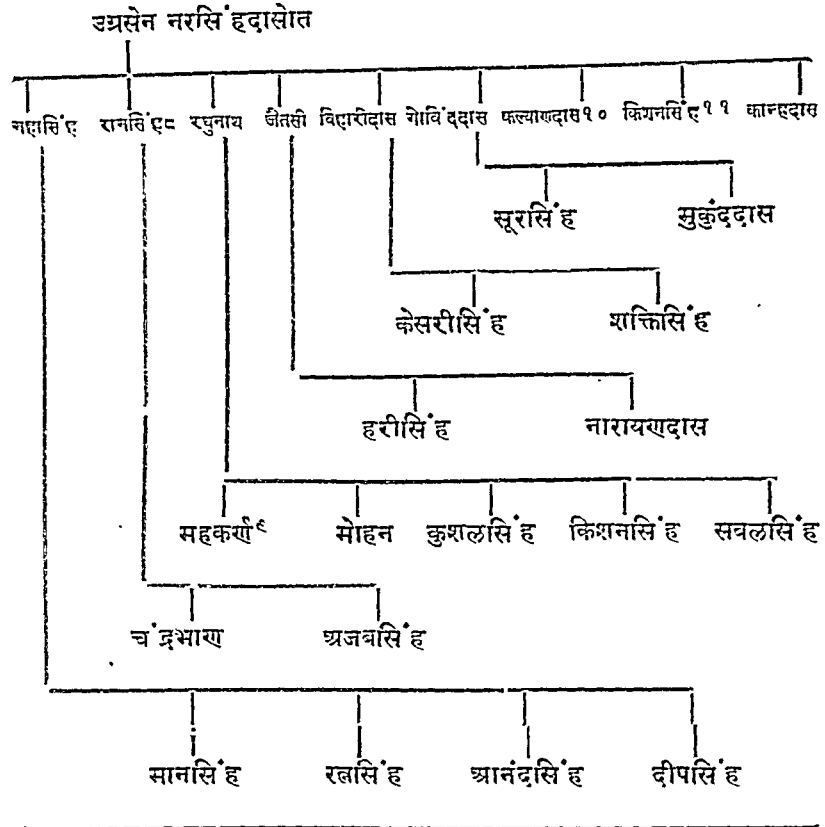
(८) राजा जयसिंह के पास नौकर था। फिर महाराजा जसवंतसिंह के पास रहा, रेवाड़ी के रु० २५०००) के गाँव पट्टे में थे।

(९) महाराजा जसवंतसिंह के नौकर उदेही का गाँव पीपलाई रु० १२०००) की रेख का पट्टै।

(१०) निरवाणों की लड़ाई में मारा गया।

(११) कल्याणदास के साथ काम आया।

(१२) महाराजा जसवंतसिंह के नौकर।

रायसल[1] सूजावत का परिवार

रायसल के पुत्र—राजा गिरधरदास, लाडखाँ, भोजराज, परशुराम, तिरमण, ताजखाँ, हरराम, विहारीदास, वाबूराम, दयालदास, वीरभाण, कुशलसिंह ।
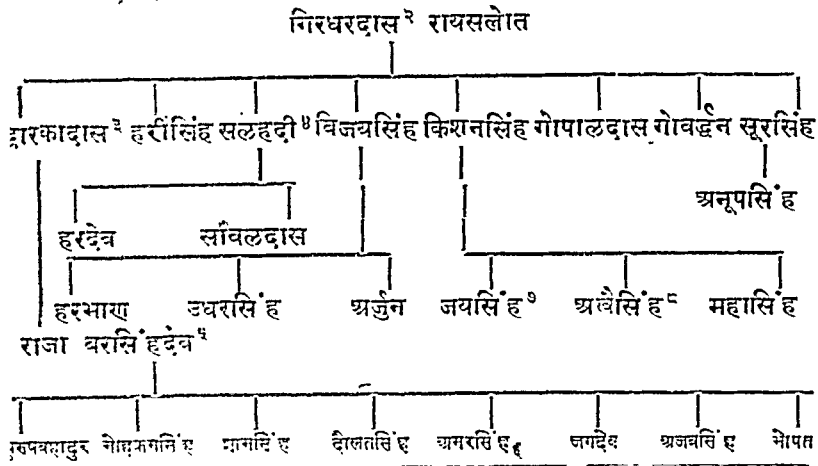
(१) बाघा सूजावत का दोहिता, अकबर वादशाह के दरवार में रायसल दरबारी कहलाता। खंडेला और रेवासा जागीर में था। रायसल ने खंडेला निरवाणों से लिया था, दर असल यह नगर खड्गल तंवर का बसाया हुआ है।

(२) खंडेले टीकायत, राठोड़ विट्ठलदास जयमलोत का दोहिता। सं० १६८० में बुरहानपुर में सैयदों से खानेजंगी हुई तब सैयदों ने मारा, परंतु शाहज़ादे पर्वेज़ और महावतख़ाँ ने सैयदों के सरदार की गर्दन मार शांति की।

(३) खंडेले का स्वामी, खानेजहाँ की पहली लड़ाई में घायल हुआ और खानेजहाँ मारा गया तब काम आया।

(४) राठोड़ कान्ह रायमलोत का दोहिता।

(५) भारमलोतों का भानजा और कुँवर पृथ्वीसिंह का नाना था।
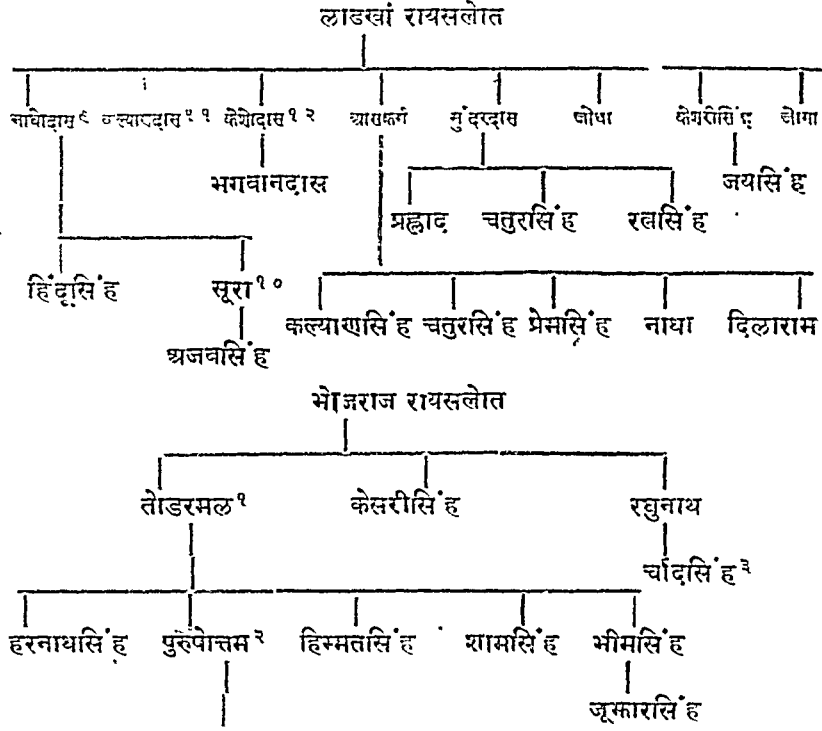
(६) महाराजा जसवंतसिंह का नौकर ३०००) का पट्टा।

(७) बादशाही चाकर।

(८) बादशाही चाकर

(९) सल्हा राजावत ने मारोठ में मारा।

(१०) राव इंद्रभाण ने मारा।

(११) भोजराज रायसलोत ने मारा सं० १६५३ में, बेटा नहीं।

(१२) एक नाई की स्त्री से आशनाई थी, इसलिये नाई ने उसे मार डाला।

(१) बड़ा कापालिक, खंडेले के पास उदयपुर में रहता, बादशाही चाकरी छुट गई, नाक बैठा हुआ था।

---
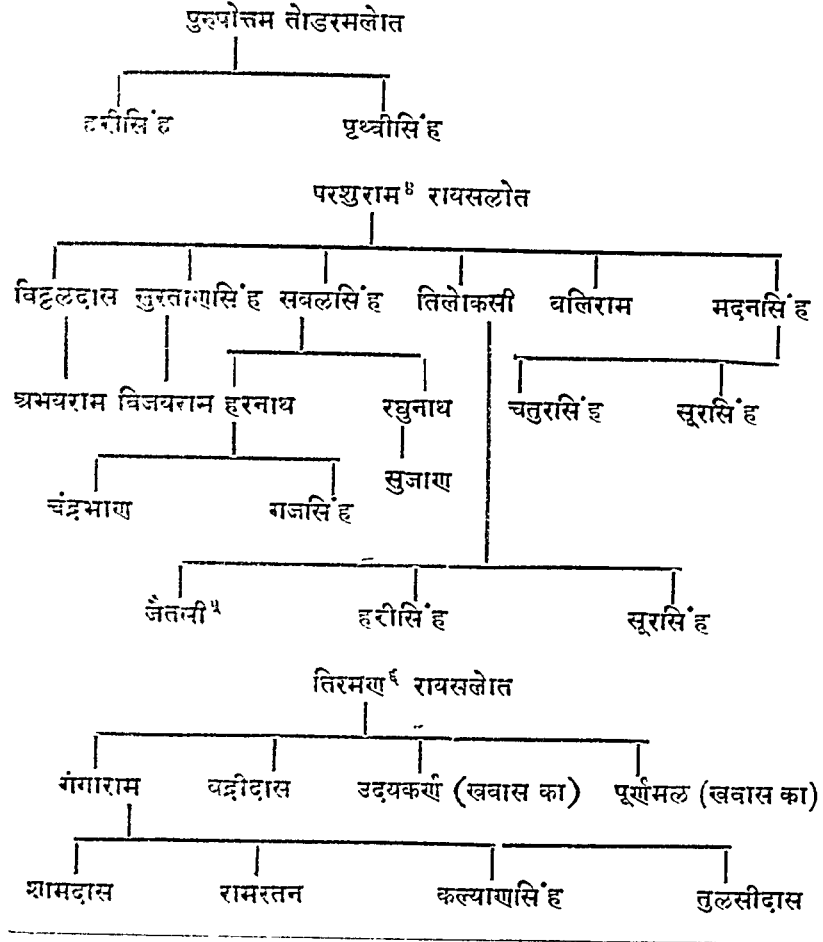
(२) जोधपुर नौकर रेवाड़ी के गाँव खोह में बसी थी ।

(३) जोधपुर का नौकर ।

(४) बड़गूजरों का दोहिता ।

(५) द्वारकादास के साथ काम आया ।

(६) सं० १६६८ में राजा सूरसिंह (जोधपुर) खंडेले में तिरमण के यहाँ ब्याहा था, शेखावत राणी राजा के साथ सती हुई ।

ताजखाँ[७] रायसलोत—पुत्र—प्रयागदास[८] कीर्तिसिंह, मुक्तमणि[९]। कीर्तिसिंह के किशनसिंह। किशनसिंह के विजयसिंह।
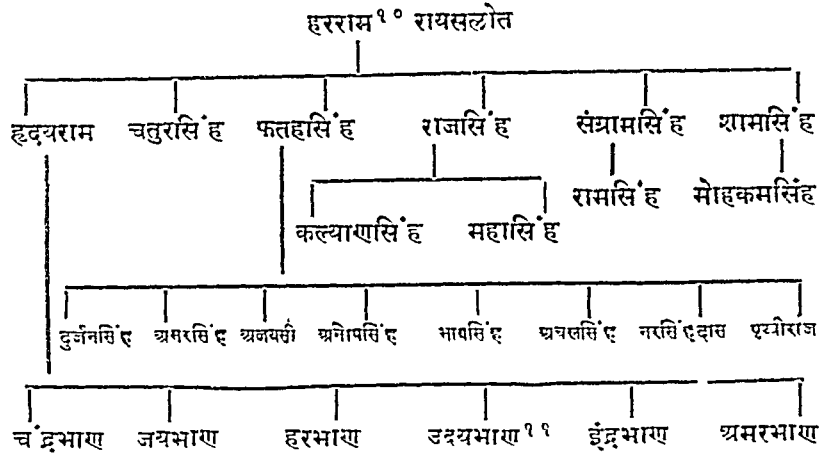
विहारीदास रायसलोत, निरवाणों का दोहिता मारोठ में काम आया।

वावूराय रायसलोत, जाटणी के पेट का जो सवालख देश की जाटनी थी। रायसल ने शाहपुरा जागीर में दिया था। डोडवाणे की मदद की, वहाँ वलभद्र नारायणदासोत ने आकर मारा।

वीरभाण रायसलोत, राठोडों का दोहिता।

कुशलसिंह रायसलोत सोंनगिरों का भानजा। उसके तीन पुत्र करमसेन, नरसिंहदास और उग्रसेन थे।

---

(७) वड़गूजरों का दोहिता।

(८) जोधपुर का नौकर, मेड़ते का गाँव ढाहा पट्टै।

(९) गाँव ढाहा पट्टै।

(१०) निरवाणों का दोहिता।

(११) जोधपुर का नौकर, रेवाड़ी के गाँव पट्टै।
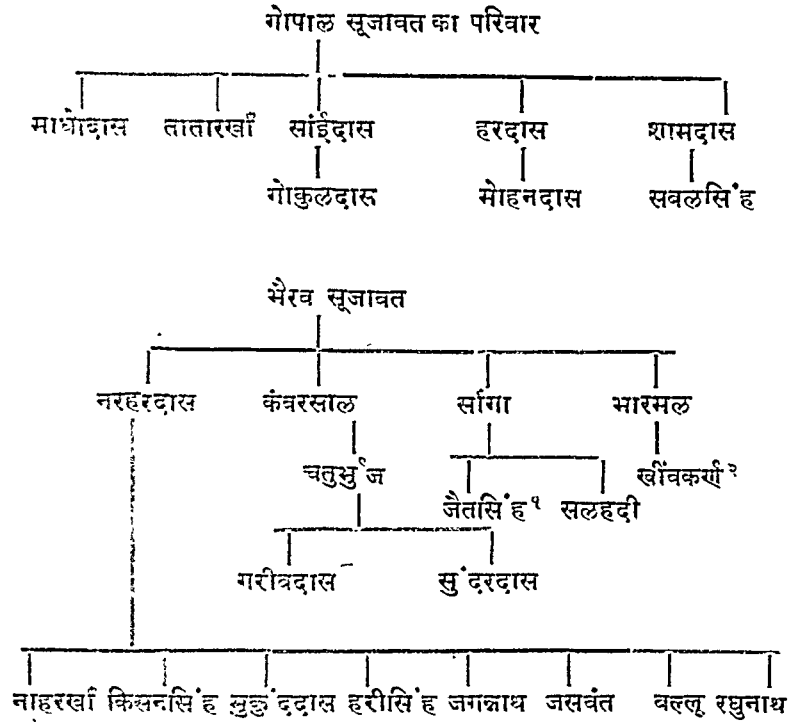
चाँदा सूजावत का पुत्र तातारखाँ[3]। तातारखाँ के मुकुंददास और फतहसिंह।

रायसल शेखावत के पुत्र जगमाल का बेटा भीम, भीम का दूदा।

तेजसी रायमलोत के बेटे—शक्तिसिंह, रामसिंह[4], मानसिंह। मानसिंह के बेटे नारायणदास और नरसिंह। नारायणदास के

---

(१) मोहबत खाँ की लड़ाई में मारा गया।

(२) मोहबत खाँ के पास नौकर था।

(३) राजा गिरधर के साथ काम आया।

(४) मोटे राजा का श्वसुर, जैतसिंह का नाना था।

वलभद्र[५] और दीपचंद। वलभद्र के बेटे—करणीदास, गोपीनाथ, रत्नसिंह, सूरसिंह और केसरीसिंह।

सहसमल रायमलोत का पुत्र करमसी। करमसी के बेटे दुर्जनसाल[१] और रामचंद्र[२]। रामचंद्र का धर्मचंद्र।

---

(५) खानेजहाँ की लड़ाई में छत्रसाल के साथ दक्षिण में बादशाही चाकरी में काम आया।

(१) राजा गजसिंह का नाना, सं० १६६४ में राणी सौभाग्य-देवी का विवाह अकवर बादशाह ने अपनी बेटी कहकर किया था।

(२) अकवर बादशाह ने दक्षिण में भेजा, वहाँ खानेखाना ने लड़ाई नहीं की, तब नवाब को कह दखनियों को युद्ध के वास्ते चढ़ा लाया और नवाब को मुकाबले पर ले गया। सहज सी लड़ाई हुई जिसमें सबसे पहले रामचंद्र ने अपना घोड़ा मैदान जंग में पटका और वीरता के साथ लड़कर मारा गया। साक्षी का गीत—

'असमर भुजधुण वधैलग अंवर, खत्रियां गुर जूझार खरै।
रूठै दिखण तणैसिर रामै, हमल हलाया सिखर है।''
''आठवाट कर ठाट एकठा, भुजपतसाही भारमलै।
अहमदनगर वीदधर ऊपर, कछवाहे चाजवी कलै।''

---

(३) द्वारकादास के समय खंडेले में मुख्य मुसाहब था।

(४) जोधपुर दर्बार का नौकर।

(५) राजा गिरधर के साथ काम आया।

(६) मारोठ में काम आया।

(७) बादशाही चाकर।

अभा शेखावत, पुत्र साँईदास। साँईदास का लूणा। लूणा के नाथा और िरोज।
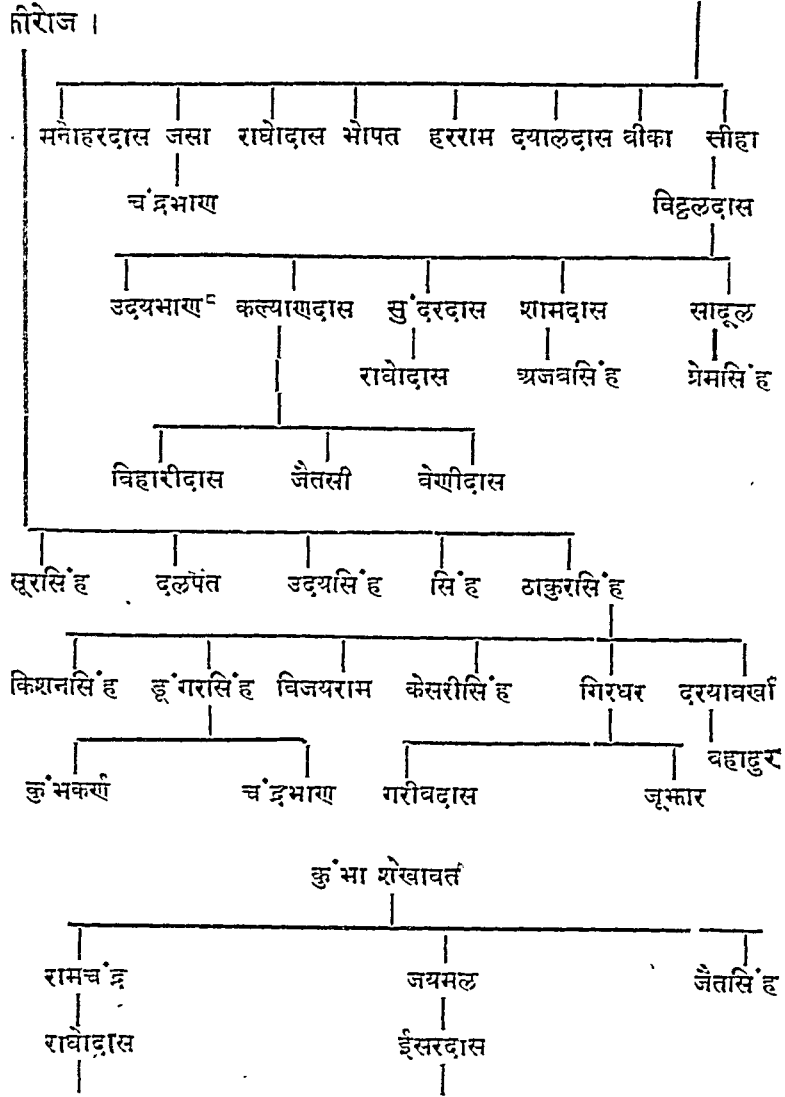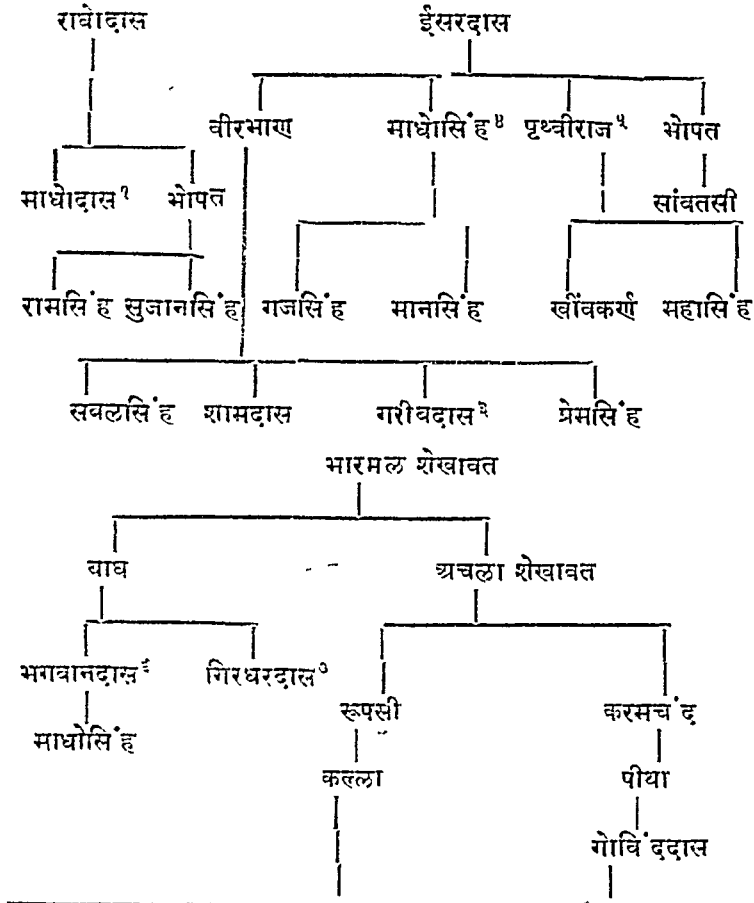
(८) बादशाही चाकर।

(१) जोधपुर दरबार का नौकर गाँव जगड़वास पट्टै।

(२) बादशाही चाकर।

(३) सुर्जन के साथ मारा गया।

(४) लड़ाई में मारा गया।

(५) कटार के तीन हाथ चलाकर एक शेर को मार लिया।

(६) अपने चाकर के हाथ से मारा गया।

(७) राजा गिरधर के साथ काम आया।
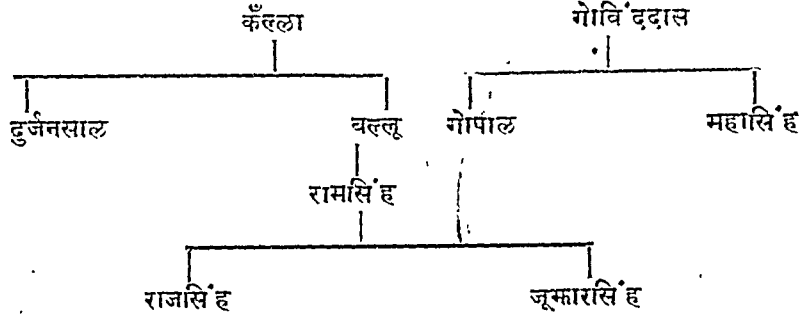
अखैराज खरहथवाला की संतान करणावत कछवाहे मनोहरपुर के प्रधान थे यहाँ तो थोड़े ही लिखे हैं परंतु कर्णावतों के २०० मनुष्य हैं।

कछवाहों का प्राचीन इतिहास अब तक अंधकार में है। नरवर में आने से पहले यह कहाँ थे इसका ठीक पता नहीं चलता और न नरवर में इनका राज्य स्थापन होने का निश्चित समय बतलाया जा सकता है। ग्वालियर तथा नरवर में कछवाहों के जो लेख मिले (इन लेखों के वास्ते देखो इंडियन ऐंटिक्वेरी जिल्द १५ पृ० ३३ व २०१ और अमेरिकन ओरिऐंटल सोसाइटी का जर्नल भाग ६ पृ० ५४२) उनसे एवं गुर्जर प्रतिहार महाराजाधिराज परमेश्वर मथनदेव के वि० सं० १०१६ माघ शुदि १३ के राजोरगढ़ के लेख से (एपिग्राफिआ इंडिका जिल्द ३ पृ० २६६) इतना तो स्पष्ट है कि ग्वालियर और ढुंढाड़ प्रांत पहले कन्नौज के प्रतिहार वंशी राजाओं के अधीन थे और संभव है कि कछवाहे उनके सामंतों में से हों। कन्नौज के महाराज्य में निर्बलता आने पर कच्छपघात वंशी राजा लक्ष्मण के पुत्र वज्रदामा ने सं० १०३४ के लगभग गाधिपुर के राजा से ग्वालियर लिया (वज्रदामा का लेख बंगाल एशियाटिक सोसाइटी का जर्नल जिल्द ३१ पृ० ३१३ में)। वज्रदामा के पीछे उसका छोटा पुत्र सुमित्र नरवर का अधिकारी रहा हो। सं० १२३२ ई० (वि० सं० १२८९) तक कछवाहों का राज ग्वालियर में होना पाया जाता है। वज्रदामा, मंगलराय, कीर्तिराय, मूलदेव, देवपाल, पद्मपाल और महिपाल, (वह देवपाल के दूसरे पुत्र सूर्यपाल का बेटा) महिपाल सं० ११६१
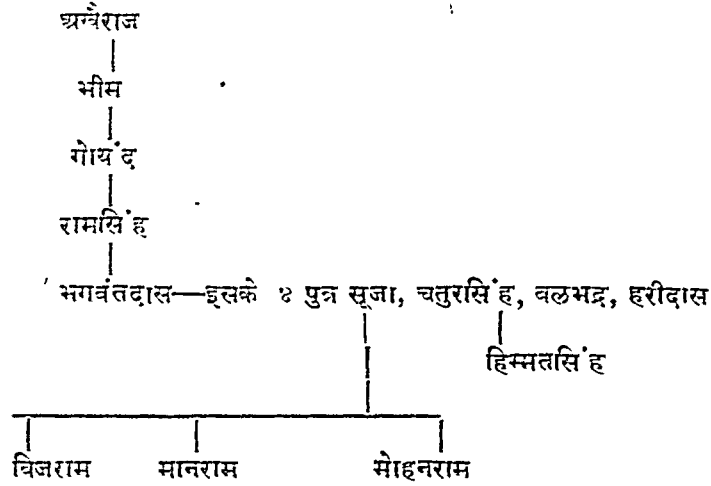
में ग्वालियर में राजा था। पीछे एक लेख में विजयपाल, सूरपाल, और अनंगपाल (सँ० १२१२) नाम मिलते हैं। ई० स० ११९६ (वि० सं० १२३२) में जब सुलतान कुतबुद्दीन ऐबक ने ग्वालियर फतह किया तब वहाँ बासिल के बेटे सोलंकपाल का राज होना, और ई० स० १२३२ (वि० सं० १२८९) में सुलतान शमशुद्दीन अलतिमश की चढ़ाई के समय देवपाल के राज करने का पता फिरिश्ता आदि फारसी तवारीखों से लगता है। नरवर का राज्य कछवाहों से शायद चौहानों ने लिया हो, क्योंकि तेरहवीं शताब्दी के अंत में नरवर में राजा चाहड़देव के सिक्के और लेख मिलने से यह अनुमान हो सकता है। (क्रानिकल्स आफ दी पठान किंगस आफ देहली और इंडियन ऐंटीक्वेरी जिल्द २२ पृ० ८१) लेख में चाहड़देव का वंश नहीं दिया, परंतु उसके सिक्के पर एक तरफ "असावरी श्री सामंतदेव" की छाप और दूसरी तरफ घोड़े-सवार है। यह अजमेर के चौहान राजाओं के सिक्कों की शैली है। चाहड़देव के वंश का राज्य नरवर में वि० सं० १३५५ तक रहा।

आँबेर के कछवाहों का मूल पुरुष सोढसिंह वज्रदामा के छोटे पुत्र सुमित्र के प्रपौत्र ईश्वरीसिंह (ख्यातों का ईशसिंह) का पुत्र था अतः बारहवीं शताब्दी के अंत में उसका राज्य ढुंढाड़ में स्थापित होना संभव है। यह प्रदेश पहले मीणों के अधिकार में था।

नं०	नैणसी की ख्यात	दूसरी ख्यात	टाड राजस्थान	दूसरी ख्यात नं० २ में दिए हुए मृत्यु संवत। इसमें और टाड राजस्थान में दिए हुए संवतों में कुछ अंतर है।
१	ईसरसिंह	०	०	
२	मोढदेव	०	०	
३	दूलहदेव	०	ढोला	
४	हणुमान	०	कांकल	
५	काकिलदेव	०	मेंडलराव	
६	नरदेव	०	हणुदेव	
७	जानड़देव	०	कुंतल	
८	पज्जून सामंत	०	पजून	
९	मलयसी	०	मलेसी	
१०	बीजल	बीजलदेव	बीजल	
११	राजदेव	राजदेव	राजदेव	
१२	कल्याण	कील्हण	कील्हण	
१३	राजा कुंतल	कुंतल	कुंतल	वि० सं० १३७४
१४	,, जवणसी	जूणसी	जूणसी	,, १४२३
१५	,, उदयकर्ण	उदयकर्ण	उदयकर्ण	,, १४४५
१६	,, नरसिंह	नरसिंह	नरसिंह	,, १४८५
१७	,, वणवीर	वणवीर	वणवीर	,, १४९६
१८	,, उद्धरण	उद्धरण	उद्धरण	,, १५२४
१९	,, चंद्रसेन	चंद्रसेन	चंद्रसेन	,, १५४६
२०	,, पृथ्वीराज	पृथ्वीराज	पृथ्वीराज	,, १५५६

दूसरा प्रकरण

राठोड़ वंश

शाखा—राजा धुंधमार के १३ पुत्र हुए जिनसे अलग अलग तेरह शाखाएं चलीं—

(१) पाटवी अभयराज ने अभयपुर बसाया उसके वंशज अभैपुरा कहलाए। (२) जयवंत जिसके जयवंता (३) बागल ने बगलाना बसाया, उसके वंशज बगलाना प्रसिद्ध हुए। (४) अहिराव ने अहोर-गढ़ कराया, उसकी संतान अहिराव कहलाई। (५) कुरहा ने करहेड़ा गढ़ कराया इससे करहा हुए। (६) जसचंद ने जलखेड़ पाटण बसाया उससे जलखेडिया हुए। (७) कमधज, तेरह शाखाओं का राव कहलाया। (८) चंदेल ने चंदेरी बसाई, इसके चंदेल कहलाए (९) अजवारा, पूर्व में अजैपुर बसाया, इससे अजबेरिया प्रसिद्ध हुए। (१०) सूर-देव ने सूरपुर बसाया, उसकी संतान सूरा। (११) धीर ने धीराबद बसाया, इसकी संतान धीरा। (१२) कपालदेव ने कमलपुर बसाया, इसके कपलिया कहलाए। (१३) खेमपाल, खैराबाद बसाया, इससे खैरूंदा हुए।

सूर्यवंश प्रसूत राठोड़ वंशावतंस महाराजाधिराज महाराजा श्री अनोपसिंहजी (बीकानेर) की वंशावली महाराजाधिराज महा-राजा श्री सूरतसिंहजी प्रति लिखाई:—

वंशावली—

श्री आदि नारायण	मरीचि	सूर्य
ब्रह्मा	कश्यप	श्राधदेव

इक्ष्वाकु
विकुक्षि
अनेना
विश्वगंध
इंद्र
युवनाश्व
वृहदाश्व
कुवलयाश्व
धुधर्मा दृढाश्व
हरियाश्व
निकुंभ
वरहणाश्व
कृपाश्व
सेनजित
युवनाश्व
मांधाता (चक्रवर्ती)
पुरुकुत्स
त्रिदस (त्रिदस्यु)
अनरण्य
हर्यश्व
प्रशव
त्रिवंधन
सत्यव्रत-हरिश्चंद
रोहितास
हरित

पंच
सुदेव
विजय
भरुक (रुरुक)
वृक
वाहुक
सगर
महायश
असमंजस
अंशुमान
दिलीप
भागीरथ
श्रुत
नाभ
सिंधुद्वीप
अयुताय
ऋतुपर्ण
सर्वकाम
सुदास
अश्मक
मूलक
दशरथ
एलवल
विश्वसह
खट्वांग

दीर्घवाहु
रघु
अज
दशरथ
रामचंद्र
कुश
अतिथ
निषध
नल
पुंडरीक
चेंमधुनी
देवानीक
अहीन
पारजात्र
वृहस्थल
अर्क
वज्रनाभ
सगण
व्रहत
हिरण्यनाभ
पुष्य
ध्रुवसिंधु
भव
सुदर्शन
अग्निवर्ण

राठोड़ वंश

सीघ्र [शीघ्र]
मरु
प्रसपन्न [प्रसुश्रुत]
सिंधु
अमर्पण
सहस्वान [महस्वान]
विश्वस्तक [विश्वसाह्व]
प्रसेनजित
तष्यक [तक्षक]
वृहद्बल
वृहद्रण
गुरुक्रिय [उरुक्रिय]
वत्सवृद्ध
प्रतिव्योम
भानु
वित्थक
वाहनीपत
सहदेव
वीर
वृहदश्व
भानुमान
प्रतीक
सुप्रतिकाम
मरुदेव
चत्र

पुष्य
अंतरिष
वृहद्भानु
वह [वर्हि]
क्रतुंजय
रणंजय
संजय
श्रीय [शाक्य]
सुहोर [शुद्धोदन]
वांगल [लांगल]
प्रसेनजित
चुद्रक
रुणक
सुरथ
सुमित्र
महिमंडलपालक
पदारथ
ज्ञानपति
तुंगनाथ
भरत
पुंजराज
बंभ
अजैचंद
अभैचंद
विजैचंद

जैचंद
वर्दाईसेन
सेतराम
सीहो
आसथान
धूहड़
रायपाल
कन्ह
जालणसी
छाड़ा
तीड़ा
सलखा
वीरमदेव
चूंडा
रिड़मल
जोधा
सांतल
सूजा
गांगा
मालदेव
चंद्रसेण
उदयसिंह
सूरसिंह
गजसिंह
जसवंतसिंह

अजीतसिंह　　　　विजयसिंह
वखतसिंह　　　　भीमसिंह

(मारवाड़ के राठोड़ों का मूल पुरुष) राव सीहा वा सिंहसेन कन्नौज से यात्रा के वास्ते द्वारिका चला। इसने गोत्रहत्या वहुत की थी, पीछे मन विरक्त हुआ तो अपने पुत्र को राजपाट सौंप कापड़ो (जोगियों का एक फिर्का) का भेप धारण कर साथ में १०१ राजपूत ठाकुर आदि ले पैदल ही पयान किया। एक एक कोस पर सौ सौ गऊ दान करता और मार्ग में कूप वापियों के समीप ठहरता गुजरात में पहुँचा, जहाँ चावड़े व सोलंकी राज करते थे और उनकी राजधानी पाटण (अणहिलवाड़ा) थी। उस वक्त सिंध में मारू लाखाजाम राजा था, जिसके और चावड़ों के बीच पृथ्वी के वास्ते झगड़ा चल रहा था। इसके अतिरिक्त लाखा ने अपने वहनोई राखाइत (सोलंकी राज का पुत्र मूलराज सोलंकी का छोटा भाई) के पिता को जो उसके पास रहता था एक आम का वृत्त काट डालने के लिए मार डाला था, अतएव सोलंकियों के साथ भी उसका वैर बँधा। चावड़ों और लाखा के दर्मियान जब युद्ध होवे तब ही लाखा की जय और चावड़ों की पराजय हो जावे। राव सीहाजी का डेरा पाटण हुआ। लाखा को इष्ट देवी का और चावड़ों को खेत्रपाल (भैरव) का; सो प्रबल देवी के संमुख निर्बल खेत्रपाल का वल काम न देवे, और इसी से लाखा जीत जावे। एक रात चावड़े राजा व मूलराज को खेत्रपाल ने स्वप्न में आकर कहा कि कनवज्ज का धणी राव सीहा यहाँ आया हुआ है, उसको सदाशिव का वरदान है। तुम उससे जाकर मिलो, जिससे अपने वैर का बदला ले सको। लाखा उसी के हाथ से मरेगा। तब चावड़े एकत्र हो राव सीहाजी के पास आये। गोठ जीमने की विनती की। रावजी ने भी उसको

स्वीकार किया। चावड़ों ने बड़ी बड़ी तैयारियाँ कीं, रावजी जीमने पधारे। मूलराज की माता ने अपने कुटुंब की १५, १६, १७ वर्ष की बालविधवा वधुओं को समझाकर कहा कि रावजी यहाँ जीमने आवें तब तुम परोसने के वास्ते तकारियाँ ला लाकर मेरे आगे धरती जाना। रावजी इसकी हकीकत पूछेंगे तब मैं सारी कथा उनको सुना दूँगी। जब रावजी आये तो मूलराज की माता ने कहलाया कि साथ के और सर्दार तो बाहर रसोड़े में जीमेंगे, परंतु रावजी को मैं अपने हाथों से जिमाऊँगी। तब राव सीहाजी अंतःपुर में पधारे, आसन दिया गया, और आप जीमने विराजे। संकेतानुसार वही बालविधवाएँ ला लाकर सब सामग्री रखने लगीं। रावजी ने मूल-राज की माता से पूछा कि इतनी बालवधुओं के विधवा हो जाने का कारण क्या है? उसने कहा महाराज! लाखा फूलाणी के और हमारे परस्पर शत्रुता है और इनके पतियों को लाखा ने मारे हैं इसी लिए ये विधवा हो गई हैं। जब जब लाखा के और हमारे युद्ध होता तब तब जीत उसी की होती है। लड़ाइयाँ एक वर्ष में दो बार हो जाती हैं। अब आपका पधारना हुआ है तो आप हमारी सहायता कीजिये। रावजी ने उत्तर दिया, तुम फौज इकट्ठी करो और लाखा को कहला दो कि तैयार हो जा, हम आते हैं। ऐसा कहकर रावजी द्वारिका को सिधारे। रणछोड़जी के दर्शन कर गोमती में स्नान किया, बहुत सा दान दिया, एक मास वहाँ ठहरे और फिर लौटकर पाटण पहुँचे। सोलंकियों और चावड़ों ने अगवानी कर नारियल झिलाये और बड़े हर्ष उत्साह से उन्हें नगर में लिवा लाये। रावजी के आज्ञानुसार सेना इकट्ठी कर ही रक्खी थी, तुरंत लाखा के पास दूत भेज युद्ध की घोषणा पहुँचाई। सुनते ही वह भी सज-सजाकर लड़ने को तैयार हो गया, परन्तु उसको आश्चर्य इस बात

का हुआ कि पहले जब जब युद्ध हुआ तो चावड़े सदा भागते ही रहे और अबकी बार इतने जोर से बढ़े चले आते हैं। इसका कारण पूछने पर उसके गुप्तचरों ने निवेदन किया कि इस बार राव सीहाजी कनवजिया कटक के साथ हैं। तब तो लाखा को भी विचार पड़ा, धीरे धीरे कूच मुकाम करने लगा।

एक दिन लाखा का भानजा राखायत रजपूत सरदारों के साथ बैठा हुआ था तब किसी ने उससे पूछा कि भाणेजजी प्रभात को जब तुम्हारे मामा लाखाजी उठते हैं तब उनका मुख उतरा हुआ रहता है इसका क्या कारण है? आज तो इन पर परमेश्वर की कृपा है, राज बरकरार, बहुत सी धरती के सरदार और युद्ध के जीतन-हार हैं, फिर उदास क्यों रहें? राखायत बोला, इसकी खबर मुझको नहीं। तब सबके सब बोल उठे कि तुम इस बात का भेद लाखाजी से पूछो। राखायत ने कहा कि यदि मैं इस रहस्य को पूछूँ और मामाजी क्रोध में आकर मुझको मरवा दें तो फिर छुड़ावे कौन? सरदारों ने उत्तर दिया कि हम सब तुम्हारे साथ हैं। यदि तुमको निकाल दें तो हम भी साथ ही निकल चलेंगे और जो कदापि मरवाने की आज्ञा दें तो तुम्हारे साथ मरेंगे, परंतु तुम इसका भेद लो। तब अवसर पाकर एक दिन राखायत ने लाखा से पूछा। (आगे सारी वही बात है जो पहले सोलंकी मूलराज के वर्णन में कह आये हैं कि लाखा ने राखायत को समुद्र में भेजा, वहाँ उसने महल देखे और अप्सरा आदि मिलीं। वापस आकर वह लाखा के घोड़े पर चढ़ अपने भाई मूलराज को लाखा का सब भेद दे आया और मूलराज ने लाखा पर चढ़ाई की)।

मूलराज के कटक के आने की खबर सुनकर राखायत ने लाखा से कहा मामाजी फौज आ पहुँची है तुम भी सवार होओ!

लाखा चढ़कर संमुख गया और कुल देवी का स्मरण किया। देवी ने प्रकट होकर कहा अब मेरे वस की वात नहीं, क्योंकि राजा सिंहसेन को [illegible]देवजी का वरदान है। इसके आगे मेरा जोर नहीं चलता है। तब लाखा ने कहा कि माता मृत्यु तो भली देना! कहा, "वह सुधार दूँगी, परंतु जय की आशा नहीं।" दोनों दल परस्पर भिड़े तब राखायत बोला कि मामाजी! मैंने आपका अन्न खाया है सो आज आपके सामने आपके शत्रु से लड़ूँगा, यह कहकर वह युद्ध करने लगा और ऐसी तलवार बजाई कि प्रत्येक शत्रु के संमुख राखायत लड़ता हुआ दीख पड़ता था। अंत में लाखा और राखायत दोनों काम आये। युद्ध समाप्त होने पर राव सीहाजी ने तो पाटण की ओर प्रस्थान किया और लाखा के अंतःपुर की स्त्रियाँ खेत में आकर क्या देखती हैं कि लाखा निपट घायल हुआ खेत में पड़ा है और पास ही राखायत भी पड़ा सिसकता है। राखायत को देखकर लाखा की माता को क्रोध आया और कहने लगी कि यह हरामखोर यहाँ काहे को पड़ा है, इसको दूर करो। उस वक्त लाखा ने कहा कि माता! राखायत हरामखोर नहीं, स्वामिधर्मी है। देखो यह गिद्ध जो पड़ा है, मेरे मुख पर आन बैठा था और मेरी आँख निकालने ही को था कि राखायत ने उसको देखा; उसने अपना पल काटकर गिद्ध को दिया, नहीं तो वह मेरी आँख निकाल ही लेता और मैं तुम्हारा मुख देखने न पाता। अब राखायत को मेरे पास लाओ! मैं इसके सिर पर हाथ फेरूँगा तब इसका जीव मुक्त होवेगा। उस समय तक राखायत के प्राण भी निकले न थे। उसको उठाकर लाखा के पास ले गये। ज्योंही लाखा ने उसके मस्तक पर हाथ फेरा कि तत्काल उसके प्राणपखेरू उड़ गए और फिर लाखा की आत्मा भी मुक्त हुई। रानियाँ अपने पति के साथ सती हुईं। लाखा

स्वर्गलोक पहुँचा और राखायत ने भी वहीं जा डेरा किया। ऊँचे रत्नमय कंगूरोंवाले सुवर्ण के महलों में तो लाखा का निवास और नीचे सुवर्ण के कंगूरेवाले चाँदी के महल में राखायत का अवास था। एक दिन लाखा ऊँचे महल झरोखे में बैठा था कि राखायत ने उधर दृष्टि दी और मन में कुछ उदासी लाया। लाखा पूछने लगा कि भानजे उदास क्यों हुआ? उत्तर दिया कि मामाजी! मैंने यह महल पाने के लिए परिश्रम तो बहुत ही किया, परन्तु हाथ न आया। लाखाजी कहने लगे भानेज! कहीं दौड़ने से भी यह स्थल मिलता है। सोरठा—

परसिर पद महि जोय जे विह विहवै अप्पियो।
लिखियो लाभै लोय पर लिखियो लाभै नहीं॥

(जैसा विधाता ने रचा वैसा ही होता है अर्थात् सिर ऊपर और पाँव नीचे रहते हैं अपने कर्म का लिखा मिलता है, पराये के कर्म का [फल] नहीं मिलता)।

पाटण में आकर चावड़ों ने राव सीहाजी को (अपनी बहन या बेटी) व्याह दी। रावजी उनको संतोष देकर कन्नौज गये, राणी चावड़ी का सुखपाल भी साथ ही था। वहाँ सुखपूर्वक राज्य करने लगे। एक रात राणी चावड़ी को ऐसा स्वप्न आया कि तीन नाहर राणी के पास आये और उसका पेट चीर आँतें निकाल पृथक् पृथक् लेकर पहाड़ पर चढ़ गये। यह देखते ही राणी जागी और रावजी को जाकर अपना स्वप्न सुनाया। सुनते ही रावजी ने राणी की पीठ पर ताजियाना (चाबुक) चलाया। राणी उदास होकर बैठ गई, नींद न आई, इतने में दिन निकल आया; तब रावजी बोले कि चावड़ी! रीस मत कर! मैंने यह चाबुक तुझे इसी वास्ते मारा था कि तुझको फिर नींद न आवे क्योंकि स्वप्न देखकर फिर सो जाने से स्वप्न का

फल नष्ट हो जाता है। तेरे तीन पुत्र सिंह समान बलवान् होवेंगे, बहुत सी धरती जीतेंगे और उनके वंश की बहुत वृद्धि होवेगी। यह सुनकर चावडी बहुत प्रसन्न हुई। समय समय के अंतर से उसने महातेजस्वी और पराक्रमी तीन पुत्र प्रसव किये। जब कुँवर कुछ सयाने हुए तो राव सीहाजी देवगति से देवलोक पहुँचे, राज्य टीकेत कुँवर को मिला, तब चावड़ी अपने तीनों पुत्रों को लेकर अपने पीहर जा रही। काल पाकर वे जवान हुए और चौगान खेलने को जाने लगे। एक दिन खेलते खेलते उनकी गेंद किसी बुढ़िया के पाँवों में जा गिरी जो वहाँ कंडे चुन रही थी। एक कुँवर गेंद लेने आया और बुढ़िया से कहा कि इसे उठा दे। बुढ़िया बोली, मेरे सिर पर भार है तुम ही उतरकर ले लो, तब कुँवर ने बुढ़िया को धक्का मारा, जिससे उसके सब कंडे बिखर गये। क्रोध कर बुढ़िया कहने लगी कि "हमारे ही घर में पले पुसे और हम ही को धक्के मारते हो, मामा का माल खाकर मोटे हुए और उसी की प्रजा को सताते हो, तुम्हारे तो कोई ठौर है नहीं"। ऐसे ताने सुनकर कुँवर घर आये। माता से पूछा कि हमारा पिता कौन है? हमारा देश कहाँ और हम किसके यहाँ पलते हैं? लोग कहते हैं कि हमारे कोई ठौर है ही नहीं। माता बोली कि बेटा! लोग झक मारते हैं। कुँवरों ने न माना, और आग्रहपूर्वक फिर वही प्रश्न पूछे, तब माता ने कहा कि तुम अपने नाना के घर पलते हो। कुँवर सीधे मामा के पास गये और बिदा माँगी। मामा ने बहुत कुछ समझाया, परंतु आस्थान न रहा। बिदा होकर ईडर आया और वहाँ से चलकर पाली गाँव में आन डेरा किया। वहाँ कन्ह नाम का मेर राजा था, वह प्रजा से कर भी लेता और अनीति भी करता था अर्थात् जितनी कुमारी कन्या उसके राज्य में ब्याही जातीं उनको पहले तीन दिन

तक अपने पास रख लेता था। आस्थान एक ब्राह्मण के घर में ठहरा हुआ था, उस ब्राह्मण की कन्या जवान हो गई, परंतु उसका विवाह न हुआ। उसे देखकर आस्थान ने ब्राह्मण से पूछा कि क्या यह विधवा है। ब्राह्मण ने कहा—महाराज! नहीं, यह तो कुमारी है। कहा, इसका क्या कारण! उत्तर दिया कि यहाँ ऐसी अब अनीति चल रही है। कुँवर ने प्रश्न किया कि मेर के पास कटक कितना है? कहा महाराज! बीस एक हजार पैदल होंगे। कुँवर ने कहा कि अपनी बेटी का विवाह कर! मेर से मैं समझ लूँगा। ब्राह्मण ने कन्या परणाई, फेरे हो चुकते ही कान्हा के मनुष्य उसको गाड़ी में बिठाकर ले चले। आस्थान अपनी कोठरी में गया तब वह ब्राह्मण-कन्या भी चुपके से भागकर वहाँ चली आई। कान्हा के मनुष्यों ने बलपूर्वक उसको पकड़ना चाहा परंतु राठोड़ों ने उन्हें मार भगाये। जब यह समाचार कान्हा ने सुने तो वह चढ़कर पाली आया। आस्थान बाहर निकल गया, कान्हा ने पाली लूटी और उसके साथवाले लूट का माल लेकर चलते हुए, उसके पास थोड़े से मनुष्य रह गये, तब आस्थान ५०० साथियों समेत उसपर आन पड़ा। लड़ाई हुई जिसमें कान्हा मारा गया। फिर लुटेरों का पीछा किया। जितने मेर मिले उनको मारते गये, माल सब छुड़ा लिया और ८४ गाँव के साथ पाली फतह की। साथ ही भाद्राजण की चौरासी भी जा दबाई।

उस वक्त खेड़ में गोहिल राज करते थे। उनका प्रधान एक डाभी राजपूत था। किसी कारण से प्रधान और उसके भाई बन्धु गोहिलों से अप्रसन्न होकर खेड़ से चल दिये और आस्थान का राज्य बढ़ता हुआ देखकर मन में विचारा कि इनसे गोहिलों को मरवावें। यह ठान डाभियों ने आस्थान के ढिग आय सारी कथा

सुनाकर कहा, हम तुम्हें खेड़ का राज्य दिलाते हैं। पूछा किस तरह? कहा हम जब तुमको सूचना करावें तब तुरन्त आकर चूक करना। इधर गोहिलों ने भी मिलकर विचार किया कि इन राठोड़ों का पड़ोस में आकर राजथान बाँधना दुखदायी है, इसलिए किसी प्रकार इनको यहाँ से अलग करना चाहिए। यह मंतव्य ठहरा कि भला आदमी भेज उनसे मैत्री बढ़ाना और फिर दावत के बहाने उनको यहाँ बुलाना चाहिए। ऐसा मत ठान डाभी को भेजा और समझा दिया कि हमारी ओर से खेड़ आने की गाढ़ी मनुहार करना और गोठ जीमने का निमन्त्रण भी देना, जो स्वीकारें तो पीछे सूचना भेजने की तैयारी करावें। डाभी जाकर आस्थान से मिला, सब बात निश्चित कर ली, और गोहिलों को कहला दिया कि गोठ की तैयारी करो, रावजी आवेंगे। डाभी खेड़ को गया और गोहिलों से कहा कि हजार हो तो भी हम तुम्हारे चाकर हैं, तुम्हारी बराबरी नहीं कर सकते, रावजी आते हैं सो दाहिनी तर्फ आप लोग रहना, और बाईं ओर हम खड़े रहेंगे, ताकि वे आते ही पहले तुमसे मिलें। गोहिलों को भी यह बात भली लगी। आस्थानजी आये। डाभी लेने को आगे गया, और कहा कि "डाभी डावै गोहिल जीमणै"। यह सुनकर राठोड़ गोहिलों पर जा पड़े, और सबको मार गिराया और खेड़ का राज्य लेकर वहीं राजधानी स्थापित की। इसी से खेड़ेचा प्रसिद्ध हुए*।

* इस कहानी में सत्यता कहाँ तक है इसकी जांच ऐतिहासिक प्रमाणों से की जाय तो मूलराज सोलंकी का समय, वि० सं० १०१७ से १०५२ तक उसके दानपत्रों से निश्चित है, और राठोड़ों की ख्यातों के अनुसार भी सीहाजी ने वि० सं० १२३० के लगभग राज लिया—हालाँ कि एक लेख स्वयं सीहा का अभी मारवाड़ के गांव में मिला जिससे वि० सं० १३३० में उसका देहांत होना पाया जाता है। अब विचारने की बात है कि प्रथम तो वि० सं० १२५२ में राजा जयचंद राठोड़ ही को सुलतान शहाबुद्दीन गोरी

राव सीहा की एक रानी सोलंकनी प्रसिद्ध राव जयसिंह की पुत्री थी, जिसके पेट से आस्थान ने जन्म लिया। दूसरी रानी चावड़ी सोभाग दे मूलराज वागनाथोत की बेटी, जिसके दो पुत्र ऊदड़ और सोनिंग थे*।

बात सेतराम वर्दाईसेनोत की—

राजा वर्दाईसेन कन्नौज में राज्य करता था। उसका पुत्र सेतराम बड़ा सर्दार था, परंतु वह तीन पैसे भर अमल रोज दिन में तीन बार खाता था। किसी ने यह बात राजा के कान तक पहुँचाई और राजा ने कुँवर को बुलाकर पूछा कि कितनी अफीम रोज खाते हो? पहले तो उसने कहा कि मैं नहीं खाता, परंतु जब राजा ने अपनी आण दिलाकर सत्य बात कह देने का आग्रह किया तो कहा कि तीन पैसे भर रोज खाता हूँ। राजा ने अपने सन्मुख अमल मँगवाई

ने युद्ध में मार कन्नौज लिया, जिसके पीछे भी जयचंद के पुत्र हरिश्चंद्र का राज्य आस पास के प्रदेश में रहने का पता हमको उसके मछली शहर के दानपत्र से लगता है। इस अवस्था में कन्नौज छूटने पर जयचंद के पुत्र का मारवाड़ में आना तो बन नहीं सकता। रही मूलराज और लाखा की बात, यह तो निरी ऊटपटांग ही दीखती है। भला करीब डेढ़ सौ वर्ष पूर्व सीहाजी मूलराज की सहायता कर लाखा फूलाणी को कैसे मार सकते थे। मूलराज ने अपने मामा चावड़े सामंतराज को मारकर गुजरात का राज लिया और फिर सोरठ के राजा ग्रहरिपु पर चढ़ाई की थी, जिसकी मदद पर लाखा फूलाणी आया था। जब चावड़ों का राज ही न रहा तो चावड़े लाखा से लड़े कहाँ से? गोहिलों की ख्यात से भी यही पाया जाता है कि जयचंद राठोड़ के मरने पर उसके पोते सीहाजी ने उन्हें खेड़धर से निकाला था।

* इस ख्यात में एक जगह तो राव सीहा को मूलराज सोलंकी का समकालीन कहा है और यहाँ उसकी रानी को सिद्धराज जयसिंह की पुत्री बतलाया है जिसका शासनकाल सं० ११५० से सं० ११९९ तक निश्चित है। लाखा फूलाणी को मारना और सिद्धराज की बेटी ब्याहना सही नहीं।

और सत्यासत्य की जाँच के लिए कुँवर को खिलाई। जब देखा कि वह सन्मुख ऐसा अमलदार है तो राजा कहने लगा कि जो मनुष्य इतनी अमल खावे वह क्या पुरुषार्थ कर सकता है। कुँवर बोला, कोई कार्य्य बतलाकर परीक्षा कर लीजिये। यदि इतने पर भी आप मुझे अयोग्य समझते हों तो मैं कैसा गले ही बँधता हूँ, मैं भी कहीं कमा ही खाऊँगा। राजा को कुँवर के वचन सुन कुछ क्रोध आया, कहा—अब तक तो कुछ कमाया है नहीं, अब कमाओगे तो देखेंगे। कुँवर अपने स्थान पर आया और रात्रि को शस्त्र बाँध, घोड़े पर चढ़ चल निकला।

एक राजा के नगर में जाकर वह उसकी सेवा में नियुक्त हुआ। एक दिन वह राजा शिकार को गया, और जब आखेट कर श्रम निवारण के वास्ते वृक्ष की ठंडी छाया में बैठा था तब एक राक्षस मृग का रूप धर राजा के पास से निकला। राजा ने उसे मार लेने की आज्ञा दी। वहाँ उसके दूसरे सर्दार तो बैठे ही रहे, परंतु सेतराम तुरंत सवार होकर मृग के पीछे पड़ा। बहुत दूर निकल गया तब राक्षस ने भैंसे का रूप धर लिया और कुँवर के सम्मुख दौड़ा। सेतराम भी सँभलकर वार करने को तयार हो रहा, कि राक्षस तत्काल अपने रूप में प्रकट हुआ और कहने लगा कि हे बलवंड राजपूत तू वर्दाईसेन का पुत्र होकर इस राजा के पास क्यों रहा? यह तो किसी काम का नहीं है, अब तू मुझे १०० बकरे, १०० भैंसे और सौ मन मद की मनुहार दे दे! सेतराम बोला—कल दूँगा। इतना कह पीछा फिरा राजा ने पूछा तो कह दिया कि हरिण हाथ न आया। दूसरे दिन अर्ध रात्रि को बलि का सामान साथ ले सेतराम उस राक्षस के स्थान पर पहुँचा और उसको तृप्त किया। संतुष्ट होकर राक्षस कहने लगा कि सेतराम!

मैं तुझको असंख्य द्रव्य दिखाये देता हूँ। कुँवर ने उत्तर दिया कि मुझे द्रव्य की आवश्यकता नहीं वह तो मेरे पास भी बहुत है, परंतु ऐसी वस्तु दे जिससे मेरा यश बढ़े! राक्षस ने कहा—"तेरे में पाँच हाथियों का बल होवेगा!"

कुछ दिनों पीछे कुँवर उस राजा की सेवा छोड़ किसी दूसरे नरेश के पास जा रहा। वहाँ चार रुपये रोज के मिलें, परंतु राजा उसका आदर बहुत करै. सेतराम जब दर्बार में जाता तो अपनी बर्छी साथ लिये जाता। जब राजा कहे बैठो तो बर्छी भूमि में गाड़ देवे, वह फर्श चीरकर आँगन में हाथ भर घुस जावे यह देख राजा व रानी हैरान हुए। वह रोज भिन्न-भिन्न स्थान में बर्छी गाड़ता, जिससे आँगन में जगह जगह खड्डे पड़ गये। एक बार रानी ने लोहे के सात तवे बनवाये। एक एक तवा सवा सवा मन का था, और जहाँ सेतराम आकर बैठता वहाँ गच में गड़वा दिये व ऊपर फर्श बिछाया। प्रभात को सेतराम आया, बर्छी गाड़ी तो भूमि कुछ कड़ी सी लगी, तब थोड़ा जोर किया, सो दो हाथ भूमि में धँस गई। उसने सोचा कि आज तो बर्छी ने बल कराया। रानी ने विचार किया गाड़ तो दी है, परंतु अब निकालेगा कैसे। चलने के समय कुँवर ने बर्छी खींची तो सातों तवे भी बींधे हुए साथ ही निकल आये और आँगन भी खुद गया। उसका यह बल देख राजा बहुत प्रसन्न हुआ। एक दिन सेतराम को साथ ले नरपति मृगया को गया, सेतराम ने एक शूकर के पीछे घोड़ा लगा दिया, दूर तक साथ लगा चला गया, और हाथियों के वन में जा पड़ा, दिन छिप गया, अंधकार छाने लगा, तब सेतराम एक वृक्ष पर चढ़कर बैठ गया, घोड़े को तले बाँध दिया। एक सिंह ने आकर उसे भक्षण किया। प्रभात हुआ, दिवाकर की किरणों ने चारों ओर

प्रकाश फैलाया। वह वृक्ष से नीचे उतरा, देखे तो घोड़े के अस्थि पड़े हुए हैं। आप था शरीर का भारी, पैदल चलने में कष्ट होता था, तब एक नारियल के झाड़ पर चढ़ बैठा, थोड़ी ही देर पीछे एक बड़ा हाथी उस झाड़ के नीचे आया, सेतराम उछलकर उस पर आ डटा। हाथी ने उसे नीचे गिराने का बहुत प्रयत्न किया और बड़ा ज़ोर लगाया, परंतु उसने दो एक कटार इस बल से मारे कि हाथी बिल्ली बन गया।

उस हाथी को लिये वह राजा के दर्बार में पहुँचा और अपना सारा वृत्तांत कह सुनाया, राजा बहुत ही प्रसन्न हुआ। उस राजा का एक भाई दूसरे नगर में राज्य करता था, उसका पुत्र विवाह कर अपनी नव वधू को लिये आ रहा था कि मार्ग में उस रानी की प्रकृति बिगड़ गई। पास ही एक नगर था। वहाँ आकर ठहरे और वैद्य को बुलाया। वहाँ के राजा का नाई वैद्य था, वह आया। कुँवर ने उसे ले जाकर अपनी स्त्री की नाड़ी दिखलाई। उसका हाथ देखते ही नापित को विस्मय हुआ और मन में कहने लगा कि "ओहो ऐसे हस्तकमलवाली रमणी तो रूप की राशि होवेगी" दवा बतलाकर घर आया। इस प्रकार एक मास उनको वहाँ बीत गया। रानी को आराम हुआ तब वैद्य को घोड़ा सिरोपाव विदा में दे आप कूच की तैयारी में लगा। नाई ने अपने स्वामी को जाकर सब कथा कह सुनाई, और उस रानी के रूप की इतनी प्रशंसा की कि राजा का दिल हाथ से जाता रहा। वह सवार होकर कुँवर के डेरे पर आया और बहुत मनुहार के साथ कहा कि आप हमारी मेहमानी जीमकर जाना। कुँवर ने भी उसको स्वीकार किया। तैयारी हुई, राजा ने ऐसा तेज़ मद्य मँगवाया कि जिसकी घूँट भरते ही अचेत हो जावे। फिर अपने नौकर चाकरों को

समझाकर कहा कि जब कुँवर यहाँ आवे और मद की मनुहार चले तब मैं कहूँगा कि "कुँवरजी एक प्याला और लो" बस यही संकेत है। सुनते ही तुरंत टूट पड़ना, और मार लेना। अब कुँवर अपने साथियों समेत गढ़ में गोठ जीमने आया। इन्होंने उसको मद्य पिलाकर छकाया, और साथवालों की भी वही दशा हुई, तब राजा ने सांकेतिक शब्द कहे कि "एक एक प्याला और फिरे"। यह सुनते ही राजा के मनुष्यों ने शपाशप तलवारें चलाकर कुँवर व उसके साथवालों को मार लिये, राजा कुँवर के डेरे पर पहुँचा और उसकी स्त्री को ले जाकर अपने महल में बिठा दिया। कुँवर के रहे सहे साथी प्राण लेकर भागे, और अपने राजा को आकर सारा हाल सुनाया, तब उसने साथ इकट्ठा किया, और अपने भाई से भी सहायता के लिये एक हजार सवार माँगे। भाई ने कहलाया कि चाहो तो हजार सवार भेज दूँ, और चाहो तो अकेले सेतराम को दूँ।

उसने सेतराम को बुलाया और साथ लेकर अपने पुत्र का वैर लेने को शत्रु के देश पर चढ़ाई कर उसका गढ़ जा घेरा। उसने भी गढ़ कोट सज खूब मुकाबला किया। एक वर्ष लड़ते बीत गया परंतु गढ़ टूटे नहीं, तब तो राजा ने निराश होकर सेतराम से पूछा कि अब क्या करना चाहिए। उसने उत्तर दिया कि मेरी सहायता पर बने रहो तो गढ़ के किवाड़ तो मैं तोड़े देता हूँ, तुम भीतर घुस जाना। यह सलाह कर वे सब दर्वाजे जा लगे। सेतराम ने कपाटों को जोर से धक्का मारा और वे टूट पड़े। राजा भीतर घुस पड़ा, शत्रु मारा गया और सेतराम भी घायल हुआ, गढ़ हाथ आया, तब राजा ने सेतराम की पीठ ठोककर कहा—"बड़े राठोर, जैसी वीरता तूने की वैसी कौन कर

सकता है ! अब मैं तुझे और तो क्या रीझ दूँ, अपनी बेटी तुझे व्याह देता हूँ।" देश आय, पुत्री का विवाह सेतराम के साथ कर, अपना आधा राज दहेज में दे दिया। एक मास तक तो सेतराम वहाँ रहा, फिर अपनी स्त्री को साथ लिये अपने स्वामी राजा के पास चला आया। उसने आदरपूर्वक उसको रख लिया। यहाँ एक बार एक भोमिया नाम के डोडिये ने आकर गौएँ घेरीं। ग्वालों ने आकर पुकार की कि १४० सवार साथ लिये भोमिया वित्त लिये जाता है। सुनते ही सेतराम अकेला घोड़े पर चढ़ दौड़ा और भोमिये को जा लिया। भोमिये ने कहा—"अरे रजपूत ! हथियार डाल दे और वापस चला जा !" सेतराम ने उत्तर दिया—यदि तुमको अपना प्राण प्यारा है तो वित्त और शस्त्र छोड़ दे और जीता जा, नहीं तो वार कर। भोमिये और उसके साथियों ने सात बीस तीर एक साथ चलाये सो सेतराम के लगे, युद्ध मचा। अंत में सेतराम ने भोमिये को मार लिया और उसके साथ के सवार भागे, सो कितनेक को तो तीरों से मार गिरांया और दूसरे शस्त्र छोड़ शरण में आये। उनकी मुश्कें बांध, हथियार सिर पर धर, गौवों समेत आगे कर ले चला। राजा भी पीछे से चढ़कर चला था जब उसने इनको आते देखे तो जाना कि भोमिया ने सेतराम को मारा और वही चला आता है, परंतु जब लोगों ने आगे बढ़कर देखा तो जान पड़ा कि सेतराम शत्रु को बांधे धन लिये आ रहा है। राजा ने बड़ी रीझ की, कई हाथी घोड़े दिये। कुछ समय पीछे सेतराम बड़े ठाट से अपनी रानी को लिये कन्नौज आया, पिता के चरणों पर गिरा, राजा वर्दाईसेन पुत्र को देख बहुत प्रसन्न हुआ और पिता पुत्र आनंद के साथ रहने लगे। कई वर्ष पीछे राजा वर्दाईसेन

का शरीर छूट गया और सेतराम पाट बैठकर कन्नौज का राज्य करने लगा और बड़ा प्रतापी राजा हुआ* ।

* यह कहानी भाटों की कपोलकल्पना ही है । भला, कन्नौज के महाराजा का पाटवी पुत्र, और अकेला निकलकर ४ रु० रोज पर कहीं जाकर नौकर होवे । तद्तिरिक्त जयचंद के पीछे तो कन्नोज पर राठोड़ों का अधिकार रहना सिद्ध ही नहीं होता, और यदि रहे भी हों तो जयचंद का पुत्र हरिश्चंद्र वहाँ का राजा होना चाहिए । क्या वर्दाईसेन उसी का विरुद था, या कोई और दूसरा था; और फिर सेतराम ने भी कन्नोज ही पर राज किया, तो सीहा से कन्नोज छुड़ाया किसने ? इसी ख्यात में दूसरी जगह जहां वंशावली दी है वहाँ वर्दाईसेन, और सेतराम का नाम नहीं है । वहाँ राव सीहा के पीछे आसथान का नाम है जिसके उछरंगादेवी इंदी (पड़िहार) वूड़म मेहराजोत की पुत्री से धूहड, धांधल और चाचग नाम के पुत्र हुए थे ।

तीसरा प्रकरण

राव खाड़ा—राणी वीराँ हुलणी का पुत्र टीडा

राव टीडा—इसकी एक राणी तारादे वाघ राणा वरजांगोत की बेटी थी, जिसके पेट से सलखा उत्पन्न हुआ था। राव टीडा और राव सामन्तसिंह सोनगिरा में मीनमाल के मुकाम पर युद्ध हुआ। सोनगिरे हार खाकर भागे और टीडा ने उनका पीछा किया। सोनगिरे राव की राणी सीसोदणी सुवली भी युद्ध में साथ थी। उसके रथ को राठोड़ों ने जा घेरा। टीडा भी आगे मार्ग रोक खड़ा हो गया और कहा कि रथ फेर दो। सीसोदणी बोली किस वास्ते? राव टीडा ने उत्तर दिया कि तुझको ले जाकर अपनी राणी बनाऊँगा। सीसोदणी ने कहा यह बात तो तब हो जब तुम मेरे पुत्र को पाटवी करो। राव ने इसको मंजूर किया और सीसोदणी को घर लाया, सुख हुआ और उसने पुत्र कान्हड़देव जाया। पाटवी वह हुआ। टीडा का बड़ा बेटा सलखा राज्य से वंचित होकर इधर उधर भटकता फिरा। राज्य की स्वामिनी सीसोदणी हुई जो वह करे सो प्रमाण। इसका एक पद कहते हैं—"सुवड़ीतीड़ै मिल गई, सो संवल सो सत्थ।" पीछे गुजरात के बादशाह की फौज मेहवे पर आई, झगड़ा हुआ। राव टीडा मारा गया और सलखा को कैद कर मुसलमान साथ ले गए। राव कान्हड़देव पाट बैठा। राठोड़ों ने सलखा को छुड़ाने के कई प्रयत्न किए परन्तु कुछ न चली। तब पुरोहित बाहड़ व बीजड़ नाम के दो भाई, जोगी का भेष धारण कर, कानों में मुद्रा पहन गुजरात गए। ये दोनों रूप, रंग और शरीर में भी अच्छे थे और वीणा बजाने में

भी प्रवीण थे। नगर में धूम पड़ गई कि दो सुंदर जोगी बहुत ही उत्तम बीनकार आये हैं। बादशाह ने भी सुना और उनको बुलाया। उन्होंने भी अपना गुण प्रकट कर शाह को रिझाया, तब बादशाह ने प्रसन्न होकर फर्माया कि जो चाहो सो मांगो! इन्होंने हाथ जोड़कर अर्ज़ की कि हमारा भोमिया यहाँ क़ैद में है उसे छोड़ने का हुक्म दिया जावे। बादशाह ने पूछा कौन सा भोमिया, कहा मेहवे का राव सलखा। बादशाह ने उसे छोड़ दिया। ये उसे लेकर मेहवे आये और कान्हड़देव ने उसे जागीर निकाल दी। कान्हड़देव का पुत्र त्रिभुवनसी हुआ जिससे ऊदावत राठोड़ों की शाखा चली*।

राव धूहड़—राणी द्रोपदा, चहुवाण लखनसेन प्रेमसेनोत की बेटी जिसके पेट से रायपाल, पीथड़, बावमार, कीरतपाल और लग-हथ नामी पुत्र हुए।

राव रायपाल—राणी रत्नादे भटियाणी रावल जेसल उसाकोत की बेटी, जिसके कान्ह, समरांग, लक्ष्मणसिंह और सहनपाल उत्पन्न हुए। (कर्नल टाड ने रावल जेसल का समय सं० १२०६ से १२२५ तक दिया है।)

राव कान्ह—राणी कल्याणदे देवड़ी सलखा लूँभावत की बेटी जिसके पुत्र जालणसी, विजयपाल।

राव जालणसी—राणी सरूपदे गोहिलाणी गोदा गजसिंहोत की बेटी, जिसका पुत्र छाड़ा।

* जालोर के राव सामंतसिंह का राव टीडा का समकालीन होना संभव है, परंतु मारवाड़ की ख्यात में तो राव टीडा का सिवाने के परमार राजा शीतल देव की सहायता में सुलतान अलाउद्दीन ख़िलजी देहली के पादशाह के मुकाबले में मारा जाना लिखा है। राव टीडा के समय में गुजरात में जुदी बादशाहत स्थापित नहीं हुई थी। हाँ सुलतान अलाउद्दीन ख़िलजी ने गुजरात बाघेलों से ले ज़रूर लिया था।

राव सलखा—राव सलखा के पुत्र नहीं था। एक दिन वह वन में शिकार के वास्ते गया और दूर जा निकला। साथ के लोग सब पीछे रह गये। जब तृषा लगी तो जल की खोज में इधर उधर फिरने लगा। एक स्थान पर उसने धूआँ निकलते देखा। जब वहाँ पहुँचा तो देखता क्या है कि एक तपस्वी बैठा तप कर रहा है। इसने उसके चरण छूकर अपना नाम ठाम बतलाया और कहा कि प्यासा हूँ, कृपा कर थोड़ा जल पिलाइए। तपस्वी ने कमंडल की तरफ इशारा करके कहा कि इसमें जल है, तू भी पी ले और अपने घोड़े को भी पिला। सलखा ने जलपान किया, घोड़े को भी पिलाया और देखा तो कमंडल ज्यों का त्यों भरा हुआ है, तब तो उसने जाना कि यह कोई सिद्ध है। हाथ जोड़ विनती करने लगा कि महाराज! आपकी कृपा से और तो सब आनंद है परंतु एक पुत्र नहीं है। जोगी ने अपनी झोली में से भस्म का एक गोला निकाला और ४ सुपारी। कहा यह भस्म और सुपारी राणी को खिलाना, उसके ४ पुत्र होंगे। पहले पुत्र का नाम मल्लिनाथ रखना। सलखा गोला और सुपारी ले घर आया, राणियों को खिलाया, गर्भ रहे और ४ बेटे हुए, तब जोगी के आज्ञानुसार ज्येष्ठ पुत्र का नाम मल्लिनाथ रक्खा, और उसे जोगी का भेष धारण कराके युवराज बनाया। राव सलखा के तीन राणियाँ थीं—एक जाणीदे, चहुवाण मुंजपाल हेमराजोत की बेटी जिसके पुत्र मल्लिनाथ, जैतमाल; दूसरी राणी जोइया धीरदेव की बेटी जोइयाणी, वीरमदेव की माता; तीसरी गोरज (गवरी) गोहिलाणी, जयमल गजसिंहोत की बेटी जिसका पुत्र सोभीत था।

कान्हड़देव मेहवे में राज्य करता था। सलखा (अपने भाई) को उसने सलखावासी एक गाँव जागीर में दिया, वह वहाँ रहता था। एक दिन वह अपनी राणी के वास्ते कुछ सामान खरीदने को मेहवे

आया और सौदा ले, एक राठी बेगारी के सिर पर मोट धर, घोड़े पर सवार हो लौटा। मार्ग में जाते क्या देखा कि ४ नाहर एक नाले के पास बैठे हुए अपना भक्ष्य खा रहे हैं। उनको देख सलखा घोड़े से नीचे उतर भूमि पर बैठ गया और राठी ने कहा कि मैं इस शकुन का फल पूछ आऊँ। वह भागा हुआ राव कान्हड़देव के पास आया और कहने लगा—सलखाजी आये थे। सौदा खरीद मेरे सिर पर गठड़ी धर अपने गुढ़े (गाँव) को जाते थे, तब यह शकुन हुए। जो राणी वह चीजें खावेगी उसका पुत्र राजा होगा। यह बात मैं तुमको चिताने के वास्ते आया हूँ। उन चीजों को सलखाजी सहित मँगवा लीजिए। कान्हड़देव ने अपने आदमी भेजे कि जाकर सलखाजी को ले आओ। इधर सलखा ने दो एक घड़ी तक तो राठी की राह देखी और उसे आता न देखकर गाँठ को अपने आगे घोड़े पर धर लिया और चलकर गाँव में पहुँच गया। कान्हड़देव के मनुष्य आये तो सलखा को वहां न पा पीछे लौट गये। पीछे से राठी भी सलखा के पास गया और कहने लगा "रावलै चार बेटे होंगे, वे इस धरती पर राज करेंगे और ठकुराई तुम्हारे घर में रहेगी"। "तुम्हारा कर दसों दिशा में फैलेगा और पुत्र तुम्हारे महापराक्रमी होंगे"। राठी से शकुन का ऐसा फल सुनकर सलखा अति हर्षित हुआ और उसे पगड़ी बँधवाई। दूसरे शकुनियों से भी पूछा तो उन्होंने भी वही बात कही। फिर मालाजी, वीरम, जैतमाल और सोभत चार पुत्र सलखा के हुए; माला और जैतमाल एक स्त्री से और वीरम तथा सोभत दूसरी राणियों से।

राव मालाजी वा मल्लिनाथ—जब माला बारह वर्ष का हुआ तब मेहवे राव कान्हड़दे के मुजरे को गया। राव ने भी उस पर बड़ी कृपा

दराई और कुछ रोजीना नियत कर दिया। साथ बिठाकर भोजन कराने लगा। माला भी राव की सेवा भली भाँति करता था। एक दिन राव कान्हड़दे शिकार को चढ़ा। उसके भाई बेटे और राजपूत भी सब साथ थे। माला भी चाकरी में था। जब राव मृगया कर पीछे फिरा तब माला ने राव का पल्ला पकड़ा और कहने लगा कि धरती का भाग माँगूँ, छोड़ूँ नहीं। राव ने बहुत समझाया, परंतु उसने एक न मानी। राजपूत सब दूर खड़े देखते रहे। कहने लगे कि काका भतीजे की लड़ाई में हम क्यों बीच में बोलें, अपने आप निपट लेंगे। राव कान्हड़दे बोला कि माला ! मैं तुझे तीसरा भाग दूँगा। तब माला ने कहा कि इस बात की अभी लिखत कर दो और राजपूतों की जमानत दिलवाओ तो छोड़ दूँगा। राव ने वहीं इकरार लिख अपने राजपूतों की साखी करा दी और फिर राठौड़ियों ने आकर माला के भाग की भूमि पर उसका अधिकार जमा दिया।

अब माला तन मन से राव कान्हड़देव की सेवा करता था। उसको बुद्धिमान् जानकर राव ने उसको अपना प्रधान बना दिया। तब राव के सर्दार कहने लगे कि जिस ठाकुर ने अपने भाई को प्रधान पद दिया उसका राज गया समझना। माला ने अपना अमल अच्छी तरह जमा लिया और राजकाज भी उत्तमता के साथ चलाने लगा, परंतु राव के राजपूत इस बात को पसंद न करें। एक बार दिल्ली के बादशाह ने देश में दंड डाला और मेहवे में भी उसके किरोड़ी दंड उगाहने को आये। राव कान्हड़देव ने अपने सब सर्दार भाई बेटों को एकत्र कर सलाह की कि अब क्या करना चाहिए। माला ने कहा कि दंड नहीं देंगे, करोड़ी को मारेंगे। यह मंत्र सब ठाकुरों के मन भाया। कहने लगे कि कैसे मारोगे? कहा इनको जुदा जुदा कर भिन्न भिन्न स्थानों में ले जाकर मारना चाहिए। यह

सलाह सबने मंजूर की। किरोड़ी को बुलाकर कहा कि तुम अपने आदमियों को गाँव गाँव में भेजो सो पैसे वसूल कर लावें; और निश्चय यह किया कि आज के पाँचवें दिन दोपहर को सबका काम बना दिया जावे। बादशाही नौकरों में जो सर्दार था उसको तो माला अपने साथ ले गया और दूसरे आदमी पृथक् पृथक् स्थानों में गये। दूसरे तो सभी सर्दारों ने बादशाही नौकरों को नियत दिन पर मरवा दिया, परंतु माला ने किरोड़ी की बड़ी खातिर की और पाँच दिन पीछे उसको चुपके से कहा कि राव कान्हड़देव ने तेरे सब आदमियों को मरवा डाला है परंतु मैं तो तुझे नहीं मारूँगा। किरोड़ी कहने लगा कि जो एक बार जीता जागता दिल्ली पहुँच जाऊँ तो मेहवे का मालिक तुझे करा दूँ। माला ने उससे बोल वचन ले अपने आदमी साथ दे दिल्ली पहुँचा दिया। उसने जाकर बादशाह की हजूर में पुकार की कि मेहवे के राव कान्हड़देव ने बादशाही सब नौकरों को, जो मेहवे गये थे, मरवा डाला और मैं माला की मदद से बचकर यहाँ तक पहुँचा हूँ। माला हजरत का खास बेटा, बड़ा योग्य और हजूर का ख़ैरख्वाह है। बादशाह ने माला को हजूर में बुलाया। वह भी बड़े ठाट से दिल्ली गया और दर्बार में हाजिर होकर कदमबोसी की; बादशाह ने नवाजिश कर वहाँ रावलाई का टीका उसके सिर पर लगाया। कुछ दिन वह दिल्ली में रहा, पीछे से राव कान्हड़देव का शरीर छूट गया और उसका पुत्र त्रिभुवन पाट बैठा, तब माला अपने घर लौट आया। त्रिभुवनसी ने अपने राजपूतों को इकट्ठा कर माला से युद्ध किया और घायल हुआ। उसकी सेना भाग गई। उसका विवाह ईंदे पड़िहारों के यहाँ हुआ था, इसलिए ससुरालवाले उसे ले गये और मरहम पट्टी कराने लगे। माला ने सोचा कि बादशाह ने टीका दिया तो क्या, जब

तक त्रिभुवनसी जीता है, राज मेरे हाथ लगने का नहीं। तब उसने त्रिभुवनसी के भाई पद्मसिंह को मिलाकर उसे यह दम दिया कि जो तू त्रिभुवनसी को मार डाले तो तुझे मेहवे की गद्दी पर बिठा दूँ। पद्मसिंह राज के लोभ से उसके झाँसे में आ गया। जाकर जो नीम के पट्टे उसके भाई के घावों पर बाँधे जाते थे उनमें संखिया मिलाया। घावों द्वारा विष शरीर में व्याप गया और त्रिभुवनसी काल प्राप्त हुआ। यह हत्या कर पद्मसिंह माला के पास आया और कहने लगा कि मुझे टीका दे। माला ने उत्तर दिया कि इस तरह टीका नहीं मिलता है, दो गाँव ले ले और बैठा हुआ खा। दो गाँव दे दिये। पद्मसिंह अपना सा मुँह लेकर चला आया। राव माला शुभ मुहूर्त दिखा मेहवे में आकर पाट बैठा और अपनी आण दुहाई फेरी। सब राजपूत भी उससे आकर मिल गये और उसकी ठकुराई दिन दिन बढ़ने लगी। राव वीदा ने मेहवा बसाया, पहले ये सिंड़ में रहते थे।

राव माला ने अपने भाई जैतमाल को सिवाड़ा जागीर में दिया और द्विमात भाई वीरम और सोमत भी मेहवे के पास गुढा बाँधकर रहने लगे। माला के पुत्र भी बड़े पराक्रमी हुए। वे वीरम को वहाँ रहने नहीं देते थे, तब वह जोइयों के पास जा रहा। (जोइये या यौद्धेय एक प्राचीन क्षत्रिय वंश है।)

रावल घड़सी भी माला की चाकरी में आन रहा और उसे अपनी कन्या विमलादे व्याह दी। जगमाल मालावत, रावल घड़सी और हेमा सीमालोत तीनों में बड़ा मेल था। राव माला ने दिल्ली और मांडू के बादशाहों की फौजों से युद्ध कर उन्हें पराजित किया। यह बड़ा सिद्ध हुआ और उसने अपने पाटवी पुत्र जगमाल के सिर पर हाथ धरकर उसे युवराज बनाया।

एक बार बर्सात के मौसम में जगमाल ने हेमा सीमालोत से कहा कि मेह बरसता है, पृथ्वी चारों ओर रमणीक बन रही है, देश सुहावना लगता है, यदि रावलजी आज्ञा दें तो हम कुछ काल के लिए थल में चलकर रहें। हेमा ने रावलजी से आज्ञा ली। कहा १५-२० दिन रहकर लौट आवेंगे। रावल वड़सी, हेमा और जगमाल आखेट के वास्ते निकले। ऐसी सघन वनी में जाकर ठहरे कि जहाँ जाल और खेजड़ों की झंगी को लिये सूर्य का प्रकाश भी न पहुँचता था। बस्ती आसपास न थी। वहीं शिकार खेलने लगे। एक दिन प्रभात के समय ये घोड़ों पर सवार हो वन-विहार को चले। कुछ दूर पर गये थे कि एक साठो (३० पुरुष गहरा) कूँवा नज़र आया। पुरुष तो उसको जोत जल निकाल गाँव में चले गये थे, केवल एक स्त्री रह गई थी। उसने लाव को समेट कंधे पर लटकाई। चरस भूण को बाँह में डाले और सिर पर पानी का भरा हुआ घड़ा धरे वह जा रही थी। इन्होंने उससे पूछा कि मेहवे का मार्ग किधर है तो उसने अपना हाथ लंबा कर मार्ग बतला दिया। यह देख-कर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। आपस में कहने लगे कि ठाकुरो! इस बाला का बल देखा, कितना भार उठाये हुए है। उनमें से एक राजपूत ने घोड़े से उतरकर उस स्त्री का सारा बोझ अपनी ढाल में धर लिया और उसे उठाने लगा, परंतु ढाल न उठ सकी। हेमा ने अपने एक साथी को भेज उससे पुछवाया कि वह कुमारी है या विवाहिता। जब जाना कि कुमारी है, तब तो सब घोड़ों को छोड़ छोड़कर उसके साथ हो लिये, आगे बस्ती आई। एक राजपूत सेल सँभाले खड़ा था। इन्होंने उससे पूछा कि बस्ती किसकी है! राजपूत—जी सोलंकियों की। प्रश्न किया कि यह किसकी बेटी है! राजपूत—यह भी राजपूत ही की लड़की है। पूछा—

ठाकुर, तुम्हारी क्या जाति है! राजपूत—मैं भी सोलंकी हूँ। ये सब ऊँटों पर उतर पड़े। गाँव के दूसरे लोग भी आये, सब मिलकर इनका अतिथि-सत्कार करने लगे। फिर हेमा ने लड़की के पिता को बुलाकर कहा कि तुम अपनी बेटी का विवाह कुँवर जगमाल के साथ कर दो। राजपूत बोले—जी "हम मालाजी के राजपूत, किसान लोग, जंगल के रहनेवाले हैं, हमारा बड़े आदमियों से कैसा संबंध!" "हमारे बालक राजरीतियाँ क्या समझें! ये तो राजा हैं और हमारे छोरू तो गँवार लोग हैं।" तब हेमा ने कहा—ठाकुर! कुछ भी हो, राजपूत की बेटी है। संध्या समय बाँस खड़े कर, चमरी बाँध, जगमाल का विवाह कर दिया। तीन चार दिन वे वहाँ रहे। सोलंकणी सगर्भा हुई। जगमाल मेहवे आया और अपनी स्त्री को पीहर ही में छोड़ी। दिवस पूरे होने पर उसके पुत्र जन्मा। नाम कुंभा रक्खा और वह ननिहाल ही में पलने लगा।

मालाजी के राजसमय में बादशाही फौज मेहवे पर आई। माला ने अपने उमरा को बुलाकर पूछा कि अब क्या करना चाहिए। वे लोग कहने लगे कि तुर्कों से युद्ध कर उन्हें जीत लेने की तो हमारे में सामर्थ्य नहीं। हेमा ने कहा—तो रात को छापा मारें। सबकी यही सलाह ठहरी। मालाजी के हुक्म से सर्दारों के नाम लिखे गये और उनको आज्ञा हुई कि शबखून मारो! तुर्क जहाँ रात रहते वहाँ काठ के खंभों से कनातें लपेटकर घर से बना लेते थे और उनके अफ़सर ऐसी रक्षा के घरों में ठहरते थे। जब सेना मेहवे के निकट आ पहुँची तो उन्होंने रतिवाह देने की तैयारी की। जगमाल मालावत, कूंपा मालावत, हेमा सोमालोत,.........इन सर्दारों ने अफसरों को मारने का जिम्मा लिया और यह ठहराव किया कि मुगल सर्दार घरों में रहते हैं सो थानों को तोड़कर घोड़ों

को घर में ले जाना और सर्दार पर घाव करना चाहिए। हर एक अपने किये हुए मार्ग में अपना घोड़ा ले जावे, दूसरे के बनाये मार्ग से न ले जाने पावे। ऐसा ठहराव कर पहर भर रात्रि गये दूसरे सवारों को तो शाही सेना पर पठाया और ये चारों सर्दार अफसरों के मकान पर चले। हेमा सीमालोत ने पहले थंभा तोड़ कनात में गली फोड़ सेनानायक पर जा घाव किया और उसको मारकर उसके सिर का टोप उतार लिया। जगमाल ने घोड़ा दबाया परन्तु खंभा टूटा नहीं, तब हेमा के किये हुए मार्ग में अपने घोड़े को ले आया और घाव किया। हेमा ने यह देख लिया। सर्दार मारा गया, मुगल सेना भागी और राठौड़ों ने उसको लूटा। प्रभात होते रावलजी के मुजरे को आये। रावल भी दर्बार जोड़ बैठा और सबका मुजरा लिया। उस वक्त कुँवर जगमाल बोला कि सेनापति को मैंने मारा है। तब हेमा से न रहा गया। वह कहने लगा कि कुछ निशानी बताओ। रावल ने भी यही कहा कि जिसने मारा होगा उसके पास कोई निशानी अवश्य होगी। हेमा ने तुरंत टोप निकालकर सामने रख दिया और कहने लगा जगमाल-जी! मैंने मारा सो तुम ही ने मारा है, हम तो तुम्हारे राजपूत हैं, तुम हमारी इज़्ज़त जितनी बढ़ाओ उतना ही अच्छा है, न कि ऐसा कहने से। मेरे किये हुए मार्ग में तुम अपना घोड़ा लाये और मुर्दे के ऊपर घाव किया, यह तुम्हारी भूल है। हमारा आपस में पहले ही यह ठहराव हो गया था कि एक के किये हुए मार्ग में दूसरा अपना घोड़ा न लावे, अपनी अपनी गली आप कर ले। इस बात पर जगमाल हेमा से खीझ गया।

कुछ समय बीतने पर जगमाल ने हेमा से कहा कि "हेमाजी, तुम अपना घोड़ा हमको दो और इसके बदले तुम दूसरा घोड़ा ले

लो।" हेमा ने उत्तर दिया—कुँवरजी! मेरे पास जो घोड़े राजपूत हैं वह तुम्हारे ही हैं और तुम्हारे काम के वास्ते ही हैं। कुँवर बोला—नहीं, यह घोड़ा तो मुझको देना ही पड़ेगा। तब तो हेमा को भी जोश आ गया। कह दिया कि राज! घोड़ा तो मैं न दूँगा। कुँवर ने कहा—तो तुम मेरे चाकर नहीं। हेमा—नहीं तो न सही। इतना कह मेहवा छोड़ आप घुघरोट के पहाड़ों में जा रहा और मेवासी बन गया। वह मेहवे के इलाके को उजाड़ने लगा। यहाँ के १४० गाँवों में उसकी धाक से धूँवाँ तक न निकलने पाता था लोग भाग भागकर जेसलमेर जा बसे। हेमा के डर के मारे वहाँ कोई रहा नहीं। कई साल तक तो यह उपद्रव लगा रहा परंतु जब राव माला रोगग्रस्त हुआ और शरीर बहुत निर्बल हो गया, अंतकाल आँखों के आगे फिरने लगा, तब उसने अपने बेटे पोते कुटुंब परिवार और राजपूत सर्दारों को अपने पास बुलाया और कहने लगा कि इतने दिन तो मैं देश में बैठा था, अब मेरा काल निकट आ गया है। ज्योंहीं मैंने कूच किया कि हेमा मेहवे के दर्वाजों पर आकर घाव करेगा और गढ़ की प्रोल पर छापा मारेगा। है कोई ऐसा राजपूत जो हेमा को मारे? रावल ने ये शब्द दो तीन बार कहे परंतु किसी ने जबान तक न खोली। (जिस सोलंकनी को जगमाल व्याहकर उसके पीहर छोड़ आया था, उसके पेट से कुंभा ने जन्म लिया, यह ऊपर लिख आये हैं। जब कुंभा सयाना हुआ तो वह अपने दादा के पास आ गया था। वह बड़ा तेजस्वी और बलवान् था)। जब किसी ने मालाजी के प्रश्न का उत्तर न दिया तो कुंभा कहने लगा—"ठाकुरो! बोलते क्यों नहीं हो; खेड़ में रहनेवाले घोड़े राजपूत और रावलजी की आज्ञा!" राजपूत बोले—"जी! हेमा पर बीड़ा उठाना है और घुघरोट के पहाड़ हैं। तुम भी तो पाटवी कुँवर के पुत्र

हो, क्यों नहीं बीड़ा झेलते।" कुंभा ने झट यही कहा कि "बहुत अच्छा।" उठकर मालाजी से मुजरा किया और कहा "बाबाजी! इतने दिन तो हेमा ने उजाड़ किया परंतु अब वह किसी प्रकार का बिगाड़ करे तो कुंभा उसका ग्यारह गुना भर देगा।" रावलजी ने पौत्र की पीठ थापकर कहा—"शाबाश कुंभा! मैं भी यही जानता था कि हेमा पर बीड़ा तू ही उठावेगा।" फिर रावल ने अपनी तलवार और कटार कुंभा को दी, बहुत प्रसन्न हुआ और अपनी सवारी का घोड़ा दिया। कुंभा जब वहाँ से चला गया तो सर्दार लोग हँसकर आपस में कहने लगे कि "हम जानते हैं, कुंभा ननिहाल में जाकर मैंढ़ों पर कटार चलावेगा।" यह बात कुंभा के कान तक पहुँच गई कि राजपूत उसकी हँसी करते हैं।

बहुत समय न बीता था कि राव मालाजी परमधाम पहुँचे और जगमाल पाट बैठा। यह समाचार हेमा को भी पहुँच गये कि रावल मालाजी मर गये हैं और कुंभा ने मेरा उपद्रव दूर करने का बीड़ा उठाया है। तब वह भी मन में संकोच लाकर बैठ रहा और यह अवसर ढूँढ़ने लगा कि कुंभा कहीं जावे तो मैं धावा मारूँ, परंतु कुंभा निरंतर सावधान रहता, शस्त्र सजे रखता, दो घोड़े सदा कसे कसाये तैयार रहते थे। काल पाकर हेमा पर कुंभा का आतंक जम गया और उसने देश में दौड़ना छोड़ दिया। यह चर्चा सारे देश में फैल गई और ऊमरकोट के धणी सोढाराव मांडण ने भी सुनी कि कुंभा ऐसा राजपूत है जिसकी धाक ने हेमा को ठिकाने बिठा दिया और मेहवे की भूमि बसने लगी है। ऐसे पुरुष को कन्या देनी चाहिए। उसके सब राजपूत भी इससे सहमत होकर कहने लगे कि यह तो आपने अच्छा विचारा। मांडण ने ब्राह्मण को बुलाकर नारियल उसके हाथ दिया और उसको समझाकर

कहा कि यह नारियल कुंभा जगमालोत को मेहवे जाकर बँधाओ और कहो कि राव मांडण अपनी कन्या का संबंध आपके साथ करता है। ब्राह्मण मेहवे आया और जो नारियल लाया था, शुभ-मुहूर्त दिखाय कुंभा को भिलाया। कुंभा ने भी उठ जुहारकर नारियल लिया और कहा राणा ने मुझको राजपूत बनाया, मेरी प्रतिष्ठा बढ़ाई। फिर ब्राह्मण को बहुत सा धन दे विदा किया और कहा कि राणाजी से मेरी ओर से इतनी विनती कर देना कि मैं अभी विवाह करने को न आ सकूँगा, क्योंकि मैंने मेहवा छोड़ा नहीं कि हेमा उस पर चढ़ आवेगा। ब्राह्मण ने ऊमरकोट आकर राणा मांडण को सर्व वृत्तांत सुनाया। राणा बोला कि बात ठीक है, और कुंभा ऐसा राजपूत है कि उसको मैं अपनी कन्या वहाँ ले जाकर ब्याह दूँ तो भी बुरा नहीं। तदुपरांत मांडण ने उत्तर भेजा कि मेहवा से ऊमरकोट एक सौ कोस के अंतर पर है, पचास कोस हम साम्हने आते हैं और पचास कोस तुम आओ। कुंभा ने अपने विश्वासपात्र आदमी के साथ कहलाया कि आप बहुत चुपके आना, विशेष धूमधाम न करना। राणा घोड़े, आदमी, रथ लेकर नियत स्थान पर पहुँचा। कुंभा भी आ गया। अपने जामाता को देख राणा बहुत प्रसन्न हुआ। विवाह कर दिया, हथलेवा (पाणिग्रहण) छोड़ते ही कुंभा ने विदा माँगी। साले ने कहा कि राजलोक (ठकुराणी आदि) चाहती हैं कि दो पहर रात तो यहाँ रहें। ऐसी बातें कर ही रहे थे कि एक कासिद ने आकर खबर दी कि "हेमा मेहवे आया और दर्वाजे पर पहुँच धावा किया है।" हेमा के गुप्तचर फिरते ही रहते थे। वह इसी ताक में था कि कुंभा थोड़ा सा भी कहीं जावे कि मैं मेहवे में प्रवेश करूँ। सुनते ही कुंभा तुरंत घोड़े पर चढ़ बैठा और बाग उठाई।

राणा मांडण के पाटवी पुत्र ने कहा—बहनोईजी, दुलहन का मुख तो देख लो। कुंभा ने घोड़े चढ़े ही रथ पर से एक ओर की खोली उठाकर अपनी प्रिया का मुखचंद्र देखा और कहा—"वाह वाह, सुख होगा।" रायसिंह भी साथ हो लिया। वह बड़ा तीरंदाज था। उसका तीर कभी खाली जाता ही न था। उसने कहा—कुंभाजी! मेहवे जाकर क्या करेंगे। आड़े मार्ग पड़ो और घुँघरोट के घाटे की राह लो जिससे हेमा को जा लेवें। कुंभा—तुम धाड़ायत सब रास्तों के जाननेवाले हो। मुझे मार्ग की सुधि नहीं, जैसा उचित हो वही मार्ग लो। वे सीधे घुघरोट को चल पड़े। दो पहर रात और दो पहर दिन बराबर घोड़े दबाये चले गये। मेवाल के कूवे पर पहुँचे, उसको बहता पाया। एक पनिहारिन वहाँ जल का घड़ा भर-कर उस मेवाल को कहने लगी कि भाई! थोड़ा मेरा घड़ा उठा दे। पनिहारिन ने कई बार कहा परंतु मेवाल ने कुछ ध्यान न दिया। यह दशा देख कुंभा से न रहा गया। वह मेवाल को कहने लगा कि "अरे! तू मर्द है, मुख पर मूँछ रखता है, इस बेचारी का घड़ा क्यों नहीं उठवा देता!" मेवाल तमककर बोला कि "ऐसे उतावले हो तो आप ही उठा दीजिए" तब तो कुंभा ने निकट पहुँचकर एक हाथ से घड़ा उठाया और पनिहारिन के सिर पर रखने को था कि घोड़ा चमका। कच्छी तुरंग था। एक, दो, तीन, चार टप्पे भरकर छलाँगें मारने लगा। इतने पर भी कुंभा ने हाथ से घड़ा न छोड़ा और घोड़े को ठण्डा कर पनिहारिन से कहा—बाई निकट आ! जब पास आई तो कुंभ उसके सिर पर धर दिया। पनिहारिन उसकी ओर ध्यान से देखकर कहने लगी—"वीर! तू कुंभा जगमालोत तो नहीं है?" कुंभा ने उत्तर दिया "हाँ, मैं वही हूँ।" पनिहारिन—तू हेमा के पीछे जाता है? कुंभा—"हाँ।" पनिहारिन—हेमा तो घर

गया होगा, तू पुरुषों में रत्न समान होकर उसका पीछा क्या करता है। वह तो यम की दाढ़ में पड़ चुका। भागे हुए को क्या मारना। तू लौट जा। वह कभी न कभी आया ही रहेगा। कुंभा—"मैंने रावलजी को वचन दिया है।" अब वहाँ घोड़े छोड़ दो कोस तक पैदल बढ़ गये। आगे देखते क्या हैं कि हेमा और उसके साथी राजपूत उतरे हैं, कलेवा मँगाया गया है और सब बैठे खा रहे हैं। हेमा डोरड़ा गा रहा है—"लाडा थारे डोरड़ै बीस गाँठ हो" (हे वर! तेरे डोरे में बीस गाँठें हैं) इतने में कुंभा जा पहुँचा। हेमा के साथियों ने शोर मचाया कि "साथ! साथ!" सँभलने ही न पाये थे कि कुंभा सिर पर जा खड़ा हुआ। उसे देख हेमा ने कहा—"शाबाश कुंभा शाबाश! मेरा पीछा तूने किया।" इतने में तो रायसिंह भी आ पहुँचा। हेमा कहने लगा—"कुंभा! दूसरों को क्यों बीच में डालता है, हम दोनों ही लड़ें।" तब कुंभा अपने घोड़े से उतर पड़ा। रायसिंह ने उसे रोका, कहा क्यों उतरता है? मेरे हाथ देख कि अभी सबको कबूतरों की भाँति बींधकर चुन लूँगा। कुंभा ने कहा "रावल मल्लिनाथजी की आण है जो मुझे रोका तो!" उतरकर हेमा के पास गया। हेमा ने जुहार किया और कहा कुंभा! पहले वाव तू कर! कुंभा कहता है—हेमाजी! यह नहीं होने का, पहले तुम्हीं वार करो! हेमा—भाई, तू बालक है। मैंने तो अब अवस्था कर ली है, तेरे शरीर में अब तक लोह नहीं लगा है इसलिए पहला हाथ तू ही कर ले। मैं तो बड़ा हूँ, बालक पर पहले हाथ चलाना मुझे शोभा नहीं देता। तब कुंभा ने उत्तर दिया—"हेमाजी! उमर में तुम अवश्य बड़े हो, परन्तु पद में मैं तुमसे बड़ा हूँ। तुमने हमारा अन्न खाया है, हमारे चाकर हो, इसलिए वृद्ध मैं हूँ। तुम चोट करो!" हेमा ने कहा—जो ऐसा ही है तो सँभाल! और हाथ मारा जो कुंभा का टोप चीर,

खोपरी काट, भौंह के पास से कान पर आती खटकी; फिर कुंभा ने वार किया और हेमा के दो टुकड़े कर दिये। जब वह गिरा तो कुंभा ने अपना कटार खींच उसके हृदय में इस ज़ोर से मारा कि कटार की लाड़ियाँ टूट गईं। उस वक्त कुंभा कहता है कि "साहबो! अब तो यह कहोगे कि कटार हेमा की छाती में टूटा है। मेंढ़ी पर नहीं टूटा। यह शब्द मुख से निकलते ही कुंभा का॰ प्राण निकल गया। हेमा में अब तक प्राण शेष थे। इतने में तो मेहवे से राव जगमाल भी वहाँ आ पहुँचा। हेमा को सूचना हुई कि साहब आया है। पूछा कौन है? कहा राव जगमाल। 'उसे कह दो कि एक घड़ी तक मेरे पास न आवे।' जब हेमा के शब्द जगमाल को सुनाये गये तो उसने पुछवाया कि इसका कारण क्या? हेमा उत्तर देता है कि हे जगमाल! तैंने दो बड़े अपराध किये हैं इसलिए मेरा जी निकल जावे तब आना। पुछवाया कि मेरे वे अपराध क्या हैं? हेमा—प्रथम तो यह कि तूने मेरे जैसे रजपूत को घोड़े के वास्ते निकाला और सात वर्ष तक मेहवे की धरती को उजाड़ रक्खा। यदि ऐसा न करता तो आज बहुत सी और भूमि भी मेहवे के १४० गाँवों के साथ जुड़ जाती और वह राज्य प्रबल पड़ जाता। दूसरा—तूने कुंभा की माता को दुहागन बनाया। यदि उसके साथ सहवास किया होता तो कुंभा जैसे और भी दो चार पुरुषरत्न पैदा हो जाने से तेरे घर की शोभा बहुत बढ़ जाती, यदि ये दो मोटे अवगुण तेरे में न होते तो आज कौन ऐसा था जो तेरे राज्य की तरफ आँख उठाकर भी देख सकता। यह कहते ही हेमा का हंस भी उड़ गया। जगमाल उतरकर आया और सबने मिलकर दोनों का अग्निसंस्कार किया। मेहवे में आकर जगमाल ने हेमा के पुत्र को बुलाया और उसे अपने पास रक्खा। कुंभा की ठकुराणी सोढी का रथ भी इस

अर्से में महेवे आ पहुँचा था। वह अपने पति के पीछे सती हुई और राव जगमाल सुख से राज करने लगा।

दोहा

हेमो होठ डसेह खंखड्‌ग ज्यूँ आछट्याँ।
खत्री भुंहि भाँजेह कुंभै काणै ठैगई ॥ १ ॥
घणो बखाणूँ घाव कुंभा तूँ भागै कमल।
हेमो जिण हाथां भुंइ पड़ियो भख छै जही ॥ २ ॥
डसे अहर जमदूत मछर छिलैते मेलियो।
कुंभावालो कूँत हेमै बखसां सर हुवो ॥ ३ ॥

रावल मल्लिनाथ के मरने पर उसका पुत्र जगमाल महेवे की गद्दी पर बैठा। उसकी चहुवाण वंश की राणी के तीन पुत्र थे—मंडलीक, भारमल और रणमल। जब राव जगमाल ने दूसरा विवाह किया तो चहुवाण राणी रूठकर अपने पुत्रों सहित महेवा के निकट तलवाड़े चली गई। राव जगमाल उसे मनाने को भी गया, परंतु वह न मनी, और अपने पीहर वाहड़मेर आ रही। जगमाल के साथ आदमी वहुत थे। वे चहुवाणों का उजाड़ करने लगे; तब वाहड़मेर के स्वामी चौहाण सूजा ने जाना कि ये बुरे हैं, अपने भानजों से कह दिया कि "तुम और जगह जा रहो", परंतु उन्होंने माना नहीं, तब चहुवाणों ने मंडलीक की घोड़ियों की पूँछें काट डालीं और उसकी भैंसों की पीठ पर खौलता हुआ तेल डाल उन्हें जलाया। मंडलीक को मामा की यह हरकत बहुत बुरी लगी और अवसर पा उसने भोजन करते समय साथियों समेत उसे मार डाला, वाहड़मेर व कोटड़ा ले लिया और राव जगमाल को इसकी सूचना दी। राव बहुत प्रसन्न हुआ और मंडलीक को महेवा, भारमल को वाहड़मेर और रायमल को कोटड़ा दिया।

चौथा प्रकरण

वीरमदेव ललखावत

वीरम महेवे के पास गुढ़ा बाँधकर रहता था। महेवे में चूक कर कोई अपराधी वीरमदेव के गुढ़े में आ शरण ले लेता तो वह उसे रख लेता और कोई उसको पकड़ने न पाता। एक समय जोइया दल्ला भाइयों से लड़कर गुजरात में चाकरी करने चला गया; बहुत दिनों तक वहाँ रहा और विवाह भी कर लिया। अब उसकी इच्छा हुई कि स्वदेश में जाना चाहिए, अपनी स्त्री को लेकर चला, मार्ग में महेवे पहुँचकर एक कुम्हारी के घर डेरा किया। कुम्हारी से कहा कि बाल बनाने के वास्ते किसी नाई को बुला दे। वह नाई को ले आई, बाल बनवाये। नाई की जात चकोर होती है, चारों ओर निगाह फैलाई, अच्छी घोड़ी, सुन्दर स्त्री देखी और यह भी भांप लिया कि द्रव्य भी बहुत है, तुरन्त जाकर राव जगमाल से कहा कि आज कोई एक धाड़ेती यहाँ आकर अमुक कुम्हार के घर उतरा है, उसके पास एक अच्छी घोड़ी है और स्त्री भी उसकी निपट सुन्दर मानो पद्मिनी ही है। जगमाल ने अपने आदमी भेजे कि जाकर खबर लाओ कि वह कौन है। गुप्तचर कुम्हार के घर आकर सब देखभाल कर गये। तब कुम्हारी ने दल्ला को कहा कि ठाकुर! तुम्हारे पर चूक होगा। दल्ला उसका अभिप्राय न समझा, पूछा क्या होगा? बोली, बाबा तुम्हें मारकर तुम्हारी घोड़ी और गृहिणी को छीन लेंगे।

दल्ला—कौन।

कुम्हारी—इस गाँव का ठाकुर।

दल्ला—किसी तरह बचाव भी हो सकता है ?

कुम्हारी—यदि वीरमजी के पास चले जाओ, तो बच जाओ।

उसने चट घोड़ी पर पलाण रक्खा और स्त्री को लेकर चल दिया, वीरम के गुढ़े में जा पहुँचा। जगमाल के आदमी आये, परंतु उसको वहाँ न पाकर लौट गये और कह दिया कि वह तो गुढ़े को चला गया। पाँच सात दिन तक वीरम ने दल्ला को रक्खा, उसकी भले प्रकार पहुनई की, विदा होते वक्त उसने कहा कि वीरम ! आज का शुभ दिवस मुझे आपके प्रताप से मिला है, जो तुम भी कभी मेरे यहाँ आओगे तो चाकरी पहुँचूँगा, मैं तुम्हारा रजपूत हूँ। वीरम ने कुशलतापूर्वक उसे अपने घर पहुँचवा दिया।

मालाजी के पौत्रों और वीरमदेव से सदा खटाखट होती रहती थी, इसलिए महेवे का वास छोड़कर वीरम जैसलमेर गया; वहाँ भी ठहर न सका और पीछा नागोर आया, जहाँ वह लगा गाँवों को लूटने और धरती में बिगाड़ करने, परंतु जब देखा कि अब यहाँ रहना कठिन है तो जाँगलू में ऊदा सूलावत के पास पहुँचा। ऊदा ने कहा कि वीरमजी ! मुझमें इतनी सामर्थ्य नहीं कि मैं तुमको रख सकूँ, तुम आगे जाओ; तुमने नागोर में उजाड़ किया है सो यदि वहाँ का खान बाहर लेकर आवेगा तो उसको मैं रोक दूँगा। तब वीरम जोइयावाटी में चला गया। पीछे से नागोर का खान चढ़कर आया, जाँगलू के घेरा लगाया, ऊदा गढ़ के कपाट मूँद भीतर बैठ रहा। खान ने उसे कहलाया कि माल ला और वीरम को हाजिर कर। तब ऊदा खान से मिलने के वास्ते गया और वहाँ कैद में पड़ा। उससे वीरम को माँगा तो कहा कि "वीरम मेरे पेट में है, निकाल लो।" खान ने ऊदा की मा को बुलवाया और उससे कहा कि या तो वीरम को बता नहीं तो ऊदा की खाल खिंचवाकर उसमें भुस

भरवाऊँगा। ऊदा की माता ने भी यही उत्तर दिया कि "वीरम ऊदा की खाल में नहीं है, उसके पेट में है सो पेट चीरकर निकाल लो।" उसके ऐसे उत्तर से खान खुश हो गया, अपने साथवालों से कहने लगा—"यारो! देखो राजपूतानियों का बल, कैसी निधड़क होती हैं। ऊदा को कैद से छोड़ा और वीरम का अपराध भी क्षमा कर दिया। वीरम जोइयों के पास जा रहा। जोइयों ने उसका बहुत आदर सत्कार किया, जाना कि यह आफत का मारा यहाँ आया है। पास खर्च न होगा सो दाण में उसका विस्सा (भाग) कर दिया और बड़ा स्नेह दरसाया। वीरम के कामदार दाण उगाहें तब कभी कभी तो सारा का सारा ले आवें और जोइयों को कह दें कि कल सब तुम ले लेना। यदि कोई नाहर वीरम की बकरी मार डाले तो एक के बदले ११ बकरियाँ ले लेवें और कहें कि नाहर जोइयों का है। एक बार ऐसा हुआ कि आसेरिया भाटी दुकण को, जो जोइयों का मामा व बादशाह का साला था और अपने भाई सहित दिल्ली सेवा में रहता था, बादशाह ने मुसलमान बनाना चाहा, वह भागकर जोइयों के पास आ रहा। उसके पास बादशाह के घर का बहुत माल, तरह तरह के गदेले, गालीचे और बढ़िया बढ़िया वस्त्राभूषण थे। वे वीरम ने देखे और उनको लेने का विचार किया। अपने आदमियों को कहा कि अपन दुकण को गोठ जीमने के बहाने उसके घर जाकर मार डालें और माल ले लेवें। राजपूत भी सहमत हो गये। तब वीरम ने दुकण को कहा कि कभी हमें गोठ तो जिमाओ! दुकण ने स्वीकारा, तैयारी की और वीरम को बुलाया। वहाँ पहुँचते ही वह दुकण को मार उसका माल असबाब और घोड़े अपने डेरे पर ले आया। तब तो जोइयों के मन में विचार उत्पन्न हुआ कि यह जोरावर आदमी

घर में आ घुसा सो अच्छा नहीं है। पाँच सात दिन पीछे वीरम ने ढोल बनाने के लिए एक फरास का पेड़ कटवा डाला। उसकी पुकार भी जोइयों के पास पहुँची, परंतु वे चुप्पी साध गये। कहा हम वीरम से झगड़ा करना नहीं चाहते हैं। एक दिन वीरम ने दल्ला जोइये ही को मारने का विचार कर उसे बुलाया। दल्ला खरसल (एक छोटी हलकी गाड़ी) पर बैठकर आया, जिसके एक तरफ घोड़ा और दूसरी तरफ बैल जुता हुआ था। वीरम की स्त्री मांगलियाणी ने दल्ला को अपना भाई बनाया था। उसने जान लिया कि चूक है, सो जल के लोटे में दातन डालकर वह लोटा दल्ला के पास भेजा। वह समझ गया कि दग़ा है। चाकर से कहा कि मेरा पेट कसकता है सो जंगल जाऊँगा, फिर खरसल पर बैठ घर की तरफ चला। थोड़ी दूर पहुँच बैल व खरसल को तो वहां छोड़ा और आप घोड़े सवार हो घर पहुँच गया। घोड़े के स्थान पर एक राठी जुतकर खरसल खींचने लगा, वीरम अपने रजपूतों को इकट्ठे कर रहा था। जब वे सलाह कर आये और दल्ला को वहाँ न देखा तब पूछा वह कहाँ गया है? चाकर ने कहा जी! उसका पेट कसकता था सो जंगल गया है। तब तो दलिया गहलोत बोल उठा कि दल्ला गया। वीरम ने कहा कि खरसल चढ़ा कितनी दूर गया होगा, चलो अभी पकड़ लेते हैं। राजपूत ने कहा खरसल छोड़ घोड़े चढ़ गया। इन्होंने एक सवार ख़बर के लिए भेजा। उसने पहुँचकर देखा तो सचमुच एक तरफ़ बैल और दूसरी तरफ़ आदमी जुता खरसल खींचे लिये जाते हैं। उसने लौटकर ख़बर दी कि दल्ला तो गया। सब कहने लगे कि भेद खुल गया, अब जोइये ज़रूर चढ़कर आवेंगे। दूसरे ही दिन जोइयों ने इकट्ठे होकर वीरम की गौवों को घेरा। ग्वाल आकर पुकारा, वीरम चढ़ धाया। परस्पर युद्ध

ठना, वीरम और दयाल जोइया भिड़े, वीरम ने उसे मार तो लिया परंतु जीता वह भी न बचा और वहीं खेत रहा।*

वीरम के साथी राजपूत गाँव वड़ेरण से वीरम की ठकुराणी को लेकर निकले। मार्ग में जहाँ ठहरे वहाँ धाय ने एक आक के झाड़ के नीचे वीरम के एक वर्ष के बालक पुत्र चूंडा को सुलाया, परंतु चलते वक्त उसको उठाना भूल गई। जब एक कोस निकल गये, तब बालक याद आया, तुरंत एक सवार हरीदास दलावत पीछा दौड़ा। उस स्थान पर पहुँचकर क्या देखता है कि एक सर्प चूंडा पर छत्र की भाँति फण फैलाये पास बैठा है। यह देख पहले तो हरीदास को भय हुआ कि कहीं बालक पर आपत्ति तो नहीं आ गई है। जब थोड़ा निकट पहुँचा तो सर्प वहाँ से हटकर बांबी में घुस गया और सवार चूंडा को उठाकर ले आया, माता की गोद में दिया और सारी रचना कह सुनाई। आगे जाते हुए मार्ग में एक राठी मिला। उसको सब हकीकत कह इसका फल पूछा। राठी ने कहा यह बालक छत्रधारी राजा होगा। ये लोग पडोलियों में आये। वहाँ राजा लोग इकट्ठे हुए। चूंडा की माता ने कहा कि मेरे पति से दूरी पड़ती है, मुझे तो उसी से काम है, इसलिए मैं सती होऊँगी। फिर चूंडा को धाय के सुपुर्द कर कहा कि "पृथ्वी माता और सूर्यदेव इसकी रक्षा करें। तू इसे लेकर आल्हा चारण के पास चली जाना।" फिर चूंडा की माता और मांगलियाणी दोनों सती हुईं और साथ सब बिखर गया। चूंडाजी के

---

* किसी ख्यात में ऐसा भी लिखा मिलता है कि जोइये वीरम से खारे थे, परंतु दल्ला जोइया वीरम के उपकार का स्मरण रख उसको सहायता देता था इसलिए दूसरे जोइयों ने दल्ला को मारना चाहा और वीरम उसकी रक्षा करने में मारा गया।

दूसरे तीन भाई गोगादेव, देवराज और जैसिंह को उनके मामा उनकी ननिहाल को ले गये और चूंडा को आल्हा चारण के पास भेज दिया। यहाँ धाय चूंडा को सदा गुप्त रखती और भली भाँति उसका पालन पोषण करती थी।

राव वीरमदेव के चार राणियाँ थीं—१ भटियाणी जसहड राणा दे, जिसका पुत्र राव चूंडा; २ लालाँ मांगलियाणी कान्ह केलणोत की बेटी, जिसका पुत्र सत्ता; ३ चंदन आसराव रिणमलोत की बेटी, जिसका पुत्र गोगादेव; ४ इंदी लाछाँ, ऊगमसी सिखरावत की बेटी, जिसके पुत्र देवराज और विजयराज।

राव चूंडा—जब धाय चूंडा को लेकर कालाऊ गाँव में आल्हा चारण के पास पहुँची, तो उससे कहा कि बाई जसहड़ ने सती होने के समय तुमको आशीष के साथ यह कहलाया है कि इस बालक को अच्छी तरह रखना, इसका भेद किसी पर प्रकट मत करना, मैंने इसको तुम्हारी गोद में दिया है। चूंडा वहाँ धाय के पास रहने लगा। कोई पूछता तो चारण कहता कि यह इस रजपुतानी का बालक है। इस प्रकार चूंडा आठ नव वर्ष का हो गया। एक दिन बर्सात के दिनों में ग्वाल गाँव के बछड़ों को लेकर जल्दी ही जंगल में चराने को चला गया था और चारण के बछड़े घर पर रह गये, तब आल्हा की माता ने कहा "बेटा चूंडा! जा इन बछड़ों को जंगल में दूसरे बछड़ों के शामिल तो कर आ।" चूंडा उनको लेकर वन में गया, परंतु दूसरे बछड़े उसको कहीं नजर न आये, तब तो रोने लगा। पीछे से चारण घर में आया। चूंडा को न देखकर माता को पूछा कि चूंडा कहाँ है? कहा, बछड़े छोड़ने वन में गया है। चारण कहने लगा, माता तूने अच्छा नहीं किया, चूंडा को नहीं भेजना चाहिए था। जब दूसरे बछड़े न मिले तो अपने बछड़ों को वहीं खड़े कर चूंडा एक वृक्ष की

छाया में सो गया। पीछे से आल्हा भी ढूँढ़ता ढूँढ़ता वहाँ पहुँचा तो देखा कि बछड़े खड़े हैं, चूंडा सोता है और एक सर्प उस पर छत्र किये बैठा है। मनुष्य के पाँव की आहट पा नाग बिल में भाग गया, चारण ने जा चूंडा को जगाया, कहा बाबा, तू जंगल में क्यों आया, घर पर चल। घर आकर मा को कहा कि अब कभी इसको बाहर मत भेजना। फिर चारण ने एक अच्छा घोड़ा लिया, कपड़े का उत्तम जोड़ा बनवाया, शस्त्र लाया और चूंडा को सजा सजू कर महेवे रावल मल्लिनाथ के पास ले गया। मालाजी का प्रधान और कृपापात्र एक नाई था। आल्हा उससे जाकर मिला, बहुत कुछ कहा सुनी की, तो नाई बोला, रावलजी के पाँवों लगाओ। शुभ दिवस देख चारण चूंडा को राव मालाजी के पास ले गया और उसने बहुत कुछ धैर्य बँधाकर अपने पास रक्खा। चूंडा भी बहुत चाकरी करता था। एक दिन रावल के पलँग के नीचे सो रहा और नींद आ गई। जब मालाजी सोने को आये तो पलँग तले एक आदमी को सोता पाया, जगाया, चूंडा को देख रावलजी राजी हुए। अवसर पाकर नाई ने भी विनती की कि चूंडा अच्छा रजपूत है इसको कुछ सेवा सौंपिये। माला ने चूंडा को गुजरात की तरफ अपनी सीमा की चौकसी के वास्ते नियत किया और अपने भले भले राजपूतों को साथ में दिया। तब सिखरा ने कहा कि रावलजी, मुझको समझकर साथ देना। रावल ने कहा कि जाओ, हमारी आज्ञा है। घोड़ा सिरोपाव देकर चूंडा को ईंदे राजपूतों के साथ विदा किया। वह काछे के थाने पर जा बैठा और अच्छा प्रबंध किया। एक बार सौदागर घोड़े लेकर उधर से निकले। चूंडा ने उनके सब घोड़े छीन लिये और अपने राजपूतों को बाँट दिये, एक घोड़ा अपनी सवारी को रक्खा। सौदागरों ने दिल्ली जाकर पुकार मचाई, तब

वहाँ से बादशाह ने अपने अहदी को भेजा कि घोड़े वापस दिलवा दो। उसने ताकीद की, माला पर दबाव डाला, तब उसने चूंडा के पास दूत भेज घोड़े मँगवाये। चूंडा बोला कि घोड़े तो मैंने बाँट दिये, केवल यह एक घोड़ा अपनी सवारी के लिए रक्खा है सो ले जाओ। लाचार माला को उन घोड़ों का मोल देना पड़ा और साथ ही चूंडा को भी अपने राज में से निकाल दिया। वह ईंदावाटी में ईंदों के पास आकर ठहरा और वहाँ साथी इकट्ठे करने लगा। कुछ दिनों पीछे डीडया गाँव लूट लाया। तुर्कों ने पड़िहारों से मंडोवर छीन ली थी और वहाँ के सरदार ने सब गाँवों से घास की दो दो गाड़ियाँ मँगवाने का हुक्म दिया था। ईंदों को भी घास भिजवाने की ताकीद आई तब उन्होंने चूंडा से मंडोवर लेने की सलाह की। घास की गाड़ियाँ भरवाईं और हरेक गाड़ी में चार चार हथियारबंद राजपूतों को छिपाया। एक हाँकनेवाला और एक पीछे पीछे चलनेवाला रक्खा। पिछले पहर को इनकी गाड़ियाँ मंडोवर के गढ़ के बाहर पहुँचीं। गढ़ के दरवाज़े पर एक मुसलमान द्वारपाल भाला पकड़े खड़ा था। जब ये गाड़ियाँ भीतर घुसने लगीं तो द्वारपाल ने एक गाड़ी में बर्छा यह देखने को डाला कि घास के नीचे कुछ और कपट तो नहीं है। बर्छे की नोक एक राजपूत के जा लगी, परंतु उसने तुरंत कपड़े से उसे पोंछ डाला, क्योंकि यदि उस पर लोहू का चिह्न रह जावे तो सारा भेद खुल पड़े। दर्बान ने पूछा—क्यों ठाकुरो! सब में ऐसा ही घास है? कहा हाँजी, और गाड़ियाँ डगडगाती हुई भीतर चली गईं। इतने में संध्या हो गई, अँधेरा पड़ा। जो रजपूत छिपे बैठे थे, बाहर निकले, दरवाजा बंद कर दिया और तुर्कों पर टूट पड़े। सबको काटकर चूंडा की दोहाई फेर दी, मंडोवर लिया और इलाके से भी तुर्कों को खदेड़ खदेड़कर निकाल दिया।

जब रावल माला ने सुना कि चूंडा ने मंडोवर पर अधिकार कर लिया है तब वह भी वहाँ आया। चूंडा से मिलकर कहा—शाबाश राजपुत्र! चूंडा ने गोठ दी, काका भतीजे शामिल जीमे। उसी दिन ज्योतिषियों ने चूंडा का पट्टाभिषेक कर दिया और वह मंडोवर का राव कहाने लगा। चूंडा ने दस विवाह किये थे, जिनसे उसके १४ पुत्र उत्पन्न हुए—रणमल, सत्ता, अरड़कमल, रणधीर, सहसमल, अजमल, भीम, पूँना, कान्हा, राम, लूँभा, लाला, सुरताण और बाघा। (कहीं लाला और सुरताण के स्थान में बीजा और शिवराज नाम दिये हैं) ।*

एक पुत्री हंसबाई हुई, जिसका विवाह चित्तौड़ के राणा लाखा के साथ हुआ जिससे मोकल उत्पन्न हुआ था। पाँच राणियों और उनके पुत्रों के नाम नीचे दिये हैं—

राणी सांखली सूरमदे, बीसल की बेटी, पुत्र रणमल।

तारादे गहलोताणी, सोहड़ सांक सूदावत की बेटी, पुत्र सत्ता।

भटियाणी लाडां कुंतल केलणोतरी बेटी, पुत्र अरडकमल।

सोनां, मोहिल ईसरदास की बेटी, पुत्र कान्हा।

ईंदी केसर गोगादे, उगाणोतरी बेटी, पुत्र—भीम, सहसमल, बरजांग, रूदा, चांदा, अज्जा।

---

* राव चूंडा के मंडोवर लेने के विषय में मारवाड़ की ख्यात में यह बात लिखी है कि मंडोवर पर मुसलमानों का अधिकार हो गया था, फिर राणा उगमसी के पुत्र ने मुसलमानों को मारकर मंडोवर ली। चूंडा उस वक्त सालेड़ी के थाने पर था। ईंदों ने विचारा कि हम इतने शक्तिशाली नहीं हैं कि मुसलमानों के मुकाबले में मंडोवर पर अधिकार रख सकें इसलिए उन्होंने चूंडा को बुलाकर अपनी बेटी ब्याह दी और मंडोवर उसको दहेज में दी। इस विषय का एक दोहा भी प्रसिद्ध है—

"पह ईंदारोपाड़ कमधज कदे न पांतरै।
चूंडो चँवरी चाढ़ दी मंडोवर डायजै॥"

मंडोवर हाथ आने पर राव चूंडा ने और भी वहुत सी धरती ली और उसका प्रताप दिन ब दिन बढ़ता गया। उस वक्त नागोर में खोखर* राज करता था और उसके घर में राव चूंडा की साली थी। उसने राव को गोठ देने के लिए नागोर के गढ़ में बुलाया। वह चार पाँच दिन तक वहाँ रहा और वहाँ की सब व्यवस्था देख-कर अपने राजपूतों से कहा कि चलो नागोर लेवें; राजपूत भी इससे सहमत हो गये। एक दिन वह राजपूतों को साथ ले नागोर में जा घुसा, खोखर को मारा, दूसरे सब लोग भाग गये और नागोर में राव की दुहाई फिरी। वह वहाँ रहने लगा और अपने पुत्र सत्ता को मंडोवर रक्खा। नागोर नगर सं० १५१२ (सं० १२१५ होंगे) कैमास दाहिमे ने बसाया था।

एक दिन राव चूंडा दरबार में बैठा था कि एक किसान ने आकर कहा कि महाराज मैं चने बोने को खेत में हल चला रहा था कि कूवे के पास एक खड्डा दीख पड़ा। सम्भव है, उसमें कुछ द्रव्य हो। यह विचार कर कि वह धन धरती के धनियों का है मैं आपको इत्तिला करने आया हूँ। राव ने अपने आदमी उसके साथ द्रव्य निकालने को भेजे। उन्होंने जाकर वह भूमि खोदी, परन्तु माल बहुत गहराई पर था, सो हाथ न आया। उन्होंने आकर राव चूंडा से कहा तो राव स्वयं वहाँ गया और बहुत से बेलदार लगवाकर पृथ्वी को बहुत गहरी खुदवाई, तो उसमें से रसोई के बर्तन निकले अर्थात्—चरवे, देगें, कूंडियाँ, थालियाँ आदि। राव ने उनको देखा, ऊपर गछावड़े का

* न मालूम यह खोखर कौन था। नागोर तो उस वक्त गुजरात के मुसलमान बादशाहों के हाथ में था, जिनकी तरफ से फ़ीरोज़ख़ाँ दंदानी शम्स ख़ाँ का बाप वहाँ का हाकिम हो। ऐसा भी कहते हैं कि गुजरात के पहले सुलतान ज़फ़रख़ाँ ने भी राव चूंडा पर चढ़ाई की थी, परंतु हार खाकर लौटा।

नाम था और ऐसा लेख भी था कि जो इस भाँति रसोई कर सके वह इन वर्तनों को निकाले। राव ने कहा कि इनको यहीं डाल दो। तब सरदारों ने कहा कि इनमें से एक आध चीज तो लेनी चाहिए, तब एक पली (तेल या घी निकालने की) ली। नागोर आकर उसको तुलवाई तो २५ पैसे भर की उतरी। राव चूंडा ने आज्ञा दी कि आगे को मेरे रसोवड़े में इस पली से घी परोसा जावे, सबको एक एक पूरी पली मिले, यदि आधी देवे तो रसोड़दार को दंड दिया जावेगा।

एक दिन अरड़कमल चूंडावत ने भैंसे पर लोह किया। एक ही हाथ में भैंसे के दो टूक हो गये, तब सब सरदारों ने प्रशंसा कर कहा कि वाह वाह! अच्छा लोह हुआ। राव चूंडा बोला कि क्या अच्छा हुआ, अच्छा तो जब कहा जावे कि ऐसा घाव राव राणगदे अथवा कुँवर सादा (सादूल) पर करे। मुझको भाटी (राणगदे) खटकता है। उसने गोगादेव को जो विद्याकारी (बेइज़्ज़ती) दी वह निरन्तर मेरे हृदय का साल हो रही है। अरड़कमल ने पिता के इस कथन को मन में धर लिया, उस वक्त तो कुछ न बोला, परन्तु कुछ काल बीतने पर सादेकुँवर को अवसर पाकर मारा। इसके बदले राव राणगदेव ने सांखला महराज को मार डाला। महराज के भांजे राखसिया सोमा ने राव चूंडा के पास आकर पुकार की और कहा जो आप भाटी से मेरे मामा का वैर लेवें तो आपको कन्या ब्याह-कर एक सौ घोड़े दहेज में दूँगा। राव चूंडा चढ़ चला और पूंगल के पास जाकर राणगदे को मारा और उसका माल लूटकर नागोर लाया। राव चूंडा के प्रधान सावद्‌ भाटी और ऊना राठोड़ थे।*

---

* सादू अरड़कमल की लड़ाई का वर्णन सांखले पँवारों के हाल में लिख दिया गया है। टॉड साहब ने इसको ऐसे लिखा है कि—राणगदेव

राव चूंडा की एक राणी मोहिल के पुत्र जन्मा, नाम कान्हा रक्खा। मोहिलाणी ने बालक को घूँटो न दी, यह खबर राव को हुई। उसने जाकर राणी से पूछा कि कुँवर को घूँटी न देने का क्या कारण है। वह बोली कि जो रणमल को राज से निकालो तो घूँटी दूँ। राव ने रणमल को बुलाकर कहा बेटा तू तो सपूत है, पिता की आज्ञा मानना पुत्र का धर्म है। रणमल बोला—पिताजी, यह राज कान्हा को दीजिए। मुझे इससे कुछ काम नहीं। ऐसा कह पिता के चरण छूकर वहाँ से चल निकला और सोजत जा रहा। (रणमल को निकालने का दूसरा कारण वहीं पर ऐसा लिखा है) भाटी राव राणगदे को जब राव चूंडा ने मारा तो राणगदे के पुत्र ने भाटियों को इकट्ठा किया और फिर मुलतान के बादशाही सूबेदार के पास गया, अपने बाप का वैर लेने के वास्ते वह मुसलमान हो गया और अपनी सहायता पर मुलतान से तुर्क सेना ले नागोर आया। उस वक्त राव चूंडा ने अपने बेटे रणमल को कहा कि तू बाहर कहीं चला जा, क्योंकि तू तेजस्वी है सो मेरा वैर लेने में समर्थ होगा। जो राजपूत तेरे साथ जाते हैं उनको सदा प्रसन्न रखना, उनका दिल कभी मत दुखाना। जेठी घोड़ा सिखरा

भाटी का बेटा सादू गाँव ओराठ में मोहिलों के सरदार माणक के यहाँ ठहरा था, तब माणक की बेटी सादू के प्रेम में पड़ी, जिसकी मँगनी पहले अरड़कमल राठोड़ के साथ हुई थी। माणक ने भी सादू को अपनी बेटी व्याह दी। जब वह अपनी दुलहन को लिये लौटता था, अरड़कमल ने उसे मार्ग में जा रोका, लड़ाई हुई और सादू मारा गया। उसकी स्त्री कूरमदेवी ने अपना एक हाथ आभूषण सहित काटकर मोहिलों के चारण को दिया और आप पति के साथ सती हो गई। माणक ने अपनी पुत्री के हाथ को दाग देकर उसकी यादगार में वहाँ कूरमदेसर नाम का तालाब बनवाया। मरते हुए सादू ने अरड़कमल को भी घायल किया था, जिससे वह भी छः महीने पीछे मर गया।

उगमणोत को देना। मैंने कान्हा को टोका देना कहा है सो इसको काहूजीरै (काहूगाँव) खेजड़े ले जाकर तिलक दिया जावेगा।

राव की राणी मोहिलाणी ने एक दिन घृत की भरी हुई एक गाड़ी आती देखी, अपनी दासी भेज खबर मँगवाई कि क्या रावजी के कोई विवाह है जो रोज इतना घृत आता है। दासी ने आकर कहा बाईजी, विवाह तो कोई नहीं यह घृत तो रावजी के रसोड़े के खर्च के लिए है जहाँ बारह मण रोज खर्च होता है। मोहिलाणी बोली यह घृत लुटता है। रावजी से कहा कि रसोड़े का प्रबन्ध मुझको सौंपिए। राव ने स्वीकारा, राणी पाँच सेर घृत में रोज काम चलाने लगी और रावजी को कहा कि मैंने आपका बहुत फायदा किया है, परन्तु इस कार्यवाही से सब राजपूत अप्रसन्न हो गये थे इसी लिए बहुत से रणमल के साथ चल दिये।

जब नागोर पर भाटी व तुर्क चढ़ आये तो राव चूंडा भी सजकर मुक़ाबले के वास्ते गढ़ के बाहर निकला, युद्ध हुआ और सात आदमियों सहित राव चूंडा खेत रहा। भाटियों ने राव का सिर काटकर बर्छे की नोक पर धरा और उस बर्छे को भूमि में गाड़कर राव के मस्तक को ऊपर रक्खा और मसखरी के तौर पर भाटी आ आकर उसके सामने यह कहते हुए सिर झुकाने लगे कि "राव चूंडाजी जुहार"। तब राव केलण वहाँ आया। वह बड़ा शकुनी था, कहने लगा—ठाकुरो सुनो। आगे को भाटी राठोड़ों के चाकर होंगे और उन्हें तसलीम करेंगे।*

---

* राव चूंडा की मृत्यु के विषय में टॉड साहब लिखते हैं कि सं० १४६९ वि० में भाटी मुलतान के नवाब ख़िज़रख़ां को राव चूंडा पर चढ़ा लाये। जैसलमेर के रावल देवीदास का बेटा केलण भी राणगदे के पुत्र तन्नू महाराजा से मिल गया और उन्होंने छल से राव चूंडा को लिखा कि परस्पर का वैर मिटाने

राव चूंडा के सरदार रणमल को ढूँढाड़ की तरफ ले गये। रणमल ने पिता के आज्ञानुसार साथ के सब राजपूतों को राजी कर लिया। केलण भाटी रणमल के पीछे लगा। रणमल एक गाँव में पहुँचा, एक पनघट के कूवे के पास ठहरा। वहाँ पनिहारियाँ जल भरने आईं। उनमें से एक बोली—"बाई! आज कोई ऐसा यहाँ आया है कि जिसने अपने बाप को मरवाया, धरती खोई, उसके पीछे कटक आता है सो ऐसा न हो कि अपने को भी मरवावे।" पनिहारी के ये वचन रणमल के कान पर पड़े। वह बोला अब आगे नहीं जाऊँगा, पीछा करनेवाली सेना से लड़ूँगा। सब पीछे फिरे, शस्त्र सँभाले, युद्ध हुआ, सिखरा ने बादशाही निशान छीन लिया। मुगल और भाटी भागे और रणमल नागोर में आकर पाट बैठा।*

को हम अपनी बेटी तुम्हारे यहाँ ब्याहने को भेजते हैं और ५० रथों में हथियार-बंद राजपूत छिपाये। ७०० ऊँटों पर दूसरे आदमी साथ थे। माल असबाब भी भेजा। जब वे नागोर के निकट आये तो राव चूंडा अपनी दुलहन को लेने गया, भाटियों ने अचानक हमला कर दिया और नागोर में घुसते हुए चूंडा को मार डाला।

* राव रणमल का नागोर लेना और वहाँ पाट बैठना समझ में नहीं आता। रणमल, इसी ख्यात के अनुसार, राणा लाखा के पास आ रहा था। राणा मोकल ने उसे मंडोवर दिलवाई और नर्बद व उसके पिता सत्ता को अपने पास रक्खा था। कान्हा से उसके भाई सत्ता ने राज छीन लिया था, जब रणमल ने मंडोवर लिया तो सत्ता और उसका पुत्र नर्बद दोनों चित्तोड़ में राणा के पास जा रहे।

पाँचवाँ प्रकरण

गोगादेव वीरमदेवोत

गोगादेव थलवट में रहता था। वहाँ जब दुष्काल पड़ा तो मऊ (लोग या प्रजा) चली, केवल थोड़े मनुष्य वहाँ रह गये। आषाढ़ आया तब लोग गाँवों में आकर बसे। उनमें वानर तेजा नाम का एक राजपूत गोगादेव का चाकर था, वह भी मऊ के साथ गया था। पीछे लौटता हुआ वह अपने पुत्र पुत्री और एक बैल सहित गाँव सीतासर में रात्रि को ठहरा। प्रभात के समय जब वह स्नान को गया और पानी में बैठकर नहाने लगा तब उस गाँव के स्वामी मोहिल ने उसको बेटी की गाली दी और कहा "अरे पापी, लोग तो यहाँ जल पीते हैं और तू उसमें बैठकर नहाता है।" इतना कहकर उसके पराणी (वह लकड़ी जिसके एक सिरे पर लोहे की तीक्ष्ण कील लगी रहती है) मारी, जिससे उसकी पीठ चिर गई। लोगों ने कहा कि यह गोगादेव का राजपूत है तो मोहिल बोला कि "गोगादेव जो करेगा सो मैं देख लूँगा।" तेजा वहाँ से अपने गाँव आया। उसके घर में प्रकाश देखकर गोगादेव ने अपने आदमी को ख़बर के लिए भेजा और फिर उसको बुलाया। दूसरे दिन जब गोगादेव तालाब पर स्नान करने गया तो तेजा भी उसके साथ था। जब नहाने लगे तो गोगादेव ने तेजा की पीठ में घाव देखकर पूछा कि यह कैसे हुआ? उसने उत्तर दिया कि सीतासर के राणा माणकराव मोहिल ने मेरी पीठ में आर लगाई और ऐसा ऐसा कहा है। इस पर गोगादेव साथ इकट्ठा करके

मोहिलों पर चढ़ा। उस दिन वहाँ बहुत सी बरातें आई थीं। लोगों ने समझा कि यह भी कोई बरात है। द्वादशी के दिन प्रातःकाल ही गोगादेव चढ़ दौड़ा, लड़ाई हुई, राणा भाग गया, दूसरे कई मोहिल मारे गये, गाँव लूटा, और २७ बरातों को भी लूटकर अपने राजपूत का वैर लिया।

गोगादेव जब जवान हुआ तब अपने पिता का वैर लेने के लिए उसने साथ इकट्ठा किया और जोइयों पर चढ़ चला। इस बात की सूचना जोइयों को होते ही वे भी युद्ध के लिए उपस्थित हो गये। (शत्रु को धोखा देने के लिए) गोगादेव उस वक्त पीछा मुड़ गया और २० कोस पर आकर ठहरा। अपने गुप्तचर को वैरी की खबर देने के लिए छोड़ आप उनकी घात में बैठा अवसर देखने लगा। जोइयों ने जाना कि गोगादेव चला गया है तो वे फिर अपने स्थान को लौट आये। गुप्तचर ने आकर खबर दी कि मैंने दल्ला जोइया और उसके पुत्र धीरदेव का पता लगा लिया है और जहाँ वे सोते हैं वह ठौर भी देख आया हूँ। गोगादेव अपनी घात की जगह से निकला। धीरदेव इस अर्से में पूंगल के राव राणगदे भाटी के यहाँ विवाह करने गया था और उसके बिछौने पर उसकी बेटी सोती थी। गोगादेव ने पहुँचते ही दल्ला पर हाथ साफ किया और उसे काट डाला। ऊदा ने दूसरे पलँग पर, जहाँ वह अबला सोती थी, धीरदेव के भरोसे तलवार झाड़ी। उसकी कृपाण उस बाला को काट, बिछौने को चीर, पलँग को चाटती हुई धरती से जा खटकी। इसी से वह तलवार 'रलतली' प्रसिद्ध हुई। जब दल्ला मारा गया तो उसका भतीजा हांसू पड़ाइये नाम के घोड़े पर चढ़ धीरदेव को यह समाचार पहुँचाने के लिए पूंगल को दौड़ा। धीरदेव विवाहोत्तर अपनी पत्नी के पास सोया हुआ था, कंकन डोरड़े

अब तक खुले न थे। पहर भर रात्रि शेष रही होगी कि घोड़ा पड़ाइया हिनहिनाया। धीरदेव की आंख खुल गई, कहने लगा कि पड़ाइया हिनहिनाया। साथ के नौकर चाकर बोले, जी! इस वक्त यहां पड़ाइया कहाँ? इतना कहते तो देर लगी कि हांसू सम्मुख आ खड़ा हुआ। धीरदेव ने पूछा कि कुशल तो है? उत्तर दिया कि कुशल कैसी, गोगादेव वीरमोत ने आकर तुम्हारे पिता दल्ला को मारा, अब वह वापस जाता है। धीरदेव तत्काल उठा, वस्त्र पहने, हथियार बाँधे, घोड़े जीन कराया, सवार होने ही को था कि राव-राणगदे भी वहाँ आ गया; कहने लगा कि कंकनडोरे खोलकर सवार होओ। धीरदेव ने उत्तर दिया कि अब पीछे आकर खोलेंगे। तब तो राव राणगदे भी साथ होलिया और दोनों चढ़ धाये। आगे गोगादेव पदरोला के पास ठहरा हुआ था, घोड़ों को चरने के लिए छोड़ दिया था, साथ सब जल के किनारे टिका हुआ था। भाटी और जोइये निकट पहुँचे। घोड़े चरते हुए देखे तो जान लिया कि यह घोड़े गोगादेव के हैं, तब उनको लेकर पीछे फिरे और पदरोला आये। कटक प्यासा हुआ तब कहने लगे कि जल पीकर चलें। जलपान किया, घोड़ों को भी पिलाकर ताजा कर लिया और फिर दो टुकड़ों हो दोनों तरफ से बढ़े। इन्हें देखकर गोगादेव ने पुकारा—अरे घोड़े लावो! तब ढीढी (कोई नाम) बोला—"अरे! गोगादेव के घोड़े नहीं मिलते हैं, जोइये ले गये, छुड़ाओ।" युद्ध शुरू हुआ। भाटी जोइया राठोड़ों से भिड़े, गोगादेव घावों से पूर होकर पड़ा, उसकी दोनों जंघा कट गईं, उसका पुत्र ऊदा भी पास ही गिरा। घायल गोगादेव अपनी माथा की तलवार को टेके बैठा घूम रहा था कि राव राणगदे घोड़े चढ़ा हुआ उसके पास से निकला तो गोगादेव कहने लगा "राव राणगदे का बड़ा सागा (साथ) है। हमारा पार-

वाड़ा (जुहार ?) ले लेवे।" राणगदे ने उत्तर दिया कि "तेरे जैसी विष्टा का पारवाडा हम लेते फिरें" इतना कहकर वह तो चला गया और धीरदेव आया। तब फिर गोगादेव ने कहा "धीरदेव तू वीर जोइया है, तेरा काका मेरे पेट में तड़प रहा है, तू मेरा पारवाड़ा ले।" यह सुन धीरदेव फिरा, गोगा के निकट आ घोड़े से उतरा। तब गोगा ने तलवार चलाई और वह पास आ पड़ा। गोगा ताली देकर हँसा, तब धीरदेव ने कहा—"अपना वैर टूटा, हमने तुझे मारा और तूने धीरदेव को, इससे महेवे की हानि मिट गई।" धीरदेव के प्राण मुक्त हुए तब गोगादेव बोला "कोई हो तो सुन लेना। गोगादेव कहता है कि राठोड़ों और जोइयों का वैर तो बराबर हो गया, परंतु जो कोई जीता जागता हो तो महेवे जाकर कहे कि राव राणगदे ने गोगादेव को 'विष्टागाली' दी है सो वैर भाटियों से है।" यह बात झांपा ने सुनी और महेवे जाकर सारा हाल कहा। इधर रणखेत में जोगी गोरखनाथजी आ निकले। गोगादेव को इस तरह बैठा देखा, उन्होंने उसकी जंघा जोड़ दी और अपना शिष्य बनाकर ले गये, सो गोगादेव अब तक चिरंजीव है।

अड़कमल या अरड़कमल चूंडावत (राठोड़ राव चूंडा का पुत्र)—जैसा कि ऊपर लिख आये हैं कि अड़कमल को भैंसे का लोह करने पर उसके पिता ने बोल मारा (कि भैंसे का लोह किया तो क्या, मैं तो प्रशंसा जब करूँ कि ऐसा ही लोह राव राणगदे या उसके बेटे सादा पर किया जावे।) पिता का वह बोल पुत्र के दिल में खटकता था। उसने स्थल स्थल पर अपने भेदिये यह जानने को बिठा रक्खे थे कि कहीं राणगदे या सादूल कुँवर हाथ आवें तो उनको मारूँ। तभी मेरा जीवन सफल हो और पिता के बोल को सत्य कर बताऊँ। छापर द्रोणपुर में मोहिल (चौहान) राज करते थे। वहाँ के राव ने

अपनी कन्या के सम्बन्ध के नारियल पूंगल में कुँवर सादूल राणगदे-वोत के पास भेजे। ब्राह्मण पूंगल आया और भाटी राव से कहा कि मोहिलों ने कुँवर सादूल के लिए यह नारियल भेजे हैं। राव राणगदेव ने उत्तर दिया कि हमारा राठोड़ों से वैर है, अतएव कुँवर व्याह करने को नहीं आ सकता और ब्राह्मण को रुखसत कर दिया। यह समाचार सादूल को मिले कि रावजी ने मोहिलों के नारियल लौटा दिये हैं तो अपना आदमी भेजकर ब्राह्मण को वापस बुलाया, नारियल लिये और उसे द्रव्य देकर विदा किया। प्रतिष्ठित सरदारों के हाथ पिता को कहलाया कि नारियल फेर देने में हम अपयश और लोकनिंदा के भागी होते हैं, राठोड़ों से डरकर कब तक घर में घुसे बैठे रहेंगे, मैं तो मोहिलाणी को व्याह कर लाऊँगा। वह टीकायत पुत्र और जवान था। राव ने भी विशेष कहना उचित न समझा। इसने अपने राजपूत इकट्ठे कर चलने की तैयारी कर ली और पिता के पास मोर नामी अश्व सवारी के लिए माँगा। राव ने कहा कि तू इस घोड़े को रखना नहीं जानता; या तो हाथ से खो देगा या किसी को दे आवेगा। बेटा कहता है पिताजी! मैं इस घोड़े को अपने प्राण के समान रक्खूँगा। अब पिता क्या कहे, घोड़ा दिया, कुँवर केसरिये कर व्याहने चढ़ा, छापर पहुँचा और माणकदेवी के साथ विवाह किया। राव केलण की पुत्री माणक भटियाणी जबर्दस्त थी। उसने गढ़ द्रोणपुर में विवाह न करने दिया, तब राव माणक सेवा ने अपनी कन्या और राणा खेता की दोहिती को ओरींठ गाँव में ले जाकर सादूल के साथ ब्याही थी। मोहिलों ने सादूल को सलाह दी कि तुम अपने किसी बड़े भरोसेवाले सरदार को छोड़ जाओ। वह दुलहन का रथ लेकर पूंगल पहुँच जावेगा, तुम तुरन्त चढ़ चलो, क्योंकि दुश्मन कहीं पास

ही घात में लगा हुआ है। सादूल ने कहा कि मैं त्याग बाँटकर पीछे चढ़ूँगा। राठोड़ों के भेदिये ने जाकर अरड़कमल को ख़बर दी कि सादूल मोहिलों के यहाँ व्याहने को आया है, वह तुरंत नागोर से चढ़ा। उस वक्त एक अशुभ शकुन हुआ। महाराज सांखला साथ था, उसको शकुन का फल पूछा तो उसने कहा कि अपन कालू गोहिल के यहाँ चलेंगे, जब वह आपको जीमने की मनुहार करे तो उसको अपने शामिल भोजन के लिए बैठा लेना। पहला ग्रास आप मत लेना, गोहिल को लेने देना। जब वह ग्रास भरे तब उससे पूछना कि हमने ऐसा शकुन देखा है उसका फल कहो। वह विचारकर कह देगा। ये गोहिल के घर जाकर उतरे, उसने गोठ तैयार कराई, जीमने बैठे, पहला ग्रास कालू ने लिया तब अरड़कमल कहने लगा— कालूजी हम सादूल भाटी पर चढ़े हैं, हमको ऐसा शकुन हुआ उसका फल कहो। कालू कुछ विचारकर बोला "तुम जिस काम को जाते हो वह सिद्ध होगा, तुम्हारी जय होगी और कल प्रभात को शत्रु मारा जावेगा।" जीम चूठकर चढ़े, महाराज सांखला के बेटे आल्हणसी को राव राणगदे ने मारा था इसलिए अपने बेटे का वैर लेने को महाराज आगे होकर राठोड़ों के कटक को सादूल पर ले चला। सादूल भाटी त्याग बांट, ढोल बजवाकर अपनी ठकुराणी का रथ साथ ले रवाना हुआ था कि लायाँ के मगरे (पहाड़ी) के पास अरड़कमल ने उसे जा लिया और ललकार के कहा—"बड़े सरदार जाव मत। मैं बड़ी दूर से तेरे वास्ते आया हूँ।" तब ढाढी बोला— "उड़ै मोर करै पलाई मोरै जाई पर साहो न जाई", मोर (घोड़ा) उड़कर भाग जावे परंतु सादा नहीं जावेगा। रजपूतों ने अपने अपने शस्त्र सँभाले, युद्ध हुआ, कई आदमी मारे गये; अरड़कमल ने घोड़े से उतरकर मोर पर एक हाथ ऐसा मारा कि उसके चारों पाँव कट गये

श्रौर साथ ही सादूल का काम भी तमाम किया। उसके साथ राज-पूत मर मिटे तब मोहिलाणी ने अपना एक हाथ काटकर सादूल के साथ जलाया और आप पूंगल पहुँची, सासू ससुर के पग पकड़े और कहा "मैं आपही के दर्शन के लिए यहाँ आई थी, अब पति के साथ जाती हूँ।" ऐसा कहकर वह सती हो गई। अरड़कमल ने भी नागोर आकर पिता के चरणों में सिर नवाया, राव चूंडा प्रसन्न हुआ और डीडवाणा उसे पट्टे में दिया।

राव रणमल्ल—(ऊपर कह आये हैं कि राव चूंडा ने अपनी राणी मोहिल के कहने से अपने पुत्र रणमल्ल को अपना उत्तराधिकारी न बनाकर उसे निर्वासित किया और मोहिल के पुत्र कान्हा को मंडोवर का राज दिया था।) जब राव रणमल्ल विदा हुआ तो अच्छे अच्छे राजपूत अर्थात् सिखरा उगमणोत, ईंदा, ऊदा त्रिभुवनसिहोत, राठोड़ कालो टिवाणो उसके साथ हो लिये। आगे जाकर एक रहट चलता देखा, वहाँ घोड़ों को पानी पिलाया। उनके मुँह छाँटे, हाथ मुँह धोकर अमल पानी किया। वहाँ सिखरे ने एक दोहा कहा—"कालो काले हिरण जिम, गयो टिवांणो कूद। आयो परवत साथियो त्रिभुवन वालै ऊद॥" तब ऊदा और काला ने कहा कि हम सिखरा के साथ नहीं जावेंगे, यह निंदा करता है अतः पीछे लौट जायँगे। इतने में दल्ला गोहिलोत का पुत्र पूना उठकर आया, जिसको सिखरे ने कहा कि पीछे फिरो। वह बोला "मैं नहीं लौटूँगा, ऐसा अवसर फिर मुझे कब मिले।" तब कल्ला और ऊदा ने कहा कि हम पूना के साथ पीछे जावेंगे। सिखरा ने कहा तुम जाओ, मैं नहीं आऊँगा। एक दोहा मुझे भी कहो—

छुक्कड़लेह सिरावणी, कहियो उगह विहाण।
ऊगमणावत कूदियो, वट बंगे केकाण॥

फिर पूना राव (चूंडा) के पास चला गया। ५०० सवारों सहित नाडोल के गाँव धणले में आकर ठहरा। नाडोल में उस वक्त सोनगिरे (चहुवाण) राज करते थे। राव रणमल्ल के यहाँ तीन वार रसोई चढ़ती और वह अपने दिन सैर शिकार में विताता था। जब सोनगिरों ने उसका वहाँ आ उतरना सुना और उसके ठाट ठस्से के समाचार उनके कानों में पहुँचे तब उन्होंने अपने एक चारण को भेजा कि जाकर खबर लावे कि रणमल्ल के साथ कितनेक आदमी हैं। चारण ने राव के पास आकर आशीष पढ़ी, राव ने उसको पास बिठाकर सोनगिरों का हाल पूछा। इतने में नौकर ने आकर अर्ज की कि जीमण तैयार है। चारण को साथ लिये नाना प्रकार की तैयारी का स्वाद लिया, फिर चारण को कहा कि तुझे कल बिदा मिलेगी। दूसरे दिन प्रभात ही शिकारियों ने आकर ख़बर दी कि अमुक पर्वत में ५ वराहों को रोके हैं। रणमल्ल तुरंत सवार हुआ और उन पाँचों शूकरों का शिकार कर लाया। रसोई तैयार थी, जीमने बैठे, भोजन परोसा गया, साथ के लोग जीमने लगे कि एक शिकारी ने आकर कहा कि पनोते के वाहले (वहनेवाली वर्साती जलधारा या छोटी नदी) पर एक वड़ा वराह आया है। सुनते ही रणमल्ल उठ खड़ा हुआ और घोड़ा कसवाकर सवार हो चला। चारण भी साथ हो लिया। सवार होते समय जोइयों को आज्ञा दी कि पनोते के बाहले पर जीमण तैयार रहे। जब वराह को मारकर पीछे फिरे तो रसोई तैयार थी। जीमने बैठे, आधाक भोजन किया होगा कि खबर आई कि कोलर के तालाब पर एक नाहर और नाहरी आये हैं। उसी तरह भोजन छोड़कर वह उठ खड़ा हुआ और वहाँ पहुँचा जहाँ बाघ था। जाते वक्त हुक्म दिया कि जीमण तालाव पर तैयार रहे। चारण भी साथ ही गया। जब सिंहों का शिकार कर

लौटे तो रसोई तैयार थी, सब ने सीरा पूरी आदि भोजन किया। उस चारण को मार्ग में से ही विदा कर दिया और कहा कि नाडोल यहाँ से पास है। चारण ने घोड़ा हटाया, नाडोल वहाँ से एक कोस ही रह गया था। चारण ने पुकार मचाई "दौड़ो दौड़ो" "बाहर आई है" गाँव में से राजपूत सवार हो हो कर आये। चारण को पूछा कि तुझे किसने खोसा? कहा—मुझे तो किसी ने नहीं खोसा है, परंतु तुम्हारी धरती लुट गई। पूछा कैसे? बोला यह रणमल्ल पास आ रहा है और इतना खर्च करता है, बाप ने तो निकाल दिया, फिर इसके पास इतना द्रव्य आवे कहाँ से? यह कहीं न कहीं छापा मारेगा या तो सोनगरों से नाडोल लेगा, या हूलों से सोजत लेगा। इस कान से सुनो या उस कान से, मैंने तो पुकारकर कह दिया है।

कितनेक दिन वहाँ ठहरकर रणमल्ल चित्तोड़ के राणा लाखा के पास गया जहाँ छत्तीस ही राजकुल चाकरी करते थे। बड़ा राजस्थान, रणमल्ल भी वहाँ जाकर चाकर हुआ। (आगे राणा लाखा और कुँवर चूंडा की बात, राणा का रणमल्ल की बहन से विवाह करना और मोकल के जन्म आदि का हाल पहले सिसोदियों के वर्णन में राणा लाखा के हाल में लिख दिया है—देखो भाग प्रथम पृष्ठ २४)।

एक बार रणमल्ल थोड़े से साथ से यात्रा के वास्ते गया था, पीछा लौटते ढूंढाड़ में आया। वहाँ पूरणमल्ल कछवाहा राज करता था (यह राजा पृथ्वीराज का पुत्र और सांभर का राजा था)। उसने रणमल्ल को पूछा कि हमारे यहाँ नौकर रहोगे। उत्तर दिया—रहेंगे। एक दिन जोधा कांधल और पूरणमल्ल चौगान खेल रहे थे। जोधा (रणमल्ल का पुत्र) जेठी घोड़े पर सवार था। पूरणमल्ल ने वह घोड़ा देखा, कहा हमें दे दो। कांधल बोला कि रणमल्लजी को

पूछे विना मैं नहीं दे सकता। पूरणमल्ल ने कहा, मैं छीन लूँगा। फिर जोधा कांधल ने डेरे पर आकर घोड़े की कथा रणमल्ल को सुनाई। रण-मल्ल अपने भाई बेटे व राजपूतों सहित दरबार में आया। पूरणमल्ल जहाँ वैठा था वहाँ उसका गोडा दवाकर बैठ गया। उसकी कमर में हाथ डाल पकड़कर खड़ा कर दिया और अपने साथ बाहर ले आया, घोड़े पर सवार कराया और उसके घोड़े के बराबर अपना घोड़ा रखकर ले चले। पूरणमल्ल के राजपूत इन्हें मारने को आये तो रणमल्ल कटार खींचकर पूरणमल्ल को मारने के लिए तैयार हो गया। तब तो वह अपने आदमियों को झगड़ा करने से रोककर उनके साथ साथ हो लिया। बहुत दूर ले जाकर रणमल्ल ने उसे आदरपूर्वक वह घोड़ा दे इतना कहकर लौटा दिया कि "हमारे पास से घोड़ा यूँ लिया जाता है, जिस तरह तुम लेना चाहते थे वैसे नहीं"।

अपने पिता के मारे जाने पर रणमल्ल नागोर आया और अपने पिता के आज्ञानुसार कान्हा को राजगद्दी पर बिठाकर आप सोजत में रहने लगा। भाटियों से वैर था सो दौड़ दौड़कर उनका इलाक़ा लूटने लगा। तब उन्होंने चारण भुज्जा संढायच को उसके पास भेजा। चारण ने यश पढ़ा, जिससे प्रसन्न होकर रणमल्ल ने कहा कि अब मैं भाटियों का बिगाड़ न करूँगा। उन्होंने अपनी कन्या उसे व्याह दी जिसके पेट से राव जोधा उत्पन्न हुआ था।

अपने पुत्र सत्ता को पेहर की जागीर राव चूंडा ने पहले ही से दे दी थी, (दूसरी ख्यातों से सं० १४६५ में कान्हा का मंडोवर गद्दी बैठना पाया जाता है परन्तु वह अधिक राज न कर सका। उसके भाई सत्ता ने राज छीन लिया; और राजप्रबन्ध अपने भाई रणधीर को सौंपा। सत्ता के पुत्र नर्वद और रणधीर के परस्पर अनबन हो जाने से रणधीर चित्तोड़ गया और रणमल्ल को लाया। राणा मोकल

ने रणमल्ल की सहायता कर सं० १४७४ के लगभग उसे मंडोवर की गद्दी पर बिठाया)। रणमल्ल और उसके पुत्र जोधा ने नर्बद से युद्ध किया, वह घायल होकर गिरा, तीर लगने से उसकी एक आंख फूट गई और उसके बहुत से राजपूत मारे गये। राव रणमल्ल ने मंडोवर ली। राव सत्ता को आँखों से दिखता नहीं था इसलिए राव रणमल्ल ने उसको गढ़ में रहने दिया और जब वह उससे मिलने गया, अपने पुत्रों को उसके पाँवों लगाया। तब जोधा जिरह वक्तर पहने शस्त्र सजे उसके चरण छूने को गया। सत्ता ने पूछा कि "रणमल्ल यह कौन है ?" कहा "आपका दास जोधा है।" सत्ता बोला कि टीका इसे देना, यह धरती रक्खेगा। रणमल्ल ने भी उसी को अपना टीकायत बनाया और मंडोवर में उसे रक्खा और आप नागोर चला गया।*

एक दिन राव रणमल्ल सभा में बैठा अपने सरदारों से यह कह रहा था कि बहुत दिन से चित्तोड़ की तरफ से कोई खबर नहीं आई है। इसका क्या कारण? थोड़े ही दिन पीछे एक आदमी चित्तोड़

---

* राव रणमल्ल कई वर्षों तक मेवाड़ में राणा का नौकर रहा था और राणा ने उसे जागीर भी निकाल दी थी। नागोर उस ज़माने में गुजरात के सुलतान के अधिकार में था और वहाँ बादशाह की तरफ़ से हाकिम रहते थे। राणा मोकल के समय में फ़ीरोज़ख़ाँ और फिर शम्सख़ाँ दंदानी वहाँ का हाकिम था। इसका राणा मोकल के साथ युद्ध हुआ था, फिर फ़ीरोज़ख़ाँ के भाई मजाहिदख़ाँ ने अपने भतीजे शम्सख़ाँ से नागोर छीन ली तब शम्सख़ाँ ने राणा कुम्भा से मदद मांगी। राणा नागोर का नाश करना चाहता ही था, बड़ी सेना ले चढ़ आया। मजाहिदख़ाँ भागकर गुजरात चला गया और शम्सख़ाँ को राणा ने नागोर दिलवा दी। अतएव यह कथन विश्वासयोग्य नहीं कि राव रणमल्ल ने नागोर ली हो और मोकल के मारे जाने के वक्त वह नागोर में राज करता हो।

से पत्र लेकर आया और कहा कि मोकल मारा गया। राव विस्मित और शोकातुर हो बोला—"हैं! मोकल को मार डाला?" पत्र बँचवाया, मोकल को जलांजलि दी और चित्तोड़ जाना विचारा। पहले २१ पावंडे (कदम) भरे और फिर खड़े होकर कहा कि "मोकल का वैर लेकर पीछे और काम करूँगा।" "सिसोदियों की बेटियाँ वैर में राव चूंडा की संतान को परणाऊँ तो मेरा नाम रणमल्ल।" कटक सज चित्रकूट पहुँचे। सीसोदिये (मोकल के घातक) भागकर पई के पहाड़ों में जा चढ़े और वहाँ वाटा बाँध रहने लगे। रणमल्ल ने वह पहाड़ घेरा और छः महीने तक वहाँ रहकर उसे सर करने के कई उपाय किये, परन्तु पहाड़ हाथ न आया। वहाँ मेर लोग रहते थे। सिसोदियों ने उनको वहाँ से निकाल दिया था। उनमें से एक मेर राव रणमल्ल से आकर मिला और कहा कि जो दीवाण की ख़ातरी का पर्वाना मिल जावे तो यह पहाड़ मैं सर करा दूँ। राव रणमल्ल ने पर्वाना करा दिया और उसे साथ ले ५०० हथियारबंद राजपूतों को लिये पहाड़ पर चढ़ने को तैयार हो गया। मेर बोला, आप एक मास तक और धैर्य्य रक्खें। पूछा—किस लिए? निवेदन किया कि मार्ग में एक सिंहनी ने बच्चे दिये हैं। रणमल्ल बोला कि सिंहनी से तो हम समझ लेंगे, तू तो चल। मेर को लिये आगे बढ़े। जिस स्थान पर सिंहनी थी वहाँ पहुँचकर मेर खड़ा रह गया और कहने लगा कि आगे नाहरी बैठी है। रणमल्ल ने अपने पुत्र अरड़कमल से कहा कि बेटा, नाहरी को ललकार। उसने वैसा ही किया। शेरनी झपटकर उसपर आई। इसका कटार पहले ही उसके लिए तैयार था, धूँस धूँसकर उसका पेट चीर डाला।* अब अगुवे ने उनको पहाड़ों

* अगर टॉड साहब का लिखना सही है तो अड़कमल भी सादूल भाटी के हाथ से घायल हो सादूल की मृत्यु के ६ महीने पीछे ही मर गया था।

में ले जाकर चाचा मेरा के घरों पर खड़ा कर दिया। रणमल्ल के कई साथी तो चाचा के घर पर चढ़े और राव आप महपा पर चढ़कर गया। उसकी यह प्रतिज्ञा थी कि जहाँ स्त्री पुरुष दोनों घर में हों उस घर के भीतर न जाना, इसलिए बाहर ही से पुकारा कि "महपा बाहर निकल!" वह तो यह शब्द सुनते ही ऐसा भय-भीत हुआ कि स्त्री के कपड़े पहन झट से निकलकर सटक गया; रणमल्ल ने थोड़ी देर पीछे फिर पुकारा तो उस स्त्री ने उत्तर दिया कि राज! ठाकर तो मेरे कपड़े पहनकर निकल गये हैं, और मैं यहाँ नंगे बदन बैठी हूँ। रणमल्ल वहाँ से लौट गया, चाचा मेरा को मारा और दूसरे भी कई सीसोदियों को खेत रक्खा। प्रभात होते उन सबके मस्तक काटकर उनकी चबूतरी (चँवरी) चुनी, वर्छों की थेह बनाई और वहाँ सीसोदियों की बेटियों को राठोड़ों के साथ परणाई। सारे दिन विवाह कराये, मेवासा तोड़ा और वह स्थान मेरों को देकर राव रणमल्ल पीछा चित्तोड़ आया, राणा कुंभा को पाट बैठाया। दूसरे भी कई बागी सरदारों को मेवाड़ से निकाला और देश में सुख शांति स्थापित की।

(चित्तोड़ में राणा कुंभा के शुरू जमाने में राव रणमल्ल पर ही राजप्रबंध का दारमदार हो गया था और उसने राणा के काका राव चूँडा लाखावत को भी वहाँ से विदा करवा दिया जो मांडू के सुल्तान के पास जा रहा था।) एक दिन राणा कुंभा सोया हुआ था और एका चाचावत पगचंपी कर रहा था कि उसकी आँखों में से आँसू निकलकर राणा के पग पर बूँदें गिरीं। राणा की आँख खुली, एका को रोता हुआ देख कारण पूछा तो उसने अर्ज की कि मैं रोता इस-लिए हूँ कि अब देश सीसोदियों के अधिकार में से निकल जायगा और उसे राठोड़ लेंगे। राणा ने पूछा, क्या तुम रणमल्ल को मार सकते

हो? अर्ज की कि जो दीवाण के हाथ हमारे सिर पर रहें तो मार सकते हैं। राणा ने आज्ञा दी। राणा, एका चाचावत और महपा पँवार ने यह मत दृढ़ किया तथा रात्रि के समय सोते हुए राव रणमल्ल पर चूककर उसे मारा। इसका सविस्तर हाल मेवाड़ की ख्यात में राणा कुंभा के वर्णन में लिख दिया है। राव रणमल्ल ने भी मरते मरते राजपूतों के प्राण लिये। एक को कटार से मारा, दूसरे का सिर लोटे से तोड़ दिया और तीसरे का प्राण लातों से लिया। राणा की एक छोकरी महल चढ़ पुकारी "राठोड़ो! तुम्हारा रणमल्ल मारा गया"। तब रणमल्ल के पुत्र जोधा कांधल आदि वहाँ से घोड़ों पर चढ़कर भागे। राणा ने उनके पकड़ने को फौज भेजी, लड़ाई हुई और उसमें कई सरदार मारे गये। वरड़ा चंद्रावत, शिवराज, पूँना ईंदा आदि। चरड़ा ने पुकारा "वड़ा वीजा।" तो एक दूसरा बीजा बोल उठा, कि गल फाड़कर आप मरता हुआ दूसरों को भी ले मरता है। चरड़ा ने कहा कि मैं तुझको नहीं पुकारता हूँ। भीमा, वीरसल, वरजाँग भीमावत मारे गये और भीम चूँडावत पकड़ा गया।

मांडल के तालाव में अपने अपने घोड़ों को पानी पिलाया। उस वक्त एक ओर तो जोधा और सत्ता दोनों सवार अपने घोड़ों को पिलाते थे, और दूसरी तरफ़ काँधल अपने अश्व को जलपान कराता था। काँधल ने उन दोनों सवारों से पूछा (तुम कौन हो आदि)। जोधा ने काँधल की आवाज पहचानी, उससे बात की, दोनों मिले और वहीं जोधा ने उसे रावताई का टीका दिया। दोनों भाई मारवाड़ में आये।

दोहा— आगै सूरन काढ़िया तुंगम काढ़ी आय।
जे मिसराणो सेजड़ी, लेई रिणमलराय॥

राव रिणमल नींदाँ भरै आवय लोह वणै उबारै, कटारी काढ़ मरदघणी तिय आगै सुरन तुंगकिणी। तो दिन मेवाड़े तो विपख्य की

पापं सासन्नो तरपण वही जै वैसा सकुंभकरणं कृतन्न । (छंद अशुद्ध से हैं अर्थ ठीक नहीं लगता)। जै रिणमल होवत दल अंतार कुंभकरण वहन्त किसी पर। माथा तूल सही सुरताणां, ओसमुद्रावत आणां। जै वरती वी आणां। वे हूँ सिधावी वीको हिंदू अनै हमीर मीर जै लुलिया माजै। जै भग्गो पीरोज, खेत्रा जाइ खड़ै जै मारै। महनद गजगसारे संभेड़ो रिणमलराय विसरामिये। कुंभा को मन वीकसै छलायो छदम तैं कूड कडकर, जेम सीह आगै ससै।

(इसमें राव रणमल के वीरकृत्यों का वर्णन है जो उसने राणा के हित किये, और अंत में कहा है कि राणा ने छल छद्मकर रणमल को ऐसे मारा जैसे सिंह को ससा ने मारा था। (छंद शुद्ध न होने से सही अर्थ नहीं किया जा सकता है।)

महपा परमार पई के पहाड़ों से भागकर माँडू के बादशाह महमूद के पास जा रहा था। जब राणा कुंभा ने बादशाह पर चढ़ाई की तब राव रणमल राणा के साथ था। सीमा पर युद्ध हुआ उस वक्त महमूद हाथी पर लोहे के कोठे में बैठा हुआ था, राव रणमल ने चाहा कि अपने घोड़े को उड़ाकर बादशाह को बर्छी मारे, परंतु किसी प्रकार बादशाह को राव का यह विचार मालूम हो गया। उसने तुरंत अपने खवास को, जो पीछे बैठा हुआ था, अपनी जगह बिठा दिया और आप उसकी जगह जा बैठा। इतने में रणमल ने घोड़ा उड़ाकर बर्छी चलाई, वह कोठा तोड़कर खवास की छाती के पार निकल गई। उसने चिल्लाकर कहा "हजरत मैं तो मरा।" यह शब्द रणमल के कान पर पड़े और उसने जाना कि बादशाह बच गया है। बादशाह हाथी की पीठ पर पीछे की ओर बैठा था और राव की यह प्रतिज्ञा थी कि वह पीठ पर तलवार कभी न चलाता था। उसने फिर घोड़ा उड़ाया, बादशाह के बराबर आकर उसको उठाया

श्रौर एक शिला पर दे पटका जिससे उसके प्राण निकल गये। महपा को बादशाह माँडू के गढ़ में छोड़ आया था। जब राणा माँडू पहुँचा तो गढ़वालों ने महपा को कहा कि अब हम तुझको नहीं रख सकते हैं। राव रणमल ने उसे माँगा तब वह घोड़े पर चढ़कर गढ़ के दरवाजे आया श्रौर वहाँ से नीचे कूद पड़ा। जिस ठौर से महपा कूदा उसको पाखंड कहते हैं। पीछे महपा को सिकोतरी का वरदान हुआ।*

(दूसरी बात इस तरह पर लिखी है)—राव चूंडा काम आया तब टीका राव रणमल को देते थे कि रणधीर चूंडावत दरबार में आया। सत्ता वहाँ बैठा हुआ था। रणधीर ने उसको कहा कि "सत्ता कुछ देवे तो टीका तुम्हें देवें।" सत्ता ने कहा कि "टीका रणमल का है, जो मुझे दिलाओ तो भूमि का आधा भाग तुझे देऊँ।" तब रणधीर ने घोड़े से उतर दरबार में जाकर सत्ता को गद्दी पर बिठा दिया श्रौर रणमल को कहा कि तुम पट्टा लो। उसने मंजूर न किया श्रौर वहाँ से चल दिया, राणा मोकल के पास जा रहा। राणा ने उसकी सहायता की श्रौर मँडोर पर चढ़ आया। सत्ता भी संमुख लड़ने को आया। रणधीर नागोर जाकर वहाँ के खान को सहायतार्थ लाया। (उस वक्त नागोर में शमसखाँ गुजरात के बादशाह अहमदशाह की तरफ़ से था।) सीमा पर युद्ध हुआ, रणमल तो खान से भिड़ा श्रौर सत्ता व रणधीर राणा के संमुख हुए। राणा भागा श्रौर नागोरी खान को

---

* यह महमूद ख़िल्जी मालवे का सुलतान जब खीचीवाड़ा फतह करके, स० ८७३ हि० स० १४६९ ई० सं० १५२६ वि० में लौटता था तो मार्ग में बीमार होकर मर गया। राणा कुंभा ने कभी मांडू फतह नहीं किया था श्रौर रणमल की महमूद को मारने में कुछ भी सत्यता नहीं। राव रणमल्ल सं० १४९६ में चित्तोड़ पर मारा गया। सुलतान महमूद उसके ३० वर्ष पीछे मरा था।

रणमल ने पराजित कर भगाया। सत्ता और रणमल दोनों की फौज-वालों ने कहा कि विजय रणमल की हुई है, दोनों भाई मिले, परस्पर राम राम हुआ, बातें चीतें कीं, रणमल पीछा राणा के पास गया और सत्ता मँडोवर गया *

सत्ता के पुत्र का नाम नर्वद और रणधीर के पुत्र का नाम नापा था। (सत्ता आँखों से बेकार हो गया था इसलिए) राज-काज उसका पुत्र नर्वद करता था। एक बार नर्वद ने मन में विचारा कि रणधीर धरती में आधा भाग क्यों लेता है, मैं उसको निकाल दूँगा। थोड़े ही दिन पीछे ४००) रुपये कहीं से आये, उनका आधा भाग नर्वद ने दिया नहीं; दूसरी बार नापा ने एक कमान निकलवाकर खींचकर चढ़ाई और तोड़ डाली। नर्वद ने कहा भाई तोड़ी क्यों? नापा बोला—धरती का हासल आवे उसमें से आधा माँगूँ, कल थैली आई थी उसमें से मुझे क्यों न दिया? नर्वद ने आधे रुपये दे दिये। वह पालों के सोनगिरों का भांजा और नापा सोनगिरों का जमाई था। एक दिन नर्वद ने अपने मामा से पूछा "मामाजी, तुमको मैं प्यारा या नापा?" कहा—"मेरे तो तुम दोनों ही बराबर हो", परंतु विशेष प्यारा तू है क्योंकि तेरे पास रहते हैं। नर्वद ने कहा कि जो ऐसा है तो नापा को विष दे दो। मामा ने कहा "भाई, मुझसे ऐसा काम नहीं हो सकता"। नर्वद ने एक दासी को लोभ देकर मिलाया और नापा को विष दिलवाया जिससे वह मर गया। अब रणधीर के मारने को नर्वद ने कटक इकट्ठा किया। रणधीर ने अपने आदमी भेज कामदार मुतसद्दियों से पुछवाया कि यह सेना किस कार्य के लिए इकट्ठी की जाती है परंतु उन्होंने यही उत्तर दिया कि "हम

---

* नागोर के हाकिम शम्सखाँ दन्दानी की मोकल राणा से लड़ाई होने और राणा के हारने का हाल फारसी तवारीखों में भी मिलता है।

नहीं जानते।" वे आदमी आकर दयाल मोदी की दूकान पर बैठ गये। नर्वद इस दयाल से सलाह किया करता था, जब बालक था तब से रणधीर ने उसकी पालना की थी। रणधीर के मनुष्यों ने मोदी से सामान लिया। उसने और तो सब चीज़ें दे दीं, परंतु घृत न दिया। जब उन्होंने घी माँगा तो उत्तर दिया कि "काले के पोला बहुत है;" और फिर घृत दिया। रणधार के मनुष्यों ने पीछे आकर कहा—राजा, यह पता नहीं लगता कि कटक किस पर तैयार हो रहा है। उसने पूछा—दयाल मोदी ने तुमको कुछ कहा? उत्तर—और तो कुछ भी नहीं कहा, परंतु घृत देते समय ये शब्द कहे थे कि "काले के पोला बहुत है।" रणधीर बोला—दयालिया और क्या कहता; काला मैं और पीला मेरा सुवर्ण, सो वह कटक मेरे ही पर है। तब उसने भी सेना सजी, फिर आप राणा के पास गया। राणा ने पूछा—"मामा जी, कैसे आये?" रणमल्ल ने उत्तर दिया कि तुझे मँडोवर देने के लिए आये हैं, राणा ने भी सहायता देनी कही। ये राणा को लेकर सत्ता पर चढ़े। सत्ता ने अपने पुत्र नर्वद से कहा कि तू भी नागोरी खान को ले आ। नर्वद कोस तीनेक तो गया, परंतु जब ताप पड़ी तो पीछा फिर आया और छिपकर माता-पिता की बात चीत सुनने लगा। सत्ता (अपनी स्त्री) सोनगिरी से कहता है—"सोनगिरी! नर्वद जानता है कि मेरा पिता कपूत है जो रणधीर को आधा भाग देता है, परंतु रणधीर के बिना मँडोवर रह नहीं सकता। अब नर्वद नागोरी खान को लेने गया है सो खान आने का नहीं, क्योंकि वह रणमल के हाथ देख चुका है। यह भी अच्छा हुआ, मैं लड़ मरूँगा"। (पिता के ऐसे वचन सुनकर) नर्वद बोल उठा—"मुझे नागोरी खान के पास किसलिए भेजा, मैं भी युद्ध करूँगा और काम आऊँगा"। सत्ता बोला—"मैं भी यही कहता था"। नर्वद ने

नक्कारा वजवाया, युद्ध किया और खेत पड़ा। इतने रजपूत उसके साथ मारे गये—ईंदा चोहथ, ईंदा जीवा आदि।

नर्बद निपट घायल हुआ था और उसकी एक आँख फूट गई थी। राणाजी उसको उठवाकर अपने साथ ले गये और रणमल को राणा ने मँडोवर की गद्दी पर बिठाकर टीका दिया। सत्ता भी राणा के पास जा रहा और वहीं उसका देहांत हुआ।

(दूसरे स्थान में ऐसा भी लिखा है)—"जब राव चूँडा मारा गया तो राजतिलक रणमल को देते थे, इतने में रणधीर चूँडावत दर्बार में आया। सत्ता चूँडावत वहाँ बैठा हुआ था, उसको रणधीर ने कहा कि सत्ता ! कुछ देवे तो तुझे गद्दी दिला दूँ।" सत्ता बोला कि "टीका रणमल का है।" रणधीर ने अपने वचन की सत्यता के लिए शपथ खाई, तब सत्ता ने कहा कि आधा राज तुझे दूँगा। रणधीर तुरंत घोड़े से उतर पड़ा और सत्ता के ललाट पर तिलक कर दिया। रणमल को कहा कि कुछ पट्टा ले लो, वह उसने मंजूर न किया और राणा मोकल के पास गया। राणा ने सहायता की, सत्ता भी सम्मुख हुआ और रणधीर नागोरी खान को लाया। सीमा पर लड़ाई हुई, रणमल तो खान के मुकाबले को गया और रणधीर वसना ने राणाजी से युद्ध किया। राणाजी हार खाकर भागे, परंतु खान को रणमल ने भगा दिया। सत्ता व रणमल दोनों के साथियों ने जयध्वनि की, रणमल अपने दोनों भाइयों से मिला, वात-चीत की और फिर पीछा मोकलजी के पास चला गया। सत्ता गद्दी बैठा और राज करने लगा। कालांतर में सत्ता व रणधीर के पुत्र हुए, सत्ता के पुत्र का नाम नर्बद और रणधीर के पुत्र का नाम नापा था।

रणमल नित गोठें करता था इसलिए सोनगिरों के भले आदमी देखने को आये थे। उन्होंने पीछे नाडौल जाकर कहा कि राठोड़ काम का नहीं है, यह तुमसे न चूकेगा, तुमको मारेगा, इसलिए तुमको उचित है कि अपने यहाँ इसका विवाह कर दो। तब लोला सोनगिरा की बेटी का विवाह उसके साथ कर दिया। फिर भी सोनगिरों ने देखा कि यह आदमी अच्छा नहीं है, तब उन्होंने रणमल पर चूक करना विचारा। एक दिन रणमल सोया हुआ था तब लोला सोनगिरे ने आकर अपनी स्त्री से कहा कि "रामी बाई राँड हो जावेगी ?" स्त्री बोली—"भलेही हो जावे, यदि एक लड़की मर गई तो क्या।" ठकुराणी ने अपने पति को मद्य का प्याला पिलाकर सुलाया और बेटी से कहा कि रणमल से चूक है, उसको निकाल दे ! रामी ने आकर पति को सूचना दी कि भागो ! चूक है। घातक उसे मारने को आये, परंतु वह पहले ही निकल गया और घर जाकर सोनगिरों से शत्रुता चलाई, परंतु वे वार पर न चढ़ते थे। उनका नियम था कि सोमवार के दिन आशापुरी के देहरे जाकर गोठ करते, अमल वारुणी लेते और मस्त हो जाते थे। एक दिन जब वे खा पीकर मस्त पड़े हुए थे तो अचानक रणमल उनपर चढ़ आया और उसने सबको मारकर अखावे के कूएँ में डाल दिया। ऊपर सगे साले को डाला। कहा, मैंने सासूजी से वचन हारा है। उनका इलाका लिया, राणा मोकल से मिलने के वास्ते गया और वहीं रहने लगा। जब चाचा सीसोदिया और महपा पँवार ने मोकल को मारा तब रणमल को उस चूक का भेद मालूम हो गया था, परंतु राणा को कुछ खबर न हुई। एक दिन महपा और चाचा मलेसी डोडिये के घर गये जो राणा का खवास था। रणमल ने अपने जासूस साथ लगा रक्खे थे कि देखें ये

क्या बातें करते हैं। चाचा महपा ने मलेसी को अपने में मिलाने का बहुत प्रयत्न किया, परंतु वह न मिला। जासूस ने जाकर सारा वृत्तांत रणमल से कहा और उसने राणा को सुनाया, परंतु मोकल ने इसपर विश्वास न किया। रणमल मँडोवर गया और पीछे से राणा पर चूक हुआ। उसने अचलदास खीची की मदद के वास्ते गढ़ से नीचे आकर डेरा किया था तब महपा ने चाचा को कहा कि आज अच्छा अवसर है, फिर हाथ आने का नहीं; तब चाचा मेरा और महपा बहुत सा साथ लेकर आये। राणाजी ने कहा कि "ये खातणवाले आते हैं सो अच्छा नहीं है। जौ गेहूँ में न आने चाहिए, यह मर्यादा के विरुद्ध है"। उस वक्त मलेसी डोडिया ने अर्ज की कि आपको राव रणमल ने चिताया था कि ये आपसे चूक करना चाहते हैं। राणा बोला कि ये हरामखोर अभी क्यों आये? मलेसी ने अर्ज की कि दीवाण! पहले तो मैंने न कहा, परंतु अब तो आप देखते ही हैं। (चाचा मेरा आन पहुँचे) घोर संग्राम हुआ, नौ आदमियों को राणा ने मारा और पाँच को हाड़ी राणी ने यमलोक में पहुँचाया, पाँच का काम मलेसी ने तमाम किया, अंत में राणा मारा गया। चाचा व महिपा के भी हलके से घाव लगे, कुँवर कुंभा बचकर निकल गया। ये उसके पीछे लगे, कुंभा एक पटैल के घर पहुँचा। पटैल के दो घोड़ियाँ थीं। उसने कहा कि एक घोड़ी पर चढ़कर चले जाओ और दूसरी को काट डालो, नहीं तो वे लोग ऐसा समझेंगे कि इसने घोड़ी पर चढ़ाकर निकाल दिया है। कुंभा ने वैसा ही किया। जो लोग खोजने आये थे वे पीछे फिर गये। मोकल को मारकर चाचा तो राणा बना और महपा प्रधान हुआ। कुंभा आफत का मारा फिरता रहा। जब यह समाचार रणमल को लगे तो वह सेना साथ

लेकर आया, चाचा से युद्ध हुआ और वह भागकर पई के पहाड़ों पर चढ़ गया। रणमल ने कुंभा को पाट वैठाया और आप उन पहाड़ों में गया, बहुत दौड़ धूप की, परंतु कुछ दाल न गली, क्योंकि बीच में एक भील रहता था, जिसके बाप को रणमल ने मारा था। वह भील चाचा व महपा का सहायक बना। एक दिन रणमल अकेला घोड़े सवार उस भील के घर जा निकला। भील घर में नहीं थे, उनकी मा वहाँ बैठी थी। उसको बहन कहके पुकारा और बैठकर उससे बातें करने लगा। भीलनी बोली कि बीर! तैंने बहुत बुरा किया, परंतु तुम मेरे घर आ गये अब क्या कर सकती हूँ! अच्छा, अब घर में जाकर सो रहो। राव ने वैसा ही किया। थोड़ी देर पीछे वे पाँचों भाई भील आये, उनकी मा ने उनसे पूछा कि बेटा! अभी रणमल यहाँ आ जावे तो तुम क्या करो? कहा, करें क्या, मारें; परंतु बड़े बेटे ने कहा—"मा! जो घर पर आवे तो रणमल को न मारें।" मा ने कहा—"शाबाश बेटा! घर पर आये हुए तो वैरी को भी मारना उचित नहीं।" रणमल को पुकारा कि वीर बाहर आ जाओ। वह आकर भीलों से मिला। उन्होंने उसकी बड़ी सेवा मनुहार की और पूछा कि तुम मरने के लिए यहाँ कैसे आये? कहा कि भानजो! मैंने प्रतिज्ञा की है कि चाचा को मारूँ तब अन्न खाऊँ, परंतु करूँ क्या तुम्हारे आगे कुछ बस नहीं चलता है। भीलों ने कहा, अब हम तुमको कुछ भी ईजा न पहुँचावेंगे। फिर रण-मल अपने योद्धाओं को लेकर पहाड़ तले आया; भीलों ने कहा कि पहाड़ के मार्ग में एक सिंहनी रहती है सो मनुष्य को देखकर गर्जना करेगी। रणमल तो पगडंडी चढ़ता हुआ, सिंहनी के समीप जा पहुँचा, वह गर्ज उठी, तुरंत अड़वाल (अड़कमल) ने तलवार खींच उसपर वार किया और वहीं काटकर उसके दो टुकड़े कर दिये।

सिंहनी का शब्द सुनकर ऊपर रहनेवालों ने कहा कि सावधान ! परंतु वह एक ही वार बोलने पाई थी इसलिए उन्होंने सोचा कि किसी पशु को देखकर बोली होगी। इतने में तो रणमल घोड़ों को नीचे छोड़कर पहाड़ पर चढ़ गया और दर्वाजे पर जाकर बर्छा मारा। भीतर जो मनुष्य थे, वे चौंक पड़े और कहा, रणमल आया। चाचा मेरा से लड़ाई हुई, सीसोदियों को मारकर पाँवों तले पटका चाचा मारा गया और महपा स्त्री के कपड़े पहनकर पहाड़ पर से नीचे कूद भाग गया। रणमल ने चाचा की बेटी के साथ विवाह किया, मनुष्यों के धड़ों के बाजोट और बर्छियों की चँवरी बनाकर वहाँ सीसोदियों की कई कन्याएँ रणमल ने अपने भाइयों को ब्याह दीं और पीछा लौटा।

महपा भागकर माँडू के बादशाह की शरण गया। जब यह खबर राणाजी व रणमल को हुई तब उन्होंने बादशाह पर दबाव डालकर कहलाया कि हमारे चोर को भेज दो। बादशाह ने महपा को कह दिया कि अब हम तुझको नहीं रख सकते हैं। महपा ने उत्तर दिया कि मुझको कैद करके शत्रु को मत सौंपिए और आप घोड़े सवार हो गढ़ के द्वार पर आ घोड़े समेत नीचे कूद पड़ा। घोड़ा तो पृथ्वी पर पड़ते ही मर गया और महपा भागकर गुजरात के बादशाह के पास पहुँचा। जब उसने वहाँ भी बचाव की कोई सूरत न देखी तो चित्तोड़ ही की तरफ चला। वहाँ राज्य तो राणाजी करते थे, परंतु राज का सब काम रणमल के हाथ में था। महपा रात्रि के समय लकड़ियों का भार सिर पर धरकर नगर में पैठा। उसकी एक स्त्री अपने एक पुत्र सहित वहाँ रहती थी, जिसको उसने दुहागन कर रक्खा था। उसके घर आया, पत्नी ने अपने पति को पहचानकर भीतर लिया। अब वह घर में बैठा रहे और सूत के मोहरे व रस्से बनावे। एक दिन एक मोहरी अपने पुत्र को

देकर कहा कि जाकर दीवाण के नज़र कर दे और जो दीवाण कुछ प्रश्न करें तो अर्ज़ करना कि महपा हाज़िर है। बेटे ने हज़ूर में जाकर मोहरी नज़र की और दीवाण ने पूछा तो अर्ज़ कर दी कि महपा हाज़िर है। राणाजी ने उसे बुलाया। उसने अर्ज़ की कि मेवाड़ की धरती राठोड़ों ने ली। यह बात सुनते ही दीवाण के मन में यह भय उत्पन्न हो गया कि ऐसा न हो कि रणमल मुझे मारकर राज ले ले। राणा ने सेना एकत्रित की और वे रणमल को चूक से मार डालने का विचार करने लगे। रणमल के डोम ने किसी प्रकार यह भेद पा लिया और राव से कहा कि दीवाण आप पर चूक करना चाहते हैं, परंतु राव को उसकी बात का विश्वास न आया तो भी अपने सब पुत्रों को वह तलहटी ही में रखने लगा। (अवसर पाकर) एक दिन चूक हुआ। २५ गज़ पछेवड़ी राव के पलंग से लपेट दी, जिसपर राव सोया हुआ था। सत्रह मनुष्य राव को मारने के लिए आये, जिनमें से १६ को तो राव ने मार डाला और महपा भागकर बच गया। रणमल भी मारा गया। यहाँ रणधीर चूँडावत, सत्ता भाटी लूणकरणोत, रणधीर सूरावत और दूसरे भी कई काम आये। (रणमल के पुत्र) जोधा, सीहा, नापा तलहटी में थे सो भाग निकले। उनके पकड़ने को फौज भेजी गई, जिसने आडावळा (अर्वली) पहाड़ के पास उन्हें जा लिया और वहाँ युद्ध हुआ, जहाँ चरड़ा चाँदराव अरड़कमलोत, पृथ्वीराज, तेजसिंह आदि और भी राठौड़ों के सर्दार मारे गये, परंतु जोधा कुशलतापूर्वक मँडोवर पहुँच गया।*

---

* पहले बतलाया जा चुका है कि राव रणमल ने महाराणा कुंभा के समय में राणा मोकल के बड़े भाई राव चूँडा को मेवाड़ से अलग करा दिया और सब राज-प्रबंध अपने हाथ में लेकर आप बेटों सहित चित्तौड़ ही में रहने

नर्बद सत्तावत ने राणाजी को आँख दी जिसकी बात—जब राणा मोकल और राव रणमल मँडोवर पर चढ़ आये, (सत्ता के पुत्र) नर्बद ने युद्ध किया और घायल हुआ। उस वक्त उसकी बाँई आँख पर तलवार बही, जिससे वह आँख फूट गई। राणा नर्बद को उठाकर अपने साथ लाया, घाव बँधवाये और मरहम पट्टी करवाके उसको चंगा किया। लाख रुपये की वार्षिक आय का कायलाणे का ठिकाना उसे जागीर में दिया। राणा मोकल चाचा मेरा के हाथ से मारा गया और राणा कुंभा पाट बैठा, उसने राव रणमल को चूककर मरवाया। नर्बद तब भी दीवाण ही के पास रहता था। एक दिन दीवाण दर्बार में बैठे थे तब किसी ने कहा कि "आज नर्बद जैसा राजपूत दूसरा नहीं है।" राणा ने पूछा कि उसमें ऐसा क्या गुण है जो इतनी प्रशंसा की जाती है? उत्तर दिया कि दीवाण! उससे कोई भी चीज़ माँगी जावे वह तुरंत दे देता है। राणा ने कहा हम उससे एक चीज़ मँगवाते हैं, क्या वह देगा? अर्ज हुई कि देगा। नर्बद उस दिन मुजरे को न आया था। दीवाण ने अपने एक खवास को उसके पास भेज कहलाया कि "दीवाण ने तुमसे आँख माँगी है।" नर्बद बोला—दूँगा। खवास की नज़र बचा पास ही भलका पड़ा हुआ था, जिससे आँख निकाल रूमाल में लपेट उसके हवाले की। यह देख खवास का रंग फक हो गया, क्योंकि दीवाण ने

लगा। तब सबको संदेह हो गया कि रणमल की नीयत राज दबाने की है। राव चूँडा माँडू के बादशाह के पास जा रहा था, उसको पीछा बुलाया और उसने ही दीपमालिका की रात्रि को पहुँचकर सोते हुए राव रणमल को मरवाया। उसका कुँवर जोधा भाग गया था, जिसका पीछा करता हुआ चूँडा मँडोवर पहुँचा और वहाँ भी सीसोदियों का झंडा फहराया। बारह वर्ष तक मँडोवर राणा के अधिकार में रहा। अंत में राव जोधा ने चूँडा के दो बेटों को मार मँडोवर पीछा लिया।

खवास को पहले से समझा दिया था कि यदि नर्वद तेरे कहने पर अपनी आँख निकालने लगे तो निकालने मत देना, परंतु नर्वद ने तो आँख निकाल हाथ में दे दी। खवास ने वह रूमाल दीवाण के नज़र किया और दीवाण ने आँख देख बहुत ही पश्चात्ताप किया। आप नर्वद के डेरे पधारे, उसको बहुत आश्वासन देकर उसको जागीर ड्योढ़ी कर दी।

छठा प्रकरण

नर्बद सत्तावत व सुपियारदे की बात

जब नर्बद मँडोवर में राज करता था तब रूण के स्वामी सीहड़ सांखले ने अपनी पुत्री सुपियारदे के नारियल उसके पास भेजे (अर्थात् सुपियारदे की सगाई नर्बद के साथ की), परंतु जब नर्बद घायल हुआ और मंडोवर का राज राणा मोकल ने रणमल को दिला दिया तथा राणा नर्बद को अपने साथ ले गया, तब साँखले ने अपनी कन्या जैतारण के स्वामी नरसिंह सिंधल को व्याह दी। नर्बद पर राणा की बड़ी कृपा थी। एक दिन राणा के ढोलियों ने उससे मुजरा करके खम्मायच राग गाया, उसे सुनकर नर्बद ने लंबी साँस छोड़ी। दीवाण (राणा कुंभा) ने इसका कारण पूछा तो कहा, "ऐसे ही।" फिर दीवाण ने फर्माया कि "क्या मंडोवर के वास्ते"? उत्तर दिया कि "वह तो काका के पास है, जो मेरे घर ही में है"। दीवाण ने आज्ञा की "तो जो बात हो सो कहो!" तब नर्बद बोला कि दीवाण! साँखले ने मेरी माँग नरसिंह सिंधल जैतारणवाले को व्याह दी, जिसका रंज है।" राणा ने तुरंत दूत भेज सीहड़ साँखला को कहलाया कि नर्बद को माँग दो। तब साँखले ने अर्ज़ कराई कि सुपियारदे का तो विवाह कर दिया, दूसरी छोटी बेटी है सो व्याह दूँगा। राणा ने नर्बद को कहा कि जाओ सीहड़ की छोटी बेटी के साथ विवाह करो। नर्बद ने कहा "दीवाण! जो सुपियारदे मेरी आरती करे तो व्याह करूँ" राणा—करेगी। नर्बद—दूत भेज

पक्का कर ली जावे। राणा ने फिर दूत भेजा, साँखले ने वह बात स्वीकारी, नर्वद की बरात चढ़ी। पीछे से दीवाण की सभा में बात चली कि जो सुपियारदे आरती उतारेगी तो नर्वद विवाह करेगा। नरसिंह सिंधल भी वहाँ बैठा हुआ था। उसने जब यह बात सुनी तो बोला "क्या नर्वद ज़बर्दस्ती आरती करावेगा?" लोगों ने उत्तर दिया—"यह तो करना ही पड़ेगा"। नरसिंह अपने घर आया। उधर से साँखले के आदमी भी सुपियारदे को लेने के वास्ते आये। कहा कि विवाह है सो भेजो। नरसिंह ने इन्कार कर दिया। सुपियारदे ने कहा कि मैं जाऊँगी, तब उसके पति ने कहा कि यदि वहाँ आरती न करे तो भेजूँ। वह बोली नहीं करूँगी, कौल वचन दिया, पति के गले हाथ धर शपथ की और पीहर गई। जब नर्वद तोरण पर आया, बारजोट पर खड़ा हुआ और कहा कि आरती की तैयारी कराओ, तब सुपियारदे को कहा गया, परंतु यह नट गई कि मैं तो आरती न करूँगी। तब उसकी छोटी बहन आई। नर्वद से कहा गया "राज! सुपियारदे आरती करती है"। नर्वद बोला—"तुम मुझे अंधा समझकर मेरी हँसी करते हो, यह सुपियारदे नहीं है"। फिर अपने साथियों से कहा कि लड़ाई का नक्कारा बजवाओ! साँखले ने अपनी बेटी से जाकर कहा—"बाई! यहाँ कौन देखता है, आरती कर दे, नहीं तो अभी यह हमको मारेगा"। सुपियारदे आई और नर्वद से कहा—"राज! तुम तो आरती कराते हो, परंतु वहाँ पति ने मना कर दिया है, इसलिए मुझे दुख होगा"। नर्वद ने कहा—यह मेरा वचन है, जो वह तुझे दुख दे तो मुझे सूचना करा देना, मैं आकर तुझे ले जाऊँगा। नरसिंह ने गुप्त रीति से अपने नाई को भेजा था कि जाकर सब बनाव देखे। वह नाई वहाँ खड़ा था। उसने सुपियारदे के चीर पर कुछ चिह्न लगा दिया और नर्वद

ने बढ़िया अतर से भरी हुई पिचकारी चलाई, जिसके छींटे भी दुपट्टे पर लगे। नर्वद ने हाथ से टटोल कर कहा, यह सुपियारदे है। आरती की, विवाह हुआ, नर्वद अपनी ठकुराणी को लेकर पीछा गया।

जब सुपियारदे अपने पति के घर वापस आई तब नाई ने नरसिंह से कहा कि इसने आरती की। उसने अपनी स्त्री से पूछा तो वह नट गई कि मैंने आरती नहीं की। नाई बोला—तुमने आरती की, मैंने तुम्हारी साड़ी पर निशान किया है और उसपर इतर के छींटे भी लगे हैं। साड़ी देखी गई, सुपियारदे का झूठ खुल गया। तब तो उसके पति ने उसको चाबुक मारे और मुश्कें बाँधकर पलँग से नीचे पटक दिया। इतना ही नहीं, किंतु उसकी एक सौत को बुलाकर उसके सामने पलँग पर ले बैठा। तब सुपियारदे क्रोध के मारे अपने पति का नाम लेकर बोली (राजपूताने में स्त्रियाँ अपने पति का नाम नहीं लिया करती हैं)—"नरसिंह सिंधल! तू मुझे मार डालता, मेरी बोटी बोटी काट देता तो मैं कुछ न कहती; परन्तु तूने मेरे सामने दूसरी स्त्री को पलँग पर चढ़ाया इसलिए मैं जो अब कभी तेरे पलँग पर पाँव धरूँ तो अपने भाई के पलँग पर धरूँ।" फिर दासी ने जाकर साँखला की सासू से सब हाल कहा। वह आई तब नरसिंह तो माता को देखकर बाहर निकल गया और वह (सासू) सुपियारदे के बंधन छुड़ा उसको अपने साथ ले गई।

अब सुपियारदे गहना पाता उतार मौनव्रत धारण कर एक कोठरी में जा बैठी और नर्वद को पत्र लिखा कि तुम्हारी आरती करने का मुझे यह फल मिला है। पत्र पढ़कर नर्वद बोला कि मैं भी यही चाहता था। अब मैं तैयार हूँ। दो बैल मोल लिये, उनको रातब खिलाता और गाड़ी में जोतकर भूमि चलने में बढ़ाता था।

उनको ऐसे सधा लिया कि एक दिन में तीस कोस जाकर पीछे चले आवें। जब उसको विश्वास हो गया कि अब बैल यथेष्ट काम देने के योग्य हो गये हैं तो वह गाड़ी में बैठकर चला और संध्या समय जैतारण की वाड़ी में संकेतानुसार जा उतरा। जो मनुष्य सुपियारदे का पत्र लाया था उसके साथ मर्दानी पोशाक भेजी। सुपियारदे वस्त्र पहन, पाग बाँध, शस्त्र सज, घर से निकल पड़ी। उस दिन गाँव में रावलों का खेल होता था। सिंधल सब देखने को गये थे, केवल सुपियारदे का अंधा श्वशुर घर में था। जब उसके आगे होकर वह चली तो अंधे वीदा ने पुकारा "कौन गया रे"? चरवादार ने उत्तर दिया कि वहाँ तो कोई नहीं है। अंधा कहता है—"नहीं किस तरह, वह अवश्य कोई गया है"। ऐसा कह वह भीतर रावले में गया और अपनी स्त्री से कहा कि जाकर सुपियारदे की खबर कर। स्त्री बोली क्यों? कहने लगा जब वह ब्याह कर आई थी तब मैंने उसके पाँव की मचकाहट सुनी थी, आज फिर वैसा ही शब्द सुना है। वीदा की स्त्री ने अपनी दासी को देखने के वास्ते भेजा। सुपियारदे जाती हुई अपने पलँग पर लंबा बोंटा सा रखकर उसपर सीरख (रज़ाई) ओढ़ा गई थी, उसे देख दासी ने पीछी आकर कह दिया कि "बहूजी तो पौढ़ी हुई हैं"। वीदा को विश्वास न हुआ। अपनी स्त्री को कहा कि तू स्वयं जाकर देख। सासू गई और देखा तो सीरख पड़ी हुई है, सुपियारदे नहीं है। पीछी दौड़ी, कहा—"बहू गई"। सुपियारदे वहाँ पहुँची जहाँ खेल हो रहा था। रावल थाली फिरा रहे थे। उसने आगे बढ़कर एक सोने की मोहर थाली में डाली और चलती बनी। नर्वद गाड़ी जोते खड़ा ही था, वह झट जा चढ़ी। यहाँ जब रावल ने थाली अपने मुखिया के पास लाकर धरी तो उसमें मोहर देखकर उसने पूछा कि यह किसने

डाली है। कहा, किसी जवान आदमी ने डाली है। सिंधल सब उठ खड़े हुए। कहने लगे, यह तो कुछ दाल में काला है। खेल समाप्त हुआ। इतने में तो एक आदमी ने आकर ख़बर दी कि सुपियारदे चली गई है, गाँव में ढोल हुआ, सिंधल चढ़े। आगे गाड़ी की लीक देखकर कहने लगे कि नर्बद लिये जाता है। ये भी पीछे लगे चले गये। मार्ग में लूणी नदी आई, जो पूर वह रही थी। नर्बद ने कहा, नदी का प्रवाह तीव्र है, उतर नहीं सकेंगे। सुपियारदे बोली—बहली को नदी में डाल दो। नदी में डूबकर मर जाऊँ तो पर्वाह नहीं, परंतु पीछे आनेवालों के हाथ में पड़ने न पाऊँ। यह सुनते ही नर्बद ने बैलों को नदी में चलाया, वे भी नथनों से श्वास का वेग छोड़ते हुए पार पहुँच गये। सिंधलों ने भी अपने घोड़े उस पूर में डाल दिये। प्रभात होते नर्बद अपने गाँव के समीप पहुँच गया।

यहाँ जब नर्बद के छोटे भाई आसकरण ने देखा कि भाई अब तक नहीं आया है तो वह चढ़ा। मार्ग में उसको भाई मिला। तब नर्बद ने उसको कहा—"भाई, तू सुपियारदे को घर ले जा! मैं युद्ध करूँगा"। आसकरण ने उत्तर दिया "आप ले पधारें, मैं सन्मुख होकर मरूँगा"। तब नर्बद तो सुपियारदे सहित घर आया और आसकरण सिंधलों के साथ लड़कर खेत पड़ा। जब उसकी स्त्री सती होने को चलने लगी तो कहा कि "जिसके वास्ते मेरे पति ने प्राण दिये उसको देख तो लूँ"। सुपियारदे को देखकर बोली—"रजपूतों पर तो मरने का ऋण ही है, परंतु जेठजी ने विश्राम भला लिया"। इतना कह वह सती हो गई।

सिंधल पीछे लौट पड़े और मार्ग में एक गाँव के पास तालाब पर ठहरे। वहाँ पनिहारियाँ जल भरने को आई थीं। उनमें से एक ने

पूछा—वीरा बैर (स्त्री) किसकी गई है ? नरसिंह सिंधल घोड़े को रानों में दवाये वट वृक्ष की शाखा पकड़कर झूलने लगा और कहा "बैर मेरी गई, जो बल से जाती तो जाने न देता, परंतु स्त्रियों का स्वभाव ही ऐसा होता है कि वे किसी की रोकी नहीं रुकती हैं"। तब दूसरी बोली—"नहीं वीरा, बैर कभी न जाती, परंतु तूने बहुत बुरा किया, उसके सामने खटिया पर सौत को सुलाया तब गई, नहीं तो काहे को जाती"।

सातवाँ प्रकरण

राव जोधा

(राणी भटियाणी का पुत्र) काहू के पास रहता था। नापा (नरपाल) साँखला उसका तरफ़दार राणाजी के पास चित्तौड़ में था। उसने राव को कहलाया कि "रावजी! पीछे ही तो कभी राव रणमल का वैर लेने पधारोगे तो अभी क्यों नहीं आते हो"? जोधा सब सामान दुरुस्त कर सवार हुआ और पूछा कि मड़ेवे के मार्ग में बस्ती कहाँ कहाँ आती है। किसी ने कहा कि बस्ती तो थोड़े ही ठिकानों पर है, परंतु आगे मोडी मूलवाणी का गुड़ा है। राव उस गुड़े पहुँचा। मोडी को खबर हुई। उसने बड़े सत्कार के साथ ठहराया फिर विचारा कि राव जोधा जैसा पाहुना मेरे यहाँ कब आवेगा, उसकी मेहमानदारी किससे करूँ। उसके पास किसी साहूकार ने अपनी मजीठ और खाँड रख छोड़ी थी, उसने सोचा कि यह मजीठ और खाँड फिर किस दिन काम आवेगी; घृत तो गौवों का बहुत सा है ही। मजीठ को पिसवाकर मैदा तैयार कराया और उसमें घी शक्कर मिलाकर सीरा बनाया, कैरों (करील) का साग कराया, गोठ तैयार हुई, आकर विनती की कि अरोगने पधारें। रावजी अपने सब साथियों सहित आये। पाँतिया हुआ, भली भाँति परोसगारी की और सब जीमकर तृप्त हो गये! पिछली रात को वहाँ से कूच हुआ और प्रभात होने पर जब सब ठाकुरों ने अपने अपने हाथ देखे तो लाल रंग के। यह देखकर सब विस्मित हुए। किसी ने कहा कि मोडी से इसका कारण पुछवाया जावे। रावजी ने दो सवार उसके पास भेजे। सवारों को आते देख मोडी उनके सामने

आई। कहा, तुम्हारे आने का कारण मैं जान गई। रावजी राव रणमल का बैर लेने पधारते हैं सो परमेश्वर ने तुम्हारे पर रंग चढ़ाया है। यहाँ खेती तो होती नहीं इसलिए धान कम मिलता है, सूजी पड़ी थी, जिसका सीरा बनाया था। रावजी को आशिष कहना और मालूम करना कि यह भोजन आपको अमृत ही होगा। सवारों ने आकर रावजी से वही बात अर्ज़ की। रावजी प्रसन्न हुए और वहाँ से हरभम साँखला के गाँव बहेंगटी आये। हरभम शकुनी था। उसका भानजा जैसा भाटी रावजी के पास खड़ा था। उसको रावजी ने अपने शामिल भोजन को बैठा लिया, वह भी मुजरा कर बैठ गया। तब हरभम ने सिर धुना और अर्ज़ की कि आपने कृपा की सो यह आपकी संपत्ति का हिस्सेदार होगा और हम धरती के साखी रहेंगे। राव ने भोजनोत्तर शकुन का फल पूछा। हरभम ने कहा, इसका फल यह है कि आज जितनी भूमि है और जितनी में रावजी का घोड़ा फिरे वह सब आपके वंश में बनी रहेगी और आपका प्रताप बढ़ेगा। यह सुनकर राव जोधा हर्षित हुआ और चलते वक्त जैसा को साथ लिया। वहाँ से रावत लूणा के गाँव सेतरावे पहुँचे। लूणा धूमधड़क्के के साथ उनसे मिला। इससे रावजी के मन में कुछ क्रोध सा आ गया। रावत लूणा की ठकुरानी सोनगिरी के साथ रावजी के ननिहाल की तरफ़ कुछ संबंध होने से उन्होंने उसको जुहार कहलाया। उसने उनको अन्तःपुर में बुलाया, निछरावल की और कहा—"बाबा, हमारे पास जो कुछ धन धरती दिखती है वह सब तुम्हारी है, भोजन कीजिए। सब अच्छा होगा"। रावजी उतरे, गोठ तैयार हुई, अरोगे परंतु मन की कसक न निकली। रावत लूणा रावजी से रुख़सत हो जा सोया, तब सोनगिरी ने जाकर उस कमरे का ताला बाहर से लगा दिया और रावजी को सूचना दी। राव

जोधा ने वहाँ के सब घोड़े और मालमता लूटा। इससे दूसरे भी सब भूमिये डर गये और आ आकर रावजी के अधीन बने। वहाँ से सवार हो, मार्ग में के दूसरे भूमियों को नमा नमाकर साथ लेता हुआ राव जोधा रूंण में साँखलों के यहाँ आया। वे नारियल लेकर सामने हाजिर हुए। टीकाइत रावत ने अपनी बेटी रावजी को परणाई, और पूर्ण उत्साह के साथ विवाह किया। जब यह समाचार राणाजी को पहुँचे तो उन्होंने नापा साँखला को हजूर बुलाकर पूछा कि तुम्हारे भी इन दिनों में राव जोधाजी की कोई खबर आई है। पहले तो जब उससे इस विषय में पुछवाया जाता तो यही कहता कि कोई खबर नहीं आई; परन्तु इस बार तो कहा कि दीवाण! यह बात सच है, मेरे पास भी ऐसी ही खबर आई है। यह सुनते ही दीवाण के चेहरे का रंग बदल गया। नापा को फर्माया कि किसी ढब से सामला सुधर भी जावे। उसने अर्ज़ की "दीवाण सलामत! राठोड़ों के वैर का सामला बड़ा वेढब है, जिसमें वैर भी राव रणमल का"। तब तो दीवाण को और भी विशेष भय हुआ, नापे ने अर्ज़ की कि वैर करां (बेढब) है, धरती देने से मिटे। दीवाण ने भी इस बात को माना। नापा ने घर पर आकर तुरंत रावजी के पास कासिद भेजा और कहलाया कि यहाँ कुछ बल नहीं है आप शीघ्र पधारिये। तब राव की फौजें जगह जगह मेवाड़ में फैल गईं। देश की दशा देखकर दीवाण को बड़ी फ़िक्र हुई। नापा को कहा कि किसी प्रकार बात बन जावे तो ठीक है, नापा ने अर्ज़ की "दीवाण किसी बड़े आदमी को भेजकर बातचीत करावें"। राणाजी ने अपने प्रधानों को भेजा, उन्होंने जाकर राव जोधा से कहा "रावजी! जो होनी थी सो तो हुई, यह देश ही तुम्हारा बसाया हुआ है, यदि तुम्हीं मारोगे तो रखनेवाला कौन है"। रावजी ने कहा, "यह बात तो ठीक,

परंतु वैर बाँधना तो सहज है और छूटना कठिन है"। दीवाण के प्रधानों ने फिर कहा कि "हमने धरती दी, तब रावजी के उमराव बोले कि शर्तिया लड़ाई होनी चाहिए।" दीवाण के प्रधानों ने इसको स्वीकार कर दीवाण से आकर अर्ज़ की। राणाजी भी राजी हो गये। दोनों ओर की सेना आमने सामने खड़ी हो गई, खेत साफ किया। रणखंभ रोपे गये। रावजी की सेना पूर्व में और दीवाण की पश्चिम में रही। फिर रावजी के प्रधानों के मन में आई कि धरती लेवें तो अच्छा है, तब उन्होंने रावजी से अर्ज़ की कि किसी प्रकार पृथ्वी लेकर मँडोवर में मिलाना ठीक है, लड़ाई में तो आपके आगे ये ठहर न सकेंगे। धरती लेने की बात रावजी के मन में भी आई। उमराव बोले कि जो हुक्म हो तो द्वंद्वयुद्ध कर लें, अर्थात् एक सामंत हमारा और एक उनका मैदान में उतरकर युद्ध करे, जिसका सामंत जीते उसी की जीत समझी जावे। आपका नक्षत्र ऐसा है कि आप ही की जीत होगी। राव ने भी यह बात मानी। दीवाण की तरफ़ से विक्रमायत झाला और राव जोधा की तरफ़ से बीजा उदावत आया। बीजा ने विक्रमायत को एक ही हाथ में मार लिया। नापा साँखला दीवाण के पास खड़ा था। अर्ज़ की कि जो हाल बीजा का हुआ वैसा ही दीवाण का होता, परंतु धरती देने से वह बला टल गई। लौटते हुए राव जोधा ने मेवाड़ को भी लूटा और मँडोवर जाकर सं० १५१५ जेठ सुदी ११ शनिवार दोपहर को जोधपुर नगर की नींव डाली।

दूदा जोधावत, जिसने नरसिंह सिंधल के पुत्र मेघा को मारा—एक बार राव जोधा सोया हुआ था और उसके सरदार बैठे बातें करते थे। एक ने कहा कि भाटियों के साथ वैर न रहा, दूसरा बोला राठोड़ों के वैर है। तीसरे ने उत्तर दिया, एक वैर है—आसकरण सत्तावत का

और नर्वद सुपियारदे लाया, वह वैर नहीं लिया है। राव जोधा ने यह बात सुन ली और पूछा कि क्या कहते थे? पहले तो रजपूतों ने बात टाली, परंतु जब राव ने आग्रह के साथ पूछा तो कहा कि न तो आसकरण के और न नर्वद के पुत्र हैं, उनका वैर कौन ले! राव उस वक्त तो कुछ न बोला—प्रभात को उसका पुत्र दूदा, जिस पर राव की कृपा न थी, जब मुजरे को आया तो राव ने उसको कहा कि "दूदा, मेघा सिंधल को मारना चाहिए, क्योंकि उसके पिता नरसिंह ने आसकरण सत्तावत को—नर्वद सुपियारदे लाया, इसके बदले—मारा है"। दूदा ने पिता से सलाम की और तत्काल चला। राव जोधा ने कहा कि मैं साथ किये देता हूँ, अकेला मत जा। वह मेघा है। दूदा ने उत्तर दिया "दूदो मेघै, कै मेघो दूदै"—अर्थात् या दूदा मेघा को मार लेगा या मेघा दूदा को। घर आया, अपने आदमियों को साथ लेकर चढ़ चला, जैतारण से तीन कोस पर जाकर उतरा और दूत भेज मेघा को कहलाया कि "दूदा जोधा-वत आया है, आसकरण सत्तावत को माँगता है"। मेघा ने उत्तर भेजा कि "इतनी देर से क्यों आया"? पीछा कहलाया कि "जान पड़ने पीछे तो दूदा ने जल भी आगे आकर पिया है"। मेघा ने महल पर चढ़कर अपने नौकरों से कहा रे! घोड़ियाँ इधर मत ले जाना, दूदा जोधावत आया हुआ है सो ले लेगा। यह शब्द सुनकर दूदा ने पूछा कि यह कौन बोलता है। कहा—"जी! मेघा"। क्या उसकी आवाज इतनी दूर तक पहुँचती है? लोगों ने कहा—वह मेघा सिंधल है, क्या तुमने कभी उसका नाम नहीं सुना? फिर दूदा ने कहलाया—मुझे तेरी घोड़ियों से काम नहीं और न तेरे माल से वास्ता है। मुझे तो तेरा मस्तक चाहिए, सो अपने द्वंद्व युद्ध करें। दूसरे दिन मेघा अपना साथ ले मुकाबले को आया और

दूदा को कहा—"दूदाजी, मेरे रजपूत सब मेरे पुत्र की जान में गये हैं, यहाँ मैं थोड़े साथ से हूँ।" दूदा ने उत्तर दिया कि हम रजपूतों को क्यों कटावें, अपने दोनों लड़ लें। या तो दूदा मेघा को मार ले, या मेघा दूदा को दूध पिलावे। अंत में यही ठहराव हुआ, दोनों के रजपूत दूर खड़े हुए तमाशा देखते रहे। दोनों योधा मैदान में आये। दूदा बोला "मेघा! घाव कर"! मेघा कहता है, पहले तू वार कर! दूदा ने फिर वही शब्द कहे, तब मेघा ने तलवार झाड़ी। वह दूदा ने ढाल पर रोक ली और फिर एक ही हाथ में मेघा का सिर तन से जुदा कर दिया। मस्तक लेकर दूदा चला, तब रज-पूतों ने कहा कि इस सिर को धड़ पर रख दे! यह बड़ा रजपूत था। दूदा ने वैसा ही किया। उसके गाँव में भी किसी तरह का उजाड़ न करने दिया और आप पिता के पास आया तथा सिर झुकाया। राव जोधा ने प्रसन्न होकर घोड़ा सिरोपाव दिया।

सीहा सिंधल—सीहा सिंधल कमल पँवार है। उसके सब घोड़े मर गये तब एक दिन उसने अपने रजपूतों से कहा कि ठाकुरो घोड़े नहीं हैं, कहीं से लाने चाहिएँ। वह चढ़कर गाँव धोलहरे आया और गोयंद कूँपावत को मारकर उसके २०० घोड़े खोस लाया। दूसरे दिन वह सोजत के गाँव माँडहे गया; वहाँ महेश कूँपावत रहता था। सीहा ने उसके सम्मुख जाकर शस्त्र डाल दिये और कहा कि मैंने तो ऐसा कर्म किया है सो अब मुझको खीच खिलाओ (दंड दो या मारो)! महेश ने उसको खीच न खिलाया। यह बात मांडण (कूँपावत) ने सुनी। कहा, महेश ने अच्छा नहीं किया। जब सीहा आया था तो उसको खीच खिलाना उचित था। मांडण और सीहा दोनों दीवाण (मेवाड़ के महाराणा) के चाकर थे। एक वार भामाशाह ने दीवाण को गोठ दी और प्रत्येक सरदार

की पत्तल में मोतियों से भरी हुई एक एक पुड़िया रख दी। मेवाड़ के उमराव तो उन पुड़ियों को ले गये, परंतु सीहा ने अपनी पुड़िया नहीं ली। दीवाण ने बारियों से पूछा (बारी जाति के लोग पत्तल-दोने बनाते और सरदारों की चाकरी करते हैं) कि पत्तलों में कुछ मिला! उन्होंने अर्ज़ की कि दूसरी पत्तलों में तो कुछ नहीं था, परंतु सीहाजी की पत्तल में मोती पाये। सरदार सब खा-पीकर उठ गये तब सीहा के जोड़े (पगरखी) मांडण के सन्मुख रख दिये और सब सिंधल बोल उठे कि तुम्हारे भाग्य फलेंगे। मांडण के मन में इस बात की कसक पड़ गई। सीहा कहने लगा कि मांडण मुझको मारेगा। फिर सीहा दीवाण की चाकरी छोड़ जालोर में गजनीखाँ के पास जा रहा। वहाँ उसे डोडियाल पट्टे में मिली। मांडण ने जाना कि अब सीहा गया तो वह भी दीवाण की सेवा छोड़ मारवाड़ में कल्ला बीदावत के पास चला गया। वहाँ उसने अपनी कटार डालकर कहा—कल्ला! तू बीदा का बेटा है सो अब जो तू कटार बँधावे तो मैं बाँधूँगा। कल्ला अपने साथ सहित मांडण की सहायता को चला। मार्ग में उदयसिंह देवड़ा बाहर की पालड़ी (गाँव) में रहता था। उसके पास अच्छे अच्छे राजपूत थे। सीहा और मांडण दोनों की बेटियाँ उदयसिंह को ब्याही थीं। मांडण की बेटी पति की कृपापात्र और सीहा की कन्या दुहागन थी। मांडण ने अपने चारण के हाथ बेटी को कह-लाया कि बाई! तू अपने पति से कह देना कि "हम यहाँ अपना वैर लेने को दौड़ते हैं, आपके ललाट पर दही चढ़ाया है, आप बड़े सरदार हो सो टाला दे देना"। उसी समय सीहा के चाकर ४ राजपूत रिसाकर सिंधलवाटी छोड़ डोडियाल की ओर जाते थे। उनको मनाने के लिए सीहा भी उधर आ गया। उनको

देखकर सीहा घोड़े से उतर पड़ा। राजपूतों ने उसके भोजन की तैयारी करना चाहा तो उसने कहा कि यहाँ मांडण पास ही है, अपने चलकर साथियों से मिल जावें। राजपूतों ने कहा "सीहाजी! तो चाँद को कौन गोदी में पकड़ सकता है" (भावी टलने का नहीं?)। सीहा वहीं उतर पड़ा; एक राजपूत बकरा लेने गया, दूसरा घृत, चावल, मैदा लाने को दौड़ा। उन राजपूतों की माता बैलगाड़ी पर चढ़ी तो क्या देखती है कि बरछियाँ चमक रही हैं। मांडण आ पहुँचा और वहीं ब्राह्मणों की गाड़ियाँ जा रही थीं। उधर जाकर पूछा कि हम गजनीखाँ के चाकर हैं, बताओ सीहा सिंधल कहाँ है? ब्राह्मण बोले महाराज! हमारा स्वामी भी कहीं पास ही होगा। मांडण अपने कटक के शामिल होकर सीहा पर जा गिरा तब उस राजपूतानी ने गाड़ी पर से उतरकर बेटों को कहा कि "अरे पुत्रो! सीहा बहुत राजपूतों का धनी है, इस वक्त देखना है कि तुम किस तरह अपना कर्तव्य पालन करते हो"! इन राजपूतों ने शस्त्र सँभाले और खूब लड़े, सीहा मारा गया। राघो वालोत नामी राजपूत सीहा के पास था। वह पग से खोड़ा एक पाँव काठ की घोड़ी में रखता था। उसने सेवा के सामने वह घोड़ी फेंक दी और कहा भाई, इतने दिन इसको दाना चारा मैंने खिलाया अब तुम खिलाना। बरछा हाथ में पकड़ लिया और बड़े पराक्रम के साथ लड़ मरा। सीहा को मारकर मांडण कूँपावत लौटा और उदयसिंह देवड़ा के यहाँ आया। इतने में वह राजपूत जो कहीं (भोजन का) सामान लेने गया था, आ पहुँचा। माता से पूछा कि तेरा कुछ गया तो नहीं! कहा, कुछ भी नहीं गया। बेटा तू बच गया। राजपूत बोला तेरे सब ही गये, मैं भी लड़ मरूँगा और वह भी मांडण के पास जा, लड़ाई कर मारा गया।

यह बात सब जगह फैल गई कि मांडण कूँपावत ने सीहा सिंधल को मारा है। जब उदयसिंह ने यह सुना तो बोल उठा कि "मा जही मांडणरी" (एक गाली है) "मेरी तलहटी में सीहा को मारा"। मांडण की बेटी ने पति (उठते हुए) का पल्ला पकड़ा और कहा "आप क्या करते हैं, आपके वैर फिरता है, आपके सिर पर तो एही का तिलक लगाया था"। ऐसा कहकर पीछा बिठाया। उदयसिंह के राजपूत सब कचहरी में आ इकट्ठे हुए बाट जोहते थे कि शस्त्र सजकर स्वामी आवे तो झगड़े को चलें। उस वक्त सीहा की बेटी ने निकलकर कहा--"ठाकुरो! वह तो मांडण का जमाई है, उसकी बेटी की बात मान ली है। तुम्हारे में कोई रजपूतानी का जाया है कि नहीं जो इस भूमि की लाज रक्खे?" तुरंत राजपूतों ने पायगाह में से ८२ घोड़े खोल लिये और एक एक घोड़े पर दो दो सवार हो १६० शस्त्रबंद जा पहुँचे। हाथों में ढालें पकड़ घोड़ों पर से उतर पड़े और झगड़ा किया। कल्ला बीदावत और ५० आदमी मांडण के मारे गये, मांडण घायल हुआ। ये सही सलामत खड़े रहे। उस वक्त (मारवाड़ का) राव चंद्रसेन घुघरोट के पहाड़ों में था। सो राव के सैनिकों ने आकर सब देवड़ों को ठिकाने लगाया। उसी दिन से कल्ला की साहिबी टूट गई, सिंधलों से लड़ाई की तब कल्ला १५ वर्ष का था। मांडण की जागीर में वृद्धि हुई।

आठवाँ प्रकरण

नरा सूजावत और राव गांगा

नरा सूजावत—(राव सूजा का पुत्र, जिसको उसके पिता ने फलोदी जागीर में दी थी।) राठोड़ खींवा (खेमराज) पोहकरण में राज करता था जहाँ बालनाथ जोगी का आश्रम था। वह गढ़ी के स्वामी हरभू साँखला मेहराजोत की कन्या का विवाह जेसलमेर के भाटी कलिकर्ण के साथ हुआ था, वह अपने पिता ही के घर रहती थी। उसके एक कन्या नक्षत्र (मूल) में उत्पन्न हुई, (प्राय: हिंदुओं में इस नक्षत्र में पैदा होनेवाले बालक को बुरा समझते हैं) इसलिए उसको वन में फेंक आये। उसी अवसर पर हरभू फलोदी गया था, पीछा लौटते हुए उसने जंगल में बालक के रोने का शब्द सुना और एक बालक को पड़ा देखकर पूछा यह किसका बालक है, तो यही उत्तर मिला कि कोई डाल गया होगा सो रोता है। हरभू उसको उठाकर घर पर ले आया और धाय रखकर भली भाँति उसका पालन-पोषण करने लगा। (उसकी स्त्री ने) जब उस बालिका का वस्त्र पहचाना तो कहा कि इसको क्यों लाये, यह तो बुरे नक्षत्र में पैदा हुई है। हरभू ने उत्तर दिया कि नहीं, यह शुभ नक्षत्र में जन्मी है। इसका परिवार बढ़ेगा और यह अपने पिता तथा पति दोनों के कुल को उज्ज्वल करेगी। नाम उसका लक्ष्मी रक्खा। उन्हीं दिनों में हरभू के भी कन्या जन्मी। ये दोनों मौसी भानजियाँ परस्पर क्रीड़ा करती बड़ी हुईं तब संबंध की फिक्र करने लगे। हरभू ने ब्राह्मण को बुलाकर कहा कि बाई लक्ष्मी का नारियल पोहकरण के खींवा राठोड़ को ले जाकर दे आ।

ब्राह्मण गया और कहा कि कलिकर्ण भाटी की बेटी और हरभू साँखला की दोहिती का नारियल लाया हूँ। खींवा बोला—हमने सुना है कि उसके ग्रह बुरे हैं इसलिए वह सगाई मैं न करूँगा, यदि हरभूजी की कन्या दें तो ब्याह लूँ। तब ब्राह्मण पीछा लौटा, सारी बात हरभू से कही। हरभू कहने लगा कि भाई जिसके घर बेटी जन्मी वह जन्म हार गया, अब क्या किया जावे। फिर अपनी कन्या का नारियल खींवा के पास भेज दिया। उसने भी उसे बधा-कर लिया और शुभ मुहूर्त्त में जान बना विवाह करने आया। लक्ष्मी का नारियल और भी दो तीन जगह भेजा गया, परंतु सबने पीछा फिरा दिया।

राव सांतल जोधपुर में राज करता था और सूजा शिकार खेलता फिरता था। एक बार वह गढ़ो के पास आ निकला। तब हरभू ने उसके साथ लक्ष्मी का विवाह कर दिया। उसके दो पुत्र बाघा और नरा हुए, सांतल के बेटा नहीं था। इसलिए (उसके पीछे) सूजा गद्दी बैठा और लक्ष्मी राजराणी हुई। उसका भाई जैसा राव सूजा के पास आकर रहा, जिसकी संतान जैसा भाटी हैं। राव सूजा ने मारवाड़ का अच्छा प्रबंध किया; बाघा को बगड़ी और नरा को फलोदी जागीर में दी। राणी लक्ष्मी फलोदी में नरा के पास रहती थी। एक दिन वर्षाकाल में घड़ी चार एक रात गये नरा अपनी माता के पास भोजन करने आया था, उस वक्त एक दासी ने झरोखे में जाकर देखा और बोली—"आज पोहकरण पर खींवण होती है" (बिजली चमकती है)। तब लक्ष्मी ने निःश्वास छोड़ा। नरा ने पूछा—"माता! तुम्हारे बाघा और नरा जैसे पुत्र हैं फिर निःश्वास क्यों डाला"? "रावजी भी आनंद में हैं।" माता बोली "बेटा, मुझसे मत पूछ"। नरा ने आग्रह किया तो

कहा—"इस पोहकरणवाले ने कुमारेपन में मेरी निंदा की थी"। नरा बोला—"माजी! इसके घर में तुम्हारी मौसी है इसलिए मैं कुछ नहीं बोलता हूँ, कहो तो अभी उसका गढ़ छीन लूँ"। लक्ष्मी ने कहा "बेटा ढील मत कर"। तब नरा ने अपने पुरोहित को कहा कि तू सहायता दे तो पोहकरण लेऊँ। पुरोहित ने उसे स्वीकारा। नरा बोला कि कल मैं तुझपर क्रोध करके तुझे बुरा भला कहूँगा, तू भी मुझे वैसा ही उत्तर देना और रिसाकर ऊँट पर चढ़ पोहकरण चला जाना। प्रभात हुआ, पुरोहित आया, तब नरा क्रोध कर उसे कहने लगा—"हरामखोर! तू मुझे मुँह मत दिखा! तू मेरे राज में विरोध फैलाता है, मैं तुझे नहीं चाहता, जा काला मुँह कर"! पुरोहित ने भी वैसा ही उत्तर दिया—"नरा! तू किस तरह बोलता है, हाल तो रावजी सलामत हैं, और उनके कुँवर भी बहुत हैं; तू किस बाग की मूली है"। इतना कह उठा और चाकर के पास से छागल (पानी भरने की मशक) ले कोठड़ी में जा ऊँट पर पलाण कस बैठकर चल दिया और यह कहा—"नरा! अब तुझे जो जुहार करूँ तो अपने वैरी को करूँ"। चाकरों ने आकर नरा से कहा कि आपकी खासा सवारी के ऊँट पर पुरोहित ने काठी माँडी है। नरा बोला—"उस हरामखोर को जाने दो! किसी प्रकार वह मेरी निगाह से टले"। पुरोहित पोहकरण गया। जहाँ उसकी सुसराल थी, वहाँ जाकर वह सदा घर में बैठा रहता, बाहर कभी न निकलता था। उसके ससुर तथा साले ने इसका कारण पूछा तो उसने कहा कि मैं नरा से लड़कर आया हूँ। सुसरालवालों ने राव खींवा से जाकर यह बात कही कि हमारा जमाई नरा से रिसाकर आया है। तब खींवा ने पुरोहित को बुलाया और नरा से रिसाने का कारण पूछा—कहा, यहाँ

आया करो, खर्च लो और आनंद में रहो; यहाँ भी तुम्हारा घर है। पुरोहित बोला—"राजा, खर्च खाते हैं सो आप ही का है, हाल तो रावजी विद्यमान हैं उनके कई पुत्र हैं, एक नरा रूठ गया तो क्या हुआ"।

पुरोहित जेठ मास में आया था तब इमली फली हुई थी। जोगी के आश्रम में उसका एक वृक्ष था सो राव (खींवा) के पुत्र रोज वहाँ आते और ऊपर चढ़कर फल तोड़ते थे। एक दिन बालनाथ आया तो उसे देखकर कुँवर उतर गये। जोगी ने क्रोध में आकर इमली को तो निष्फल कर दिया और कुँवरों को कहा कि "तुमसे गढ़ जावेगा और हमारे चेलों से मठ छूटेगा, वे घरबारी हो जावेंगे"। इतना कहकर नाथजी चलते हुए। कई मनुष्यों ने उनको रोका परंतु पीछे न फिरे। राव खींवा की ठकुराणी ईंदी बालनाथ की परम भक्त थी। पहले नाथजी के थाल भेजकर फिर आप भोजन किया करती थी। उस दिन ठकुराणी का मनुष्य भोजन लेकर गया तो किसी ने कहा कि नाथजी तो आज चले गये। पूछा—क्यों? उत्तर दिया कि कुँवरों ने कष्ट पहुँचाया और जाते हुए ऐसा ऐसा कह गये हैं। यह समाचार सुनते ही ईंदी भोजन पर से उठ खड़ी हुई और नंगे पाँव भागी गई। सात कोस पर जाकर देखा कि जाल के वृक्ष के नीचे नाथजी सोये हुए हैं। वह पहुँचकर पगचंपी करने बैठ गई। नाथ जी की आँख खुली, इसे देखकर पूछा "माता तू क्यों आई? मेरा वचन फिरने का नहीं"। ईंदी बोली, तो हमारी क्या गति होगी? नाथजी ने कहा "तेरे पुत्र होगा, बड़ा वीर, उसका नाम लूँका देना। वह सात बरस का होगा तब धरती पीछी आवेगी, परंतु इस जाल तक। अब मैं दूसरी तरफ़ जाऊँगा"। ईंदी पीछी घर आई।

एक दिन राव खींवा वछेरों को देखने के वास्ते ओगरास गाँव को जाता था। पुरोहित को कहा कि तुम भी चलो। वह बोला—हम ब्राह्मणों का वहाँ क्या काम है? राव तो ८० सवार साथ ले चढ़ गया, और गढ़ का द्वारपाल हाथ में कटार लिये खड़ा था। पुरोहित ने उससे पूछा कि कहाँ जाते हो? पौलिया बोला कि यह कटार किसी को देने जाता हूँ कि सुधरा लावे। पुरोहित ने कहा—"जी मुझे दो, मैं सुधरा लाऊँ"। दर्वान—"नहीं महाराज, आपको सुधराने के लिए क्या दूँ"? पुरोहित—कोई भय नहीं, चाकर ले चलेगा। ऐसा कह कटार लिया, ऊँट मँगा उस पर रजाई पटक चाकर को तो वहीं छोड़ा और आप चढ़कर देहरे के मार्ग से चला। आगे एक पल्लीवाल ब्राह्मण मिला उससे कहा--रे! वित्त ले जाते हैं बाहर कर। ब्राह्मण पुकार उठा, राव नरा ऊँटों पर शस्त्रबंद साथ लिये तयार खड़ा ही था। पाँच सौ सवारों से आगे बढ़ा तो मार्ग में पुरोहित को देखा कि ऊँट को खींचता चला आता है। राना सोहड़ ने कहा कि ब्राह्मण आता है कुछ बात न होवे, बाहर का मामला है। राव नरा बोला "मैं कुछ नहीं कह सकता, चले आओ"। वह ब्राह्मण भी साथ हो लिया। राणा ने फिर कहा कि न तो कोई खोज नजर आते हैं और न कोई धसका (बैठाने का स्थान) दिखता है, अपने जावेंगे कहाँ? नरा ने उत्तर दिया कि "पोहकरण लेंगे"। राणा कहता है—तब तो कोड़ीधज घोड़े का मुँह कूटो! घोड़े ने नथने फटकारे, जिनका शब्द गाँव ओगरास में कदड़ू पहाड़ी तक सुनाई दिया। राव खींवा कोली (वस्तुविशेष) हाथ में लिये न्याल (खुली कोठड़ी) में बैठा छांट (मुँह धोना) डालता हुआ बोल उठा "कोड़ीधज घोड़े के फरड़ेक" (नथनों का शब्द) सुनने में आते हैं, गढ़ भी सूना है। वह वमनिया भी पाँच छः महीने से आकर ठहरा

हुआ है, कुछ उपद्रव सा नजर आता है। खबर के वास्ते पाँच छः सवार भेजे जो पहाड़ी पर जाकर खड़े रहे। इतने में नरा का साथ आन पहुँचा। सवारों ने पूछा कि कौन ठाकुर हैं! कहा—"नरा बीकावत का साथ है, अमरकोट व्याहने के वास्ते जाता है"। सवारों ने कहा कि कोड़ीधज घोड़ा तो नरा सूजावत के पास है। किसी ने उत्तर दे दिया कि हमारा घोड़ा बीमार था सो इसको माँग लाये हैं। फिर पूछा कि इतने ऊँटों पर शस्त्र क्यों लदे हैं? "कहा—हमारे वैर भाव है, और राजाओं के साथ अस्त्र शस्त्र होने ही चाहिएँ।" उन सवारों ने राव खींवा से जाकर कहा कि कुछ दाल में काला है। संघ चला जाता है, सब केसरिया किये हैं, सिर पर सेहरा बँधा है और खम्मायच राग गाया जाता है। इतने में नरा पोहकरण जा पहुँचा। पुरोहित ने आगे बढ़कर पोलिये को पुकारा कि झट आ अपनी कटार ले! वह जागकर आँखें मलता हुआ आया, खिड़की खोली और कहा—"लाओ दे दो"। पुरोहित ने कहा "यह ले भाई, हमारे कौन हाथ लगावे"? ज्योंही द्वारपाल ने कटार लेने को हाथ बाहर निकाला कि नरा ने बर्छी मारी जो पीठ में जाती निकली। वह तो पृथ्वी पर गिरा और नरा भीतर घुस पड़ा तथा नगर में अपनी आण दोहाई फिरा दी। खींवा ने खबर को सवार भेजवाया। उसने पीछा आकर कहा कि नरा सूजावत ने पोहकरण लिया और वहाँ उसकी दुहाई फिर गई है।

(निराश हुआ) खींवा पोहकरण से तीन चार कोस बाजू में होकर निकला। मार्ग में एक गड़रिया मिला जो एक सिसकते हुए बकरे को कंधे पर लादे चला आता है। उसने आकर खींवा को वह बकरा दिया। खींवा ने बाबा से पूछा कि यह क्या बात कहता है! बाबा बोला—खींवा! आप जितने कोस जाकर इस बकरे को खायें

उतने वर्षों में नरा को मारेंगे, खींवा ने पाँच छक्कड़ (३० पैसे) देकर उससे बकरा लिया। गड़रिये ने पैसे लेने से इन्कार किया तो कहा कि ले ले! हमारे यह शकुन की बात है। फिर १२ कोस भिणीयाणे (गाँव) जाकर बकरा खाया। जब नरा ने गढ़ में प्रवेश किया तो खींवा की स्त्री ने कहा—"बेटा हमको क्यों निकालता है? हम तो कैर काँटा खाते हुए बैठे थे"। नरा बोला—"नानीजी! तुम कैर काँटे खाओ, हम वहाँ गेहूँ खावेंगे"। ऐसा कह राजलोक को बाहर निकाला। वे बाहड़मेर जाकर बसे और वहाँ से दौड़ धूप करने लगे। नरा ने पोहकरण की भूमि आबाद की और सांतलमेर का गढ़ बनवाया।

जब (खींवा का पुत्र) लूँका बारह वर्ष का हुआ तब राव खींवा, चाचा वरजांग लूँका सब मिलकर चले और उन्होंने पोहकरण के पशु छीन लिये। राव नरा छुड़ाने को चढ़ा, लड़ाई हुई। नरा ने लूँका के पीछे घोड़ा दिया और उसे जा लिया। तब उसने चलते चलते ही तलवार का एक हाथ ऐसा किया कि सिर तन से जुदा हो गया और नरा का घोड़ा धड़ को लिये ही २०० कदम तक चला गया। नरा को मारकर खींवा आदि गाँव भिणीयाणे में ठहरे और नरा के साथी पोहकरण आये। हकीकत कही तो नरा की स्त्रियाँ सती होने को निकलीं। देखें तो पति के धड़ पर मस्तक नहीं है। पोहकरणों के पास मस्तक मँगवाया। उन्होंने कहा—हम तो मस्तक नहीं लाये, वहीं दो सौ कदम पर गाड़ो में सिर पड़ा हुआ है सो मँगवा लो। वहाँ एक कैर एक गागवण और एक और वृक्ष था जिनमें पड़े हुए नरा के मस्तक को लाये। उसे गोद में रख स्त्रियों ने सत किया। नरा के पीछे उसका पुत्र गोयंद टीके बैठा। नित लड़ाइयाँ होने लगीं। धरती बसने न पावे। तब राव सूजा ने गोयंद और खींवा दोनों को

बुलाकर उन्हें आधे-आध भूमि बाँट दी और जहाँ नरा का मस्तक पड़ा था वहीं सीमा बाँधी जो आज तक चली जाती है। सं० १५५१ चैत्र वदि ५ को नरा मारा गया। गोयंद के पुत्र जैतमाल और हमीर थे, आधी फलोदी हमीर को मिली और जैतमाल के सांतलमेर रहा। कुछ अर्से पीछे राव मालदेव ने दोनों के ठिकाने छीन लिये।

राव गांगा वीरमदेवोत—कितनेक बड़े ठाकुर जोधपुर आये। उनमें से कितनेक तो मुँहता रायमल के यहाँ ठहरे और सर्दार दरीखाने आ बैठे। इतने में वर्षा आ गई। तब उन ठाकुरों ने वीरमदेव की माता सीसोदणी को कहलाया कि बरसात से यहाँ रुक गये हैं सो भोजनादि का प्रबंध करा दीजिये। राणी ने उत्तर भेजा कि चकमे ओढ़कर डेरे पधारो, यहाँ आपको कौन जिमावेगा। फिर ठाकुरों ने गांगा की माता के पास खबर भेजी, तो उसने कहलाया कि "आप दरीखाने ठहरें, आपकी सेवा की जावेगी।" भली भाँति रसोई बनवाकर उनको जिमाया, ठाकुर बहुत प्रसन्न हुए। उसने अपनी धाय को भेजकर पुछवाया भी कि और जो कुछ चाहिए सो पहुँचाया जावे। ठाकुरों ने कहलाया कि सर्व आनंद है और साथ ही यह भी संदेश भेजा कि आपके कुँवर गांगा को जोधपुर की मुबारकबादी देते हैं। राणी ने आशिष भेजी और कहलाया कि "जोधपुर मैंने पाया, तुम्हारे ही हाथ है"। राव सूजा का देहांत हुआ और टीका देने का समय आया तब इन ठाकुरों ने गांगा को तिलक दिया और वीरमदेव को गढ़ से नीचे उतारा। उतरते हुए मार्ग में रायमल मुँहता मिला। उसने कहा कि यह तो पाटवी कुँवर है, इसको गढ़ से क्यों उतारते हो? उसको पीछा ले गया, तब सब सर्दारों ने मिलकर उसको सोजत दी। वीरमदेव पागल हो गया। मुँहता रायमल उसका काम सँभालता था और वह दिन भर पलँग पर बैठा रहता

था। राव गांगा सोजत पटे का एक गाँव लूटता तो रायमल जोधपुर के दो गाँव लूट लेता था। इस तरह दोनों भाइयों में विरोध चलता रहा। जैता जोधपुर का और कूँपा सोजत का चाकर था (ये दोनों भाई राव रणमल के पुत्र थे)। जैता की वसी वगड़ी राव वीरमदेव के विभाग में आई थी। बीस हजार का पटा था। जैता को वीरमदेव ने अपनी सेना का सेनापति बनाया और वगड़ी उसके बहाल रक्खी। वह भी सोजत का हितेच्छु था। गांगा ने उसको कहा कि तुम वगड़ी छोड़कर बीलाड़े आ रहो। तब उसने वगड़ी में अपने धायभाई रेडा को पत्र लिखा कि अपनी वसी बीलाड़े ले जाना। धायभाई ने सोचा कि जो वीरमदेव वगड़ी नहीं छुड़ाता है तो फिर हम क्यों छोड़ें और वहीं बना रहा। वीरम और गांगा के सैनिकों में युद्ध हुआ, राव वीरम की जीत हुई और राव गांगा के सैनिक भाग निकले। गांगा ने पूछा कि इसका क्या कारण कि मेरे लोग हार गये। किसी ने कहा कि जब तक जैता की वगड़ी है तब तक तुम नहीं जीत सकते। राव ने जैता को बुलाकर उपालंभ दिया, तब उसने फिर रेडा धायभाई को लिखा कि तूने मुझको रावजी के पास से उपालंभ दिलवाया, अब वगड़ी को रखना। रेडा ने विचारा कि रायमल को मारूँ तो ठीक हो। इस इरादे से वह सोजत गया, रायमल से मिला, वह वस्त्र पहनकर दर्बार में जाता था। रेडा को भी कहा कि चलो मुजरे को चलें। उसको साथ लिये राणीजी के मुजरे को गया। राणीजी ने पूछा—"वीर! यह कौन है?" कहा जैताजी का धायभाई, तब पावों लगाया। पीछा लौटते वक्त राणी ने रायमल को कहा कि "वीर! इसकी दृष्टि मुझे बुरी दीखती है, तू इसका विश्वास न करना"। रायमल बोला कि यह तो अपना ही आदमी है तो भी सीसोदणी ने यही कहा कि

बँधवाये। राव वीरम बोला—"हरदास, तूने मेरा घोड़ा खो दिया।" हरदास ने उत्तर दिया कि "जो मेरे रहते घोड़ा गया हो तो मुझे उपालंभ दो"। (इस पर अप्रसन्न होकर) हरदास वीरमदेव को छोड़कर नागोर में सरखेलखाँ के पास जा रहा। वीरम के भाई शेखा सूजावत सोजत आया और सीसोदणी से मिलकर कहा कि मुझे तुम अपने में शामिल कर लो। सीसोदणी ने रायमल से पूछा, उसने इंकार कर दिया, परंतु सीसोदणी ने उसका वचन उल्लंघन कर शेखा को अपने में शामिल किया। तब तो रायमल ने विचारा कि अब यहाँ रहने का धर्म नहीं है, राव गांगा को कहलाया कि "अब तुम आवो तो हुंडो सिकरेगी, सूजा के पास धरती न जावेगी। मैं काम आऊँगा, धरती तुमको दूँगा।" तब राव गांगा और कुँवर मालदेव दोनों कटक जोड़ सोजत आये। राव वीरम दूधा के पलँग की प्रदक्षिणा कर बाहर निकला और अपना साथ इकट्ठा कर मुकाबले को चला। खूब लड़ाई की, रायमल जूझता हुआ मारा गया और सोजत पर राव गांगा का अधिकार हो गया।

नवाँ प्रकरण

हरदास ऊहड़ की दूसरी वार्ता

हरदास ऊहड़ मोकलोत के २७ गाँव सहित कोढणा पट्टे में था। वह लक्कड़ चाकरी (प्रति वर्ष राज्य में नियत परिमाण का ईंधन पहुँचाना) नहीं करता, केवल आकर मुजरा कर जाता था, इसलिए कुँवर मालदेव उससे अप्रसन्न रहता था। उसने कोढणा भाँण को दिया। हरदास ऐसा वैसा मनुष्य न था कि उसके सन्मुख यह बात करने का किसी का हियाव पड़े। चाकरी भाँण करता और पट्टा हरदास खाता था। इस तरह तीन वर्ष बीत गये। एक बार भाँण और हरदास के कामदारों में परस्पर झगड़ा हो गया, हरदास ने यह बात सुनी और पूछा कि क्या मामला है? तब उत्तर दिया कि पट्टा तुमसे उतर गया है। वह बोला कि पट्टा उतर जाने पीछे गाँव में रहकर मैंने अन्न-जल लिया सो बुरा किया; फिर छोड़कर सोजत में वीरमदेव के पास चला गया। वहाँ जब घोड़े के वास्ते कहा-सुनी हुई तो वहाँ से भी छोड़ी और नागोर को चला। उस वक्त शेखा सूजावत पीपाड़ में रहता था। उसने आकर उसको मार्ग में रोका और कहा कि क्या मारवाड़ में कोई ऐसा राजपूत नहीं है जो हरदास के घावों की मरहम पट्टी कर सके। हरदास बोला—शेखा! मुझको समझकर रखना, जो तू राव गांगा से लड़ने में समर्थ हो तो मुझे ढाबना। शेखा ने कहा कि तुम खुशी से रहो। वह वहाँ ठहर गया। अब शेखा और हरदास रात-रात भर महल में बैठे सलाह करें और शेखा की ठकुरानियाँ रात भर बैठी ठंडे मरें। एक

दिन उन्होंने अपना दुखड़ा सास के आगे जाकर रोया, कि हम तो टंडे मरती बैठी रहें और तुम्हारा बेटा रातों हरदास के साथ सलाह किया करे। सास बोली कि आज हरदास पीछा जावे तब मुझे खबर देना। वह पिछली रात को लौटा, शेखा की माता सामने में राव आँगन में खड़ी थी। हरदास ने उसे देखकर मुजरा किया। उसने कहा "बेटा हरदास! कहीं शेखा की माता की टपरी को मत उजाड़ देना।" हरदास ने उत्तर दिया "माजी! पहले हर-दास की माता की टपरी उठेगी, उसके पीछे शेखा की मा का टापरा उजड़ेगा। बिना टापरा उजड़े जोधपुर आने का नहीं। या तो टापरा उजड़े या जोधपुर आवे।"

राव गांगा के भले आदमी शेखा के पास आये और कहा कि जितनी धरती में करड़ (घास विशेष) हो वह तुम्हारी और जितनी में सुरट पैदा हों वह हमारी रहे। तब शेखा ने कहा कि हरदास धरती बाँट ले, बात तो ठीक है, परंतु हरदास ने यह बात न मानी। उस वक्त जग्गा आसिया ने यह दोहा कहा—

दोहा

"ऊहड़ मन आणै नहीं कहे वचन हरदास।
का सेखो सिगलो लहै का गांगै सब ग्रास॥"

हरदास बोला—"ऊहड़ से यह नहीं हो सकता। या तो सब ग्रास शेखा ही के रहे या गांगा के। एक जोधपुर के दो भाग कैसे करें? एक पहाड़ी है जिसे बर्छी में पिरोकर मैं तुमको ला दूँगा।" भले आदमी पीछे लौट गये और कहा—वह तो यह बात नहीं मानता, लड़ाई करेगा। राव गांगा ने सेना एकत्रित की, बीकानेर से राव जैतसिंह को भी बुलाया; और शेखा तथा हरदास नागोर में सरखेलखाँ के पास सहायता को गये। कहा, हम तुझको और

दौलतखान को (बेटी) ब्याह देंगे, हमारी मदद कर। शेखा बोला "रे हरदास! बेटियाँ किसकी देगा?" उसने उत्तर दिया "कहाँ की बेटियाँ, तलवारों की सिर पर झोंक उड़ेगी, यदि जीते रहे तो बहुत से रिणमल (राव रणमल के वंशज) हैं, जिनकी दो लड़कियाँ दे देंगे और जो मारे गये तो कौन ब्याहे और किसकी बात।" दौलतखान को लिये शेखा बेराही गाँव में आ उतरा और राव गांगा ने धांधाणी में आकर डेरा डाला। दोनों के बीच दो कोस का अंतर था। राव गांगा ने शेखा को फिर कहलाया कि जहाँ अभी आप ठहरे हैं वही अपनी सीमा रहे, आप काका हैं, पूज्य हैं, परंतु उसने एक न मानी। यही उत्तर दिया कि "काका के बैठे जब तक भतीजा राज करे तब तक मुझे नींद आने की नहीं। मैंने खेत बुहारने की सेवकाई की है, अब अपना युद्ध ही हो।" तब तो गांगा ने भी साफ कह दिया कि "बहुत अच्छा, कल युद्ध करेंगे।" गांगा के ज्योतिषी ने कहा "राज! कल तो अपने योगिनी सम्मुख की है और विरोधी के पीठ की।" राव गांगा ने राव जैतसी को पुछवाया कि कल तो योगिनी सम्मुख बतलाते हैं। जैतसी ने उत्तर भेजा कि युद्ध करना तो अपने हाथ में नहीं, उनके हाथ में है। इतने में चारण खेमा कन्हैया बोला "जोगनी किस पर सवार है?" कहा, सिंह पर। उसने कहा "यह तो सब ब्राह्मणों की भुलावा देने की बातें हैं, जोगनी का वाहन तो और ही होता है।" ब्राह्मण बोला "काग पर सवार है।" तब चारण ने कहा कि "काग तो तीरों से भाग जाता है, इसलिए शेखा भी गांगा के दो ही तीरों से भाग जावेगा।" प्रभात हुआ, सरखेलखाँ के एक हाथी था, नाम उसका दर्याजोई। उसके दोनों तरफ चालीस चालीस हाथी पाखरें पड़े हुए रक्खे और उसको भी लोहे से ग़र्क़ कर दिया और फौज के मुँह पर उसको रक्खा। राव गांगा मुक़ाबले पर आया,

तब दौलतखान बोला "शेखाजी तुम तो कहते थे वे भाग जावेंगे"। शेखा ने कहा "खाँ साहब! जोधपुर है, यूँही तो कैसे भाग जावें।" तब तो वह चमका, जाना कि चूक न हो। इसी वक्त राव गांगा ने ललकारा "खान! कह तो तेरे तीर मारूँ और कह तो महावत को।" हाथी आगे बढ़ा, तब महावत को तीर मारकर गिराया। दूसरा तीर हाथी के लगा और वह भागा। दौलतखाँ ने भी पीठ दिखाई। तब तो शेख ७०० सवारों सहित घोड़ों से उतरकर रणखेत में पड़ा। वह तो भागना जानता ही न था। सबके सब मारे गये, शेखा और हर-दास अपने अपने बेटों सहित काम आये, तुर्क भागे। राव गांगा ने देखा कि शेखा घायल खेत में पड़ा है तब उससे पूछा "शेखाजी धरती किसकी?" राव जैतसी ने उसपर छत्र कराया, जल पिलाया, अमल खिलाया, तब शेखा ने आँख खोलकर पूछा "तू कौन है?" कहा "राव जैतसी"। शेखा ने कहा—"रावजी! हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था? हम तो काका भतीजा धरती के वास्ते लड़ते थे, अब जो मेरी गति हुई है वैसी ही तुम्हारी भी होगी।" इतना कहते ही शेखा के प्राण मुक्त हुए। खान के हाथियों में से अच्छे अच्छे तो कुँवर मालदेव ने ले लिये और खासा सवारी का बड़ा हाथी भागकर मेड़ते गया, उसे मेड़तियों ने बाँध रक्खा। उसके लिए मालदेव और मेड़तियों में विरोध पड़ा। (सं० १५१५ में वीरसिंह जोधावत ने मेड़ता बसाया और सं० १६११ में राव मालदेव ने मेड़ता लिया) दौलतखान भागा जिसकी साखी की घूमर—

"बीबी पूछै रे दोलतिया ते हाथी केथा किया रूड़ा रूड़ा रावै लिया पाडा पाछा दिया।"

"बीबी पूछै रे दोलतिया ते मीयां केथा किया ऊँचै मगरै घोर खणाई सो बाथै बाथै दिया।"

मेड़तिये (राठौड़ों) ने उस हाथी के घावों को बँधवाया, और उसको भीतर ले जाने लगे परंतु पोल छोटी सो हाथी जा सके नहीं तब दर्वाजे को तुड़वाकर अंदर ले गये। शकुनियों ने कहा कि यह काम बुरा किया कि दर्वाजा तुड़वाया। बोले अब क्या है, जो होना था सो हुआ। राव गांगा और कुँवर मालदेव ने सुना कि हाथी वीरमदेव के पास मेड़ते गया तो उसको मालदेव ने पीछा मँगवाया, कहलाया—"यह हाथी हमारा है, हमने लड़ाई करके लिया है सो भेज दो।" परंतु मेड़तियों ने दिया नहीं। वीरमदेव ने समझाया भी कि दे देना चाहिए, परंतु वे बोले कि कुँवरजी हमारे यहाँ पाहुने आवें तो उनकी मेहमानदारी करके हाथी देंगे। मालदेव आया, गोठ तैयार हुई, कहा अरोगिये। हाथी भी आता ही है। कुँवर ने कहा कि पहले हाथी लेकर पीछे जीमेंगे। रायमल दूदावत ने कहा—"कुँवरजी! ऐसे ही हठीले बालक हमारे भी हैं सो हाथी नहीं दे सकते; आप पधारो!" मालदेव ने क्रोध में आकर कहा कि "हाथी तो नहीं देते हो परंतु मेड़ते के स्थान पर मूलियाँ बुवाऊँ तो मेरा नाम मालदेव जानना।" इतना कहकर चला और जोधपुर आया। जब यह बात राव गांगा ने सुनी तो वीरमदेव को कहलाया कि "तुमने यह क्या किया। जब तक मैं बैठा हूँ तब तक तो तुम मेरे ईश्वर हो, परंतु जिस दिन मैंने आँख बंद की कि मालदेव तुमको दुख देगा, इसलिए वह हाथी उसको दे देना ही उचित है।" तब वीरमदेव ने दो घोड़े तो राव गांगा के वास्ते और हाथी मालदेव के पास भेजा। मार्ग में हाथी के घाव फटे और पीपाड़ में मर गया। घोड़े ले जाकर नजर किये और हाथी मर जाने के समाचार कह सुनाये। राव गांगा बोला कि हमारी धरती में आकर मरा सो हमारे पहुँच गया।

मालदेव ने कहा "आपके आ गया, मेरे नहीं आया, जब ले सकूँगा ले लूँगा"।

एक वर्ष बीता कि राव गांगा तो स्वर्ग को सिधाया (राव गांगा को कुँवर मालदेव ने राज्य के लोभ से झरोखे से नीचे गिराकर मार डाला था), मालदेव गद्दी बैठा और वीरमदेव से झगड़ा चलाया। इनको सास खाने देवे नहीं; और कहै, मेड़ता छोड़ो। अजमेर जा रहो। अजमेर में पँवारों का राज था, वीरम ने उन्हें मारकर अजमेर लिया और वहाँ जा रहा।*

---

* अजमेर का नगर सं० १५०० वि० से सं० १५१२ वि० तक मेवाड़ के महाराणा कुंभकर्ण के अधिकार में था, फिर मालवे के सुलतान महमूद खिलजी ने सं० १५१२ में लिया। सं० १५८६ के लगभग गुजरात के सुलतान बहादुरशाह ने उस पर अधिकार जमाया। शेरशाह सूर के अहद में राव मालदेव ने अजमेर लिया, परंतु थोड़े ही अर्से पीछे, सं० १६१६ वि० में, वह नगर बादशाह अकबर के अधिकार में आया। शायद पठान बादशाहों या जोधपुर की तरफ से श्रीनगर के पँवार वहाँ शासक रहे हों।

दसवाँ प्रकरण

राव मालदेव

राव मालदेव—(जब वीरमदेव ने अजमेर लिया तो) राव सहसमल पँवार भागकर राव मालदेव के पास गया। उसने पाँच गाँवों सहित रेयाँ उसे जागीर में दी। एक दिन रायसल ने आना-सागर पर गोठ की और सबको बुलाया। खेमा मुँहता को उसने कहा कि गोठ जीमने जाते हैं तुम राव (वीरम) को बिठली (अज-मेर के तारागढ़ का प्राचीन नाम) मत आने देना। जब बिठली चढ़ेगा तब रेयाँ की पहाड़ी देखेगा, और उस वक्त सहसा की याद उसे आवेगी तो वह कहेगा कि इसको मारे बिना जल न पीऊँगा। ऐसा कहकर रायसल तो गोठ जीमने गया, और (वीरम ने) खेमा मुँहता को कहा कि आप भी मिठाई मँगवाकर बिठली पर जाकर खावें। खेमा ने बहुत सा बरजा पर न माना और गढ़ पर जा चढ़ा और मारवाड़ की तरफ देखकर कहा कि "यह रेयाँ की पहाड़ी ही न हो, यह तो निकट ही है। इस सहसा को न मारूँ तो मेरा नाम (वीरम) नहीं।" संध्या को रायसल पीछा आया। मुँहता ने उससे कह दिया कि मैंने तो बहुत मना किया परंतु राव ने एक न सुनी।

राव मालदेव नागोर में रहता था। वह कहा करता कि "वीरम-देव मेरी छाती में खटकता है।" उस वक्त नागोर के थाणे में दस हज़ार घोड़े थे। जैता, कूँपा, अखैराज सोनगिरा, और बीदा भारमलोत ये ठाकुर जाकर रेयाँ में उतरे। उनको मालदेव ने आज्ञा

दी कि अजमेर जाकर वीरमदेव को वहाँ से निकाल दो। वे रातों रात वीरम पर चढ़कर आये। वह भी तैयार ही था, लड़ाई हुई, वीरम का बहुत सा साथ मारा गया। तीन घोड़े उसके नीचे कट गये। घोड़े पर चढ़े हुए उसने दुश्मनों के दस बर्छे छीनकर बाग के साथ पकड़ रक्खे। मस्तक पर घावों की चौकड़ी पड़ने से उनमें से बहते हुए रक्त का प्रवाह डाढ़ी पर उतर रहा है, युद्ध से तृप्त हुई दोनों सेनाएँ विलग विलग खड़ी हुई हैं, जिनमें घायल वीरम अपने योद्धाओं को बल बँधा रहा है। इतने में पंचायण आया और कहा—"रे! आज जैसा अवसर वीरम को मारने का फिर कब मिलेगा।" सर्दारों ने कहा—"अजी! हमने तो ऊपर आई हुई बला को एक बार बड़ी कठिनाई के साथ टाला, अब हमारे किये तो वीरम मरे नहीं, यदि तुम मार सको तो वह वीरम।" तब तीस सवार साथ लिये पंचायण आगे बढ़ा और वीरम को ललकारा। पंचायण को देखकर यह बोला—"अरे पंचायण! तू है क्या, आव! आव! ठीक आया; परंतु तेरे जैसे छोकरे मारवाड़ में बहुतेरे हैं! कौन है जो वीरा की पीठ पर घाव कर सके।" यह वचन सुनकर पंचायण जहाँ का तहाँ बाग थाम खड़ा रह गया। वीरम बोला—"जो ऐसा हो तो वहाँ खड़े ही को मारूँ, परंतु जा! चला जा! छोड़ता हूँ।" उसने भी बाग फेर ली। कूँपा ने कहा "वीरम इस प्रकार सहज में मरनेवाला नहीं है।" फिर ये तो नागोर आये और वीरमदेव अपने घायलों को उठवाकर अजमेर गया। राव मालदेव को रायसल का बड़ा भय रहता और सदा उससे चमकता रहता था। किसी ने तो कहा कि रायसल मारा गया, किसी ने कहा "नहीं, जीता है" तब मालदेव ने अपने पुरोहित मूला को भेजा कि सही खबर लावे। वह आकर वीरमदेव से मिला और कहने लगा कि यह धरती तुम्हारे

रहे नहीं, वृथा रायसल को मरवाया। वीरम बोला "ठहरो !" रायसल के घाव लगे थे, ऐसा कारी घाव कोई न था, इसलिए उसे कहलाया कि तू तकिया लगाकर बैठना, हम मूला को तेरे पास भेजते हैं। साधारण पुरोहित को कहा जाओ, रायसल से मिलो ! इतने में तो घोड़े पर काठी रख हथियार बाँध, सवार होकर रायसल स्वयं वहाँ आ खड़ा हुआ। पुरोहित उसे देख पीछा लौटा और मालदेव को कहा कि रायसल मरा नहीं है वह तो घोड़े पर चढ़ा फिरता है। रायसल पीछा आया तब उसके घाव फट गये, और वह मर गया। जब यह खबर राव मालदेव को हुई तो उसने फिर फौज भेजी और वीरम को अजमेर से निकाल दिया। वह कछवाहा रायसल शेखावत के पास गया। उसने बारह मास तक वीरम को बड़े आदर सत्कार के साथ अपने पास रक्खा। वहाँ से चलकर वीरम ने बोली बणहटा और बरवाड़ा लिया और वहाँ रहने लगा। मालदेव ने फिर उस पर फौज भेजी जो मौजाबाद आई, तब उसने कहा कि "अबकी बार मैं काम आऊँगा, बहुत क्या, अब बचने का नहीं।" खेमा मुँहता ने कहा—"अजी खेत की ठौर तो निश्चित करो।" दोनों सवार होकर चले। मुँहता आगे बढ़ा हुआ चला गया, कहा "जो मरना ही है तो मेड़ते ही में लड़ाई कर न मरें, पराई धरती में क्यों मरें ?" खेमा ने वीरमदेव को ले जाकर मलारणे के मुसलमान थानेदार से मिलाया और उसके द्वारा रणथंभोर के किलेदार से मिले। किलेदार वीरम को पादशाह (शेरशाह सूर) के हजूर ले गया। पादशाह भी उसके साथ मेहरबानी से पेश आया। फिर सूर पादशाह को मालदेव पर चढ़ा लाया। राव भी अस्सी हज़ार सवार लेकर अजमेर मुकाबले को आया। वहाँ वीरम ने एक तर्कीब की—कूँपा के डेरे पर बीस हजार रुपये भिजवाये और

कहलाया हमें कम्बल मँगवा देना; और वोस की हजार जैता के पास भेजकर कहा, सिरोही की तलवारें भिजवा देना, फिर राव मालदेव को सूचना दी कि जैता और कूँपा पादशाह से मिल गये हैं, वे तुमको पकड़कर हजूर में भेज देंगे। इसका प्रमाण यह है कि उनके डेरे पर नवाये रुपयों की थैलियाँ भरी देखो तो जान लेना कि उन्होंने मतलब बनाया है। इतने में जलाल जलूका ने कहा "हजरत सलामत! एक योद्धा उसकी तरफ का बुलाया जावे, पादशाह की तरफ से मैं जाऊँगा, इसी पर हार जीत रक्खी जावे।" पादशाह ने वीरम को पूछा कि क्या तू इसमें सहमत है? उत्तर दिया कि हजरत! पहले पठान को मैं देख लूँ। जब पठान आया तो देखकर कहा कि ऐसे ही दो आदमी और हों अर्थात् हमारे तीन हों, और वह वीरा भारमलोत को भेजेगा जो इन तीनों को मारकर इनके शस्त्र ले अछूता चला जावेगा, अतएव ऐसा करना तो उचित नहीं। राव मालदेव के मन में वीरम के वाक्यों ने शङ्का उत्पन्न कर दी थी। उसने खबर कराई कि रुपये की बात सच है या नहीं। जब अपने उमराव के डेरों में थैलियाँ पाईं तो मन में भय उत्पन्न हो गया।

संध्या का समय है, जैता कूँपा और अखैराज सोनगरा कूँपा के तंबू में बैठे हैं। वहाँ राव ने आकर इनको ये समाचार कहे। वे बोले, हम आपको जोधपुर पहुँचा देंगे। तब राव सुखपाल में बैठकर चला। खेमा के हाथ पर राव का हाथ था। जैतसी उदावत ने कहा "खेमाजी! जोधपुर और समेल के बीच में बावड़ियाँ बहुत हैं, इतनी गौवें नहीं मिलेंगी" तब खेमा हाथ झटककर पीछा आया। प्रभात युद्ध हुआ, बहुत से आदमी मारे गये; सूर पादशाह ४ मास तक जोधपुर में रहा। मालदेव ने जब मेड़ते के बंबूल काटे थे तब वीरम ने कहा था कि मैं जोधपुर के आम काटूँगा। राव मालदेव घुघरोट

के पहाड़ों में जा रहा। जोधपुर में (भाटो) तिलोकसी वरजांगोत किले-
दार था। वह पादशाह से लड़कर अपने ३०० राजपूतों सहित काम
आया। जब वीरम वहाँ के आम कटवाने लगा तो लोगों ने कहा कि
यह तुमको उचित नहीं, तब उसने एक डाली काट ली। पादशाह,
हरमाड़े में थाना रखकर दिल्ली चला गया। वीरमदेव दूदावत और
द्रोणपुर का राव कल्याणमल दोनों चढ़कर घुघरोट के पहाड़ों में
पहुँचे और वहाँ राव मालदेव की बस्ती को कैद कर हरमाड़े लाये।
मार्ग में किसी बुढ़िया ने पूछा कि यह कौन है? कहा—कल्याण-
पुर का स्वामी। बुढ़िया बोली—"मेरे दादा और काका के आद-
मियों को बँधुवा कर अच्छा चला, सिर पर ओढणी ओढ ले!" ये
वचन कल्याणमल ने सुने, वहाँ शपथ ली कि बँधुओं को छुड़ाकर
अन्न जल लूँगा। वीरम बोला, जी! ये तो अपने शत्रु हैं और
जो तुम्हारी यही इच्छा है तो ठीक सातवें दिन कल्याण को दूध
पिलाया और कहा बँधुओं के बाबत मैं पठाण को जाकर कहता हूँ।
इस पर कल्याणमल ने, जो शकुन जानता था, उत्तर दिया कि तुम
पठाण को मत कहो। कल प्रभात ही राव मालदेव की फौज
आवेगी, सब बँधुवे छूट जावेंगे, जिनकी आई है वे मरेंगे, और पठान
भाग जावेंगे। वीरम ने उसको भोजन करने को कहा परंतु इसने
यही जवाब दिया कि अब मैं भी काम ही आऊँगा। प्रभात हुआ,
राव मालदेव की सेना थाने पर चढ़ दौड़ी। पठान तो भाग गये और
कल्याणमल मुकाबले पर आया। मालदेव बोला, "कल्याणमलजी!
तुम क्यों मरते हो, हम तो तुम्हारे ही वास्ते आये हैं।" उत्तर
दिया—"नहीं साहब! पादशाही थाना टूटे तब किसी बड़े आदमी
को लड़कर मरना चाहिए।" इतना कह उसने लड़ाई की, मारा
गया। उदयकर्ण रायसलोत (शेखावत) भी खेत रहा। भागे हुए

पठान दिल्ली पहुँचे और राव मालदेव अपने बसीवालों को छुड़ाकर घुघरोट के पहाड़ों में ले गया। वीरम मेड़ते में आ बसा। अंत में राव मालदेव ने जोधपुर भी लिया। वहाँ जो तुर्क थे वे भाग गये। (सं० १६१८ में राव मालदेव ने जालोर विजय किया था, और सं० १६४४ में कुँवर गजसिंह ने उसे पुनः फतह किया*)।

---

* जब हुमायूँ पादशाह से चुनारगढ़ के हाकिम शेरशाह सूर ने दिल्ली की बादशाहत छीन ली और हुमायूँ भागा तो पहले राव मालदेव ने शेरशाह से मुकाबला करने के वास्ते, जो नागोर में पड़ा हुआ था, हुमायूँ को सहायता के लिए बुलाया; परंतु जब शेरशाह की धमकी पहुची और राव ने भी देखा कि हुमायूँ का हाल पतला है तो उसने हुमायूँ को धोखे से पकड़कर शेरशाह के सुपुर्द कर देना विचारा। हुमायूँ को यह खबर मिल गई और वह सीधा अमरकोट को चल दिया।

तारीख शेरशाही में लिखा है कि जब शेरशाह ने सुना कि मालदेव ने अजमेर नागोर ले लिये हैं तो स० ९५० हि० (स० १५४४ ई०-सं० १६०० वि०) में बेशुमार फौज लेकर रवाना हुआ। फतहपुर सीकरी में उसने अपनी सेना कई विभागों में बाँट दी। राव मालदेव भी पचास हज़ार राठौड़ लेकर अजमेर के पास आया। शेरशाह ने रेत से भरे हुए टाट के थैले अपने पड़ाव के गिर्द चुनवा दिये थे। एक मास तक दोनों सेनाएँ लड़े बिना मुकाबिले पर पड़ी रहीं। अंत में शेरशाह ने राव के सर्दारों की तरफ से एक जाली अर्जी अपने नाम लिखवा, रेशम की थैली में बंद कर राव के वकील के डेरे के पास डलवा दी। वकील ने वह थैली राव के पास पहुँचाई। मज़मून उसका यह था कि "पादशाह कुछ चिंता न करें, ऐन लड़ाई के वक्त हम राव को कैद करके आप के हवाले कर देंगे।" उस चिट्ठी से राव को अपने सर्दारों पर शक हो गया; यद्यपि उन्होंने बहुत समझाया कि यह सब छल है आप हमारी तरफ से पूरा विश्वास रक्खें, परंतु राव का शक न मिटा, बिना लड़े ही जोधपुर को चल दिया। शेरशाह ने पीछा किया। जैतारण के पास राठौड़ सर्दारों ने राव से अर्ज की कि आपने अपनी विजय की हुई भूमि तो छोड़ दी, आगे की भूमि हमारे बाप दादों की है। वह बिना मारे मरे कदापि न देंगे, और पादशाही

जयमल वीरमदेवोत और राव मालदेव—वीरमदेव के मरने पर जयमल मेड़ते में टीके वैठा तव उसको राव मालदेव ने कह-लाया कि मेरे जैसा तेरे शत्रु है। तू भूमि दूसरों को मत दे, कुछ खालसे के लिए भी रख! ईडवे के जागीरदार अर्जुन रायमलोत को जयमल ने वुलाया। दूत ने जाकर उसे पत्र दिया और कहा कि "अर्जुनजी! जोधपुर से रावजी का पत्र आया है इसलिए तुमको मेड़ते वुलाया है।" पूछा कि पत्र में क्या लिखा है! कहा, ऐसा लेख है कि "(जयमल) तू सारा देश अपने चाकरों को देता है

फौज पर हमला किया। ये सर्दार जैता और कूंपा थे। वड़ी वीरता से लड़े और वादशाही फौज के एक हिस्से को मारकर भगा दिया, अंत में खवासखां ने उनको राजपूतों समेत मारा। उनकी वहादुरी का वृत्तान्त सुनकर शेरशाह ने कहा "वाजरे के दानों के वास्ते मैंने देहली की वादशाहत खोई होती।" राव मालदेव भागकर जोधपुर गया, शेरशाह ने वहाँ भी पीछा किया तो सिवाने के गढ़ में जा रहा। खवासखां जोधपुर का हाकिम मुकर्रर किया गया, जिसने गढ़ के पास खवासपुर नाम का गाँव वसाया।

मेड़ते का वीरमदेव राव सूजा के पाटवी कुँवर वाघा का वेटा नहीं, जैसा कि और ख्यातों में लिखा है, किंतु राव जोधा के पुत्र दूदा का वेटा था, जिसे मेड़ता मिला था। जव राव मालदेव ने मेड़ता उससे छीन लिया तो वह शेर-शाह के पास सहायता को गया। कहते हैं कि उसने एक सैा उम्दा ढालें मँगवा कर वादशाही मुंशियों से एक सैा फर्मान राव के सर्दारों के नाम लिखवा कर ढालों की गादियों में सिलवा दिये और वे ढालें धोंगरियों द्वारा उन सर्दारों को विकवा दीं; फिर राव मालदेव को यह सव हाल कहलाकर चिताया कि तुम्हारे सर्दार वादशाह से मिले हुए हैं। राव ने सचमुच ढालों में फर्मान पाये और विश्वास कर लिया कि मेरे सर्दार शत्रु से मिले हुए हैं इसलिए विना लड़े भाग गया।

राव वीरमदेव सं० १५८४ वि० में महाराणा सांगा की सेवा में वयाने के प्रसिद्ध युद्ध में वादशाह वावर से लड़कर रायमल और रत्नसिंह समेत मारा गया था।

कुछ खालसे में भी रखेगा, क्या ऐसा कोई है जो बीच में खड़ा भी रहेगा ?" अर्जुन ने कहा कि मेरे पट्टा विरोध है, मैं खड़ा रहूँगा। फिर कहा कि ऐसा कौन है जो बीच में आवेगा ? तब तो अर्जुन को बुरा लगा, उसने कहा कि मैंने बड़ा बोल बोला है। जालजू के रहनेवाले एक साँखले ने कहा कि मैं याद दिलाऊँगा। कहा शाबाश बड़े रजपूत ! जयमल बोला, तो सावधान हो रहो ! राव मालदेव के तो दिल से लगी थी, दसहरा पूजकर बड़ी सेना के साथ चढ़े और गाँव गंगारड़े में आ'र डेरे दिये। उसकी फौज चारों ओर फिरी और मेड़ते की प्रजा लुटने और मारी जाने लगी। अचला रायमलोत ने (राव से) कहा कि जयमल मुझे बुलाता है, परंतु मैं युद्ध के दिनों में यहाँ बैठा हूँ। जयमल ने आग्रहपूर्वक कहलाया है कि अचला शीघ्र आ ! मैंने उत्तर भेजा कि पृथीराज अखैराज को बुलाओ; मैं युद्ध के दिन बीच में खड़ा रहूँगा, यदि मुझ पर कृपा करो तो पूरी करो नहीं तो मैं जयमल का साथ दूँगा। राव ने कहा कि पहले जयमल को मारकर पीछे अचला को मारेंगे और जो वह जयमल के साथ हुआ तो दोनों को साथ ही मारेंगे।

जैतमाल जयमल का प्रधान था। अखैराज भादा और चाँदराज जोधावत जयमल के प्रतिष्ठित सरदार और दोनों मोकल के वंशज राव काका वाघा के भाई थे। जयमल ने अपने भले आदमी राव मालदेव के पास भेजने का विचारकर अखैराज को कहा कि तुम जाओ ! वह बोला कि आप मुझे क्यों भेजते हैं और जो भेजते हैं तो युद्ध का सामान ठीक कर रखिये। अब अखैराज और चाँदराज दोनों चले। (राव मालदेव के प्रधान) पृथीराज और अखैराज के कुछ नाता था। ये पृथीराज के डेरे पर आये और राम राम कहलाया। पृथीराज ने जवाब भेजा कि मैं स्नान करके आता ही हूँ पीछे

अपने दर्बार में चलेंगे। देखते क्या हैं कि वहाँ तलवारों की शान चढ़ रही हैं, कई राजपूत बंदूकों के निशाने लगा रहे हैं और बड़ा हंगामा मच रहा है। इतने में पृथ्वीराज भी वस्त्र पहनकर आ गया, इनको साथ लिये दर्बार में गया, मालदेव से मुजरा किया; एक तरफ तो नंगा भारमलोत और दूसरी तरफ पृथ्वीराज बैठा, इनको रावजी के संमुख बिठाया। पृथ्वीराज ने रावजी से अर्ज की कि मेड़ते के प्रधान आये हैं। रावजी बोले—"क्या कहते हैं!" पृथ्वीराज—अर्ज कराते हैं कि हमको मेड़ता दीजिए! हम राव की चाकरी करेंगे। राव मालदेव—"मेड़ता नहीं दिया जावेगा, दूसरा पट्टा देंगे।" यह सुनते ही अखैराज बोल उठा कि "यह बचन आप फर्माते हैं या किसी के कहने से कहते हैं, मेड़ता दे कौन और ले कौन; जिसने आपको जोधपुर दिया उसी ने हमको मेड़ता दिया है।" तब नंगा भारमलोत कहने लगा—"चेत करो! तुमको रावजी अभी मार डालेंगे।" चाँदराज कहता है कि "रावजी के सईस जयमलजी के चरवादारों को मारेंगे, हमें तो तुम मारोगे और तुम्हें हम मारेंगे।" ये बातें सुनकर राव मालदेव ने कहा—"पृथ्वीराज! मेड़ते के प्रधान ये ही हैं या दूसरे?" पृथ्वीराज—"जी महाराज! ये ही हैं।" राव मालदेव—"मेड़ते के प्रधानां के तो पग पतले भाई।" (अर्थात् बड़े चरब हैं), तब अखैराज उठा और अपना दुपट्टा फटकारा तो उसके तार तार बिखर गये और चाँदराज ने घोड़े का तंग खींचा तो घोड़े के चारों ही पाँव पृथ्वी पर से उठ गये। ये तो सवार होकर चल दिये और पीछे से रावजी ने अपने सर्दारों के पास खूब दुपट्टे पटकवाये, परंतु जयमल के रजपूत के तुल्य तार कोई बिखेर न सका। अखैराज ने आकर जयमल को सब हकीकत कही, जयमल बोला मुझको मृत्यु से क्या डराते हो, यह बात कभी नहीं होने की।

राव के घोड़े गंगारड़े के तालाब पर पानी पीने को आये थे उनको ईसरदास ले आया। जयमल ने कहा रे! बड़ा धाड़ा पाड़ा। वह बोला—तुम नहीं जानते हो, राव तो कभी तुमसे टलने का है नहीं। दूसरे ही दिन फौज आई, दोनों अनियाँ मिलीं, गोली-गोले चलने लगे, उस वक्त अर्जुन ने रायमलोत को बुलाकर कहा कि तूने जो बोल बोले थे वह समय आज आ गया है। वह नंगा भारमलोत के संमुख हुआ, इतने में अखैराज बढ़कर राव के हाथियों के आगे आया और एक पर हाथ चलाया, उसकी दो पसलियाँ टूट गईं। तब उसने कहा मुझे तो पृथीराज से काम है। पृथीराज कहता है—"अरे बावने! देर से क्यों आया?" अखैराज कहता है "रावजी के हाथियों की सेवा करता था।" फिर प्रयागदास ऐराकी पर सवार होकर आया और जयमल को सीस नवाया। उसने कहा—आओ प्रयाग! इसी लिए तो मैं तेरे दोषों पर ध्यान न देता था। राव मालदेव के योद्धाओं ने प्रयाग के मस्तक में घावों की चौकड़ी की। उसने उनको ललकारा, बर्छा तोला और बोला "रावजी के माथे में मारूँ" ईश्वरी माया से बर्छा हाथ में से फिसल गया। तब उसने राव के गले में कमंद डालने का प्रयत्न किया, एक बार तो कमान गर्दन के ऊपर से निकल गई, परंतु दूसरी बार तो घोड़े के चाबुक मारकर गले में डाल ही दी। इतने में पीछे से कई आदमियों ने आकर प्रयाग पर हाथ मार उसके टुकड़े टुकड़े कर डाले। कमंद राव के गले में ही रही और वह अलग हुआ। यह देख मालदेव की सारी सेना भाग निकली। पृथीराज और नंगा भारमलोत लड़ते रहे। हिंगोला पोपाड़ा नामक एक राजपूत पृथीराज का चाकर था, जिसको उसने एक तलवार बख्शी थी। उस वक्त हिंगोल ने (अपने स्वामी से) वह तलवार माँगी। पृथीराज ने कहा—"याद तो अच्छे समय पर दिलाई,

परंतु वह एक नीले का सवार आता है, निश्चय वह सुरताण जयमलोत है। इतने में सुरताण ने निकट आकर पृथीराज पर बर्छा चलाया; उसने वह चोट ढाल पर टाल दी और सुरताण से कहा "अरे नन्हें तू मत आ! तेरे पिता को भेज जो आकर मुझ पर घाव करे!" तत्पश्चात् कमर से तलवार खोलकर हिंगोला को प्रदान की। उसने कहा "वाह रे पृथीराज मारवाड़ के सामंत!" पृथीराज बोला "नहीं भाई! मेड़ते का कुँवर ही अच्छा है।" पृथीराज को किसी योगीश्वर ने वरदान दिया था कि तेरे संमुख लोह नहीं लगेगा, अतएव अखैराज भादावत ने पीछे से आकर हाथ मारा। पृथीराज ने कहा "फिर रे भादावत! भली हाँडी चाटी!" अखैराज ने कहा "हाँडी भी बड़े घर की चाटी है, उसमें खींच बहुत है।" पृथीराज मारा गया, नंगा भारमलोत भी काम आया, राव मालदेव की सेना परास्त हो भागी, तब जयमल को बधाई दी गई कि "राव मालदेव भागा है।" वह बोला "रे छाती आगे से दूर हुआ है।" राव मालदेव के साईस पकड़े गये, जूला नाम का मेड़ते का एक बलाई था, उसके साथ नक्कारा देकर भेजा। जब वह बलाई गाँव लाँबियाँ निकट पहुँचा तब बोला—भाई नगारा तो बजा लेवें, यह तो राव मालदेव के नगारे हैं सो कल छिन जावेंगे। यह कहकर नक्कारा बजाया। राव के साथियों ने देखा तो चाँदे ने कहा कि ये तो मेरे भाई हैं तुम काहे को इनसे भिड़ते हो, मैं समझा दूँगा। राव मालदेव ने चाँदा से कहा कि चाँदा! मुझको किसी तरह जोधपुर पहुँचा दे। चाँदा बोला आप इतना भय क्यों खाते हैं, जयमल कोई ईश्वर तो नहीं है, मैं आपको कुशलतापूर्वक जोधपुर के गढ़ में दाखिल कर दूँगा, वह राव के साथ हुआ और उसके सब घायलों व घोड़े हाथियों समेत

उसे जोधपुर पहुँचा दिया। जयमल सुखपूर्वक मेड़ते में राज करने लगा। *

---

* जयमल राठौड़ से राव मालदेव ने मेड़ता ले लिया था और जयमल महाराणा उदयसिंह के पास आ रहा था। सं० १६२४ वि० में जब शाहंशाह अकबर ने चित्तौड़ पर चढ़ाई कर गढ़ पर घेरा डाला तो महाराणा उदयसिंह के गढ़ छोड़कर चले जाने पर भी सीसोदिया पत्ता और राठौड़ जयमल बड़ी बहादुरी के साथ एक अर्से तक बादशाही फौज से लड़ते रहे। जब जयमल अकबर की गोली से घायल हुआ तो दूसरे दिन जौहर की आग जला केसरिया कर सीसोदिये शाही फौज से लड़ मरे और जयमल भी एक आदमी के कंधे पर सवार हो तलवार चलाता हुआ युद्ध में मारा गया। मेवाड़ के उमरावों में बदनोर के राठौड़ ठाकुर जयमल के वंश में हैं।

राव मालदेव की तर्फ से मेड़ते में देवीदास जैतावत रहता था। जब अजमेर व नागोर के सूबेदार शर्फुद्दीन हुसैन मिर्ज़ा को अकबर बादशाह ने मेड़ता फतह करने को भेजा तो जयमल व देवीदास ने मुसलमानों से ख़ूब युद्ध किया। अन्त में जयमल तो गढ़ छोड़कर बाहर निकल गया, परंतु देवीदास की रजपूती के बल ने इसमें अपनी हतक समझी। उसने सब माल असबाब में आग लगा दी, अपनी औरतों व बच्चों को जीते जला दिया और गढ़ में से बाहर आकर अपने राजपूतों समेत दुश्मन के मुकाबले में बड़ी वीरता से काम आया। बादशाह ने मेड़ता जगमाल (राजा भारमल कछवाहे का छोटा भाई) को बख़्श दिया।

इकतीस वर्ष राज करके सं० १६१६ वि० में राव मालदेव का परलोकवास हुआ। उसके वक्त में मारवाड़ का राज पूरे ओज पर रहा। उसके बारह पुत्रों में से बड़े रामसिंह से तो अप्रसन्न होकर उसे देश निकाला दिया, वह मेवाड़ के राणा के पास आ रहा। रायमल महाराणा सांगा के साथ बयाने के युद्ध में बाबर बादशाह के मुकाबले मारा गया। चंद्रसेन मालदेव का उत्तराधिकारी हुआ, परंतु उसको निकालकर बादशाह अकबर ने उदयसिंह को जोधपुर का राज दिया। आसकर्ण के वंशज जूनिया (अजमेरा) में हैं। गोपालदास ईडर में मारा गया। पृथ्वीराज, रत्नसिंह, भैरजी, विक्रमादित्य, भीमसिंह आदि भी मालदेव के पुत्र थे।

ग्यारहवाँ प्रकरण

पाबू राठौड़ की बात

धांधल महेवे में रहता था, वहाँ का बास छोड़कर पाटण के तालाब पर आन उतरा; तालाब में अप्सराओं को नहाती हुई देखा, एक अप्सरा को उसने पकड़ लिया तो उसने कहा कि बड़े राजपूत तूने बुरा किया। धांधल बोला कि तू मेरे घर में रह, अप्सरा ने इस बात को स्वीकारा, परंतु इस शर्त पर कि यदि तू मेरा भेद लेगा तो मैं तत्काल चली जाऊँगी। धांधल ने भी इसको मंजूर किया, उसको लेकर वह कोलू में आया, जहाँ कम्मा धोरंधार में राज करता था। वहाँ अप्सरा के पेट से धांधल के एक पुत्र पाबू और एक पुत्री सोनबाई उत्पन्न हुई। अप्सरा के रहने का महल जुदा था। वहाँ धांधल नित्य जाया करता था। एक दिन उसके मन में विचार आया कि आज चुपके से जाकर देखूँ कि अप्सरा क्या करती है। दिन के पिछले पहर में उसके स्थान में गया तो क्या देखता है कि वह सिंहनी का रूप धारण किये हुए लेटी है और पाबू सिंह रूप में माता के स्तन पान कर रहा है। धांधल को देखते ही उसने अपना असली रूप बना लिया और पाबू भी बालक हो गया। कहने लगी "मैंने तुमसे यही प्रतिज्ञा कराई थी कि जहाँ तुमने मेरा पीछा सँभाला कि मैं चली जाऊँगी, सो अब मैं जाती हूँ।" इतना कहते ही वह तो गगनमंडल में उड़ गई और धांधल देखता ही रहा। पाबू को उसी महल में रक्खा, एक धाय उसको दूध पिलाने को लगाई और एक दासी भी रख दी। कुछ अर्से पीछे धांधल मर

गया। उसका बड़ा बेटा बूड़ा अपने पिता का स्थानाधिप हुआ और सब लोग उसी की सेवा करने लगे, पाबू के पास कोई न रहा।

धांधल की एक पुत्री पेमाबाई का विवाह तो जिंदराव खीची के साथ हुआ था। और सोनबाई सीरोही के स्वामी देवड़ाराव को व्याही गई थी। पिता का देहांत होने के समय पाबू पाँच वर्ष का था, परंतु था करामाती। साँड़ पर सवार होकर शिकार खेलने को जाया करता था। आना बाघेला के ठिकाने में एक ही माता के पुत्र सात भाई थोरी (भंगियों के मुआफिक एक नीच जाति है) रहते थे। आना के देश में दुष्काल पड़ा तब वे थोरी—चाँदिया, देविया, खाबू, पेमला, खलमल, खंगारा और बासल—पशुओं को मार मारकर खाने लगे। यह समाचार आना के पुत्र को पहुँचे। उसने आकर थोरियों को डाट डपट बताई, लड़ाई हो गई और कुँवर मारा गया। फिर तो थोरी अपनी गाड़ियाँ जोत अपने बाल-बच्चों को लेकर वहाँ से भागे। आना ने जब सुना कि मेरे पुत्र को मार-कर थोरी भागे जाते हैं, तो उसने पीछा कर उनको जा लिया, पर-स्पर युद्ध हुआ और आना ने थोरियों के बाप को मार लिया। वह तो पीछा फिर गया, परंतु उन थोरियों को किसी ने आश्रय न दिया। जहाँ जावें वहाँ यही उत्तर मिले कि आना बाघेले के शत्रुओं को रखने की सामर्थ्य हमारे में नहीं। वे इधर उधर भटकते हुए थोर-धार में आये और कुम्मा ने उनको स्थान दिया; परंतु उसके कामदारों ने उसे कहा कि राजा, ये आना के पुत्र को मारकर आये हैं, यदि आप इनको रक्खेंगे तो आना के साथ वैर बँध जावेगा और अपने में इतनी शक्ति नहीं कि आना को पहुँच सकें। तब आना के भय से कुम्मा ने भी थोरियों को रुखसत दे दी और कहा धांधलों के पास जाओ, वे तुमको आश्रय देंगे। ये अपने गाड़े लेकर बूड़ा

के पास आये और मुजरा किया और कहा हमें शरण दीजिए। बूड़ा बोला मुझे तो आवश्यकता नहीं है, मेरे भाई पावू के पास कोई चाकर नहीं, सो वह तुमको रख लेगा। थोरी पावू के घर गये। पूछा पावूजी कहाँ हैं; धाय ने उत्तर दिया कि शिकार खेलने गये हैं। थोरी भी वहीं पहुँचे, आगे पावू ने मृग के मारने के वास्ते तीर सँभाला था कि थोरियों ने पूछा "अरे छोकरे! पावूजी कहाँ हैं?" पावू ने उत्तर दिया कि वह तो आगे आखेट को गया है। थोरियों ने विचारा कि वन में बालक अकेला है इससे यह साँड़नी छीनकर ले जावें तो आज का भोजन चले। पावू तो करामाती आदमी था। उसने इनके मन की बात जान ली और कहा "अरे थोरियो! यह साँड़नी तुम्हीं ले जाओ!" वे साँड़नी लेकर डेरे पर आये और मार खाई। हरिण को मारकर पावू तीसरे पहर घर आया। तब थोरी भी उसके मुजरे को पहुँचे और उसे देखकर सबने जाना कि यह तो वही बालक है जिसने हमको साँड़नी दी थी! फिर उन्होंने धाय से पूछा कि "पावूजी कहाँ हैं!" धाय बोली "वीर! यह बैठे तो हैं। तुम नहीं पहचानते!" उन्होंने मुजरा किया तब पावू ने चाँदिया को कहा "अरे! हमने अपनी साँड़नी तुमको सौंपी थी वह कहाँ है?" चाँदिया बोला आपने हमको खाने के लिए दी थी सो हम तो उसको खा गये। पावू ने कहा—अरे! साँड़नी को कैसे खा सकते हो, खाने के लिए तो सीधा दिलवा देंगे, तुमने साँड़नी नहीं खाई है। थोरियों ने कहा महाराज! हम तो उसे खा गये, अब कहाँ से लावें। तब पावू ने अपने आदमी को कहा कि इनके डेरे पर जाकर खबर तो कर। थोरी भी साथ हो लिये और डेरे पर जाकर क्या देखते हैं कि जहाँ पर साँड़नी की हड्डियाँ पड़ी हुई थीं वहाँ वह बैठी हुई जुगाली कर रही है। थोरियों ने अपनी स्त्रियों से पूछा कि यह साँड़नी यहाँ

कहाँ से आई ! उन्होंने भी यही कहा कि पहले तो यहां नहीं थी, हमारी नज़र भी अभी पड़ी है। तब तो थोरियों ने विचारा कि यह राजपूत बड़ा करामाती है, यही अपने को रख सकेगा। सांढ़नी को लिये हुए वे पाबू के पास आये। उसने कहा—रे ! तुम तो कहते थे कि सांढ़नी को हम खा गये। उन्होंने (हाथ जोड़कर) कहा—आपकी करामात का परचा हमने पाया और वे पाबू के चाकर हो गये।

बूड़ा की बेटी का विवाह गोगा (चहुवाण) के साथ हुआ था। उसको दत्त में किसी ने गौवें दीं, किसी ने और कुछ दिया। उस वक्त पाबू ने कहा "बाई ! मैं तुझे दोदा (उपनाम बूढ़ा रावण) सूमरा की सांढ़ें किसी प्रकार ला दूँगा"। गोगा अपनी वधू को लेकर गया और पाबू ने हरिया थोरी से कहा—"अरे हरिया ! दोदे की साँढ़ियों का पता लगाकर ला कि बाई को ला देवें, नहीं तो बाई के सुसरालवाले हँसी उड़ावेंगे कि काका कब साँढियाँ लाकर देगा। हरिया तो पता लगाने को गया और चाँदिया नित्य प्रति पाबू से कहा करता कि आना बाघेले से मैं बैर चाहता हूँ सो आप दिलावें। पाबू ने कहा कि "दिला-ऊँगा।" पाबू की बहन सोनबाई के (जो देवड़ेराव के साथ ब्याही गई थी) एक और सौत बाघेली भी थी। बाघेली के पिता ने अपनी पुत्री के लिए बहुत से आभूषण भेजे थे इसलिए सौत को बतला बतला-कर वह अपने गहनों की बड़ाई मारने लगी, यहाँ तक कि दोनों सौतें आपस में बोल पड़ीं। बाघेली ने सोना को ताना दिया कि "तेरा भाई थोरियों के साथ खाता है।" इस पर सोना को क्रोध आया। तब राव बोला कि "राठौड़, रीस क्यों करती हो? बात तो सच है, पाबू थोरियों के साथ रहता ही है।" सोना बोल उठी कि "आपने कहा सो ठीक; परंतु जैसे मेरे भाई के थोरी हैं वैसे रावजी के तो उमराव भी नहीं।" यह सुनते ही राव क्रोध-

वश हो उठा, हाथ में चाबुक था, दो-चार हाथ सोना की पीठ पर जमा ही दिये। सोना ने पत्र लिखकर अपने भाई के पास भेजा कि बाघेली के कहे रावजी ने मुझ पर चाबुक चलाये हैं। पत्र पढ़ते ही पावू ने चाँदिया को बुलाकर कहा कि तैयार हो जा! अपने सिरोही चलेंगे, बाई का पत्र आया है। पावू और पाँच सात थोरी चढ़ निकले। पावू की सवारी में कालवी घोड़ी थी, जिसकी उत्पत्ति ऐसे हुई कि—काछेले चारण समुद्र-तट पर माल मारने को गये थे, उनके पास एक घोड़ी थी। किनारे पर उतरे हुए थे कि रात्रि को एक दरियाई घोड़े ने आकर उस घोड़ी को सूभर किया, जिससे कालवी बछेरी पैदा हुई। उस बछेरी को जिंदराव (खीचो) ने चारणों से माँगा परंतु उन्होंने दिया नहीं; बूड़ा ने भी उसको लेना चाहा, पर न मिली। पावू ने वही बछेरी चारणों से माँगी और उन्होंने भी यह कहकर भेंट की कि "जब कभी काम पड़े तो तुम हमारी सहायता करना।" पावू ने उत्तर दिया कि "तुम्हारे काम के वास्ते नंगे पैर जाने को तैयार हूँ।" यह देख जिंदराव और बूड़ा चारणों के साथ कीना रखने लगे। पावू उस बछेरी पर सवार हो बड़े भाई के पास आया, भावज को मुजरा कहलाया, दासी ने भीतर जाकर डोडगहलो (बूड़ा की स्त्री) को कहा कि "पावूजी जुहार कहलाते हैं।" उसने पावू को भीतर बुलाया और कहने लगी—"तुमको चारण के पास से यह घोड़ी न लेनी चाहिए थी क्योंकि उसे तुम्हारे भाई ने माँगी थी।" पावू बोला—"भाईजी को घोड़ी चाहिए तो यह हाजिर है।" भौजाई कहने लगी—"अब काहे को लें? परंतु तुम घोड़ी का क्या करोगे? तुम तो खेती करो और बैठे खाओ! घोड़ी चढ़कर क्या धाड़े मारोगे!" पावू ने कहा—"भावज! तुम ताने क्या मारती हो? मैं भी राजपूत

हूँ, चढ़ने को घोड़ा चाहिए ही और घोड़े की कहो तो डोडवाणे ही की घोड़ियाँ लावेंगे।" डोडगहली कहती है—"पावू! ऐसा तो मेरा भाई भी नहीं कि तू उसके यहाँ से धाड़ा कर लावे! या तो ऐसा होवे कि मार्ग ही में काम तमाम कर दे या यह समझकर कि बहनोई का भाई है, मारे नहीं और उल्टी मुश्कें चढ़ा लेवे।" पावू बोला—"भाभी! मैं राठौड़ हूँ, कभी किसी डोड ने राठौड़ को मारा भी है?" इस प्रकार भौजाई से बातकर पावू अपने डेरे पर आया और चाँदिया को कहा कि देवड़ों के यहाँ तो पीछे चलेंगे; पहले डोडों के डोडवाणे चलकर वहाँ धाड़ा मारेंगे। प्रभात ही चढ़ चले, डोडवाणे के पास पहुँचे, पावू एक जगह बैठ गया, थोरियों ने वहाँ की साँढियों की टोह लगाकर उन्हें चलाई। रेबारी डोडों के पास जाकर पुकारा—साँढ़ें लिये जाते हैं, वाहर करो! डोडों ने उससे पूछा कि घेरनेवाले कितनेक सवार हैं? उसने कहा "केवल सात प्यादे जो भी थोरी चोर हैं।" ये वाहर चढ़े, थोरी तो साँढ़ों को लेकर आगे निकल गये थे और ये वहाँ आये जहाँ पावू बैठा हुआ था। बराबर आने देकर पावू ने तीर छोड़ना शुरू किया, जिससे डोडों के दस आदमी मारे गये, पीछे चाँदा वा दूसरे थोरियों को बुलाया, वे डोडों के घोड़ों पर चढ़ बैठे। इतने में डोडों का सर्दार भी आ पहुँचा। थोरियों ने उसको पकड़ लिया, उसके साथ के दूसरे लोग भाग गये। पावू ने साँढ़ियों को तो छोड़ दिया और सर्दार को साथ लेकर रातों-रात चलकर कोल्हू में आया। डोड सर्दार को कोटड़ी में कैद रक्खा और पावू सो गया। प्रभात होने पर पावू उठा और अपनी धाय को कहा कि तू जाकर भौजाई को यहाँ ले आ; कहना कि पावू ने नया महल बनवाया है सो आपको देखने के लिए बुलाया है। धाय तो बुलाने को गई और पावू ने थोरियों

से कहा कि डोड सर्दार की पगड़ी उतारकर उससे उसकी मुश्कें कस लो और चुटकियाँ भर भरकर रुलाते हुए उसे झरोखे के नीचे लाकर खड़ा कर दो। चाँदिया उसको लिये नीचे आया। इतने में तो डोडगहलो भी रथ में बैठकर आ पहुँची। पाबू ने मुजरा करके कहा—"भाभी, झरोखे के नीचे क्या तमाशा है, टुक देखो तो।" वह देखने लगी, तब चाँदिये ने डोड के चुटकियाँ लेना शुरू किया और वह रोने लगा। डोडगहली देखती क्या है कि झरोखे के नीचे भाई बँधा खड़ा है और रो रहा है। पुकार उठी कि "पाबू यह क्या खेल है? मैंने तो तुमको हँसी हँसी में बात कही थी।" पाबू बोला, भाभी मैं भी इसको हँसी ही में ले आया हूँ, परंतु रजपूतों को फिर ऐसे बोल नहीं बोलना चाहिए, ताने तो कपूतों को दिये जाते हैं। भावज ने कहा—अच्छा किया, अब तो इसे छोड़ो! पाबू ने उसके कहने पर डोड को छुड़वा दिया और वह अपने भाई को लिये घर आई, चार दिन अपने यहाँ रखकर उसे घर को बिदा किया।

हरिया थोरी, जो दोदा सूमरा की साँढ़ियों का हेरा करने को गया था, पीछा आया और पाबू से कहा कि वे साँढ़ियाँ तो आपके हाथ आने की नहीं हैं क्योंकि दोदा जबर्दस्त और उसका राज्य भी बड़ा है। बीच में पंचनद बहता है और दोदा रावण प्रसिद्ध है। अपने वहाँ नहीं पहुँच सकेंगे। पाबू ने कहा कि चलो अभी तो सिरोही चलें, वहाँ से लौटते हुए समझ लेंगे। आठ सवार और नवाँ हरिया पैदल सिरोही पर चढ़े। बीच में आना बाघेले का इलाका पड़ता था। उसका प्रताप बढ़ा हुआ था; परंतु ये भी सब करामाती थे। चाँदिया बोला—राजा! आना यहाँ रहता है और उसपर मेरा वैर है सो दिलवा दीजिए। तब वे सब आना के बाग में जा उतरे। माली जाकर पुकारा कि कई सवार बाग में आन उतरे हैं और सारा बाग

उजाड़ दिया है। सुनते ही आना चढ़ा, पाबू से लड़ाई हुई और वह (आना) साथियों समेत मारा गया। आना के पुत्र को पाबू ने कहा कि तुझको भी मारूँगा, तब उसने भयभीत हो अपनी माता का सारा गहना लाकर पाबू को भेंट किया और प्राण बचाये। उसको टीका देकर रातो-रात पाबू सिरोही जा पहुँचा और राव को कहलाया कि तुम यह मत जानना कि पाबू मुझसे मिलने को आया है। नहीं, तुमने मेरी बहन पर चाबुक चलाये हैं, जिसका बदला लेने आया हूँ। तब तो राव भी अपना साथ जोड़ मुकाबले पर आया, लड़ाई हुई। पाबू ने चाँदिया को कह दिया कि राव को मारना मत, कैद कर लेना! देवड़ों के बहुत से आदमी मारे गये और राव कैद हुआ। यह सुनकर सोनाबाई रथ में बैठकर भाई के पास आई और कहा—"भाई, राव को छोड़कर तू मुझे अमर काँचली दे!" बहन के कहने पर पाबू ने देवड़ा राव को छोड़ दिया और आना बाघेले की स्त्री का गहना भी बहन को दिया। अब फिर साले बहनोई की प्रीति जुड़ी और पाबू को लिये राव अपने गढ़ में आया। अपनी बहन को साथ लिये पाबू बाघेली के पास उसके पिता की मृत्यु के समाचार पहुँचाने को गया। सोना ने सौत को जाकर कहा—"बाई! तुम्हारे बाप को मेरे भाई ने मारा है, सो उठो, लोकाचार करो!" बाघेली ने पदड़ा लिया (रोने बैठी)।

पाबू जीमकर सवार हुआ, चाँदिये से कहा—चलो, अब डोडे की साँढ़ियाँ लाकर भतीजी को देवें, वहाँ सगे हँसते और ताने देते होंगे। हरिया को आगे कर लिया। मार्ग में मिर्जाखान का राज आता था, वहाँ पहुँचे। मिर्ज़ा के बाग में कोई नहीं उतर सकता था। यदि कोई जाकर ठहर जाता तो मारा जाता था। इसका भी राज्य बड़ा था। पाबू ने बाग ही में जाकर डेरा दिया और सारी वाटिका

को उजाड़ा। माली ने जाकर खान के पास पुकार मचाई कि कोई राजपूत बाग में आ उतरा है, उसने सारा बाग तोड़ मरोड़कर विध्वंस कर दिया है। खान ने पूछा "वह कैसा राजपूत है!" माली बोला—महाराज हिंदू है और बाईं ओर को पाग बाँधे है। खान ने कहा—उसने आना वाघेला को मारा है, अपने उसे नहीं पहुँच सकते। रसूलल्लाह का नाम ले घोड़ा, कपड़ा, मेवा लेकर चला और पाबू से आन मिला। पाबू ने प्रसन्न होकर और तो सब भेंट फेर दी केवल एक घोड़ा हरिया के चढ़ने के वास्ते रख लिया। वहाँ से चले, पंचनद पर आये। चाँदिये से कहा कि देख! पानी कितना गहरा है? चाँदिया ने उतरकर जाँचा और बोला कि बाँथों गहरा है, उतर नहीं सकेंगे, यहाँ ठहर जाइए। जब साँढ़ियाँ इस पार आवेंगी तब घेर लेंगे। पाबू ने अपनी माया दिखलाई, थोरी आँख खोले तो क्या देखते हैं कि नदी के दूसरे तट पर खड़े हैं। चाँदिये ने परचा पाया। हरिया बोला, अब साँढियों के टोले को घेर लो। थोरियों ने रैबारी को तो पकड़कर बाँध लिया और साँढ़ें लेकर पाबू के पास आये। पाबू ने रैबारी को छुड़ाकर एक बाँड़े ऊँट पर चढ़ाया और उससे कहा कि तू जाकर कह दे कि साँढ़ों के टोले को लिये जाते हैं सो बाहर चढ़ो। रैबारी जाकर पुकारा "मिहरबान सलामत! साँढियाँ लिये जाते हैं!" दोदा बोला—अरे काल के खाये! आज ऐसा कौन है जो मेरे साँढ़ों को ले जावे?" रैबारी ने अर्ज की महाराज! राठौड़ ने ली है और कहलाया है कि यदि हिम्मत हो तो जल्दी आना। दोदा साथ जोड़कर चढ़ा, पाबू तो साँढ़ों को हाँककर झट से नदी के उस पार ले गया। दोदा भी नद को लाँघकर पहुँचा, मिर्जा खान के गाँव में आया और उसे कहा कि राठौड़ों ने हमारी साँढ़ें ली हैं, तू भी

हमारे साथ बाहर में चल। मिर्जा दोदा का चाकर था, साथ हो लिया; परंतु कहा कि आगे जाना अच्छा नहीं है। साँढ़ों को पाबू राठौड़ ले गया है। घोड़ों को मारते हुए भी अपने उसे न पहुँच सकेंगे। पीछे फिरना ही अच्छा है; क्योंकि जिस पाबू ने आना बाघेला को मारा वह तुमसे नहीं मारा जावेगा। पीछे अपना सब दलबल जोड़कर उसपर चढ़ना। दोदा पीछे फिरा और अपने नगर में आया, पाबू उसकी साँढ़ों को लिये सोढों के ऊमरकोट के निकट से निकला, सोढा राणा की बेटी झरोखे में बैठी हुई थी। उसने पाबू को देखा तब उसने अपनी माता को कहलाया कि पाबू राठौड़ जाता है। मेरा विवाह उसके साथ कर दे तो अच्छा है। सोढी की माता ने अपने पति से कहा और राणा ने अपने आदमी भेजकर पाबू को कहलाया कि आप हमारे यहाँ विवाह करके जाओ। पाबू बोला अभी तो साँढ़ों को लिये जाता हूँ, पीछे आकर विवाह करूँगा। सोढा ने नारियल भेजा, उसके आदमी पाबू के तिलक कर नारियल उसे दे सगाई कर आये। दरेरे आकर पाबू गोगादेव से मिला। गोगा हँसी में कह रहा था कि केलण का मामा दोदा की साँढ़ें लेकर कब आवेगा, इतने में तो हरिया ने पहुँचकर कहा "बाई को मालूम कराओ कि पाबूजी ने दोदा की साँढ़ियों का टोला तुमको ला देने का संकल्प किया था सो ले आये हैं उन्हें सँभाल लो।" गोगा ने सब साँढ़ों को सँभालकर ले ली, परंतु उसके मन में यह संदेह रहा कि दोदा जैसे जबर्दस्त की साँढ़ों को पाबू कैसे ला सकता है, दूसरी जगह से ले आया होवेगा। गोगा ने पाबू को गोठ दी और भली भाँति सत्कार किया। दूसरे दिन बोला कि "पाबूजी! मेरा किसी के साथ वैर है। यदि तुम थोड़े दिन यहाँ रहो तो मैं अपना वैर ले सकूँगा। पाबू ने कहा—बहुत

ठीक, रह जाऊँगा। गोगा ने कहा कि प्रभात में शकुन लेंगे, जो शकुन भले हुए तो लड़ाई करेंगे। पाबू बोला—जी! शकुन कैसे, आप जब चढ़ेंगे तभी फतह कर आवेंगे। गोगा कहता है—"अपनी धरती में शकुनों पर विश्वास है और लोग उन्हें मानते हैं।" प्रभात होते जब दोनों घोड़ियों पर चढ़कर शकुन लेने को चले, परंतु कुछ भी शकुन न हुए, तब वे एक वृक्ष के तले जाजम बिछाकर सो गये, दामने (पग-बंधन) लगाकर घोड़ियाँ चरने को छोड़ दीं। थोड़ी देर पीछे जागे। गोगा ने कहा मैं घोड़े ले आता हूँ, अब घर को चलें। पाबू बोला "आप बैठिए, मैं ले आता हूँ।" गोगा ने फिर कहा कि आप बड़े हैं, यदि अवस्था में छोटे हुए तो क्या, आप बैठिए। पाबू ने कहा कि यह तो सत्य है, परंतु आप वृद्ध हैं और मैं जवान हूँ। पाबू घोड़े लेने को गया तो क्या देखता है कि दो बाघ खड़े हुए हैं और घोड़े चर रहे हैं। उसने मन में विचारा कि यह गोगा ने मुझे करामात दिखलाई है। उसने पीछे लौटकर गोगा से कहा कि घोड़े नजर नहीं आये, कहीं दूर चले गये हैं, मुझको तो मिले नहीं। फिर गोगा हाथ में बर्छा पकड़े ढूँढ़ने को गया, क्या देखता है कि जल का एक बड़ा हौज भरा हुआ है, जिसमें एक नौका में बैठे हुए दोनों घोड़े जल में तैर रहे हैं। वह हौज बहुत गहरा है। गोगा समझ गया कि यह पाबू की करामात है। पीछे फिरा, पाबू ने पूछा कि घोड़े मिले? गोगा बोला कि मेरे मन में जो संदेह था सो दूर हुआ, अब मैंने तुमको पहचान लिया। फिर दोनों मिलकर चले, घोड़े वहीं खुले हुए चर रहे थे; ये सवार होकर घर आये। गोठें जिमाकर पाबू को विदा किया और वह कोल्हू आया।

पाबू की अवस्था १२ वर्ष की हुई थी, सोढों ने पत्र भेजा कि जान बनाकर ब्याह करने को शीघ्र आओ। यहाँ भी जान की

तैयारी हुई। जिंदराव खीची, गोगादेव और बड़े भाई बूड़ा को बुलाया। सिरोही के राव को भी निमंत्रण भेजा, परंतु वह आया नहीं। उसी अर्से में चाँदिया थोरी की बेटी का भी विवाह था, सो वह तो वहीं रहा और दूसरे सब साथ में गये। मार्ग में बहुत बुरे शकुन हुए। शकुन-पाठकों ने कहा कि पीछे फिर जाओ, विवाह दूसरे (विवाह का दिवस) पर रक्खा जावे। पाबू बोला—मैं तो कदापि पीछे न फिरूँगा; क्योंकि ऐसा करने में लोग हँसेंगे कि पाबू तेल चढ़ा हुआ रह गया। इतना कह वह तो आगे बढ़ा और दूसरे सब वहीं से लौट गये। दो घड़ी रात गये पाबू धाट (नगर) में जा पहुँचा। सोढों ने भली भाँति विवाह कर दिया। फेरे फिरकर पाबू पीछा जाने लगा तब सोढों ने कहा "आपने हमारे में क्या कसूर पाया कि इतने शीघ्र ही चलने का विचार करते हो? गोठ जीमी नहीं, पाहुन-चारी हुई नहीं, दो चार दिन रहिए, फिर दहेज देकर विदा करेंगे।" पाबू ने कहा कि आते हुए हमको शकुन अच्छे न हुए थे सो एक बार तो आज रात ही को घर चले जावेंगे, फिर जब पीछे आवें तब सारी रीति भाँति करना। सोढों ने कहा "जो आपकी इच्छा।" पाबू सवार हुआ तो सोढी कहने लगी कि मैं भी साथ ही चलूँगी सो रथ चढ़कर वह भी साथ हो ली। ये रातों रात कोल्हू में आये, हर्ष बधाई बँटी और महल में जाकर सोये।

जिंदराव खीची ने पीछे लौटते समय मार्ग में काछेले चारण के पशु घेर लिये। ग्वाले ने आकर पुकार मचाई कि जिंदराव खीची सब गौवों को लिये जाता है। सुनते ही चारणी जाकर बूड़े के पास कूकी कि "बूड़ा बाहर चढ़! मेरी गौवें खीची लिये जाता है।" बूड़ा बोला "बाई! मेरी आँखें दुखती हैं, मुझसे तो आज चढ़ा नहीं जाता।" तब चारणी कूकती हुई पाबू के महल आई। चाँदिये को कहा

"चाँदा! मेरी सब गौवें खीची लिये जाता है, तू छोड़ा दे!" चाँदिया बोला—"कूके मत! पाबूजी पधारे हैं!" पाबू ने झरोखे में से उसको देखा, पूछा कि क्या है! चाँदिया ने उत्तर दिया—काछेली चारणी के पशु खीची लिये जाता है, बूड़ा बाहर नहीं चढ़ा। पाबू तो घोड़ी लेते वक्त वचनबद्ध हो चुका था; कहा, घोड़े पर सामान कर। सवार हुआ, सातों भाई थोरी और २७ (थोरी) जनैतियों को साथ लेकर खीची को जा लिया; लड़ाई हुई, खीची के बहुत से आदमी मारे गये और पाबू सब गौवों को छुड़ा लाया। गाँव कोड में आकर कूँजवा नामी कुएँ पर ठहरा और वहाँ पशुओं को जल पिलाने का श्रम किया गया, परंतु जल न निकाल सके। चारणी ने कहा "बड़े राठौड़, जैसे तूने इनको छुड़ाया है वैसे ही पानी भी पिला दे!" तब तो पाबू स्वयं चरस खींचने को जा लगा, जल निकालकर वित्त को पिलाया। पीछे से चारणी की छोटी बहन बूड़े के पास जाकर पुकारी "बूड़ा! अब तू कब तक जीता रहेगा? पाबू तो मारा गया!" इतना सुनते ही बूड़ा क्रोध के मारे जल उठा, तत्काल सवार होकर खीची को जा लिया और कहा—"अरे पाबू को मारकर कहाँ चला जाता है! ठहर जा!" खीची सहम गया और कहने लगा कि पाबू तो धन (पशु) लेकर पीछे फिर गया है, आप क्यों लड़ते हैं? बूड़ा ने उसकी एक बात न सुनी, लड़ाई हुई, बूड़ा काम आया। तब खीची ने अपने साथियों से कहा कि हमने पाबू को मारा नहीं, यदि वह पीछे फिरा तो अपने को छोड़ेगा नहीं; इसलिए चलकर उसे मारना चाहिए। वह पीछे फिरा और कम्मा धोरंधार के पास कुंडल गया, उससे कहा कि ये राठौड़ तेरी धरती दबा लेंगे, अतः आज तू हमसे मिल जावे तो अपने चलकर पाबू को मार लें। कम्मा ने भी खीची का

साथ दिया। दोनों चढ़कर पावू पर आये। पावू ने गौवों को जल पिला-कर छोड़ा ही था कि उसको खेह (धूल) उड़ती हुई दिखलाई दी। उसने चाँदिया से पूछा कि यह धूल कैसी है ? वह बोला—महा-राज ! खीचो आया। पहले जब लड़ाई हुई थी तो चाँदिया खीचो पर खड्ग का प्रहार करने ही को था कि पावू ने उसकी तलवार पकड़ ली और कहा—मारना मत ! बाई राँड हो जावेगी। तब चाँदिया ने कहा था कि आपने अच्छा नहीं किया। अब तो पावू ने खेत झाड़कर झगड़ा किया, खूब खड्ग बजाया और सातों भाई थोरी अहेड़ी और २७ जाति के अहेड़ियों समेत पावू काम आया, सोढी सती हुई और खीचो और पेमा अपने अपने ठिकाने को गये।*

* इस ख्यात से तो यही पाया जाता है कि पावू और उसकी बहन सोनाबाई धांधल की विवाहिता स्त्री के संतान नहीं थे। खीची के साथ युद्ध में मारे जाने के भाव का, चारण बाँकीदास का कहा हुआ, पावू का गीत—

" प्रथम नेह सानों महा क्रोध भीनो पछै लाभचसरी समरझोक लागै।
" राय कवरी वरी जेण वागे रसिक, वरीये कंवारी तेण वागै।
" हुवे मंगल धमल दमंगल वीरहक रंग तू ठैाक मंध जंग तूठो।
" सवण वूठो कुसुमवोह जिण मौड़सिर विसमउण मौड़ सिर लोहवूठो।
" करण अखियान चढ़ियो भर्ला कालसी निव्राहण वयण भुज वांधिया नेत।
" पंचाग सदन वरमाल संपूजियो खलां किरमाल संपूजियो खेत।
" सूर वाहर चढ़ै चारणां सुरहरी, इलै जस जितै गिरनार आवू।
" विहंड दल खीचियां तणां दलविभाड़े, पौढियो सेल रणभीम पावू।"

भावार्थ—पहले तो आनंद के साथ राय कंवरी को वरी और उसी पोशाक से जंग किया। जिस मस्तक पर मौड़ बँधा था उसी पर खड्ग प्रहार हुए। पँवारों ने वरमाल से पूजा की और खलों ने खेत में तलवारों से पूजा। अपने वचन का प्रतिपालन कर चारणों की गौवें छुड़ाईं और खीचियों के दल को भंजन कर पावूजी रणखेत में सोया।

डोडगहली बूढ़े के साथ सती होने लगी थी, परन्तु उस वक्त उसको सात मास का गर्भ था। लोगों ने मना किया तब उसने छुरी से अपना पेट चीरकर बालक को निकाल एक धाय के हवाले किया और आप पति के संग जल मरी। वह बालक पेट फाड़कर निकाला गया था इसलिये उसका नाम झरड़ा प्रसिद्ध हुआ। उसने जिंदराव को मारकर अपने बाप और काका का वैर लिया और कई दिनों तक राज करके गुरु गोरखनाथ का चेला बनकर सिद्ध हो गया। वह अब तक जीवित है।

बारहवाँ प्रकरण

संगमराव राठौड़

संगमराव गुजरात के स्वामी वीसलदेव वाघेले का प्रधान था। (वीसलदेव वाघेला सं० १३०० वि० से सं० १३१८-१९ तक गुजरात का स्वामी रहा था।) उसने कुछ द्रव्य हजम किया तो गोरा बादल कटक जोड़कर उस पर चढ़ आये, बड़ी लड़ाई हुई, संगमराव मेहवे और जालोर के बीच अपने देश में जा रहा। सावंत नाम का संढायच चारण ठट्ठे के बादशाह के दर्याई घोड़े का चरवादार था, वह उस घोड़े को ले भागा। तीन दिन तक बराबर चलता रहा, जब थक गया तो संगमराव के गाँव रेतलाँ में आकर रात को ठहरा। घोड़े को घोड़ियों की बू आई, खुलकर एक घोड़ी से जा लगा। सावंत की आँख खुली तो देखता है कि घोड़ा घोड़ी पर सवार हो गया है। वह उसको पकड़कर पीछा लाया और पुकार कर कहा कि—"ठट्ठे के बादशाह का दर्याई घोड़ा घोड़ी से लगा है, यदि कोई यहाँ होवे तो सुन लेना!" फिर उसने उस घोड़े को ले जाकर चित्तोड़ के राणा के नजर किया। राणा ने प्रसन्न होकर उसको एक गाँव शासण में दिया। (रेतलाँ में) उस घोड़ी के पेट से एक बछेरी पैदा हुई थी। संगमराव का विवाह कुंडल में हुआ था। उसकी ठकुराणी का नाम आचानण और साले का नाम विसनदास (विष्णुदास) था। एक बार विष्णुदास ने संगमराव के पास आकर वह बछेरी माँगी। कहा—मेरे भाटियों के साथ वैर है, सो इस घोड़ी पर चढ़कर अपना वैर लेने के पश्चात् पीछे ला दूँगा। संगमराव ने टालाटूली की, परंतु अंत में विसनदास बछेरी

ले गया। उसने उस घोड़ी को घोड़ा बताया, सूबर हुई, एक वर्ष पीछे बछेरा दिया। बिसनदास ने फिर उसको हरे जौ चराकर तैयार की और पीछे संगमराव के पास भेज दी। संगम अमल पानी चढ़ाकर घोड़ी पर सवार हुआ और उसे खुरी फेंकी तब जाना कि घोड़ी वैसी नहीं, इसने ठाग दिया है। बिसनदास पर क्रोध किया, उससे बछेरा मँगवाया। उसने पीछे कहलाया कि तुम बह-नोई हो इसलिये घोड़ी ले गये, परंतु बछेरा मैं नहीं दूँगा। संगम ने एक न माना और लड़ाई करने को तैयार हुआ, तब उसकी स्त्री ने कहा कि आप क्यों लड़ाई करते हैं, मैं जाकर बछेरा ला दूँगी। वह पीहर आई, भाई के पास बछेरा माँगा और बोली "भाई! मैं यह समझूँगी कि यह बछेरा तूने मुझको दहेज ही दिया था।" बिसनदास ने न माना, तब आचानण ने भाई पर धरणा दिया। दो एक दिन भूखी रही, परंतु भाई ने न माना। वह वहाँ से चल दी, आगे एक गाँव में पहुँचकर रसोई बनवाई, भोजन किया, फिर अपने साथ के लोगों से पूछा कि अब क्या करूँ? मेरा पति तो साले से घोड़ा लिये बिना मानेगा नहीं; मैंने उसको लड़ाई करने से रोका और घोड़ा लेने के वास्ते पीहर आई तो भाई ने भी नहीं समझा। लोगों ने कहा कि जैसी तुम्हारी इच्छा हो वैसा करो। वह अच्छे अच्छे ठिकानों में गई, परंतु किसी ने उसको नहीं रक्खा। गाँव भेलू में रामचंद ईंदा राजपूत रहता था। वह उसके यहाँ गई (और उसे अपनी कथा सुनाई)। वह बोला, तू खुशी से यहाँ रह। तू मेरे सिर के साथ है। तब आचानण ने यह दोहा कहा—"देसी बोरद बूकड़ा काही खलांसि रेह। कुंडल रे आचानणे कै भेलूं रेई देह॥" (यदि कोई आपत्ति आई तो आचानण का शरीर भी भेलू में पड़ेगा।)

जब से आचानण रामचंद्र के घर में आकर बैठी तब से ईंदे सब सजे-सजाये तैयार रहते थे। छः महीने बीते कि संगमराव के गाँव का एक जोगी ईंदा के गाँव आया और रामचंद्र के यहाँ भिक्षा माँगने को गया। आचानण ने उसको पहचाना और दासी को भेजकर भीतर बुलाया। उसे देखते ही जोगी बोला—"माता आचानण, तू यहाँ कहाँ से आई?" उसने कहा "आयसजी! मेरे लिए क्या प्रसिद्धि है?" बाबा बोला—प्रसिद्धि यही है कि घोड़ा लेने के वास्ते पीहर गई है, सो लेकर आवेगी। उसने जोगी को एक रुपया और एक वस्त्र दिया और सत्कारपूर्वक रात रखकर विदा किया और यह भी कहा कि ठाकुर को मेरी ओर से यह समाचार सुना देना कि "तुमने मेरा कुछ भी मान न रक्खा, साले को मारने के वास्ते तैयार हो गये, तब मैं पीहर आई। पीहरवालों ने भी मेरी बात न मानी, लाचार मैं रामचंद ईंदा के पल्ले लगी हूँ, सो अब ठाकुर मेरा नाम न लेवें।" जोगी ने यह सब वृत्तांत संगमराव को जा सुनाया और पूछा "बाबा! आचानण कहाँ है?" संगम ने कहा—"बछेरा लेने के वास्ते गई है।" जोगी बोला—"बछेरा तो दिया नहीं और वह तो रिसाकर रामचंद्र ईंदा के घर में जा बैठी है।" यह सुनते ही संगम ने नक्कारा बजवाया और कुंडल पर चढ़ धाया भाइयों ने समझाया कि पहले तो स्त्री का वैर लेना चाहिए, तब वह भेलू आया। जोगी को विदा करने के पीछे आचानण एक थाली में मूँग के दाने धरकर उसे बाजोट पर रख दिया करती थी। एक दिन रात के वक्त थाली में के मूँग उछलने लगे। रामचंद्र उस समय सोया हुआ था। आचानण ने उसके पाँव पर हाथ धरकर उसे जगाया और कहा—"ठाकुरां उठो! कटक आया।" उसने पूछा—"कहाँ है? मेरे बंधुवर्ग कई दिन से शस्त्र सँभाले तैयार बैठे रहते

हैं।" आचानण बोली—उन मूँगों की ओर देखो! रामचंद्र ने भी जब मूँगों को उछलते देखा तो पूछा कि यह क्या बात है। उसने कहा वोर घोड़ों की टापों के पड़ने से मूँग उछलते हैं, वह तुम्हारी सीमा में आ पहुँचा है। रामचंद्र ने कोठड़ी में आकर ढोल दिवाया, लोग इकट्ठे हुए। ईंदा और संगम में युद्ध ठना और रामचंद्र २७ राजपूतों सहित खेत पड़ा। आचानण ने आकर संगमराव से मुजरा किया और कहा "राज! हाथ तुम्हारा और शरीर ईंदा का है।" फिर उसने अपना दाहिना हाथ काटकर संगम को दे दिया और आप ईंदा के साथ जल मरी।

फिर संगमराव कुंडल पर चढ़कर गया और विसनदास को कहलाया कि हमारा वछेरा दे। उसने अपनी दूसरी छोटी बहन का विवाह संगमराव के साथ करके वछेरा उसे टीके में दे दिया। कुछ समय पीछे वह वीसलदेव की चाकरी में गया तो वीसल बोला कि धिक्कार है तुझको कि संगम ने तेरे साथ ऐसा वर्ताव किया। विसनदास ने कहा—क्या करें उससे पहुँच नहीं सकते। बीसल ने कहा कि मैं अपनी सेना देता हूँ। विसनदास फौज लेकर चला। संगम उस वक्त अपनी ससुराल ही में था, विसन अपने गढ़ के द्वार खुलवाकर एकाएक भीतर घुसा और उसे जा दबाया। घोड़ी को काटकर संगम संमुख हुआ और वहाँ खेत पड़ा।

संगमराव के पुत्र मूलू ने वीसलदेव से वैर बढ़ाया, उसके उपद्रव की एक पुकार रोज बीसल के कानों पर पड़ने लगी। उसने सेना भेजी और कई प्रयत्न किये, परंतु मूलू हाथ नहीं आता था। एक बार खीचों धारू आनलोथ का बीसोढा चारण वीसल के पास आया, उसने उसका बड़ा आदर किया। एक दिन एक हजार रुपये की बाजी लगाकर दोनों चौपड़ खेलने लगे और यह शर्त ठहरी कि जो राजा

हार जावे तो १०००) चारण को दे देवे और जो चारण हारे तो मूलू को ला दिखावे। चारण बोला—महाराज! मैं तो मूलू को नहीं पहचानता हूँ। राजा ने कहा—वह बड़ा राजपूत है, तेरा बुलाया हुआ अवश्य आ जावेगा और जो कदाचित् न आवे तो कोई हर्ज नहीं। चारण बाजी हार गया। राजा ने अपने आदमी उसके साथ दिये और वह मूलू के गाँव पहुँचा। मूलू बड़े आदर के साथ उससे मिला और उसके भोजन के वास्ते खीच (बाजरे की खिचड़ी) बनवाया, परंतु चारण ने न खाया। मूलू ने कारण पूछा तो कहा कि मैंने तुझको राजा बीसलदेव के पास एक हजार रुपये में हारा है इसलिए जो तू एक बार चलकर राजा से मुजरा करे तो तेरे यहाँ भोजन करूँ। मूलू बोला—"बहुत ठीक, परंतु तूने बहुत थोड़े द्रव्य में मुझे हारा, वह तो मेरे लिए लाख रुपये भी खर्च कर देता। खैर, मैं तेरे कहने से चलूँगा।" बीसोढे ने भोजन किया और विदा होकर पीछा बीसलदेव के पास आया और कहा—"बाप! मूलू तो आवै नहीं।" एक बार सोमवार के दिन राजा बीसल चौगान खेलने को चढ़ा, उसी वक्त मूलू भी उसके साथ में आन मिला और पूछा कि बीसोढा कहाँ है। किसी ने चारण की ओर उँगली उठाकर कहा कि वह सवारी के हाथी के पास राजा से बातें करता हुआ जा रहा है। मूलू ने घोड़ा बढ़ाया और बराबर आकर बीसोढे से राम राम किया, तब चारण ने यह दोहा कहा—"बोसीढो आवार बीसल दे कहिजे विगत। ओ मूलू असवार सगला देखै सांगउत।" तब बीसोढ़े ने कहा महाराज मूलू हाजिर है। राजा ने उसकी तरफ देखा तो मूलू ने मुजरा कर यह दोहा कहा—"जाडी फौजां जेथ बीसल की चहुएँ वला। सेल तुहालो तेथ सुरताणे उर साँग उत॥" (हे साँगा के पुत्र, जहाँ बीसल की बहुत सी फौजें हैं वहाँ तेरा बर्छा सुरताण के हृदय

में है।) बीसल की सेना में कोई सुरताण था उसको मारकर मूलू चलता हुआ। पीछे राजा की सेना लगी, हुक्म हुआ कि जाने न पावे, थोड़ी दूर पर आगे एक नाला आया, उसे कूदकर मूलू का घोड़ा ता दूसरे किनारे पर जा खड़ा हुआ और राजा के सवार इधर ही खड़े ताकते रहे। जब यह खबर राजा के पास पहुँची कि मूलू अछूता चला गया ता उसने आज्ञा दी कि "हमारे घोड़ों के कान काट डालो।" उस वक्त वीसोढे ने दोहा कहा—"तेजा लगतो खार वाला वीसलदेव के। ऊपर ला असवार सांके भय सांगावते॥" (राजा के घोड़े ता वहाले तक पहुँचे परंतु उनके सवार भय के मारे शंकित हो पार न जा सके।) तब ता राजा ने घोड़ों के कान काटने का निषेध कर दिया और वीसोढे से कहा—"तूने हमको चिताया क्यों नहीं कि मूलू आवेगा।" वीसोढा बोला—महाराज! ऐसा ता किस तरह कहा जा सकता है। मूलू ने मुझसे कहा था कि तूने बहुत थोड़े रुपयों में मुझे हारा, यदि मैं राजा के नजर आऊँ ता मेरे ता लाख रुपये देने को भी वह तैयार है। राजा ने फिर दूसरी बाजी लगाई और कहा यदि मैं हारा ता तुझे एक लाख रुपये दे दूँगा और जो तू हार जावे ता गढ़ में मूलू को लाकर मुझसे मुजरा करवाना। वीसोढा ने कहा—गढ़ में वह कैसे आवेगा? राजा ने उत्तर दिया कि आवे ता ले आना, नहीं आवे ता न सही। वह बाजी भी चारण हार गया; मूलू के पास पहुँचा और उससे कहा—"मैंने तुझको लाख रुपये में हारा है, इस बार गढ़ में आना पड़ेगा।" मूलू ने उत्तर दिया—मुझे गढ़ में कौन जाने देगा? परंतु जो आ सका ता आकर ढूँढूँगा। चारण ने पीछा आकर राजा से कहा—"बाप! कोट में मूलू कब आवे, मैंने ता बहुत कुछ कहा, परंतु उसने न माना।" यह सुनकर गोरा बादल ने मूलू के लिए

हँसकर कहा—"यदि अच्छा राजपूत होता तो जरूर आता।" एक दिन भादों के महीने में मूलू सवार होकर पाटण आया और एक माली के घर के पिछवाड़े खड़ा रहा। उस वक्त मेह बरस रहा था, सिर पर ढाल रखकर वह एक परनाले के नीचे खड़ा हो गया। माली ने मालिन को कहा कि देख! परनाले का कैसा शब्द होता है। माली ने उठकर देखा तो एक सवार घोड़े पर चढ़ा हुआ खड़ा है। तब तो उसने मालन को पुकारा कि बाहर तो कोई सवार खड़ा है। मालिन बोल उठी कि "यह तो कोई मेरे मूलू जैसा है जो बाप का वैर लेने के वास्ते झुक रहा है।" माली ने मूलू को घर में लिया। प्रभात को वह मालिन राजा के यहाँ पूजा के लिए फूल लेकर जाने लगी। मूलू ने उसको कहा कि एक बार मैं भी राजा को देखना चाहता हूँ। मालिन ने उसको स्त्री का वेष धारण करवा फूलों की छाब सिर पर रखकर साथ लिया। चलते समय मूलू ने अपनी कटार को भी छाब में रख लिया और महल में पहुँचा। देखा कि राजा बैठा है और बीसोढा चारण भी वहाँ हाजिर है। जाते हुए मार्ग में मूलू ने गोरा बादल को बैठे हुए देखा, जिससे उसके पाँव डगमगाने लगे। गोरा बोला—"बादल देख! इस मालिन के पग ठीक नहीं पड़ते हैं, क्या यह संगम राज का बीज तो नहीं है?" बादल ने कहा—"होवे, मालिन के घर पर संगम का डेरा रहा था।" यह सुनकर मूलू ने महल में प्रवेश किया, छाब सिर से उतारी और चारण को राम राम किया। चारण ने खड़े होकर आशीष दी और बीसल से कहा—"महाराज! मूलू मुजरा करता है।" इतने में तो कटार पकड़कर मूलू राजा के पास जा बैठा और बोला कि "यदि जगह से हिले तो यहीं मार डालूँगा।" राजा ने कहा कि किसी प्रकार छोड़ो भी! कहा—

अपनी कन्या व्याह दो तो छोड़ दूँ। राजा ने बहुतेरा समझाया, परंतु उसने एक न मानी। वहाँ ठाकुरद्वारे में राजकन्या से विवाह कर हाथ पकड़ उसको महल में ले गया।

वीसलदेव ने विचारा कि मूलू ने धोखा दिया और बहुत बढ़कर बात की। यह वृत्तांत गोरा बादल ने भी सुना। उन्होंने अर्ध-रात्रि के समय राजा से आकर कहा कि "हम तो इस अपमान को सहन नहीं कर सकते कि मूलू राजकन्या को जबर्दस्ती व्याह लेवे। हम उसे मारेंगे और कुमारी का विवाह किसी और के साथ करावेंगे।" राजा बोला—जैसी तुम्हारी इच्छा। वे दोनों (सामंत) वहाँ पहुँचे जहाँ मूलू, राजकुमारी को लिये, सोता था और पुकारकर कहा कि सँभल जा! मूलू ने सोलंकिनी को कहा कि अब यदि तू बचावे तो बचूँ। वह बोली, मैं हर प्रकार से हाजिर हूँ। मूलू अपनी स्त्री के कपड़े पहनकर द्वार पर आ खड़ा हुआ और गोरा बादल से कहा कि मुझे तो निकलने दो! सामंत (उसको राजकुमारी समझकर) अलग हो गये, मूलू निकला और घोड़े पर चढ़कर चलता हुआ। जब गोरा बादल द्वार खोलकर भीतर गये तब क्या देखते हैं कि वहाँ पर राजकन्या बैठी है, वे हाथ मींजकर रह गये।

सोलंकिनी के गर्भ रह गया था, अब उसका पुनर्विवाह करना चाहा। और तो किसी ने उसको ग्रहण करना स्वीकार न किया; परंतु जालोर के स्वामी सामंतसिंह सोनगिरे ने उसका पाणिग्रहण किया। मूलू बोला कि सोलंकियों ने तो मुझको बेटी व्याह दी इसलिए अब उनके साथ मेरा वैर नहीं, अब तो सोनगिरों से बैर है। नित्य दौड़े दौड़ने लगा, परंतु सोनगिरे प्रबल थे, उनको वह पहुँच न सका। एक बार दसहरे के दिन सोनगिरों की एक दासी आशापूरा देवी को पूजने के वास्ते गई थी, उसको पकड़कर मूलू ने अपनी दोहर

में उसकी गाँठ बाँध ली और उसके वस्त्र पहनकर गढ़ में गया और तुलसी थाने के पास जा छिपा। उसकी कटार उसके पास थी। पहर रात गये सामंतसिंह महल में आया, सोलंकिनी थाल परोसकर लाई। सोलंकिनी को मूलू के वीर्य से पुत्र उत्पन्न हुआ था। सामंत ने कहा कि "मूलू के बेटे को ले आ।" वह बोली कि वह तो सो गया है। कहा—"जगा। मैं उसको अपने शामिल जिमाऊँगा, मूलू बड़ा सामंत है। उसके पुत्र की झूठन खाने से मेरे में भी पराक्रम आ जावेगा।" लड़का आया और शामिल भोजन किया। सामंत ने मूलू की बहुत प्रशंसा की और यह भी कहा कि वह एक बार अवश्य मुझ पर आवेगा। मूलू ने विचार लिया कि इसको न मारूँगा, उठकर पास चला आया और राम राम किया; कहा "तुझे न मारूँगा, न मारूँगा; वैर टूटा।" सामंतसिंह बोला—"वैर ले ले।" मूलू ने उत्तर दिया—"छोड़ा।"

फिर मूलू ने दूसरा विवाह कर लिया और अपने पुत्र को माँगा परंतु सामंतसिंह ने न दिया; कहा—यह पुत्र तुम्हारा है, परंतु संकट के समय हमारे काम आवेगा। उस लड़के का नाम काँधल था। वह सामंतसिंह के पास रहता; प्रतिदिन सोने के थाल में भोजन करता और गिलोल से उस थाल को तोड़ डालता था। एक दिन कान्हड़ देव की स्त्री ने कहा कि "रोज थालो तोड़ता है।" काँधल ने गिलोल चलाई, गिलोलिया राणी के कान पर जा लगा, बूढ़ी थी, कान टूट गया, परंतु उसने काँधल को कुछ न कहा। इसी अर्से में सुलतान अलाउद्दीन (ख़िलजी) जालोर पर चढ़ आया। सोनगिरों के साथ लड़ाई हुई, काँधल खाँडे के मुख पर (सबसे आगे) था, सात बीस खड्डे खुदा कटार पकड़कर काम आया (२७ तुर्कों को मारकर मरा)। उसकी माता ने उस वक्त कहा कि "बेटा काँधल !

जो मैं ऐसा जानती तो खड्गों से घर भरा देती।" काँधल ने उत्तर दिया—"माजी! तुमने न जाना हो, वीरम की माता ग्रौर कान्हड़देव की स्त्री पर जिस दिन गिलोलिया चलाया था मैंने तो उसी दिन कह दिया था।"

तेरहवाँ प्रकरण

खेतसी अरड़कमलोत और भटनेर की बात

भटनेर में बादशाह हुमायूँ का थाना रहता था। उस वक्त खेतसी से एक कानूनगो आकर मिला और कहा "यदि तू मेरी सहायता करता रहे तो तुझे गढ़ दिलवाऊँ।" इस कानूनगो को निकालकर उसकी जगह दूसरा नियत कर दिया गया था, उस जलन के मारे वह खेतसी के पास आया था। खेतसी ने कहा—भली बात है, मैं भी यही चाहता हूँ। अपने काका और बाबा पूरणमल काँधलोत और दूसरे कई राजपूतों को साथ ले कानूनगो को आगे कर वह चढ़ धाया। मार्ग में जाते हुए देखा कि एक सिंहनी किसी जानवर का सिर लिये जा रही है। शकुनी ने कहा कि गढ़ तो तुम ले लोगे, परंतु तुम्हें उसे छोड़ना पड़ेगा। खेतसी बोला कि "एक बार जा तो बैठें; फिर रहे या जावे।" (कानूनगो पहले गढ़ में चला गया था।) जब ये गढ़ के नीचे पहुँचे तो कानूनगो ने ऊपर से रस्सा फेंका, खेतसी अपने साथ सहित ऊपर चढ़ा और गढ़ ले लिया। दस वर्ष तक वह गढ़ उस के अधिकार में रहा। बड़गच्छ का एक यती बीकानेर में रहता था। उसके पास कोई अच्छी चीज़ थी। राव जैतसी ने वह चीज उससे माँगी, परंतु यती ने दी नहीं तब राव ने उसको मारकर वह वस्तु ले ली। फिर कामराँ (हुमायूँ का भाई जो काबुल में राज करता था) हिंदुस्तान पर चढ़ आया। उस यती का चेला उससे आगे जाकर मिला, और कहा "आप उधर चलें तो भटनेर का गढ़ हाथ आवे।" कामराँ ने कहा कि "उधर जल नहीं है।" चेला बोला कि "जल

मुझसे आया।" कामराँ उसको साथ लिये भटनेर को चला, मार्ग में जल न मिलने से कटक मरने लगा तब यती ने क्षेत्रपाल की आराधना की। मेह बरसा और जल ही जल हो गया। ये भटनेर पहुँचे, खेतसी भी अगौनी कर मिला। इन्होंने उससे अगुवे माँगे, उसने भेज दिये; परंतु वे शाही फौज को मार्ग से भटकाकर जंगलों में ले चले। आगे आगे कामराँ और पीछे पीछे खेतसी चलता था। कामराँ के साथियों ने कहा कि "गनीम पीछे पीछे आता है।" तब तुर्कों ने पीछे फिरकर खेतसी को मारा। भयंकर युद्ध हुआ; कई आदमी मारे गये। कामराँ, भटनेर में अपना थाना रख, बीकानेर आया। राव जैतसी ने उससे युद्ध किया और रात को छापा मारा, तुर्क बुरे हारे और कामराँ भागा। राव ने बांड़ी से चढ़कर अहमदाबाद तक राज किया। ठाकुरसी ने जैतसी के नाम पर जैतपुर बसाया।

एक दिन भटनेर में भद्रकाली के मंदिर के पास ठाकुरसी (राव जैतसी का पुत्र) और अहमद (शायद भटनेर के किलेदार का नाम हो) ने मिलकर गोठ की, और काली के चढ़ाने को भैंसा तैयार किया। ठाकुरसी ने साँगा भाटी को कहा कि "लोह कर!" उसने लोह किया, भैंसे का सिर लटक पड़ा, जिस पर ठाकुरसी ने शकुन विचारकर कहा कि गढ़ लेंगे। फिर वह जैतपुर चला आया। भटनेर का एक तेली जैतपुर ब्याहा था। जब वह तेली ससुराल में आया तो ठाकुरसी ने उसकी बड़ी खातिर की। एक दिन अहमद कहीं अपने पुत्र का विवाह करने गया था, गढ़ की रक्षा के वास्ते अपने भाई फीरोज़ को छोड़ गया था। ठाकुरसी चढ़कर गया और रात्रि के समय गढ़ के नीचे जा पहुँचा। तेली से शर्त थी ही, उसने ऊपर से रस्सा फेंका, जिसके आधार से ठाकुरसी अपने साथियों सहित

गढ़ पर चढ़ गया। लड़ाई हुई, फीरोज मारा गया और गढ़ हाथ आया। कल्याणमलजी की दुहाई फिरी और राव (जेतसी) ने वह गढ़ ठाकुरसी को दिया। समय पाकर ठाकुरसी का शरीर छूटा और बाघ उसका उत्तराधिकारी हुआ। जैतपुर उससे ले लिया गया और बाघ व नरहर भटनेर में रहे। बादशाही चाकरी करता था। बाघ के मरने पर उसके पुत्रों से महाराज राजसिंहजी ने वह धरती लेकर बीकानेर के अधिकार में की, वे भाड़वां में आकर गुढ़ा बाँध रहने लगे। सूरसिंह करणसिंह तक भटनेर बीकानेर-वालों के पास रहा और बादशाह शाहजहाँ के अमल में खालसे हुआ। लड़ाई हुई, जोगीदास कांधलोत और कल्याणदास भाटी काम आये। फिर खालसे रहा।

चौदहवाँ प्रकरण

जोधपुर, बीकानेर और किशनगढ़ का वृत्तांत

१—जोधपुर के राजाओं की वंशावली

राव सीहा—राणी सोलंकणी सिद्धराव जयसिंह की बेटी, उसका पुत्र आस्थान। दूसरी राणी चावड़ी सौभाग्यदेवी, मूलराज वाघना-थोत की बेटी, उसके पुत्र अज व सोनिंग।

राव आस्थान—राणी उछरंगदेवी ईंदी, बूढम मेवराजोत की बेटी, उसके पुत्र धूहड़, धांधल व चाचग।

राव धूहड़—राणी द्रौपदी, चहवाण लक्ष्मणसेन प्रेमसेनोत की बेटी, उसके पुत्र रायपाल, पीथड़, वायगार, कीर्तिपाल और लगहंथ।

राव रायपाल—राणी रत्नादेवी भटियाणी, रावल जेसल दुसा-जोत की बेटी, उसके पुत्र—कान्ह, समणा, लक्ष्मणसेन व सहनपाल।

राव कान्ह या कन्हपाल—राणी कल्याणदेवी देवड़ी, सलखा लूँ-भावत की बेटी, उसके पुत्र जालणसी और विजयपाल।

राव जालणसी—राणी स्वरूपदेवी गोहिलाणी, गोदा गजसिंहोत की बेटी, उसका पुत्र छाड़ा।

राव छाड़ा—राणी वीरां हुलणी, उसका पुत्र टीडा।

राव टीडा—राणी तारादेवी, चहवाण राणा वरजांगोत की बेटी, पुत्र सलखा।

राव सलखा—राणी देवी चहुवाण मुंजपाल हेमराजोत की बेटी, पुत्र मल्लिनाथ, जैतमल। दूसरी राणी जोइयाणी, जोइया धीरदेव की बेटी, पुत्र वीरमदेव। तीसरी राणी गोरज्या (गवरी) मोहिलाणी, जयमल गजसिंहोत की बेटी, पुत्र सोभित।

राव वीरमदेव—राणी भटियाणी जसहड़, राणीदेवी पुत्र राव चूँडा। दूसरी राणी माँगलियाणी लालां कान्ह केलणोत की वेटी, पुत्र जयसिंह। तीसरी राणी चंदनदेवी आसराव रणमलोत की वेटी, पुत्र गोगादेव। चौथी राणी ईंदी लाछां (लक्ष्मी) उगमणसीह सिखरावत की वेटी, पुत्र देवराज और विजयराज।

राव चूँडा—राणी सांखली सूरमदे, वीसल की वेटी, पुत्र—रणमल। दूसरी राणी गहलोताणी तारादेवी सोहड़ साँदू सूरावत की वेटी, पुत्र सत्ता। तीसरी राणी भटियाणी लाडां, कुंतल केलणोत की वेटी, पुत्र अरड़कमल। चौथी सोना, मोहिल ईसरदास की वेटी, पुत्र कान्हा। पाँचवीं ईंदर केसर, गोगादेव उगमणोत की वेटी, पुत्र-भीम, सहसमल, वरजांग, रूदा, चांदा और अज्जा।

राव रणमल—राणी भटियाणी, पुत्र जोधा।

राव जोधा—राणी सारंगदेवी, सांखला सांडण रूणेचा की वेटी, पुत्र-बीका, वीहा, दूसरी राणी हाडी जसमादे, पुत्र राव सांतल, राव सूजा, और नींबा। तीसरी राणी जाणांदे हूलणी भारमल जोगावत की बेटी। सं०१५०० में वीकानेर के गाँव चूँडासर में पाट बैठा।

राव सांतल—सं० १५१९ में मंडोर में पाट बैठा।

राव सूजा—माजी हाडी जसमादे, अजीत मालदेवोत की पुत्री। सं० १५४९ में पाट बैठा।

राव वाघा—माजी लखमादेवी भटियाणी, जयसा कलिकणोत की वहन।

राव गांगा—माजी उदयकुँवर चहुँवाण रामकुमार रावत की वेटी। सं०१५७२ में पाट बैठा।

राव मालदेव—माजी पद्मां (पद्म कुँवर) देवड़ी, जगमाल मालावत की वेटी। सं० १५८२ में पाट बैठा।

राव चंद्रसेन—सं० १६१९ में पाट बैठा।

राजा उदयसिंह—माजी स्वरूपदेवी झाली, सज्जा राजावत की बेटी। सं० १६४० में पाट बैठा।

राजा सूरसिंह—माजी सहमती कछवाही, आसकर्ण भीमावत की बेटी। सं०१६५२ में पाट बैठा।

राजा गजसिंह—माजी केसरदेवी कछवाही, हमीरखाँ कर्मसिंहोत की बेटी। सं० १६७६ में पाट बैठा।

सं० १६९५ में राव अमरसिंह को नागोर दी।

महाराजा जसवंतसिंह—माजी गायडदे सीसोदणी, भाण सक्तावत की बेटी। सं० १६९६ में पाट बैठा।

महाराजा अजीतसिंह—माजी पोहपकुँवर। यादव भीमपाल छत्रमणोत का दोहिता।

महाराजा बखतसिंह—चौहान चतुर्भुज दयालदासोत का दोहिता।

महाराजा विजयसिंह—भाटी दौलतसिंह गजसिंहोत का दोहिता।

महाराजा भीमसिंह—रावलोतों का दोहिता। भीमसिंह किशनसिंह सादूलोत का दोहिता।

(महाराजा जसवंतसिंह से पिछले नाम ख्यात में पीछे से दर्ज हुए हैं)

जोधपुर के सर्दारों की पीढ़ियाँ

नीवाज—(ऊदावत राठौड़, राव सूजा के बेटे उदयसिंह के वंशज) राव जोधा, राव सूजा, ऊदा, खीवा, रत्नसिंह, कल्याणदास, मुकुंददास, विजयराम, जगराम, कुशलसिंह, अमरसिंह, कल्याणसिंह, दौलतसिंह, शम्भूसिंह, सुरताणसिंह और सामंतसिंह।

रास—(ऊदावत राठौड़) जगराम, शम्भूसिंह, बखतसिंह, केसरीसिंह, बनैसिंह और जवानसिंह।

लाँबियाँ—शुभराम, प्रेमसिंह, भारतसिंह और चाँदसिंह।

नेमलियावास—शुभराम, चैनसिंह, फतहसिंह और इंद्रसिंह।

रायपुर—कल्याणदास, दयालदास, वल्लभराम (बलराम), राजसिंह, हृदयनारायण, भाखरसिंह और केसरीसिंह।

नींबोल—जगराम, उदयराम, जगतसिंह और नरसिंहदास।

जूणलो—जगराम, उदयराम, अनूपसिंह और रायसिंह।

खारिया—विजयराम, मनराम, वैरीसाल और महासिंह।

खनावड़ी—मुकुंददास, विजयराम, मनराम, राजसिंह और दौलतराम।

वेरोल—मुकुंददास, विजयराम, मनराम, हीरासिंह, बनैसिंह और शम्भूसिंह।

छीपिया—दयालदास, बलराम, राजसिंह, प्रतापसिंह, सामंतसिंह, जसकर्ण, भवानीसिंह, जैतसिंह और अमरसिंह।

नीवाडा—राजसिंह, प्रतापसिंह, उदयसिंह और बनैसिंह।

बसो—जसकर्ण, भावसिंह और शंभूसिंह।

देवली—बलराम, राजसिंह, प्रतापसिंह, उदयसिंह और शिवसिंह।

२—राज्य बीकानेर के नरेशों की वंशावली

सं० १५०० में बीकानेर के गाँव चूंड़ासर में राव जोधा पाट बैठा।

राव बीका (जोधावत) सं० १५२५ में जाँगलू (जंगलधर) में आया, सं० १५२६ में कोडमदेसर में पाट बैठा। राव बीका के पुत्र लूणकर्ण, पूंगल के भाटी राव शेखा की कन्या रंगादेवी के पेट से। नरा, घड़सी, केलण, मेघा, बीसा, राजा और देवराज।

(राव बीका ने सं० १५४५ में वीकानेर का नगर बसाकर राजधानी स्थापन की) ।

राव लूणकर्ण—सं० १५५४ में पाट बैठा। पुत्र जैतसी, देवड़ा जैतसी की कन्या लाला के पेट से। प्रतापसिंह, रत्नसिंह, वैरीसिंह, तेजसिंह, करमसी, रूपसी, रामसिंह, सूरजमल और किशनसिंह।

राव जैतसी—सं० १५८१ में पाट बैठा। पुत्र कल्याणमल, सोढा जैतमाल की कन्या कश्मीरदे के पेट से। भीमराज, मालदेव, ठाकुरसिंह, मानसिंह, अचलदास, पूरणमल, सिरंग, सुर्जन, कान्ह, भोजराज, करमचंद, और तिलोकसी।

राव कल्याणमल—सं० १५६६ में पाट बैठा। पुत्र रायसिंह, सोनगिरा अखैराज की कन्या भक्तादे के पेट से। रामसिंह, पृथ्वीराज, सुरताण, भाण, अमरा, गोपालदास, राघोदास, डूंगरसिंह। राव कल्याणमल के साथ सती हुईं—राणी हाँसा गहलोत, भटियाणी रामकुँवर, प्रेमकुँवर, लवंगकुँवर; एक खवास। ढोलण, पोहप (पुष्प) राय। दस पातर—अजयमाला, बुधराय, कामसेना, रंगराय, पद्मावती, सुघड़राय, भानुमती, रूपमंजरी, रंगमाला आदि।

महाराजा रायसिंह—सं० १६३० में पाट बैठा। पुत्र सूरसिंह, रावल हरराज भाटी की पुत्री राणी गंगादेवी के पेट से; दलपत, भूपत और किशनसिंह। राजा रायसिंह के साथ सती हुईं—तीन राणियाँ—कुँवर द्रोपदी, सोढी भानुदेवी, भटियाणी अमोलकदेवी। पातर तीन—रंगराय, नैयणजवा, कामरेखा।

महाराजा दलपतसिंह—सं० १६६८ में पाट बैठा। दो वर्ष राज किया (६ राणियाँ राजा की पगड़ी के साथ वीकानेर में सती हुईं)।

महाराजा सूरसिंह—सं० १६७० में पाट बैठा। राजा रायसिंह का पुत्र था। राणा उदयसिंह सीसोदिया की कन्या राणी जसवंतदेवी

के पेट से। सूरसिंह के पुत्र—कर्णसिंह, कछवाहा हिम्मतसिंह की कन्या राणी स्वरूपदेवी के पेट से। अर्जुन और शत्रुसाल। राजा सूरसिंह के साथ दो राणियाँ—भटियाणी मनरंगदे, राणी रत्नावती, और पातर रंगरेखा तथा गुणकली सती हुईं।

महाराजा कर्णसिंह—सं० १६८८ में पाट बैठा। पुत्र अनूपसिंह, चंद्रावत रुक्मांगद की कन्या इंद्रकुमारी (कस्तूरदेवी) के पेट से। केसरीसिंह, पद्मसिंह, मोहनसिंह, अजबसिंह, उदयसिंह, मदनसिंह, देवीसिंह, अमरसिंह और वनमाली। दस खवासनियाँ राव कर्ण के साथ सती हुईं। राणियाँ—भटियाणी अजबदेवी धनराजोत, शृंगारदेवी जेसलमेरी, कोड़मदेवी विकुंपुरी, मनसुखदे, शेखावत सोभागदेवी, प्रतापकुँवर, सोढी सुगुणदेवी, तँवर साहिबदेवी। दस खवासनें व पातरें—कमोदकली, रामवती, मेघमाला, किशनाई, गुणमाला, चंपावती, रुद्रकली, प्रेमावती, कुंकुमकली, और मृदंगराय।

महाराजा अनूपसिंह—सं० १७२६ में पाट बैठा। पुत्र सुजानसिंह, राजावत अमरसिंह की कन्या राणी चंद्रकुँवर के पेट से। आनंदसिंह, स्वरूपसिंह, रुद्रसिंह और रूपसिंह। आनंदसिंह के पुत्र गजसिंह, अमरसिंह, तारासिंह और गूदड़सिंह। सं० १७५५ ज्येष्ठ सुदि ९ को राजा अनूपसिंह काल-प्राप्त हुआ। सती हुईं—राणी रत्नकुँवर जेसलमेरी, पँवार अतरंगदे। खवासनें—सुघड़राय, रंगराय, गुलाबराय। पातरें—जयमाला, नारंगी, सरसकली, अनारकली, खलासा, रूपकली, कपूरकली। राणी जेसलमेरी की सात सहेलियाँ—रूपरेखा, हररेखा, गुणजोत, मोतीराय, कुँवरीजी की हरमाला; खवासों की कमोदी। कुल सतियाँ अठारह।

महाराजा स्वरूपसिंह—जन्म सं० १७४६। पाट बैठा सं० १७५५ में। उस वक्त ९ वर्ष के बालक थे, शीतला रोग से शरीर छूटा।

महाराजा सुजानसिंह—सं० १७५७ में पाट बैठा। पुत्र-राणावत इंद्रसिंह की कन्या राणी रत्नकुँवर के पेट से जोरावरसिंह ने जन्म लिया। सं० १७९३ में काल-प्राप्त हुआ। सती हुईं—राणी देरावरी सुरताणदे; पातरें—सुवड़राय, रंगराय, नैणसुखराय, गुमानराय, वडारण हरजोतराय; खालसा—हसती, चैनसुख।

महाराजा जोरावरसिंह—सं० १७९३ आश्विन सुदि १० को पाट बैठा। पुत्र गजसिंह, सामंतसिंह शेखावत की कन्या राणी अति-भाग (व्रजकुमारी) के पेट से। सती हुईं सं० १८०३ में—राणी देरावरी अभयकुँवर, तँवर उमेदकुँवर, खवास सदांजी; पातरें—गोरां, गुलाब, सरूपाँ, तनतरंग, रंगनिरत, फतू, बन्ना, सुखविलास, राजां, गुमानी, बिज्जी, महताब; खालसा—रामजोत, कपूरकली, बड़ारण गुणजोत; कुँवर राणी री सहेली राही; पातरां की सहेली फत्तु सकासी; पातरां की रसोईदार ब्राह्मणी राही।

महाराजा गजसिंह—सं० १८०३ आसोज बदि १३ पाट बैठा। महाराज राजसिंह सं० १८४४ वैशाख सुदि ६ पाट बैठा। महाराज सूरतसिंह सं० १८४४ आसोज सुदि १० पाट बैठा।*

राव बीकाजी—जाट सहारण भाड़ंग में और जाट गोदारो पाँड़े लाधड़वे में रहते थे। गोदारा बड़ा दातार था। सहारण की स्त्री बेणीवाल (जाटों की एक जाति) मलकी ने एक दिन अपने पति से कहा कि गोदारा का नाम बहुत प्रसिद्ध है, चौधरी (जाटों में मुखिया को चौधरी कहते हैं) मिले तो ऐसा मिले। जाट (सहारण) मद में छका हुआ था, (यह सुनते ही) चौधरण को छड़ी से मारा और कहा "जो पाँडे से रीकी है (तो उसके जा)।" जाटणी कहने

* महाराजा अनूपसिंहजी से पिछले राजा इस ख्यात में पीछे से दर्ज हुए मालूम होते हैं।

लगी "रे घरघातक ! मैंने तो बात की थी, अब जो कभी तेरे पलँग पर आऊँ तो भाई के पलँग जाऊँ" (अर्थात् अब तू मेरा पति नहीं)। उसने जाट से बोलना बंद कर दिया, और एक मास पीछे पाँडे गोदारा को कहला भेजा कि तेरे वास्ते (मेरे पति ने) मुझ पर चाबुक चलाया है। पाँडे ने उत्तर भेजा कि जो तू आवे तो मैं तुझे ले जाऊँ। ऐसे छः मास बीत गए। एक दिन सब सहारण जाटों ने इकट्ठे होकर मंसूबा किया कि चौधरी चौधरण के झगड़े को मिटा देवें। उन्होंने बकरे मारे, मदिरा मँगवाई और गोठ की। उसी समय पाँडे गोदारा साठेक ऊँटों से वहाँ आकर गाँव के बाहर ठहरा। जाटणी ने कोठे में अपनी एक दासी को सुलाकर भीतर से साँकल बंद करवा दी और उसे समझा दिया कि यदि तुझे पीटें और पूछें तो कह देना कि (चौधरण को) पाँडे ले गया। इतना कहकर मलकी तो पाँडे के साथ चली गई, इधर गोठ जीमकर जाटों ने अमल पानी लिया और चौधरण को बुलाने के वास्ते एक आदमी को भेजा। उसने जाकर पुकारा तो किसी ने उत्तर न दिया; तब उसने पीछे आकर जाटों से कहा कि चौधरण तो कपाट बंद करके भीतर सोई हुई है। वे बोले कि जाओ, कपाट तोड़कर उसे जगा लाओ। जाट किवाड़ तोड़ कोठे में घुसे और देखा कि वहाँ तो दासी सोती है। उसको पीटने लगे तब उसने कहा कि मुझे क्यों मारते हो? चौधरण को तो पाँडे ले गया। तब तो जाट खोज लेकर उस जगह पहुँचे जहाँ वे ऊँटों पर सवार हुए थे और उन्हें ढूँढ़ा, परंतु पता न लगा। सहारणों ने मिलकर सलाह की कि गोदारों की पीठ पर राव बीकाजी हैं। अपने में इतनी सामर्थ्य नहीं कि उनका मुक़ाबला कर सकें। तब भाड़ंग के जाट सहायता के वास्ते नरसिंह जाट के पास सिवाणी गये और उससे कहा कि हमने अपनी भूमि तुमको दी, तुम हमारी

मदद करो। नरसिंह अपनी सेना लेकर लाधड़िये आया, गाँव लूटा और सत्ताईस गोदारों को मारकर पीछे फिरा। पाँड़े का पुत्र नकोदर राव वीकाजी के पास पहुँचा और कहा कि तुम्हारे जाटों को नरसिंह मारकर चला जाता है। राव वीका सिद्धमुख में था, सवार होकर वहाँ से दो कोस ढाका गाँव में गया जहाँ नरसिंह का साथ तलाव की पाल पर ठहरा हुआ था। आधी रात का समय था। भाडंग के जाटों में से आधे राव बीका से आ मिले और कहा कि हम नरसिंह को मरवा देंगे। वे राव को वहाँ ले गये जहाँ नरसिंह सोया हुआ था। चौंककर नरसिंह उठा, राव का भँवर घोड़ा बढ़ने लगा कि कांधल ने नरसिंह को रोका और राव वीका ने उसे मार लिया। उसके साथी भाग गये, मालमता सब लूट लिया तब राव वीका की विजय में जाटों के डोम ने यह दोहा कहा—"वीके वाहर नावड़ो भँवर नकोदर हाथ। हम तुम झगड़ो नीवड़ो नरसिंह जाट्ट साथ।" (भँवर घोड़े पर सवार हो नकोदर को साथ लिये वीका सहायतार्थ जा पहुँचा, नरसिंह जाट के साथ हमारा और तुम्हारा झगड़ा चुक गया)।

सिद्धमुख को लौटते हुए मार्ग में दासू बेणीवाल (जाट) आकर राव बीका से मिला और कहा "राज! हमारा बैर है सो दिला दो तो धरती तुम्हारी है।" सुहराणी खेड़े में सोहर जाट रहते थे, उनको मारकर दासू का बैर लिया और दासू ने अपनी दासियों से रावजी का गुणगान कराया।

अरड़कमल काँधलोत भटनेर पर चढ़ धाया और वहाँ से माल-वित्त लूटकर बीकानेर लाया। (इसकी बात इस तरह लिखी है—)

राव बीका ने पहले तो कोड़मदेसर की जगह गढ़ बाँधने का विचार किया था, परंतु वहाँ तो वह ठहर न सका तब उसने राव शेखा (भाटी) को जाकर कहा कि हमें ठहरने को कोई स्थान बत-लाओ। शेखा बोला कि कहीं दूर जाकर ठौर कर लो। बीका ने कहा कि दूर तो मैं नहीं जाऊँगा, इसी पहाड़ी पर जगह देखकर रह जाऊँगा। शेखा ने उत्तर दिया कि जहाँ तुम्हारी इच्छा हो वहाँ रहो। वे स्थान देखते फिरते थे; नापू साँखला ने इस स्थान को देखा कि वहाँ एक भेड़ ने बच्चे दिये थे, एक बाघ चाहता था कि उनको खा जावे, परंतु भेड़ उस बाघ को निकट न आने देती थी। साँखले ने राव बीका को वह जगह बतलाई, उसने भी पसंद की और वहाँ कोट की नींव डाली गई। नापा और कान्हा शकुन विचारने को गये और जहाँ कोट था वहाँ आये। वहाँ खुडियेरी एक गाँव था। रात को वहाँ सोये। और शकुन तो सब अच्छे हुए। चार घड़ी रात रहे वे सो गये तो सिरहाने की ओर एक भुरट का बूँटा था, जिसके चारों ओर कुंडलाकार पूँछ मुख में पकड़े हुए एक सर्प आ बैठा। प्रभात को जब ये जगे तो नापा ने नाग को देखा और कान्हा को कहा कि इसे छेड़ो मत। ये उसकी लीक देखने लगे कि कहाँ से आया है। देखा कि वह नाग पुराने कोट से आया है, तब नापा कहने लगा कि अंत में कोट वहीं बनेगा कि जहाँ सर्प कुंडली मारकर बैठा है। पुराने कोट के स्थान पर कोट बना, नगर बसा, जिसका नाम बीका-नेर रखा गया। यह खबर केलण भाटी को हुई। उसने शेखा से कहा कि चल। शेखा बोला कि मैं तो चलूँ नहीं। भाटी कलकरण बीकाजी पर कटक कर चढ़ आया। नापे सांखले ने कहा कि मैंने शकुन लिये हैं, अपना राज यहाँ बहुत पीढ़ियों तक स्थिर रहेगा, अपने भाटियों से लड़ेंगे, और हमारी ही फतह होगी। तब

युद्ध किया; राव का साथ तो थोड़ा ही था, परंतु घोड़े पटककर कलकरण को मार लिया और उसकी सारी सेना भाग गई।*

(राव बीका के काका काँधल ने मोहिलों से छापर द्रोणपुर का इलाका छीन लिया था, जिसका बहुत सा वर्णन चौहानों की ख्यात में है। मोहिल बादशाह के पास पुकारने गये और हाँसी के शाही फौजदार के नाम हुक्म हुआ कि यह प्रदेश पीछा मोहिलों के अधिकार में करा दे। फौजदार ने काँधल को वहाँ से निकाल दिया।) तब वह अपने साथियों समेत गाँव सेरड़े में आ रहा, परंतु

* भटनेर, जिसे अब हनुमानगढ़ कहते हैं, बीकानेर की उत्तरी सीमा पर एक प्राचीन दृढ़ किला है। उसका घेरा ५२ बीघे में और जल के ५२ कूप उसमें हैं। कहते हैं कि उसकी नींव चंगेज़खाँ ने डाली थी, परन्तु संभव है कि वह भाटी राजपूतों ही का बनाया हुआ हो। दिल्ली के बादशाह गयासुद्दीन बलबन के समय में (स० १२६०–८६ ई०) भटनेर बादशाह के भतीजे शेर खाँ की जागीर में था, जो वहीं मरा। उसकी कब्र गढ़ में बनी है। बहुत से इतिहासवेत्ता तो सुलतान महमूद ग़ज़नवी के फ़तह किये हुए भाटिया नगर और भटनेर को एक ही बतलाते हैं। अमीर तैमूर ने जब भटनेर पर धावा किया तो वहाँ के राजा कुलचन्द भट्टी ने उससे युद्ध किया था, परन्तु अन्त में हार खाकर कैद हुआ। जैसलमेर की ख्यात में अमीर तैमूर से लड़नेवाला रावल घड़सी माना है। शाहंशाह अकबर ने भटनेर राजा रायसिंह को जागीर में दिया था तब से वह बीकानेर के अधिकार में आया। यद्यपि बीच में कई बार उनके हाथ से निकल भी गया था।

एक जनश्रुति ऐसी भी है कि ठाकुरसी का विवाह जैसलमेर हुआ था और उसे अजीतपुर जागीर में मिला था। वहाँ उसके रहने को मामूली घर था। एक बार भटियाणी स्नान करने को बैठी, आँधी आई और नहाने के सामान में धूल मिल गई, तब उदास होकर वह कहने लगी कि मैं कैसी अभागिनी हूँ कि मेरे पति के यहाँ रहने को अच्छा स्थान तक नहीं। ठाकुरसी ने पत्नी के ये वचन सुने और तेली की सहायता से चाहल राजपूतों से भटनेर लिया।

फौजदार सारंगखाँ का बल बढ़ा हुआ होने से वहाँ भी वह न ठहर सका और अपने गाड़े लेकर राजासर में आकर ठहरा। वहाँ साथ इकट्ठा करके धावे मारने शुरू किये और हिसार के सरहद्दी प्रदेश को उजाड़ दिया। वहाँ से (राजासर से) उठकर साहवे के तलाव में आकर डेरे जमाये। तब सारंगखाँ सेना लेकर कांधल पर चढ़ आया। वह भी युद्ध करने को संमुख हुआ और चलती लड़ाई की। जब फौजदार के सैनिक जन बहुत ही निकट आ पहुँचे तो कांधल ने अपने घोड़े को सरपट दौड़ाया। यह नियम था कि कांधल जब इस तरह घोड़ा दौड़ाता था तब तंग पुस्तंग दुमची और आगबंद टूट जाया करते थे। वैसे ही अब भी टूट गये। उसके पुत्र राजा, सूरा, नींबा, वगैरह साथ में थे। उनको उसने कहा कि शत्रु की सेना को बढ़ने मत दो जितने में तंग पुस्तंग ठीक कर लूँ, परंतु वे उन्हें रोक न सके और अपने साथ को भी छोड़कर आगे बढ़ गये। तब कांधल ने उन्हें कहा कि "जाओ रे कपूतो! मैंने तो तुमको बाघा के भरोसे (यह भी कांधल का पुत्र था, जो बड़ा वीर था, परंतु सारंग से जा मिला था) पीछे को ठहराया था क्योंकि वह पीछे से बढ़ते हुए शत्रु को सदा रोकता था।" फिर कांधल सारंगखाँ से युद्ध कर काम आया। यह खबर राव बीका ने सुनी और सारंग पर चढ़ाई करने को तैयार हुआ, परंतु नापा (नरपाल) साँखले ने कहा कि यह राव जोधा को खबर देकर फिर चढ़ाई करना उचित है। (नापा राव जोधा के पास गया और सारा हाल कहा।) तब जोधा बोला कि कांधल का वैर मैं लूँगा; वह बड़ी सेना सहित चढ़ आया। राव बीका हिरोल में रहा, गाँव झाँसले के पास लड़ाई हुई। सारंगखाँ और उसके बहुत से साथी मारे गये।

राव लूणकर्ण—जब जैसलमेर को फतह कर पीछे फिरे तब साथ के लोगों ने कहा कि "एक वार वीकानेर कोट में पधारो, शुभ शकुनों से पधारे हो।" रावजी बोले—"नहीं जावेंगे।" माने नहीं और दिल्ली की तरफ कूच किया। द्रोणपुर में डेरा हुआ। उस ठौड़ को देखकर कहने लगे कि यह स्थान तो ऐसा है कि यहाँ अपने किसी कुँवर को रक्खूँ। यह बात कल्याणमल उदयकर्णोत वीदावत ने सुनी। उसने सोचा कि यह तो बात बिगड़ी। रावजी तो दिल्ली गये और कल्याणमल ने उद्योग कर पठानों की सेना बुलाई, जिसमें उसका नाना रायमल कछवाहा हिरोल था। दिल्ली में पठान वादशाहत करते थे। उस वक्त सीमाबंदी करते थे। (पठान जहाँ पर वादशाही सीमा नियत करना चाहते थे) उसको रावजी ने नहीं स्वीकारा। कहा नारनौल में सीमा रक्खी जावे, हम नारनौल लेंगे। पठानों से लड़ाई हुई। कल्याणमल ने पहले तो रायसल को कहा कि मैं तुम्हारे पक्ष में हूँ, परंतु पीछे मुकरकर टाल दे दी। रावजी मारे गये और उनका कुँवर प्रतापसिंह भी काम आया। राव जैतसिंह पाट वैठा। वह सेना लेकर रायसल पर चढ़ा। कछवाहों ने अपनी ५ पुत्रियाँ व्याह कर वैर मिटाया। राजा पृथ्वीराज की वेटी कुँवर ठाकुरसिंह को व्याही, रायसल कछवाहे की वेटी रायमल सालदेवोत को और एक कन्या वैरसी लूणकर्णोत को दी और दूसरी महेश प्रतापसिंहोत के साथ व्याही गई।*

---

* राज वीकानेर की तवारीख में लिखा है कि लाला नामी एक चारण ने वीकानेर और जैसलमेर के दर्मियान झगड़ा करा दिया था, इसलिए राव लूणकर्ण ने रावल देवीदास पर चढ़ाई की। उस वक्त तो रावल ने अपनी वेटी राव को व्याहकर सुलह कर ली, परन्तु मन में उसके कसक वनी रही। अवसर पाकर वह सिंध के नवाव को राव पर चढ़ा लाया, गाँव दोसी में लड़ाई हुई, जहाँ सं० १५८३ में राव लूणकर्ण अपने तीन पुत्रों सहित मारा गया।

३—राज किशनगढ़*

राजा किशनसिंह—नरवरगढ़ के कछवाहा आशकरण भीमावत का दोहिता।

राजा भारमल—जैसलमेर के भाटी दयालदास खेतसीहोत का दोहिता।

राजा रूपसिंह—खंडेले के शेखावत हरीराम रायसलोत का दोहिता।

राजा मानसिंह—साँचोर के चहुवाण वल्लू सामंतसिंहोत का दोहिता।

---

* कृष्णगढ़ का राज २६ अंश १७ कला से २६ अंश ५६ कला उत्तर अक्षांश और ७४ अंश ४३ कला से ७५ अंश १३ कला पूर्व देशान्तर के मध्य है। क्षेत्र-फल ८५८ वर्ग मील और आबादी १२५५१६ मनुष्यों की है। यहाँ के रईस जोधपुर के मोटे राजा उदयसिंह के दूसरे पुत्र कृष्णसिंह के वंश में हैं। जोधपुर में पहले दूधोड़ आदि १२ गांव कृष्णसिंह की जागीर में थे और १०) रोज़ नक़द खर्च में जुदा मिलते थे। जोधपुर के दीवान गोविंददास भाटी ने वह तनख्वाह बंद कर दी तब कृष्णसिंह शाहंशाह अकबर के पास चला गया। आईन अकबरी में बादशाही मंसबदारों में कृष्णसिंह का नाम नहीं है; मासि-रुल-उमरा में लिखा है कि फिर्दौस आशियाना (शाहजहाँ) की माँ का सगा भाई होने के बुजुर्ग रिश्ते से बादशाह जहांगीर के समय में शाही दर्बार में कृष्णसिंह की इज्जत और दौलत बढ़ी। (सन् १६०७ ई०=सं० १६६४ वि० के लगभग)। ग्देहोलाव में उस वक्त वड़सिंहोत राजपूत थे और वहाँ का ठाकुर कृष्णसिंह का मौसेरा भाई था। उसको दावत में मदिरा पिलाकर बेहोश बनाया और साथियों सहित मारकर उसका इलाका लिया। सं० १६६६ वि० में अपने नाम पर कृष्णगढ़ बसाकर राजधानी बनाया। सं० १६७२ वि० में अपने बड़े भाई जोधपुर के राजा सूरसिंह के दीवान गोविंददास को मारकर राजा की हवेली पर गया, वहाँ राजा के आदमियों के हाथ से मारा गया। कृष्णसिंह के ४ पुत्र थे—सहसमल्ल, जगमाल, भारमल्ल और हरीसिंह।

राजा राजसिंह—देवलिये के सीसोदिया हरिसिंह जसवंतसिंहोत का दोहिता।

राजा बहादुरसिंह—कामा के राजावत उदयसिंह कीरतसिंहोत का दोहिता।

राजा बिरदसिंह—फतहगढ़ के गौड़ सुखसिंह सूरजमलोत का दोहिता।

राजा प्रतापसिंह—शाहपुरे के राजावत अदोतसिंह उमेदसिंहोत का दोहिता।

पन्द्रहवाँ प्रकरण

बुंदेला*

अथ बुंदेलों की ख्यात वार्ता—राजा वरसिंहदेव (वीरसिंह देव उड़छा का) बुंदेला के इतने गाँव थे, जो बुंदेले शुभकर्ण के नौकर

---

* बुंदेलों का अब तक कोई प्राचीन शिलालेख या दानपत्रादि नहीं मिला, परंतु उनकी रिवायतों, ख्यातों और अबुलफजल आदि इतिहास लेखकों के लेखों से इतना तो स्पष्ट है कि ये प्राचीन उच्च कुल के गाहड़वाल सूर्य्यवंशी राजपुत्र हैं और कन्नौज के अंतिम गाहड़वालवंशी राजा जयचंद की संतान हैं। पीछे से दूसरे राजपूत वंशों के साथ बुंदेलों का वैवाहिक संबंध टूट जाने का कोई निश्चित कारण नहीं मालूम होता। एक ऐसी रिवायत है कि देहली के बादशाह ने गढ़ कुरार (उड़छा के पास) के राजा खंगार (यह नहीं मालूम कि वह खंगार किस वंश का था) को महोबे का शासक नियत किया था। गाहड़वाल वंश का एक राजपूत अर्जुनपाल या सहनपाल खंगार का सेनापति था। मौका पाकर उसने खंगार को मारा और आप महोबे का राजा बन गया। उसने खंगार की बेटी से विवाह कर लिया इसलिए राजपूत जाति से अलग किया गया। हमारी समझ में तो शायद "बुंदेल" शब्द का असली अभिप्राय समझ, या बुंदेलों का मूल पुरुष उच्चकुलो गाहड़वालवंशी किसी राजा का औरस पुत्र न होने के कारण, यह संबंध टूटा हो।

वास्तव में बुंदेला शब्द विंध्येल या विंधेल का अपभ्रंश है। काशी और कन्नौज का राज छूटने पर राजा जयचंद गाहड़वाल की संतान मिर्जापुर जौनपुर आदि के पास विंध्याचल के पहाड़ी इलाकों में राज करती थी, इसी से काल पाकर वह विंधेल प्रसिद्ध हो गई। मिर्जापुर के पास कंतित (कर्णतीर्थ) गाहड़वालों का मुख्य स्थान है। बुंदेलखंड का सारा प्रदेश ही विंध्य पर्वतश्रेणी से घिरा है और आश्चर्य नहीं कि इसी से विंध्येलखंड नाम पड़ा हो, जो प्राकृत बोलचाल में बुंदेलखंड हो गया और वहाँ के निवासी बुंदेले कहलाये।

चक्रसेन ने सं० १७१० वि० में लिखवाये—जवाहर का पर्गना, जिसका गाँव उड़छा जिसमें १७०० गाँव लगते थे, आय रु० ७०००००); भांडेर का पर्गना, गाँव ३६०, उड़छा से कोस १२, रु० ५०००००); पर्गना एलच, गाँव ३६०, उड़छा से कोस १२, आय रु० ७०००००); पर्गना राठ, गाँव ७००, उड़छा से कोस ३०, आय रु० ६०००००); पर्गना खटोला, गाँव १७००, उड़छा से कोस २०, आय रु० ३०००००); पर्गना पवई, गाँव १४००, उड़छा से कोस ४०, आय रु० १५००००); पर्गना पांडवारी, गाँव १४००, उड़छा से कोस २०, आय रु० ७०००००), पर्गना धमाणो, गाँव ९०० उड़छा से कोस ४०, आय ७०००००); पर्गना दमोई, गाँव ३५०, उड़छा से कोस ५०, आय रु० १०००००); पर्गने सीलवनी धामणी चँवरागढ़ के मध्य; गढ़पाहारांद गिराज

मासिरुलउमरा में लिखा है कि बुंदेलों का पहला वतन काशी था। उनका कोई पुरुखा वहाँ खैरागढ़ कटक में आकर ठहरा इसलिए वे खैरवाड़ कहलाये। राजा वीरसिंहदेव बुंदेला से—जिसने अकबर के वज़ीर अबुलफजल को शाहजादे सलीम के इशारे से मारा था—बीस पीढ़ी पहले काशीराज उलकाई में, जिसे अब बुंदेलखंड कहते हैं, पहले पहल आकर ठहरा और वहाँ विंध्यवासिनी देवी की पूजा करने लगा। इसी से वह विंधेला प्रसिद्ध हुआ। पहले बुंदेलों के पास कुछ अधिक मुल्क और दौलत न थी, लूट-खसोट और डकैती से वे अपना निर्वाह करते थे। जब राजा प्रताप ने उड़छा को अपनी राजधानी बनाकर बहुत सा गिरोह इकट्ठा कर लिया और शेरशाह व सलीमशाह सूर से लड़ाइयाँ लीं तभी से उनकी उन्नति होने लगी। प्रताप के पुत्र भारतचंद के निस्संतान मरने पर उसका छोटा भाई मधुकरसाह राज का स्वामी हुआ, जिसने अपनी वीरता, बुद्धिमानी और धोखेबाजी से बहुत सा मुल्क़ दबा लिया और बड़ी नामवरी हासिल की। वह शाहंशाह अकबर के साथ लड़ा भी, परंतु अंत में उसने बादशाही अधीनता स्वीकार कर ली। अजयगढ़ और दतिया बुंदेलों के बड़े राज्य हैं।

का स्थान; चौकीगढ़ गूँडा का; उदयपुर सिरवाज के पास; कछवा, उड़छा से कोस १२; करहरा उड़छा से कोस २०; दिहायला नरवर के पास; खुटहर अरणोद के पास; बढ़ूण, पवउवा उड़छा से कोस २० ग्वालियर के पास; बड़ेछा ग्वालियर के पास; दभोवा उड़छा के पास; कुच आलमपुर के पास; मोहनी गाँव ८४ ईंद्रुखी; गोओद, भदावर के पास; अवाइना, सहरा, लोगरपुर, धांधेड़ा, गाँव १५०० । गूँड का चवरागढ़ जुगराज ने लिया था, जिसके ताल्लुक ५२ गढ़ थे ।

केशवदासकृत कविप्रिया (ग्रंथ) में बुंदेलों की ख्यात ऐसे दी है—ये सूर्यवंशी हैं। इस वंश में श्रीरामचंद्रावतार हुआ, उसके कई पीढ़ियों के पीछे इनका गहरवाल (गाहडवाल) गोत्र प्रसिद्ध हुआ। १ राजा वीरू गहरवाल, २ राजा कर्ण महाराजा हुआ, जिसने बनारस को राजधानी बनाया, ३ राजा अर्जुनपाल ने मोहनी गाँव बसाया, ४ राजा सहजपाल, ५ राजा सहजइंद्र, ६ राजा नानगदेव, ७ राजा पृथ्वीराज, ८ राजा रामसिंह, ९ राजा चंद्र, १० राजा मेदनीपाल, ११ राजा अर्जुनदेव जिसने १८ महादान दिये, १२ राजा प्रतापरुद्र, १३ राजा भारतचंद, जिसके पुत्र न होने से उसका छोटा भाई मधुकरशाह गद्दी पर बैठा। मधुकरशाह ने उड़छा बसाया और उसके ११ पुत्र हुए—दुलहराम पाटवी, संग्रामसाह वतूरसिंह, रत्नसेन, होरलराव, चंद्रजीत, रणजीत, शत्रुजीत, बलवीर, हृदयसिंहदेव, रणधीर, । दूलहराम के पुत्र का बेटा भारतसाह, भारतसाह के पुत्र देवीसिंह और जगतमिश्रण जो महाराजा जसवंतसिंह के पास चाकरी करता था। देवीसाह का किशोरसाह। एक दूसरे स्थान पर (बुंदेलों की) पीढ़ियाँ ऐसे दी हुई हैं—

राजा वीरू
राजा गहनपाल
,, सहजग
,, राम
,, नानगदेव
,, पृथीराज
,, रामसिंह
,, चंद्र
,, मेदनीपाल
,, अर्जुनदेव
,, मलूक
,, प्रतापरुद्र
,, मधुकरशाह
,, वीरसिंहदेव
उदयजीतसिंह
प्रेमसाह
राजा जुगराज
चंद्रमणि
भगवान-दास
नरहर-दास
वेणी-दास
किशन सिंह
भगवंत राय
राजा विक्रमाजीत
राजा तीन हजार सवार
सुजानसिंह
शुभकर्ण महाराजा जसवंतसिंह का नौकर ३१०००) का पटा
शक्तिसिंह
चम्पतराय बड़ा रजपूत जुगराज के मारे जाने के पीछे धरती में बहुत उपद्रव किया
सुजानराय
भीमराय
पहाड़सिंह
शालिवाहन
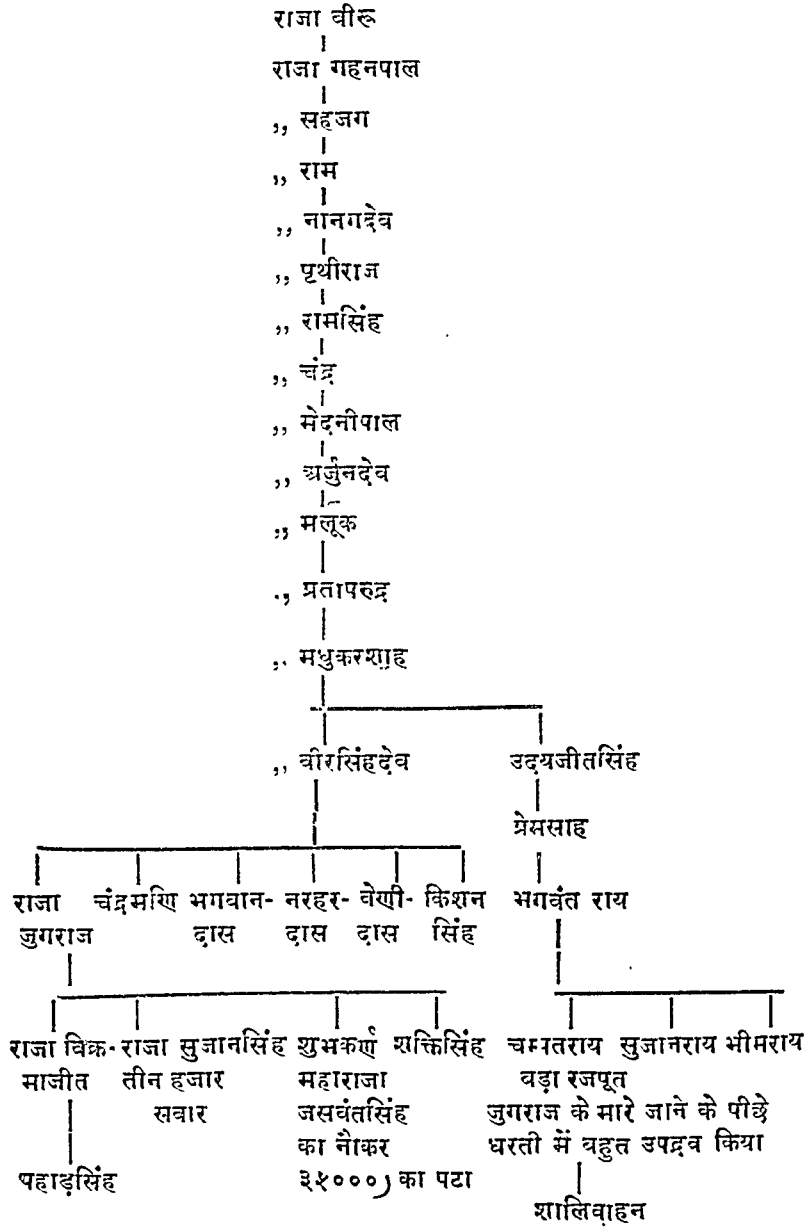
राजा वीरसिंहदेव बड़ा धर्मात्मा और भाग्यवान् हुआ। बादशाह (शाहजादगी में) जहाँगीर के हुक्म से उसने खोजे अबुलफजल को मारा। बादशाह (जहाँगीर) की उस पर बड़ी कृपा रही। मथुरा में श्रीकेशवरायजी का मंदिर बनवाया, बादशाही चाकरी बराबर करता रहा और मरने उपरांत उसका पुत्र जुगराज टाके बैठा। शुरू शुरू में उसका जोर अच्छा बढ़ा, श्रीठाकुरजी को बीच में देकर गूँडा का चवरागढ़ लिया, फिर सं० १६-६६ के कार्तिक में बादशाह से विरस हुआ, बादशाह ने फौज भेजी, खानदौरान अबदुल्लाखाँ सेनानायक और हिन्दू मुसलमान दोनों उसमें थे। बादशाह ग्वालियर में ठहरा, सेना ने देश में दखल किया। जुगराज ने भी थोड़ी सी लड़ाई की, परन्तु अंत में देश छोड़कर भागा और अपने पुत्र विक्रमाजीत सहित मारा गया। बादशाह उड़छा में पधारे और कई दिन तक वीरसमुद्र बड़े तालाब के किनारे ठहरे। फिर सिरवाज होते हुए बुरहानपुर पधार गये और वहाँ से दौलताबाद पहुँचे।

सोलहवाँ प्रकरण

यदुवंशी

जाड़ेचा—(बंदीजन) इनको गीतों में व यश-वर्णन करने में श्यामा (सम्मा) कहते हैं। श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब व प्रद्युम्न बड़े नामी हुए। उनमें से साम्ब के तो सम्मा जाड़ेचा, और प्रद्युम्न के वंशज जैसा भाटो हैं। जाड़ेचों की पीढ़ियाँ—१ गाहरियो, २ ओढो, ३ ढाहर, ४ छाहड़, ५ फूल, ६ लाखा, ७ महर, ८ मोकलसी, ९ खेतसी, १० दल्ला, ११ हम्मीर वड़ा, १२ हम्मीर के पुत्र रायधण और हाला, १३ फूल, १४ अलैदियो, १५ जनागर, १६ लोदी, १७ भीम १८ दल्ला (दूसरा), १९ साहिब, २० राहिब, २१ बड़ा भीम, २२ वड़ा हमीर, २३ अमर, २४ भोजराज, २५ वासा, २६ ओटा, २७ (दूसरा) हमीर, २८ खंगार, २९ भारा, ३० मेघ, ३१ रायधण, ३२ तमाइची।

भुज के स्वामी रायधण की वार्ता—रायधणियों के कच्छ की धरती आई। पहले यहाँ के ठाकुर रायधणी घोघा थे, जिनकी राजधानी लाखड़ी नगर था, जहाँ कर्ण घोघा राज करता था। एक योगी गरीबनाथ धूँधलीमल का शिष्य वड़ा सिद्ध आया और उसने लाखड़ी में अपना आसन जमाया। आश्रम के आसपास उसने २२ आम के पेड़ लगाये, जिनमें काल पाकर फल आया। कर्ण की एक दुहागण राणी थी जिस पर गरीबनाथ की कृपा थी और उसको वह भगिनी कहकर बुलाता था। ज्येष्ठ मास में उस राणी का पुत्र योगी के आसन पर आया था। तब नाथ ने अपने चेले को कहा

कि भानजे के वास्ते थोड़े श्राम तोड़ ला। श्राज्ञानुसार चेले ने वृक्ष पर चढ़ पाँच छः फल तोड़े श्रौर नाथ ने उस बालक को दिये, जिन्हें लेकर वह अपनी माता के पास गया। कर्ण की मानेती राणी के पुत्र ने वे श्राम देखे श्रौर अपनी माता को जाकर कहा कि मुझे भी श्राम मँगा दे। राणी ने अपने पति जाम को कहलाया कि योगी के श्रासन पर श्राम फले हैं से कुँवर को मँगा दे। जाम ने श्राम लेने के वास्ते अपने श्रादमी भेजे श्रौर उन्होंने जाकर गरीबनाथ को कहा कि जाम श्राम मँगवाता है। योगी बोला—श्राम मेरे हैं, हम योगी लोग किसी को श्राम नहीं देते। नौकरों ने कहा, बाबाजी! श्रासन तुम्हारा है परन्तु भूमि तो जाम की है; ऐसा कहते हुए वे तो वृक्ष पर चढ़ गये श्रौर लगे फल तोड़ने। योगी को क्रोध श्राया। एक कुल्हाड़ी उठाकर चाहा कि पेड़ को काटकर गिरादे। इतने में चेला बोल उठा—महाराज! अपने लगाये हुए वृक्षों को क्यों काटते हो? मुद्राधारी हो इनका रूपांतर कर दे! गरीबनाथ के भी यह बात मन में भाई श्रौर कहा "श्राम की इमलियाँ हो जावें!" यह वचन उसके मुख से निकलते ही वे वृक्ष इमली के बन गये जो श्राज तक मौजूद हैं। दूसरे दिन एक शिष्य को श्रासन की ठौर समाधि देकर जाम को यह शाप दिया कि "जैसे तुमने हमारा स्थान छुड़ाया है वैसे ही तुम्हारा भी स्थान छूट जावे!"

लाखड़ो से १२ कोस पर धीणोद है। वहाँ के अजयसर पर्वत पर धुंधलीमल्ल रहता था, गरीबनाथ वहाँ चला गया। फिर दस बारह दिन के पीछे दोनों गुरु चेले पहाड़ पर से उतरते थे, वर्षा ऋतु थी श्रौर (मैदान में) रायधण, हमीर श्रौर उसका पुत्र भीम हल चला रहे थे। भीम ने उन योगियों को देखा श्रौर बोल उठा कि यह तो गरीबनाथ है जिसने समाधि ली थी। सन्मुख जाकर भीम उसके गुरु के

चरणों में गिरा और उसे आग्रह-पूर्वक नीबड़ो में अपने डेरे पर लाया। इतने में घर से भात आया, नाथ के पात्र में परोसा, भोजन करने के लिए विनती की और आप मक्खी उड़ाने लगा। खाते हुए धुंधलीमल ने अपने पात्र में से कुछ खीच लेकर भीम को दिया और कहा खा जा। परंतु भूँठन होने से भीम ने उसे खाना न चाहा और बोला—महाराज! खा लूँगा। नाथ ने दो तीन बार उस खीच को खा जाने के लिए कहा तब भीम ने अपने वास्ते अपनी माता के पास से दूसरा खीच परोसाया और गुरु के दिये हुए प्रसाद को पास रखकर अपनी थाली में का खीच खाने लगा। गुरु ने जान लिया कि मेरा दिया हुआ खीच वह खाना नहीं चाहता तब उसे पीछा अपने पात्र में ले लिया और कहने लगा—"भीम! यह खीच जो तूने खा लिया होता तो अमर हो जाता, परंतु फिर भी इस धरती का राज मैं तुझे देता हूँ।" ऐसा कहकर उसके सिर पर हाथ धरा और आज्ञा दी कि कच्छ का राज्य देता हूँ, परंतु योगियों की सेवा सदा करते रहना जिससे तेरे वंश में दीर्घकाल तक राज बना रहेगा। भीम बोला कि मैं आपकी आज्ञा का पालन करूँगा। योगियों ने कहा कि तू अपनी राजधानी लाखड़ी में रखना और योगियों का आसन धीणोद में। आसन के लिए दस घोड़ियों में से एक घोड़ी, दस भैंसों में से एक भैंस और दस साँड़ों में से एक साँड दिया जाय। हाट प्रति एक वर्ष में दो महमूदी (एक पुराना चाँदी का सिक्का), पुत्र-जन्म और विवाहोत्सव की दो महमूदी, सारे देश से मिलता रहे, और हल प्रति एक सई (धान का एक नाप) धान मिला करे। इतना ठहराकर धुंधलीमल ने गरीबनाथ को दिखलाया और कहा कि जब तक योगियों की सेवा करता रहेगा तब तक तेरी साहिबी प्रतिदिन बढ़ती रहेगी, पर सेवा मिटी और

ठकुराई गई। भीम ने कहा, महाराज! देश के स्वामी तो घोघा हैं, हम इनसे राज्य कैसे लेंगे। योगी ने उत्तर दिया, इनको मेरा शाप हुआ है, इन पर कहीं से अचानक शत्रुसेना आवेगी। जब तुम सुनो कि ये मारे गये तब अपना साथ इकट्ठा करके जा जमना। तुम्हारी पीठ पर हम हैं अतः सहज ही में तुमको राज मिल जावेगा। इतना कहकर गुरु चेला उठे और कहने लगे कि अब हम पहाड़ पर चढ़ते हैं, तुम जहाँ हमारे पाद-चिह्न पर्वत में उघड़े हुए देखो वहाँ पत्थर इकट्ठे कर रखना, जब तुम्हें राज्य मिले तब वहाँ मंदिर बनवाना। फिर बोले कि हमारी बात का तुझे विश्वास न आवेगा, परंतु यदि तेरा पिता आज के पंद्रहवें दिन मर जावे तो जानना कि सब सत्य है। ऐसे वचन कह योगी तो रम गये। भीम का पिता सचमुच पंद्रह ही दिन में मर गया, तब उसको नाथ के वचन पर विश्वास बँध गया। कुछ द्रव्य खर्च कर उसने अपने ५०० भाई-बंधुओं को इकट्ठा किया। इधर घोघों ने मोरवी में नुक़सान किया था इसलिए मोरवी वीरमगाँव के थाणे के तुर्क तीन हज़ार अचानक घोघों पर चढ़ आये। सात सौ आदमियों को खेत रक्खा और दूसरे भाग निकले। तुर्कों के भी बहुत से आदमी मारे गये। लूट न करके तुर्क तो पीछे लौट गये, परंतु जब भीम ने ये समाचार सुने तो तुरंत चढ़ धाया और राज पर अधिकार कर लिया। रावाई का तिलक सिर पर लगाया और कच्छ का स्वामी हो गया। रहे-सहे घोघों ने जब सुना कि भीम ने राज ले लिया है तो वे जुड़कर भीम पर आये, परंतु परास्त होकर पीछे गये। घोघों का एक भाई काठियों में मोरवी के पास जाकर ठहरा, जिसके वंशज मोरवी हलोद्र (हलवद) के बीच में रहते हैं। दूसरा भाई पारकर और सांतलपुर के बीच की भूमि में आया, वहाँ कांथड़नाथ

योगी रहता था। उसने योगी के चरण पकड़े और कहा कि हमको गरीबनाथ का शाप हुआ है जिससे हमारा राज्य गया, अब यदि आपकी कृपा हो जावे ते हम यहाँ टिक सकें। योगी ने उत्तर दिया कि जो मेरी पादुका ऊपर स्थिर करके उसके नीचे तुम कोट बनवाओ ते रहो।! तब घोघों ने वहाँ पादुका बनवाईं और योगी के नाम पर उस स्थान का नाम कांथड़कोट रक्खा जहाँ आज तक वे रहते हैं। तीन सैा गाँवों में उनका अमल है और उस प्रदेश में कांथड़ के अनुयायी योगियों का कर लगता है।*

भीम कच्छ का राजा हुआ, गरीबनाथ को जो वचन उसने दिया था उसका पालन किया और आज तक योगियों की लागतें नियत हैं। गरीबनाथ की पादुका पर धीणोद में मंदिर बनवाया और पास ही गढ़ भी कराया तथा योगियों का आसन बँधवाया। भीम के वंशज अब भुजनगर के राव हैं जिनकी पीढ़ियाँ—१ भीम, २ लाखा, ३ हमीर, ४ राघु, ५ क़ाहिया, ६ अलइया, ७ भोजराज, ८ रायधण, ९ हमीर (दूसरा), १० कंमा, ११ मूलवा, १२ महड़, १३ भीम (दूसरा), १४ हमीर (तीसरा), १५ खंगार, १६ भारा, १७ भोजराज (दूसरा), १८ खंगार (दूसरा)।

गीत कुँवर जेहा (जैसा) भारावत का—

दीयण छात्र वड़गात्र जग वंभेसर, दूसरो अवर दातार नह कोय एहो।
हेक उंनड़ पछै जाम रावल हुवो, जाम रावल पछे हेक जेहो ॥१॥
सिंधपत पखै कुण दिये दत सांमई अवरपत सिघपत विगत अनेक।
सिंधपत समवड़ो हेक हालो समथ, हालारो समवड़ो रायधण हेक ॥२॥

---

* धुंधलीमल योगी की कथा का वर्णन, थोड़े अंतर के साथ, जेठवाराणा नागभाण के समय में भी इसी प्रकार मिलता है।

वाँदणी गोठ आहूर लग सते, सुतन वंभवंस खटतीस सोढो ।
सुतन वंभवंस समभीट जैमालसुत, मालसुत लखणसुत सत्तमो मीढो ॥३॥
लखण दर हाथ निज लेख आहूत लख, धवल हर खहस बावनै टलियो ।
हेतुवां अजेखे खैंग देखे गहर, वड़ो लोहड़ां वड़म आंक वयोलियो ॥४॥

गीत दूसरा

साहिब दूसरो खंगार सवाई, दावो सिर दातारां जेहो ।
कवी दियंतो जंगम हसियो वेचण हारां ॥ १ ॥
भूलो नहीं अंजण माया (में ?) भूम जिण कीरत हितजाणी ।
सोदागर चेहरिया सांमै, मोटेरा मालाणी ॥ २ ॥
दीखाविया सुदिन पर दीपै, रायजादे वड़ राजा ।
भारमलोत तिकेनवदै भड़ है चाड़े जेहाजां ॥ ३ ॥
ओडनड़ लाखा अहिनाणै :
वसुंह-उधारण वारां वोड़ादे वमड़ोह घातिया हेड़ा उहै कारां ॥४॥

वात लाखा की

भद्रेसर से चार कोस किलाकोट में वड़ी ठकुराई हुई। लाखा से कितनी ही पीढ़ियों पीछे हाला और रायधण दो भाई हुए जिनकी संतान हाला और रायधण कहलाती हैं। वे निर्बलता के समय में चोवों के राज्य में मुकाती होकर रहते थे। रायधणियों की अपेक्षा हालों के दस पाँच गाँव विशेष और दस भाइयों की जोड़ भी अधिक थी। जब भीम हमीरोत ने लाखड़ी का राज्य लिया तब हालों ने विचारा कि अब हम किसी दूसरे स्थान में जा रहें तो ठीक है और भद्रावल योगी के नाम पर बसे हुए भाद्रेणसर (भद्रेसर) को खाली देखकर वहाँ जा बसे। वहाँ चोवों ने आकर उनको कहा कि जो तुम हमें सहायता दो तो हम भीम से अपना राज्य पीछा लेकर तुमको दो-तीन सौ गाँव एक ही कोर में देवें। तब

तो हाला उनकी मदद करने को तैयार हो गये। जब भीम ने यह बात सुनी तो हालों को कहलाया कि तुम घोवों के पक्ष में क्यों बँधते हो ? जब तक मैं हूँ तब तक तो राज्य अपने घर ही में है, तुमने जो धरती दबाई है वह तुम्हारी और जो मेरे पास है वह मेरी, इस बात का कौल वचन देता हूँ। हालों के अधिकार में भी भूमि बहुत सी थी और भीम उनका भाई ही था, इसलिए उन दोनों में परस्पर कौल करार हो गये, देवी आसापुरी को बीच में दिया और दोनों ने घोवों को देश से निकाल दिया। रायधणिये राव और हाला जाम कहलाने लगे, आपस में प्रीति बढ़ती गई।

बारह या चौदह पीढ़ी पीछे हालों में जाम लाखा हुआ और रायधणियों में हमीर। एक दिन राव हमीर पचीसेक सवारों के साथ भद्रेसर के पास गाँव से आया था। राव ने विचार किया कि निकट आ गये हैं तो लाखा से मिलते चलें। लाखा के यहाँ गया, उसने भी बड़े आदर-सत्कार से पहुनाई की। लाखा के (पुत्र) रावल के एक जवान कन्या थी। रावल को उसके मामा ने बहकाया कि लाखा की तो अकल मारी गई है; हमीर तुम्हारे घर आया हुआ है उसे मार डालो, इसका पुत्र छोटा ही है सो भी उठ जावेगा, कच्छ का राज्य ईश्वर ने तुमको घर बैठे दिया है। रावल भी लोभ में आ गया। दुपहर के वक्त राव हमीर सोया हुआ था। वहाँ जाकर रावल उसकी पग चंपी करने लगा। राव को निद्रा आ गई, तब खड्ग से उसका सिर काटकर वहाँ से भाग चला। थोड़ी देर में रैाला पड़ा। लाखा को मालूम होने पर वह रावल के पोछे लगा और तीर चलाये। आगे एक काठियों का गाँव था जहाँ रावल एक बाड़ में कूद पड़ा। लाखा ने जाना कि निकल जावेगा, तब पसवाड़े पर तलवार चलाई। हाथ छिछलता पड़ा, गुदड़ी में एक

अंगुल बैठी। (रावल बचकर निकल गया) और काठियों में जा पहुँचा। लाखा लौट आया और हमीर के सवारों सहित भुज गया। अपनी तरफ़ से टीके में घोड़े भेट करके खंगार (हमीर के पुत्र) को गद्दी पर बिठाया। कई दिन तक लाखा वहाँ इस विचार से रहा कि कदाचित् खंगार मुझको मार डाले तो मेरे सिर पर से कलंक टल जावे। खंगार इस बात को भाँप गया और बोला "काकाजी घरे पधारो। जो बात आपके मन में है वह मैं कदापि न करूँगा, मेरा वैर तो रावल ही से है।" लाखा बोला कि "देवी आसापुरी को साखी देकर कहता हूँ कि मैं इस बात में कुछ भी नहीं जानता हूँ।"

अपने जीते-जी लाखा ने फिर रावल को अपने पास न आने दिया। कितनेक दिनों पीछे लाखा थोड़े से साथियों समेत किसी काम को गया हुआ था। वहाँ घोघों ने आकर लाखा को मार डाला और रावल उसके पाट बैठा। राव खंगार भी उस वक्त बीस बाईस वर्ष का हो गया था। उसने अपना राज्य सँभाला और पिता का वैर लेना ठान रावल पर चढ़ा। आठ नौ सहस्र सेना सहित सीप नदी पर आया। इधर से रावल भी सात आठ हज़ार मनुष्यों की भीड़-भाड़ लाया और लड़ाई शुरू हुई। रोज़ दिन दिन को तो युद्ध होवे और रात होते ही दोनों ओर के योद्धा अपने अपने शिविरों को चले जावें और प्रभात को फिर लड़ने लगें। इस तरह लड़ते लड़ते बारह बरस बीत गये। कई बार आसापुरी देवी को बीच में रखकर रावल वचन-बद्ध हुआ परंतु अपने वचन पर स्थिर न रहा इससे उसका बल घटता और राव का बल बढ़ता गया। तब रावल ने अपने अमात्य लाड़क को कहा कि अब और तो कुछ भी उपाय विजय का नहीं रहा है, तुम्हारी अवस्था भी आ गई है, यदि तुम अपनी जान पर खेलकर किसी ढब

से खंगार को मार डालो तो अलबत्ता काम बन सकता है। तेरे पुत्रों की पद-प्रतिष्ठा मैं सदा बढ़ाता रहूँगा। लाड़क ने इस बात को मंजूर किया। दूसरे दिन छल करके रावल और लाड़क परस्पर चड़भड़े और रावल ने उस पर अपना बाँस चलाया। तब क्रोध करके बूढ़ा मंत्री राव खंगार के पास चला गया। चार पाँच दिन पीछे राव के पड़ाव में कहीं आग लगी, राजपूत सब आग बुझाने को गये और राव के पास अकेला लाड़क रह गया। उसके मन में चूक करने का यह अवसर अच्छा जँचा, परंतु हाथ धूजने लगा। राव ने देखकर पूछा कि तेरा हाथ क्यों धूजता है तो कहा कि योंही, वृद्धावस्था के कारण। फिर राव की ओर देखकर पीछे से उस पर खड्ग का प्रहार किया। घाव पीठ पर लगा, परंतु राव ने फुर्ती के साथ मुड़कर घातक की गर्दन पकड़ उसे पृथ्वी पर दे पटका और उसका हाथ मरोड़कर खड्ग हाथ से लिया और उसी से झटका देकर उसका सिर उड़ा दिया। इतने में राव के साथी भी आ पहुँचे, घाव पर मरहम-पट्टी की। उसी रात को कोई मर गया था, जिसका अग्नि-संस्कार किया। यह देख रावल ने जाना कि राव मर गया है, परंतु प्रकट नहीं करते हैं, तब वह अपने दल-बल को सँभाल एकाएक राव की सेना पर टूट पड़ा, घमासान युद्ध हुआ और खूब तलवार चली। दूसरे दिन भी दोपहर तक लड़ाई होती रही। प्रभात से जुटे हुए योद्धा चार घड़ी दिन शेष रहे तक पीछे न हटे, तब राव बोला कि मुझको अपनी शय्या पर से ऊपर उठाओ। लोगों ने उठाकर खड़ा किया। सैनिकों ने देखकर जाना कि राव जीवित है। उनकी हिम्मत बढ़ गई और शत्रु-दल पर निराशा छाई। लड़ाई होते हुए समय भी बहुत हो गया था, अंत में रावल की सेना हटकर अपने पड़ाव को चली गई। रावल ने विजय की आशा छोड़-

कर कहा कि मैंने देवी को बीच में देकर भी अपने वचन को लोपा उसी का यह फल है। देवी मुझसे रूठ गई, अब हमारा निर्वाह इस धरती में नहीं होगा। ऐसा ठान वह वहाँ से चल दिया। तीस पैंतीस कोस के परे सोरठ के प्रदेश में जेठवे राज करते थे। वहाँ से उनको निकालकर उसने साठ-सत्तर कोस के मध्य की भूमि ली और वहीं अपना राज्य स्थापन किया। सं० १५९६ वि० में रावल जाम ने नया नगर बसाया और भद्रेसर राव खंगार ने लिया, जो आज तक भुज के अधिकार में है।

रावल जाम फिर गिरनार (जूनागढ़) के स्वामी चींगसखाँ (चंगेज़ख़ाँ) गोरी से मिला और मैत्री बढ़ाई। उसने कहा कि तू गुजरात के बादशाह से मेल मत कर और मेरा साथी बना रह। जेठवे और काठियों ने इकट्ठे होकर सलाह की कि यह (रावल) अपनी धरती में जबर्दस्ती से आ घुसा है, यदि यह यहाँ जम गया तो हमें अवश्य मारेगा। इसलिए लड़ाई कर उसे निकाल देना चाहिए। दस सहस्र मनुष्यों की सम्मिलित सेना लेकर वे उस पर चढ़ आये। रावल भी अपने छः हजार सवार लेकर सम्मुख हुआ। वरड़ा के परगने में युद्ध हुआ, जिसमें रावल के भाई हरधवल ने एक सहस्र अश्वारोहियों से एकदम शत्रु पर धावा कर दिया और उनके बड़े बड़े सर्दारों को धराशायी किया और अंत में आप भी खेत रहा, परंतु खेत रावल के हाथ रहा। शत्रुदल के सर्दारों में जेठवा भीम, काठी हाजा और वाढेलभाणा सात सौ योद्धाओं समेत काम आये और शेष भाग निकले। जेठवे वहाँ से भागते हुए समुद्र-तट पर छाइये में जा रहे, जहाँ जेठवा खींवा बड़ा राजपूत हुआ। (अब जेठवों का राज्य पोरबंदर में है।)

जेठवे, वाढेले और काठियों के पहले ४५०० गाँव (सोरठ में) थे, उनमें से वाढेलों के १०००; काठियों के—जिनमें आज तक चौथ काठी लेते हैं—२०००; और जेठवों के १५००। रावल जाम लाखावत ने ४००० गाँव दबाकर अपना बड़ा राज्य स्थापित कर लिया। एक बार रावल ने अपने राजपूतों से कहा कि यद्यपि हम लोगों ने एक नया राज्य जमा लिया है तथापि राव खंगार ने हमारी बपौती की भूमि हमसे छीन ली; अतएव अपने राव को एक धक्का देवें। यह ठान, बरसात के दिनों में, जब राव थोड़े से साथ से धीणोद की पहाड़ी पर गया था, तब रावल ने अपना भेदिया भेजा। उसने लौटकर सब वृत्तांत कहा तो रावल ५०० सवार साथ लेकर चढ़ा। राव धीणोद के समीप ही टिका था, उसके पास उस वक्त पचासेक राजपूत थे; शेष सब उसके पुत्र के साथ गये हुए थे, जो अमरकोट ब्याहने को गया था। राव बैठा था; घोड़ी, साँड़, गायें और भैंसें उसके सामने चर रही थीं, दूध मटकियों में गरम हो गया था और पीने की तैयारी हो रही थी। इतने में सनसनाता हुआ एक तीर पास से निकला। तुरंत सोढा नंदा ने राव को कहा कि उठो, शत्रु आ गया है। राव चट से पहाड़ी पर चढ़ गया और पीछे से रावल भी आ पहुँचा। उसने देखा कि राव अभी यहाँ से गया है, अतः वह इधर-उधर ताक लगाने लगा। रावल के साथियों में से रणधीर गाजणिया, जो पहले राव खंगार के पास रहता था, बोला कि यों क्यों देखते हो, साँढ़ियाँ घेर लो। खंगार आये बिना रहेगा नहीं। तब मुड़कर साँढ़े घेरीं और धीरे धीरे चलने लगे। रावल बार बार पीछे फिरकर निहारता था कि अब तक खंगार आया नहीं। इधर खंगार ५० सवार साथ ले चढ़ा। कितने ही साथियों ने मना भी किया, कि आपका साथ (सैनिक) थोड़ा है,

खंगार ने उत्तर दिया कि "न करे श्रीठाकुर जी, रावल तो साँढ़े ले जावें और मैं बैठा देखा करूँ।" पहाड़ों को लाँघकर उपरवाड़े के मार्ग से सोलह कोस आगे रावल के सम्मुख गया। रावल के साथी रणधीर ने एक वृक्ष पर चढ़कर देखा कि खंगार आता है या नहीं तो आगे भीड़भाड़ देख पड़ी। रावल से कहा कि यह खंगार ही है। रावल ने भी देखा और कहा कि हमको तो वे घोड़े ही से आदमी दीख पड़ते हैं, परन्तु खंगार सीधा मुझ पर आवेगा, इस-लिए आप बीच में रहा और अपने २५० योद्धाओं को बाँईं ओर और २५० को दाहिनी ओर पंक्तिबद्ध खड़े रक्खे और कहा कि जब शत्रु हमारे बीच में आ जावे तब एक एक बर्छा सब फेंकना। इस तरह पाँच सौ भालों के लगने से हम उसे मार लेंगे। प्रतिद्वंद्वियों में से खंगार के भाई साहब और पितृयाई (पितृव्य) फूल ने कहा कि हम खंगार को मरता हुआ देखना नहीं चाहते अतएव आओ पहले अपने ही सर मिटें। इनको आतुर देखकर खंगार बोला कि इतनी उतावली क्यों करते हो? तुम समझते होगे कि हम मर छूटें। ऐसा कह अपने पचासों पूर्ण शस्त्रबंद सवारों का गोल बाँधकर उसने घोड़ों की वागें उठाईं। रावल के सैनिक जो दोरुखे खड़े थे, उनमें से कितनेक ही अपने बर्छे चला सके, शेष को अवसर ही न मिला, कि ये तो आकर जुट गये और लगे तलवार बजाने। रावल के प्रधान को खंगार ने मार लिया और दूसरे भी कई योद्धाओं को खेत रक्खा। रावल की फौज भागी तब तो रावल ने भिड़ भिड़कर तीन वार अपने घोड़े को शत्रु-दल में पटका, साहब पर झटका किया, वह उसके टोप पर लगकर टल गया। साथी तो बहुत से छोड़ भागे, परंतु रावल अपने घोड़े को पटकता रहा। तब खंगार ने अपने योद्धाओं से कहा कि रावल को मत मारो! और

उसके साथी राजपूतों को ललकारा कि "अपने बाप को ले क्यों नहीं जाते हो!" सोढा नंदा ने रावल के एक बूड़ो (बर्छे का बाँस) लगाई, तब किसी ने कहा—"भूला नहीं हूँ, साँड़ को आँकना (दागना) कहा है, मारना नहीं।" रावल ने फूल पर बर्छी चलाई और वह भेवड़े में लगकर टूट गई। तब तो राजपूत यह कहकर रावल पर ले निकले कि "अभी तुम्हारे दिन अच्छे नहीं हैं।" पचीस आदमी रावल के मारे गये और चार-पाँच खंगार के। घायलों को डोलियों में डालकर रावल पीछा फिर गया। उसके साथ वालों में से जो बर्छा न चला सके थे उन्होंने अपने अपने बर्छे के बाँस तोड़कर फलों को घोड़ों के तोबड़ों में रख दिया। रावल को यह मालूम हो गया, तब उसने घोड़ों को धान चढ़वाने के बहाने से सबके तोबड़े मँगवाये, तो उनमें से १२० बर्छियों के फल पूरे निकले। रावल बोला कि इन लोगों को यही दंड है कि आगे को इनकी घोड़ियों के बछेरियाँ होवें उनको तो ये रक्खें और जो बछेरे हों वे सर्कार में दिया करें। उन राजपूतों की संतान से आज तक बछेरे ले लिये जाते हैं। तदुपरांत फिर रावल ने खंगार से छेड़-छाड़ न की। नये नगर में रावल का प्रताप बहुत बढ़ा, उसने बड़े बड़े दान किये, बावन हज़ार घोड़े याचकों को दिये, ईसर बारहट को कोड़ पसाव दिया। (बारहट) बीछू (बीठू) के कहे हुए दोहे—

> ओ खांगों अवियाट, तुरकां ही नूं तेवड़ै,
>
> झाला ही नूं झाट, हाला ही नूं हेकड़ै।"
>
> खंगड़ै किया खड़ाक, सी लोगा सुरताण सूं,
>
> मीराँ मीलक नूं मार छोइयाँ उतरी छाक।"*

---

* हिन्द राजस्थान में लिखा है कि हमीर ने दग़ा से राव लाखा को मार डाला। लाखा के ४ पुत्र—जाम रावल, हरधवल, रावजी और मोड़ा थे।

पीढ़ियाँ (नये नगर के जाम की)—जाम लाखा, रावल, वीभा, सत्ता, अज्जा (जेसा) लाखा (द्वितीय); रणमल । सत्ता जाम हुआ, परंतु पीछे रायसिंह ने राज्य ले लिया। नये नगर से कोस तीन की दूरी पर रायसिंह लाखावत कुतुबख़ाँ से लड़कर काम आया। जाम तमाइची, वंभणीया, जस्सा लाखा का—एक बार तो कुतुबख़ाँ ने छल से जस्सा को मारकर सत्ता रिणमलोत को नये नगर की गद्दी पर वैठा दिया, परंतु रायसिंह के पुत्र तमाइची ने राज पीछा उससे छीन लिया। गीत लाखा अज्जावत का—

"निस दिह न थाकै क्यूंही नांखतो असगज कनक सुनग अतर।"
"सिर तो साख साँच कही सामंद्र लाखैरी किसड़ी लहर।"
"द्वारमती रहते दीठा, मिलै महल चक्री दीठा मेल।"
"वधै घणुं तोही वेलावल, वीभाहर ज्यूं नाखै वेल।"
"है.हाटक हाथी नग है कै, संखता दिसि सीपनी सहि।"
"अम्ह दिस नांखल हर अजावत इसड़ी नांखी जे उबहि।"

उन्होंने हमीर को मारकर बाप का वैर लिया और उसके राज पर अधिकार किया। हमीर के पुत्रों ने अपनी बहन कमरवा का विवाह सुलतान महमूद बेगड़ा के साथ कर उसकी सहायता से कच्छ का राज पीछा जाम रावल से लिया। रावल अपने तीनों भाइयों समेत, परास्त होकर, सोरठ में आया और राणपुर के जेठवा खीमजी का इलाक़ा दबाया और देहातमान्वी के पर्गने भी खोस लिये। सं० १५९६ में नयानगर बसाकर उसे अपनी राजधानी बनाया।

सत्रहवाँ प्रकरण

जाड़ेचा फूल धवलोत की बात

भुजनगर से ८ तथा ९ कोस दक्षिण, समुद्र से ५ कोस कोला-कोट नाम की वस्ती थी, जो अभी उजड़ी हुई है, कोट और घरों के खंड-हर अब तक मौजूद हैं। वहाँ फूल राज करता था। कितनेक वर्षों तक वृष्टि अच्छी होने से वहाँ बहुत सुकाल हुआ और बनियों के घरों में अन्न के ढेर लग गये, इसलिए उनको बहुत नुक़सान उठाना पड़ा (क्योंकि अनाज बिकता नहीं था)। बनियों ने मेंह बँधवाने की नियत से किसी बर्तिये (मंत्रवादी) को कहा। (पहले जब दुष्काल होता तो भोले लोग ऐसा समझते थे कि किसी ने मंत्र-बल से मेंह को बाँध दिया है, आज तक अज्ञानी प्रजा में ऐसे विचार पाये जाते हैं।) बर्तिये ने कहा कि एक हरिण मँगवाओ। जब वे हरिण लाये तो एक पत्र पर यंत्र लिखकर उसके सींग में बाँधकर उस हरिण को दो एक कोस पर एक पहाड़ी में छोड़ दिया, तब बनियों से कहा कि मेंह बाँध दिया है*, जब यह कागज भीगेगा तभी मेह बरसेगा नहीं

---

* ऐसी ही मेंह बाँधने की एक कहानी रासमाला (भाग प्रथम) में वाला (काठियों की एक शाखा) ऐभल के वास्ते लिखी है। अंतर इतना ही है कि ऐभल ने जब वह चिट्ठी मृग के सींग पर से खोलकर पानी में डुबोई तो मूसलधार मेंह बरसने लगा, जिसकी मार से ऐभल के साथी तो मर गये और वह अचेत अवस्था में किसी गाँव में पहुँचा जहाँ सब स्त्रियाँ ही थीं, पुरुष दुष्काल टालने को मालवे गये हुए थे। साँई नेहड़ी नाम की एक चारण की स्त्री उसको घोड़े पर से उतार अपने घर में ले गई। उसने आलिंगन देने व सेंकने-तपाने का प्रयोग तीन दिन तक जारी

तो वृष्टि होने की नहीं। उस वर्ष कोलाकोट के चार हज़ार गाँवों में एक बूँद भी पानी न बरसा। वनियों का धान सब बिक गया।

रक्खा। ऐभल सावधान हुआ और नेहड़ी से कहा कि इस सेवा के बदले कुछ माँग। सुंदरी ने उत्तर दिया कि समय पड़ने पर माँग लूँगी। ऐभल अपने गांव तलाजे में आया। कितनेक दिन पीछे चारणी का पति घर आया तब किसी ने उससे कह दिया कि तेरी अनुपस्थिति में तेरी स्त्री ने किसी अजनबी पुरुष को तीन दिन तक घर में रक्खा था। यह सुनते ही गढ़वी (चारण) मारे क्रोध के जल उठा और लगा स्त्री को ताड़ना करने। नेहड़ी ने अकुला-कर सूर्यनारायण से प्रार्थना की कि यदि मैं कलंकिनी होऊँ तो मुझे कोढ़ी बना, नहीं तो अकारण मुझे दुख पहुँचानेवाला कुष्ठी होवे! गढ़वी को कोढ़ का रोग हो गया, तब नेहड़ी उसकी सेवा शुश्रूषा करने लगी और अंत में उसे लेकर ऐभल के पास पहुँची। उसने भी बड़े आदर के साथ उसका आतिथ्य-सत्कार किया और पूछा कि क्या चाहती है। बोली कि मेरा पति कुष्ट रोग से पीड़ित है, यदि एक बत्तीस लक्षणोंवाले मनुष्य के रुधिर से उसको स्नान कराया जावे तो रोग मिटे। ऐभल ने कहा कि ऐसा पुरुष कहाँ मिले? कहा तेरा पुत्र आणा इन लक्षणों का है। यह सुनते ही ऐभल शोक-सागर में डूब गया और मलिन मुख किये अन्तःपुर में गया। अपनी ठकुराणी को सारी हकीकत कही और बोला कि चारणी को मैंने वचन दिया था तदनुसार अब वह पुत्र के प्राण हरण करना चाहती है। यह सुनकर आणा बोल उठा कि पिताजी! विलंब न कीजिए, इससे आपकी अमर कीर्ति हो जावेगी। ऐसे ही ठकुराणी ने भी पुत्र के प्रस्ताव को स्वीकारा और कहने लगी कि "लोग कहेंगे कि ऐसा पुत्र-रत्न ऐसी ही माता की कोख से उत्पन्न हो सकता है।" यह सुनते ही ऐभल बेटे का मस्तक काटकर ले आया और उसमें से झरते हुए रुधिर से चारण को नहलाया। कोढ़ मिट गया और चारणी ने योगमाया के प्रताप से आणा को पीछा जिला दिया। ऐभल का गीत मामड़िये चारण का कहा हुआ—

"प्रथम मेह बांधियो कोढ़ टालियो पछै, वालो सतवादिया जेठवाही।"
" तखतभूपां सिर शिरोमण तलाजू, गादियां शिरोमण वलै आही।"
"क्रोड़ परणाय तल दीह एकै कन्या, भयंकर भांज तल शेर भैभो।"
" शाप उतार तल नेहड़ी सांइये, अणा रो घाप तल शीस ऐभो।"

बनिये और वर्तिया उस हरिण को प्रायः देखा करते थे। इस तरह तीन-चार वर्ष तक वर्षा न हुई, घोर दुर्भिक्ष रहा और बिना अन्न के प्रजा मरने लगी। उड़ती उड़ती यह बात फूल के कान तक पहुँची कि बनियों ने वर्तिये से मेंह बँधवाया है। उसने उनको बुलाकर पूछा कि सत्य कहो क्या बात है। उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि बात सही है। तब फूल ने पूछा कि वह हरिण जीवित है या मर गया? कहा जीवित है। कहाँ है? इस सामने की पहाड़ी में और हमारे मनुष्य दूसरे-तीसरे दिन जाकर उसको देख भी आते हैं। फूल तत्काल चढ़ा और उन आदमियों को साथ लेकर एक हज़ार सवारों सहित पहाड़ पर जाकर उसका घेरा दिया। हरिण दृष्टि आया तो उसके पीछे घोड़े छोड़े। वर्तिया बोला कि मैंने ५ वर्ष के लिए मेंह को बाँधा है सो अभी हरिण के सींग में से यंत्र निकालना उचित नहीं। फूल ने उसको तो यही उत्तर दिया कि ठीक, पर आप उसके पीछे लगा चला गया। ५० तथा ६० कोस पर बरड़ेसर के पहाड़ पर जाता उसको मारा और सींग में से यंत्र निकालकर पानी में गला दिया। यंत्र का जल में डूबना था कि नभ-मण्डल में बादल घिर आये और लगा मूसलधार मेंह बरसने। फूल पीछा फिरा, उसके साथी सब विवश हो पीछे रह गये और मेंह में पिटता हुआ फूल भी अचेत हो गया, उसका घोड़ा उसे खेरड़ी गाँव में ले पहुँचा। वहाँ जमला नाम का अहीर रहता था। किसी स्त्री ने फूल की यह दशा देखकर अहीर को खबर दी कि कोई राजपुत्र बहुत से आभूषण पहने हुए बेसुध घोड़े पर पड़ा हुआ है। जमला ने आकर देखा तो पहचाना कि यह

"पोतरो सूर रो सूर जेरो पिता, मोज मेहराणहिं दवाण माजा।"
"बसारा ऊवसण ऊवसण बसावण, रांकरो मालवो धर्मराजा।"

तो फूल और हमारा परम शत्रु है। यदि यह मर गया तो जाड़ेचे मात्र हमारे वैरी हो जावेंगे। गाँव के बड़े-बूढ़े सब इकट्ठे हुए। फूल को बहुत सा सेंका तपाया परन्तु उसको चेत न आया। तब वैद्य को बुलाया। उसने उसकी दशा देखकर कहा कि इसके बचने का तो केवल एक ही उपाय है कि कोई युवती कुमारी इसको अपनी छाती से लगाकर सोवे तो उसके अंग-स्पर्श की ताप से यह होश में आवे। जैसले अहीर ने अपनी बड़ी कुमारी बेटी से कहा कि तू इसको छाती से लगाकर इसके साथ सो जा, परन्तु कन्या ने कहा कि पर-पुरुष के साथ ऐसे सोने में मुझे दोष लगता है, मैं तो कदापि इसको न स्वीकार करूँगी। कन्या के पिता ने इस विषय में बहुत आग्रह किया तब वह बोली कि जो मेरा विवाह इसके साथ कर दो तो मैं सो सकती हूँ। यह मृतप्राय तो हो ही रहा है, जो मेरा भाग्य बलवान् होगा तो जी उठेगा। पिता ने उसी अवस्था में फूल के साथ कन्या के फेरे कर दिये और उसे उसके साथ सुलाया। दोपहर से वह कुमारी फूल को छाती से भिड़ाये आधी रात तक वैसे ही सोती रही तब फूल को चेत आया। उसने आँखें खोलीं और उस स्त्री की ओर देखकर पूछा कि तू कौन है और यह क्या मामला है? तब उसने विस्तारपूर्वक सब कथा कह सुनाई कि इस तरह से तुम अचेत दशा में मेरे पिता के गाँव खेरड़ी में आये थे, उसने तुमको पहिचाना और कहा कि यह तो फूल है, कदाचित् यह मर गया तो पहले ही तो इसके साथ अनबन है और फिर विशेष हो जावेगी, लोग कहेंगे कि जैसला ने उसकी सेवा-शुश्रूषा नहीं की, जिससे फूल मर गया। जब बहुत प्रयत्न करने पर भी तुम होश में न आये तब वैद्य ने कहा कि कोई षोड़शी कुमारिका चार प्रहर तक इसको अपनी छाती से भिड़ाये रक्खे तो यह जीवित रह सकता है अन्यथा नहीं। पिता ने

मुझे आज्ञा की, मैंने कहा कि जो मेरा विवाह इसके साथ कर दो तो मैं यह काम कर सकती हूँ नहीं तो दोष की भागी नहीं होऊँगी। आगे जैसा भाग्य में लिखा होगा वही होगा। मेरा विवाह किया और मैं तुमको अपने हृदय से लगाकर सोती हूँ, परमात्मा ने खैर की, आपकी आयु शेष थी और मुझे यश आना था, इससे आप सचेत हो गये। यह वृत्तान्त सुनकर फूल बहुत प्रसन्न हुआ और शेष रात्रि रस-रंग में विताई। उसी रात्रि को उसके गर्भ रह गया प्रभात होते ही फूल अश्वारूढ़ होकर जाने लगा तव जैसला की बेटी बोली कि मैं आपसे गर्भवती हुई हूँ, आप तो चले जायँगे और कल लोग मुझे कलंकित करेंगे, अतएव आप कोई निशानी देते जाइए। फूल ने अपने पहनने की मुद्रिका उतारकर दे दी और एक लिखत भी कर दिया। दो दिन फिर ठहरकर पीछे केलाकोट को प्रस्थान किया। अपनी पहली पटराणी धवा से भी वह बहुत प्यार रखता था सो घर पहुँचकर अहीर-कन्या को भूल गया। अवधि पूर्ण होने पर उसके पेट से लाखा ने जन्म लिया। अपने नाना के घर में वह पलता रहा, आठ-दस वर्ष का हुआ तव एक दिन अपनी माता से पूछने लगा कि हम लोग कौन हैं, और मेरा पिता कौन है? माता बोली, बेटा तू इस धरती के धनी फूल का पुत्र है। लाखा ने कहा तो फिर हम यहाँ क्यों रहते हैं वहाँ क्यों नहीं चलते? तब उसकी माता ने सारा वृत्तान्त कह सुनाया। लाखा बोला—मुझे पिता की दी हुई निशानियाँ दे, मैं उनके पास जाऊँगा। माता ने वह लिखत और मुद्रिका दे दी। उनको लेकर लाखा केलाकोट पहुँचा, पिता से मिला, उसकी दी हुई वस्तु उसे दिखलाई तब फूल ने हर्षपूर्वक लाखा को अपने पास रक्खा। लाखा तो अवतारिक पुरुष था। बालक होने पर भी

बुद्धि-बल से राजा का सब काम वही करने लगा। फूल के दूसरा कोई पुत्र तो था नहीं इसलिए सब दार-मदार लाखा ही पर था। फूल प्रायः बांग बलोचों की तरफ थाणे में रहा करता और लाखा केलाकोट में काम चलाता था। वह रूप और गुण का भी भंडार था। उसका रूप देखकर राणी धण का मनोभाव विकार को प्राप्त हुआ। एक बार राणी ने उसको अपने महल में बुलाकर अपनी दुष्ट वासना को उस पर प्रकट किया। लाखा ने उत्तर दिया कि तू तो मेरी माता है, मुझसे यह वचन कैसे कहती है? मुझसे ऐसा कुकर्म कदापि नहीं होगा। राणी ने क्रोध में आकर कहा कि मैं फूल को लिखकर तुझे देश से निकलवा दूँगी। लाखा ने निवेदन किया कि जो तेरी इच्छा हो सो कर, परंतु मुझसे ऐसी आशा मत रख। राणी ने पत्र लिखा और एक साँड़नी-सवार के हाथ वह पत्र फूल के पास भेजा। कोई आवश्यक काम के होने पर ही साँड़नी सवार आया करता था, इसलिए फूल ने उसे आता देखकर यह आधा दोहा कहा—"कच्छ करीरै छंडियो कु देसड़ो कु सुत्त।" उसके उत्तर में कासिद ने कहा—"लाखो फूल महलियाँ खिण देवर खिण पुत्त।" धण ने यह समाचार कहलाये हैं। सुनते ही फूल को क्रोध आया। उसने अपने सर्दारों को लिखा कि मैंने लाखा को देश-निकाला दिया है सो उसे वहाँ से निकाल देना! जब यह बात लाखा पर विदित की गई तो वह बोला कि मेरे पिता की चतुर्थ अवस्था (बुढ़ापा) है और तुम मुझे निकालते हो अतएव यह याद रखना कि जो किसी ने आकर मुझको ये शब्द कहे कि "फूल मर गया" तो मैं उसकी जीभ कटवा डालूँगा। इतना कहकर लाखा अपने मामा के पास खेरड़ो चला गया। कुछ समय बीतने पर फूल की मृत्यु हुई और रानी धण उसके साथ चिता पर

चढ़कर जल मरी, परन्तु लाखा को यह समाचार पहुँचावे कौन। बिना राजा के देश शून्य, तब सबने मिलकर यह निश्चय किया कि कोई ऐसा यत्न करना चाहिए जिससे लाखा आवे, परन्तु जीभ कटाने के भय से उसको जाकर कहे कौन? अंत में सबकी यही सम्मति हुई कि डाही डोमनी को भेजो, वह जाकर उसको कहेगी। तदनुसार डाही भेजी गई। उसको देखकर लाखा ने पीठ फेर ली और उसे लाख पसाव दिया। डोमनी वीणा (रबाब) बजाती थी। तंत्र को सँभालकर उसने यह दोहा गा सुनाया—

"फूल सुगंधी वाड़िया आटी देख सिचाण।
तो बिन सूनी सिंधड़ी वल लाखा महराण॥"

यह सुनते ही लाखा मुड़कर सम्मुख हो बैठा और बोला—"क्या फूल मर गया?" डोमनी ने कहा कि ये शब्द तो आप ही के मुख से निकलते हैं। लाखा ने कहा तो मेरी जीभ कटाना चाहिए, क्योंकि मेरी यही प्रतिज्ञा थी। पाँच भले आदमियों ने समझा-बुझाकर एक सुवर्ण की जिह्वा बनवाई और उसे सात बार काटकर प्रतिज्ञा पूर्ण की। डाही को लाखा ने पान का बीड़ा दिया। उसने उसे सीस पर चढ़ाकर सादर ग्रहण किया। लाखा ने पूछा कि इसका क्या कारण? डोमनी ने अर्ज़ की—

"लख लाखा ट्रह जाय, जो दीजै मुख बांकड़ै।
पान कुटक्कै रहि करै जो जीयै सो भाय॥"

अर्थात् पहले तो आपने पीठ फेरकर लाख दिया, वह किस काम का और यह बीड़ा जो सम्मुख होकर बख़्शा सो लाख से भी बढ़कर है। फिर केराकोट आकर लाखा राजगद्दी पर बैठा।

लाखा का पिता फूल बंगा के थाणे में रहता था सो लाखा ने भी वहीं रहना ठाना। जब पयान करने लगा तो उसकी प्रिया

सोढी राणी ने कहा कि "प्रीतम! आपके दर्शन बिना मेरा मन यहाँ नहीं लगेगा सो मुझे भी साथ ले चलिए।" लाखा ने समझाया कि वहाँ तुम्हारा काम नहीं, वहाँ तो आठ पहर दौड़-धूप लगी रहती है। सोढी ने अर्ज़ की "तो आपके ओढ़ने का एक पछेवड़ा मुझे बख़्शिए, मैं हर घड़ी उसके ही दर्शन कर यहाँ बैठी रहूँगी, और इस मनमोलिये नामी डोम को यहाँ छोड़ जाइए, जो महल के नीचे खड़ा होकर प्रतिदिन आपका यश मुझे सुनाया करेगा जिसके श्रवण करने ही से मैं अपने मन को बहलाऊँगी।" लाखा ने कहा बहुत अच्छा। अब वह तो बांगोर बिलोचों के थाणे चल दिया, जहाँ उसको रहते हुए पाँच-सात महीने हो गये, पीछे से पावस ऋतु आई, मेंह की झड़ लगी, बिजली की चमक हुई, बादल गरजे। उस वक्त आधी रात के समय में राणी सोढी झरोखे में आन बैठी, उसके मन में कामाग्नि धधकी, नीचे डोम बैठा अलाप रहा था, उसको ऊपर बुलाया और उससे लपटकर पलंग पर जा सोई। लाखा के पछेवड़े को नीचे बिछा दोनों रति-रंग मनाने लगे। फिर तो परस्पर प्रीति की गाँठ घुल गई।

एक दिन अर्ध रात्रि को लाखा जागा और लघुशंका के वास्ते डेरे से बाहर आया, ऊपर आकाश की ओर आँख उठाकर देखा और यह दोहा कहा—

"किरती माथै ढल गई, हिरणी गई उलत्थ।
सुवै निचीती गोरड़ो, वर माथै दे हत्थ॥"

लाखा के साथ एक बरसेड़ा मावल नामी राजपूत था। उसने वह दोहा सुना, बोला—राजने जो दोहा कहा वह इस तरह पर है—

"हिरणी माथे ढल गई, किरती गई उलत्थ।
नारी नरां सनाहियां, पड़े झड़ो फल हत्थ॥"

मावल और लाखा के मध्य रात्रि को ऐसी बातचीत हुई। प्रभात को लाखा ने मावल से कहा कि एक बार मैं कोलाकोट जाकर घर की सुधि लेना चाहता हूँ। उसने कहा—जो इच्छा। तुरंत सहाणी को बुलाकर पूछा कि कोई ऐसा अश्व घुड़साल में है जो संध्या तक कोलाकोट पहुँचा दे। उसने उत्तर दिया कि हैं तो बहुतेरे, परंतु उनकी ऐसी परीक्षा कभी की नहीं है। तब कहा कि ऊँट ला! ऊँट चढ़ लाखा चला। कोलाकोट दस ग्यारह कोस रहा होगा कि लाखा ने उस ऊँट पर छड़ी चलाई, जिसकी चोट से करहा (ऊँट) बलबलाया। सोढी ने सोते हुए ही वह शब्द सुना और कहने लगी—"झीणो करह कलकियो, रीणो मंझकरांह, फूलाणी का बेटियो, उमाहड़ो घरांह।" डोम को कहा कि लाखाजी आये, मैं उनकी बोली सुनती हूँ। डोम बोला वंगा यहाँ से सौ कोस दूर हैं, वह अभी कहाँ से आ सकते हैं? इतना कहकर दोनों पीछे सो रहे। रात्रि एक प्रहर के लगभग गई थी तब लाखा आ पहुँचा और उतरकर सीधा सोढ़ी के महल में गया। वहाँ क्या देखता है कि सनबोलिया के साथ गलबाहीं किये सोढी सोती है। यह देखते ही उल्टे पाँव फिरकर लाखा दूसरी राणी के महल में जा सोया। पीछे से ये दोनों जागे। कहने लगे कि ठाकुर आये और उन्होंने अपनी दशा देख ली, तब डोम वहाँ से उठकर नीचे चला गया। प्रभात होते ही लाखा गोख में आन विराजा। डोम को बुलाया और कहा अरे मैंने तुझको सोढी दी और साथ ही सोढी को भी कहला दिया कि मैंने तुझे डोम के हवाले किया है। तू जो कुछ ले सके लेकर अभी निकल जा! डोम ने यह दोहा कहा—

"चोर भलां ही धन हरै, सतपुरसां घर जार।
दीठा दोसज पर हरै, लाखा सो दातार॥"

डोम तो सोढी को लेकर चला गया, फिर कई मास पीछे लाखा पाटण नगर में ब्याहने को आया। वहाँ वह डोम भी माँगने को गया था, सोढी साथ में थी। लाखा ने डोम को देखकर पूछा कि सोढी प्रसन्न तो है ? "जी कुशलता है।" सोढी ने भी लाखा का दीदार किया और उसका वह रूप और रंगत देखकर मन में बड़ा पश्चात्ताप करने लगी और अन्न जल का त्याग कर दिया। यही प्रण लिया कि लाखा अपने हाथ से शूले (कबाब) बनाकर खिलावे तो खाना नहीं तो निराहार ही रहना। यह खबर लाखा को मिली। उसने चार सीख बनवाकर भेजी। उन्हें देखकर वह बोली कि ये शूलें तो लाखाजी की बनाई हुई नहीं हैं। तब तो लाखा ने अपने हाथ से तैयार कर वस्त्र से ढक शूलें उसके पास भेजीं। उस सीख को देखते ही सोढी ने पहचान लिया कि वह लाखा ही की बनाई हुई है और उसको हाथ में लेते ही सोढी के प्राण मुक्त हो गये। दास ने पीछा जाकर लाखा को कहा कि महाराज ! सोढी मर गई। उसने अपने चार राजपूतों को भेजा, और उन्हें कहा कि कुछ अगर-चंदन ले जाकर सोढी के शव को भस्म कर आओ।

अठारहवाँ प्रकरण

बात जाम ऊनड़ की

जाम ऊनड़ ने रोहड़िया कवि सांवल सुध को आठ कोड़ पसाव दिया जिसकी वार्ता यह है—

सांवल सुध कविराज लाखा फूलाणी के पास रहता था। लाखा बड़ा दातार था। एक बार जाम ऊनड़ (सिंध के स्वामी) के मन में समाई कि किसी महापात्र को बड़ा दान देना चाहिए। तब उसने (अपनी राजधानी) सामाई में सांवल को बुलाया और उसका बड़ा आदर-सत्कार किया। तीन या चार बार सांवल ऊनड़ के मुजरे को गया। जाम कहता है कि "जस करो।" तब सांवल लाखा के वखान करता, वह ऊनड़ के मन में भाते नहीं। चौथे दिन जब कवि दर्बार में आया तब फिर वही बात कही कि "कुछ जस करो।" चारण ने कहा कि मैं लाखा का जस पढ़ता हूँ, वह आपको तो सुहाता नहीं परंतु लाखा के जैसा दातार और कौन है? ऊनड़ ने पूछा कि लाखा कैसा दानी है? वह तो सुवर्ण का पुतला बाँटता है अर्थात् मृतक को घर में रखता है, जिससे सूतक लगता है; यदि बड़ा दानी है तो सारे सुवर्ण पुरुष को एक साथ ही क्यों नहीं किसी को दे देता? सांवल बोला कि आप तो आऊठकोड़ बम्भणवार के स्वामी हैं, लाखा के पास इतना देश कहाँ है, वह तो सत तोलता है। यदि आप दातार हैं तो अपना सारा राज्य किसी को क्यों नहीं दे देते? ऊनड़ ने चारण की इस बात को दिल में रखकर अपने प्रधान को आज्ञा दी कि हम अमुक स्थान को अपने राजलोक

सहित यात्रा करने जावेंगे सो तैयारी करो। उसने सब प्रवन्ध कर दिया। तदुपरान्त शुभ मुहूर्त दिखा जाम ने अपने सब सर्दारों को बुलाकर दर्बार भरा और सांवल सुत कविराज को डेरे से बुला अपने सिंहासन पर बिठा दिया और आऊठ लक्ष सामई का महा-पसाव देकर आप गाड़े जुतवाकर समुद्र के वेट (द्वीप) कराडा में चला गया। गीत जाम ऊनड़ का—

"कोट दियण कीधो करणीगर, भण दातार कवीचैसाग।"
"आउठ लाख तणो छत्र ऊनड़ तो विण कियहि न दीधो त्याग।"
"सौ लाखांलग दान समपियो, वांसै घातेहतणां वखाण।"
"तो जिम गह तखत वड़ त्यागी, सुकवि किही न किया सुरताण।"
"सवा कोड़ लख आगै सुयणै पात्र भणावै महापसाव।"
"लोभाऊदियो लाखावत, सिंधतणो छत्र सामा राव।"

इस तरह आऊठ कोड़ सामई दान में देकर जाम ऊनड़ समुद्र के पास वेट में जा रहा और वहाँ ५०० गाँवों पर अपना अधिकार जमाया, परंतु इनमें उसकी साहवी का निर्वाह नहीं होता था। पास ही ३०० गाँव हुर्मुज़ के पट्टे के आ गये थे, बीच में थोड़ा सा जल था। इन्होंने विचारा कि यह (ऊनड़) निकट आया है सो मार-कर धरती ले लेगा और ऊनड़ भी इसी विचार में था, परंतु वे तो पहले ही से भयभीत हो अपना धन-माल नौकाओं पर लादकर हुर्मुज़ को चले गये और गाँव ऊनड़ के हाथ आये। इसके अति-रिक्त कुण्डले गुलाई के पर्गने के सुमरों के ७०० गाँव समुद्र पास के छीन लिये और सिंध के निकट उसका महाराज्य हो गया। भुज की तरफ़ जलमार्ग से नौका द्वारा जाने में तीन-चार दिन लगते थे। कुण्ड और गुलाई के पर्गने राव हमीर खंगारोत ने ऊनड़ के पास से लेकर भुज में मिला लिये। फिर अकवर वादशाह ने जाम को

मुसलमान बनाया सो अब तुर्क ही हैं। बड़े दातार हैं, कोई भी चारण चारण आवे तो उसको पाँच महमूदी (चाँदी का सिक्का) दी जाती हैं। अब तक बड़ी साहबी है और आठ नौ हजार मनुष्यों का थोक है। सिंध के निकट गाँव के लोग उनको नियत कर देते हैं, राव खेंगार और रावल जाम का युद्ध हुआ, जिसका गीत ईसर बारहट ने कहा—

"परानाँख पडिहार, पिंड पचंग छोड़े परा, परापुड़ ऊपडे वेढ प्राभ्की।"
"राहिवे हर प्रवल हर धवल राहिवो मांभिये वाजिया आयमांभी।"

रावल ने नया नगर लिया तब हाजा ने हरधवल (रावल के भाई) को मारा था, फिर जाते हुए हाजा को हरधवल के पुत्र जस्सा ने पीछा कर पकड़ा और उसे मारकर बाप का वैर लिया।

जाम सत्ता और अमीखान आज़मखाँ से जो युद्ध हुआ उसकी वार्ता—जब अकबर बादशाह ने आज़मखाँ को गुजरात की सूबेदारी पर भेजा उस वक्त गिरनार में अमीखान गोरी राज करता था। जाम सत्ता का उसके साथ मेल था। आज़मखाँ ने जाम को मिलाना चाहा। जाम तो उसकी बातों में न आया और उसके प्रधान जैसा ने उनमें विरस करा दिया। फिर इधर से नवाब ने चढ़ाई की और उधर से जाम ने। आज़मखाँ की सेना १२०००, काठियों की ४०००, भालाओं की ४०००, जेठवों की ४०००, वाढेलों की ५०००, राव पंचायण की ५००० सेना थी। दस हज़ार सवारों से नया नगर से १२ कोस धवलहर में आ उतरा। पहले तो बहुत सी कहा-सुनी हुई, परंतु जाम ने एक न सुनी, दोनों सेनाएँ मुक़ाबले पर आ जमीं। अमीख़ान का एक चाकर काठीला हामा था, जिसके साथ जाम ने पहले कुछ बुरा बर्ताव किया था वह और अमीख़ान की सेना तो युद्ध किये बिना ही मुड़ गई और दूसरा साथ भी फिरा।

जाम का प्रधान जैसा और कुँवर अज्जा बड़ी वीरता के साथ काम आये, भाई भतीजे भी मारे गये, भांजे अपने ६७ सैनिकों समेत खेत पड़े और जाम के १८०० योद्धा धराशायी हुए। आज़मखां के भी ७०० मनुष्य मारे गये, परंतु खेत आज़म के हाथ रहा। फिर उसने नयानगर जा लूटा। अंत में जाम ने संधि कर ली, घोड़े ५ नज़र किये और घोड़े १० सालो साल देने ठहराये। अब तो ६० घोड़े जाम प्रतिवर्ष देता है। गीत जाम सत्ता के—

"परीराख पतसाह बल बांह अहमद पुरा,
अभंग लखधीर इम कियो आगै।"
"सतो मांगे नहीं धीर साहण समंद,
मीर जामीर लूं बाथ माँगै।"
"असी खंगार नद मुदाफर ऊगरै,
हुआ अलगा विनै भ्हाटकै हाथ।"
"साह राखै सरह बीजा सरस,
सूर मांगै सतो बाथ समराथ।"
"आदि लगी सरण साधार लाखाहि में,
भलो सत साल इम भला भावां।"
"मांगी पतसाह मां मांगू जुध मीरजां,
आव मैदान मैदान मैदान आवां।"
"पैसंता लार लाख दल पैठां,
ढाल वालियां लोथां ढेर।"
"निग्रह फौज फाड़ नीसरतै,
सतै घातिया पाखर खेर।"
"सता तणो वढ लोप न सकियो,
लोपी नहीं लोहची लीह।"

''पेईंडर घररां पाडंतै,
दरै गरा पड़िया तिण दीह ।''
''सता वीसदीकंवण संसारै,
सदीस कंवण वदै संग्राम ।''
''पंचहज़ारी किता पाड़िया,
किता हज़ारी आया काम ।''
''त्रिकुट अनै हथणापुर तीजो,
वड़ा खुहलण एकण घाय ।''
''इण निसपति असपति सूं वड़ो,
रिण कालियो जु कांळी राय ।''

गीत आला ब्रह्मा ने कहा---

''नवल पाज गजराज, सकवंध अकवर तणां,
दहाचिया मीर हालै रंढालै ।''
''तत्ते आफालिया अलर खुरसाण सूं,
काछ पंचाल सोराठा कालै ।''
''फारसी पारसी सिंधु दीसाइयां,
गडडिया सोर नीसांण गुड़िया ।''
''ग्रोतरा पाछमां लाखदल आवटै,
जाम सूं कावली थाट जुड़िया ।''
''ढहै ढीचाल रत खाल खलकै धरा,
जुड़े धड़ पड़ै भड़दड़ जडालै ।''
''सतावित अवर कुण साहसूं समवड़ै,
पाधरे पैज मैदान पालै ।''
''जाम भींकियो आजीज सोलेहवों,
इसो को हुवो भाराथ आगै ।''

"किये खल खट दलां काछ कालंदरां,
वीररो वलै सरधोर वागै।"*

* सन् १५७३ ई० (सं० १६३० वि०) में गुजरात के सुलतान मुज़फ्फर शाह तीसरे से अकबर पादशाह ने गुजरात ली। मुज़फ्फ़र राजपीपले की तरफ़ भागा। सन् १५७७ में पादशाही सूबेदार शहाबुद्दीन अहमद ने जूनागढ़ के अमीनखाँ पर चढ़ाई की, जाम सत्ता उसकी सहायता पर गया और दोनों ने मिलकर शहाबुद्दीन को परास्त किया। इस सहायता के बदले अमीनखाँ ने जोधपुर चूर और भोंद के परगने जाम को दिये। मुज़फ्फरशाह गुजराती राजपीपले से नयानगर आया और जाम से सहायता चाही। तिस पर मुगल सूबेदार अजीज़ कोका ने नयानगर आ घेरा, जाम अपने दूसरे पुत्र जस्सा को लेकर मुक़ाबले पर गया। घरोल के पास युद्ध हुआ, अमीनखाँ का बेटा दौलतखाँ और काठी हासा खुमाण जाम की सहायता को आये, भयंकर युद्ध हुआ। अंत में दौलतखाँ और काठी सर्दार जाम का साथ छोड़कर चले गये, इससे जाम की सेना हटी और वह भी राजधानी में भाग आया। जब पाटवी पुत्र अज्जा ने पिता का रणखेत से भागना सुना तो जोश में आकर युद्धस्थल को गया और काम आया। जस्सा ने जब देखा कि मैं अकेला शत्रु से बाज़ी नहीं ले जा सकता, तब नगर को भागा। जाम ने अपने कुटुम्ब को डोंगियों में चढ़कर रवाना कर दिया और आप पहाड़ों में छिप रहा। मुसलमानों ने नगर लिया।

भाणजी जेठवा की राणी कछुनबा ने मेर और रेबारियों की सेना एकत्रित कर इस अवसर को हाथ से न जाने दिया और राणपुर तक अपना इलाका पीछा नयानगर के अधिकार से निकाल लिया। छन्या को राजधानी बनाकर अपने पुत्र खीमजी को गद्दी पर बिठा दिया।

अंत में जाम ने बादशाह से संधि कर खिराज देना स्वीकारा। ४६ वर्ष राज करके सं० १६६५ में जाम सत्ता ने संसार से कूच किया। (हिंद राजस्थान)

मैं यहाँ जाड़ेचों का थोड़ा सा प्राचीन हाल पाठकों के सम्मुख धरता हूँ। हिंद राजस्थान की गुजराती पुस्तक में तो उसकी उत्पत्ति के विषय में ऐसा लेख है कि "श्रीकृष्ण के पुत्र सांब ने मिसर देश के राजा बाणासुर के प्रधान कौभांड

की कन्या से विवाह किया। उससे उण्णीक पैदा हुआ और उसे अपने नाना का राज्य मिला। उण्णीक से अठहत्तरवीं पीढ़ी में देवेंद्र के एक पुत्र नरपत ने ग़ज़नी के बादशाह फ़ीरोज़शाह को मारकर वहाँ का राज लिया और जाम पदवी धारण की"। जाम शब्द के लिए विद्वानों ने भिन्न भिन्न कल्पनाएँ की हैं, परंतु आश्चर्य नहीं कि यह मरु भाषा का शब्द हो, जिसका अर्थ पिता का है और इसी का स्त्रीलिंगवाची जामण शब्द माता के वास्ते बोला जाता है।

जाड़ेचों में दो मुख्य शाखें हैं। सम्मा और सूमरा। सम्मा या सामेजा एक प्राचीन जाति है, वे तो अपने को श्रीकृष्ण के पुत्र सांब के वंशज बतलाते हैं; कोई उन्हें नूह के पुत्र साम की संतान ठहराते, और कोई साम को सोम का अपभ्रंश मानकर उन्हें चंद्रवंशी कहते हैं। सिंध की पुरानी तवारीख़ तुहफ़तुलकिराम में लिखा है कि लाखा फूलाणी के पोते और ऊनड़ के बेटे का नाम लाखा था, उसके एक पुत्र सम्मा के वंशज सम्मा कहलाये और सम्मा के पौत्र व रायधन के पुत्र सम्मा की संतान समिजा प्रसिद्ध हुई। सिंध के दूसरे पुराने इतिहासों में लिखा है, कि सम्मा और सूमरा अपने को हिंदू कहते हैं, गोमांस नहीं खाते, परंतु भैंसा खाते हैं। बांबे गैज़ेटियर जिल्द ५ पृष्ठ ६५ में लिखा है कि जाड़ेचों के रीति-रिवाज मुसलमानों से मिलते थे। सन् १८१८ ई० तक वे मुसलमानों का बनाया खाना खाते, जो चीज़ शरह के मुवाफ़िक़ हलाल हो उसको काम में लाते, क़ुरान की शपथ करते और मुसलमानों को अपनी बेटियाँ भी ब्याहते थे। अब हिंदुओं की रीति-भाँति पर चलने लगे हैं। अब तो जाड़ेचों के संबंध प्रतिष्ठित राजपूत कुलों में होते हैं। यह भी एक कल्पना है कि सिकंदर आज़म ने जिस सांबस पर चढ़ाई की, वह सम्मा जाति का था और राजधानी उनकी सिंडिमन थी। कर्टिअस उसको साबस लिखता है, प्रोफेसर विलसन् उसे संस्कृत का सिंधुमान बतलाते हैं और कोई उसे सहवास भी कहते हैं। जनरल कनिंघम का अनुमान है कि सिंधुवन का सिंडिमन हो गया है। कहते हैं कि सम्मा लोगों ने मकली के पहाड़ पर सामूई का गढ़ बनाया और तगूराबाद का नगर बसाया। संभव है कि सन् ईसवी की नवीं शताब्दी के लगभग ये लोग कच्छ की तरफ़ आये और चावड़ों से यह भूमि ली हो।

सूमरा अपने एक पुरुषा सूमरा के नाम से प्रसिद्ध हुए। उनका राज पहले सिंध में था। तारीख़ मासूमी का कर्ता लिखता है कि जब अब्दुर्रशीद सुलतान मसऊद ग़ज़नवी (सन् १०४६–५१ ई०) भोग-विलास में रत हुआ तो राज-काज ठीक न चलने से प्रजा बिगड़ बैठी। उसने सूमरा नामी एक आदमी को सिंध का हाकिम बनाया था, जिसने साद ज़मींदार की बेटी से विवाह किया और उसके पेट से भूणगर पैदा हुआ। सूमरों की राजधानी महम्मद तूर नामी नगर था। सं० १४०८ वि० से कुछ पूर्व तक सूमरा सिंध के स्वामी रहे फिर सुलतान अलाउद्दीन ख़िलजी के सेनापति अलग़ख़ाँ ने दूधा सूमरा को पराजित किया, वह भागकर कच्छ की तरफ़ आया, मुसलमानों ने भी पीछा किया। कच्छ के राव इवरा सम्मा ने सूमरों को सहायता देकर मुसलमानों से लड़ाई ली, परंतु मारा गया।

सं० १५०० के लगभग सम्मा सिंध के स्वामी हुए और नगर ठट्टे में राजधानी स्थापित की। उस वक्त वे मुसलमान हो गये थे। जाम ऊनड़ बावनिया के राजसमय में देहली के सुलतान फ़ीरोज़शाह तुग़लक ने सिंध पर चढ़ाई की, परंतु बहुत हानि उठाकर दो बार सुल्तान को हट जाना पड़ा; तीसरी बार विजय प्राप्त हुई। सं० १५७७ वि० तक सम्मा सिंध के राजा रहे पीछे बेगलार आईन ख़ान्दान के शाह हुसैन ने उनसे राज छीन लिया।

सुलतान शम्सुद्दीन अलतिमश या ग़ोरीशाह के ग़ुलाम कबाचा के सिंध फ़तह करने पर दूसरे सम्मा भी कच्छ की ओर आये। मोड़ के पुत्र साद से फूल पैदा हुआ, जिसका बेटा प्रसिद्ध लाखा फूलानी था जिसने कन्या-वध का नियम चलाया। लाखा ने काठियों को निकालकर केराकोट में अपनी राजधानी बनाई। लाखा के पुत्र पूरा के निस्संतान मरने पर उसकी रानी सिंध के सम्मा ख़ानदान में से जाम जाड़ा के बेटे लाखा को गोद लाई, जिसके वंशज जाड़ेचा कहलाये।

सम्मा सामेजा और सूमरों में से भिन्न भिन्न पुरुषों के नाम से कई शाखाएँ चलीं। जाम सम्मा के वंशज अपने को सम्मा या सामेजा कहते, जो जाड़ेचों से बहुत पहले कच्छ में आकर बसे थे। केर, मनाई के वंश में हैं। ऊनड़ से, जो मनाई का भाई था, चौथी पीढ़ी में जाम जाड़ा का बेटा लाखा हुआ जिसके

वंशज ढांग कहलाये। उनमें बड़ी शाखाएँ अबड़ा, आमर, बाराच, भोजदे, बुट्टा हेदा, गाहड़, गज्जन, होठी, जाड़ा, जेसर, काया, कारेट, मोड़ व पायड़ आदि हैं। राव लाखा के बेटे रायधन के पुत्र गज्जन के दूसरे बेटे हाला ने कच्छ का दक्षिण-पश्चिमी भाग लिया और हाला शाखा का मूल-पुरुष हुआ। जाम रावल ने सारे कच्छ पर अधिकार कर लिया था, परंतु राव खंगार ने उसे निकाल दिया और उसने काठियावाड़ में जेठवों का बहुतसा इलाका दबा कर नया राज स्थापित किया, वह प्रदेश अब हालार नाम से प्रसिद्ध है। जाड़ेचों में तीन शाखाएँ हैं—सायब, रायब और खंगार।

उन्नीसवाँ प्रकरण

सरवहिया यादव

सरवहिया पहले गिरनार के स्वामी थे। राव मंडलीक बड़ा रजपूत हुआ। वह बीस हज़ार सवारों का अधिपति था और उसके छोटे भाई का नाम जैसा था। कहते हैं कि राव मंडलीक नित्य एक नया तालाब बनवाता, गंगाजल से नहाता और गंगाजल का ही पान करता था। चारण रक्खा सुरताणिया उसका प्रोलपात बार-हट था, जिसकी स्त्री नागही चारणी देवी का अवतार थी। नागही के पुत्र खूंट का विवाह एक पद्मिनी स्त्री के साथ हुआ था। उसका पुत्र नागार्जुन अहमदाबाद के बादशाह महमूद बेगड़ा को याचने के लिये गया। बादशाह ने उसे लाभ और लक्ष्मी नाम की दो घोड़ियाँ दीं। नागार्जुन उनको अपने घर लाया, जहाँ उनके ऊँचासरा और अमोलक नाम के दो बछेरे उत्पन्न हुए। ये दोनों बड़े बड़े अश्व हो गये। राव मंडलीक ने उनकी प्रशंसा सुनी और चारण के पास से वे घोड़े मँगाये, परंतु चारण ने दिये नहीं, तब राव स्वयं उन घोड़ों को माँगने के लिये चारण के घर आया, तो भी चारण नट ही गया। कितनेक दिन पीछे राव का एक नाई नागही के गाँव गया हुआ था। उसके पास से नागही ने अपनी पुत्रवधू पद्मिनी के नाखून कटवाये थे। नाई ने पद्मिनी का बखान राव मंडलीक के पास जाकर किया। उसके रूप की प्रशंसा सुनकर राव इतना लुभाया कि उसे देखने के लिये नागही के गाँव जाने की तैयारी की। राव की राणी सीसो-दणी ने पति को बहुत समझाया और मना किया, परंतु राव ने उसकी बात न सुनी—

दोहा—"चारण बड़ो खूंटियो, चक्रवत जेहै चात्र।
वालो बल्ल वीसल धणी, मोदल रावो राव॥"

मंडलीक चारणी के घर आया। उसने भी अपनी छोटी सी कोठी में से सोरठ की सारी सेना को सीधा-सामान दिया। तब राव के चाकरों ने नागही के देवी सी होने की बात राव को सुनाई। उसने मानी नहीं और अपनी हठ पकड़े रहा। फिर जिस वट वृक्ष के नीचे राव बैठा था उस पर से रुधिर की वर्षा हुई तो भी वह न समझा और नागही को जाकर कहा कि अपनी पुत्रवधू को मुझे दिखला। चारणी भी शृंगार कराके वहू को सामने ले आई। वह देवरूपी थी, उसके पग पृथ्वी पर नहीं लगते थे। राव ने उसका हाथ पकड़ना चाहा, तब तो क्रोध में आकर देवी ने शाप दिया कि "तेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है अत: तेरा गढ़ छूटेगा और वह मैं तुर्कों को दूँगी। तू तुर्कों की सेवा करेगा, बड़ा कष्ट उठावेगा और धूल चाटता फिरेगा।" ऐसा शाप सुनकर राव के चेहरे का रंग फीका हो गया, पीछा मलिन मुख अपने घर आया। पद्मिनी भी केदार में जा गली और देवी (उसकी सास) बादशाह महमूद बेगड़ा के पास पहुँची और उससे कहा कि मैंने तुझे गढ़ गिरनार दिया। बादशाह ने कहा कि मुझे तेरी बात का विश्वास कैसे आवे? देवी बोली कि तू जब प्रभात को सोता उठे उस वक्त तेरी पाग में से रंगीन चावल निकलें तो मेरी बात को सत्य जानना। प्रभात को चावल निकले। बादशाह ने चढ़ाई कर गढ़ गिरनार जा घेरा। मंडलीक पागल सा बन गया। गढ़ की कुञ्जियाँ उसने बादशाह के हाथ दीं और आप नीचे उतर आया। बादशाह ने राव को मुसलमान बनाया, गोमांस खिलाया और तुर्कों के साथ भोजन कराया। राव के एक हज़ार राजपूत शत्रु से लड़कर खेत पड़े। गढ़ विजय कर पठानों

का थाना बिठाया और बादशाह पीछा राजधानी को आया। तत्पश्चात् शाह बेगड़ा तो शीघ्र ही मर गया, गिरनार के थानेवाले पठानों ने महमूद के बेटे की बंदगी से सिर फेरा और सोरठ पर अपना अधिकार जमा लिया। महमूद के पीछे गुजरात के सुल्तानों में ऐसा ज़बरदस्त कोई न हुआ। चार-पाँच पीढ़ी तक तो सोरठ पठानों के हाथ में रही, फिर सं० १६२९ कार्तिक सुदी १५ को अकबर बादशाह ने गुजरात लिया; और उससे दस या १५ वर्ष उपरांत नवाब आज़मख़ाँ वहाँ की सूबेदारी पर आया। उस वक्त गिरनार का स्वामी अमीरख़ान[1] था और जाम सत्ता के साथ उसकी मैत्री थी। आज़मख़ाँ ने गिरनार और नयानगर पर चढ़ाई की, युद्ध हुआ, जाम सत्ता व अमीरख़ाँ दोनों परास्त हुए। तब जाम ने भी उसका साथ छोड़ दिया और वह भागकर गिरनार आया। आज़मख़ाँ ने गढ़ को आ घेरा। तीन वर्ष तक विग्रह चलता रहा और इसी अर्से में अमीरख़ान गढ़ रोहा में मर गया और उसका पुत्र टीके बैठा। उसने अपने प्रधान से बिगाड़ कर लिया तब प्रधान व राजपूत उससे विलग होकर आज़मख़ाँ से जा मिले और गढ़ आज़मख़ाँ के हाथ आया। राव मंडलीक के चाकरों में ये राजपूत अच्छे थे—अपर डोडिया, चावडा और चाँपा वाला[2]।

---

(१) अमीख़ाँ (असली नाम अमीरख़ाँ) तातारख़ाँ गोरी का पुत्र था, जिसे गुजरात के सुल्तान मुज़फ्फ़रशाह ने जूनागढ़ (गिरनार) का राज्य राव खंगार छठे से लेकर सं० १६४२ के आसपास जागीर में दिया था।

(२) मुँहणोत नैणसी गिरनार के यादवों को सरवहिया लिखता है, जो चूड़ासमा की एक शाखा है और चूड़ासमा यादवों को भड़ोंच के स्वामी बतलाता है, जो पीछे धंधूके में आलिये थे। जूनागढ़ गिरनार पर पहले चूड़ासमा यादवों का राज्य था और राव मंडलीक इसी वंश में हुआ। चूड़ासमा नाम पड़ने के लिये कई भिन्न भिन्न दंत-कथाएँ हैं, परंतु संभव तो

सरवहिया जैसा की वात—राव मंडलीक पागल हुआ, तब उसके छोटे भाई जैसा ने देशोद्धार का भार अपने सिर पर लिया। देश के सारे राजपूतों को साथ लेकर पर्वतों में जा रहा और देश में

यह हैं कि इस वंश का प्रथम राजा रा गारिय सम्मा जाति का था और उसके दादा का नाम चूड़चंद्र था अतः चूड़ के वंशज सम्मा चूड़ासमा कहलाये।

जूनागढ़ गिरनार के यादव राजाओं को प्रवंध-चिंतामणि के कर्त्ता मेरुतुंग ने अहीर (आभीर) लिखा है जो ग्राहरिपु के वंश के थे। वे फिर अहीर राजा भी कहलाते थे। चूड़ासमा की तीन मुख्य शाखाएँ हैं, जो काठियावाड़ के इस विभाग पर अब तक अधिकार रखती हैं, जिसको इन्होंने पहले-पहल लिया था। सरवहिया, रैजदास और वज। सरवहिया शत्रुंजय नदी के किनारे ऊँडसरवैया और वालाक में, रैजदास, जूनागढ़ के राजा मंडलीक के वंश के समुद्र किनारे चोरवाड़ में थोड़े से हैं; वज जीपर पहाड़ और समुद्र के बीच के प्रदेश में रहते हैं।

चूड़ासमा राजाओं की वंशावली

(जूनागढ़ के दीवान अमरजी रणछोड़जी की तवारीख़ से)

रा दयाल (द्यास) चूड़ाचंद्र के पौत्र रा गारिया से तीसरी पीढ़ी में हुआ...

रा नवघण—	सं० ८६४ एक अहीर ने पाला था।
,, खंगार—	,, ६१६ अणहिलवाड़े के राजा ने मारा।
,, मूलराज—	,, ६५२
,, जंखरा—	,, ६८२
,, नवघण दूसरा	,, १००६
,, मंडलीक—जब सुलतान महमूद ग़ज़नवी ने सोमनाथ पर चढ़ाई की तब मंडलीक गुजरात के सोलंकी राजा भीमदेव प्रथम के साथ सुलतान से लड़ा था—	,, १०४७

बड़ा बिगाड़ करने लगा। गढ़ गिरनार में (गुजरात के) बादशाह का बड़ा थाना था और दूसरे भी कई थाने स्थल स्थल पर नियत कर रक्खे थे तथापि उपद्रव न मिटा। बादशाह (महमूद बेगड़ा) ने कई उपाय किये। राहु की तरह पीछे पड़ रहा था तो भी जैसा हाथ नहीं आता था। उस वक्त किसी ने बादशाह को कहा कि चारण

रा हमीरदेव— सं० १०६५
,, विजयपाल— ,, ११०८
,, नवघण तीसरा— ,, ११६२ सिद्धराज जयसिंह ने मारा।
,, मंडलीक दूसरा— ,, ११८४
,, आलणसी— ,, ११६५
,, धनेश— ,, १२०६
,, नवघण चौथा— ,, १२१४
,, खंगार दूसरा— ,, १२२४
,, मंडलीक तीसरा— ,, १२७० गिरनार पर नेमिनाथ का मंदिर बनवाया।
,, महीपाल या कैंवाट— ,, १३०२
,, खंगार तीसरा— ,, १३३६ सोमनाथ के मंदिर की मरम्मत कराई।
,, जयसिंहदेव— ,, १३६०
,, मुगत या मोकलसिंह—,, १४०२
,, मधुपत— ,, १४१२
,, मंडलीक चौथा— ,, १४२१
,, मेलग (मंडलीक का भाई) १४५६
,, जयसिंह देव— ,, १४६८
,, खंगार चौथा— ,, १४८६
सुल्तान अहमदशाह गुजराती ने जूनागढ़ लूटा
,, मंडलीक पांचवां— ,, १४८६
सुलतान महमूद बेगड़ा ने सं० १५२८ में गिरनार लिया

वीरधवल लामड़िया, जो बादशाही राज में रहता है, जैसा का बड़ा कृपापात्र है। वह बड़ा कवीश्वर है और उसके कथन को सरवहिया मानता है। यदि उसके कुटुंब कबीलों को कैद किया जावे और उसको कहा जावे कि जो तू जैसा को लावे तो ये बंदी छूट सकते हैं तो वह जहाँ आप चाहेंगे वहाँ जैसा को ले आवेगा। बादशाह ने चारण के सब परिवार को कैद करा लिया। चारण बादशाह के

रा भूपत सं० १५२६
,, खंगार पाँचवाँ— ,, १५६०
,, नवघण— ,, १५८१
,, श्रीसिंह— ,, १६०८
,, खंगार छठा— ,, १६४२

सुलतान मुज़फ्फ़रशाह गुजराती ने तातारख़ाँ ग़ोरी के बेटे अमीरख़ाँ को जूनागढ़ जागीर में दिया।

(इस वंश के शिलालेखों में दी हुई नामावली)

मंडलीक (अमरजी की वंशावली का मंडलीक तीसरा)
नवघण
महीपाल
खंगार
जयसिंह
मुक्तसिंह या मोकलसिंह सं० १४४५ में विद्यमान था।
मंडलीक दूसरा
मेलिग
जयसिंह सं० १४७३ में विद्यमान था।
महीपाल
मंडलीक तीसरा—इसका विवाह मेवाड़ के महाराणा कुम्भा की पुत्री रमाबाई के साथ हुआ था।

पास पहुँचा, बहुत सा धन देने को कहा, परंतु उसकी अर्ज़ क़बूल न हुई। उत्तर मिला कि चाहे तू कितना ही धन दे, परंतु द्रव्य से तेरा कुटुंब नहीं छूट सकता, वे तो तभी छोड़े जावेंगे जब तू सरवहिया जैसा को यहाँ लावेगा। चारण ने बहुत सा उज्र किया परंतु बादशाह ने एक न सुनी, यही टेक पकड़ी कि एक बार जैसा को आँखों दिखला दे। लाचार चारण जैसा के पास गया और उसको सारी हकीकत सुनाई। जैसा बोला भली बात है, यदि मेरे चलने से तुम्हारा कुटुंब छूटता हो तो मैं तैयार हूँ। एक बड़े अश्व पर आरूढ़ हो वह चारण के साथ हो लिया और अहमदाबाद की एक बाड़ी में आ उतरा। चारण को कहा कि तू जाकर बादशाह को खबर दे! बादशाह ऐसे समाचार सुनकर हर्षित हुआ, और नक़ीब द्वारा अपनी सेना को एकत्रित करा स्वयं चढ़ा और बाड़ी को जा घेरा। साथवालों को आज्ञा दी कि सब सावधान रहें, जिसकी अनी में होकर जैसा निकल जावेगा वह मारा जावेगा। चारण वीरधवल को कहा कि बाड़ी में जाकर जैसा को बाहर ला। चारण गया, देखता क्या है कि सरवहिया सुख की नींद में सो रहा है तब चारण ने यह दोहा पढ़ा—

"सूतो नींद निसांण, सुणै नहीं सुरताणरा।
जैसा थयो अजाण, कैफूटा कनवाट उत॥"

सरवहिया जागा, आँखें छाँटीं, घोड़े का तंग कसकर ऊपर सवार हुआ और बाग़ के बीच में आ खड़ा हुआ। चारण ने सारा वृत्तांत उसको कह सुनाया। सम्मुख आकर जैसा ने चारण से पूछा कि बतला बादशाह कौन सा है? उसने कहा कि वह जो हाथी पर चढ़ा हुआ है। जैसा ने फिर कहा कि तू निकट जाकर शाह को मुझे बता दे और उससे अपना बंदी छुड़ाने की बातचीत कर।

चारण ने वादशाह के पास जाकर अर्ज़ की कि वह जैसा हाज़िर है, मैं अपने वचन के अनुसार उसे ले आया हूँ, अब आप मेरे मनुष्यों को मुक्त कीजिए। वादशाह ने उनको छोड़ देने की आज्ञा दी। उस वक्त सब जैसा की ओर देख रहे थे कि सरवहिये ने घोड़े को एड़ देकर वादशाह के हाथी की तरफ़ उड़ाया। उसके पाँव गजराज के दंत-शूलों पर जाकर टिके थे कि जैसा ने वादशाह की कमर पर हाथ पटका। वादशाह ने हौदे को पकड़ लिया। जैसा शाह की कमर से कटार लेकर पीछा उड़ा और अछूता निकल गया। सब देखते ही रह गये, कोई भी उस पर शस्त्र न चला सका! उस वक्त चारण ने फिर दोहा कहा—

"ओ जो जैसो जाय, पाड़ नहीं पतसाहरै।
आयो ऊंडल साय, सरवहियो सुरताणरै।"

इस तरह से जैसा निकल गया और वादशाह ने चारण के कुटुंबियों को छोड़ दिया। उसने अपने जीते जी धरती में शांति न होने दी। उसके पीछे वीजा भी अच्छा राजपूत हुआ, खूब दौड़े लगाये, परंतु जैसा के समान नहीं।

वीसवाँ प्रकरण

भाटी

(भाटियों का राज्य अभी जेसलमेर में है,) जेसलमेर की हकीकत विट्ठलदास की लिखाई हुई—

जेसलमेर से खडाल दस कोस है; कणवण देवाडावाला और पोला है; हताणु कोट जेसलमेर से कोस ४०, कोर डूंगर से कोस ५०, खडाले में इतने गाँव हैं—खीरड़ खालनों की, खीवलसर [illegible]ों का, खालसा रु० ४०००) का है। टेहिया, डांवर नेहड़ाई, हाजुर, गुगाह, सपहर, देवा, सीतहल, लवीह, झरा, हुजासी, मायथो, आकुवाई, तणोट, वांधड़ो, सापलो, मडाऊ, सजडाऊ, खारी, घंटियालो, दुजासर, आसो, कोलु, घोड़ाहड़ो, हडेल, फलोडी, देरासर, तणुसर। इतने गाँव जेसलमेर के पूर्व में हैं। वासणीपी, जैराइत, डाभला, आकल, पछवालो, तईअईतरो, मोकलाइत, जैसु राणरो, जगिया, चाहडु, आहप, छोड़ो, आसणी कोनीट, वोलो, वहालो, कोटड़ी, भंभेरा, आसलोई, वीभोता, वसाड़, गोयंद, सांवत सी का गाँव ईकड़, खुहड़ी, सालागड़ो, कांणाऊ, कुंछाऊ, खत्रियालो, आहालो, टोवरीयालो, खडोरां का गाँव, वालों का गाँव, भांवरी, रावतसर, लाणेला, गोही, काछो, ब्रह्मसर, काणावह, कीलाडूंगर, खवास का गाँव, जिजियाकी, भादासर, रवीरा, गजिया, हेकल, तेजसी का गाँव वापासर, सोभेवो, अरजणियारो, थहिवायवुजैरा, खडीऊनाव जेसलमेर से कोस पाँच पश्चिम में; काक नदी का जल आवे, कोटडा छहो टण के पहाड़ों का जल आवे जिससे भरे। चारों ओर पहाड़ और बीच में ऊड़ाई है। कोस

तीन के घेरे में जल भर जाता, तब दस पंद्रह बाँस पानी चढ़ आता है। पानी निकलने की जगह में काठे गेहूँ का बीज १५००) बोया जाता जो साठे (साठ दिनों में) पक जाते। बीज के जितना भोग आता है, और भी लागतें बहुतेरी हैं। पानी कम होने पर ४०० बेरियाँ (छोटे कूवें) मीठे जल की होतीं जिन पर (जिनके जल से) छोतरे (साग विशेष), गेहूँ, साग, भाजी आदि पैदा हो जाते हैं। इनके अतिरिक्त चने, मूँग, ज्वार, गन्ना इत्यादि भी होते हैं। इस झील पर ब्राह्मणों के १२ गाँव हैं—हिस्से ५ डोडबाड़ (डेढ़ा), कूंता (भोग कूंते से पाँचवा भाग) लिया जाता गाँव— खीवा, थुलाया, बोघरी, दसोदर, नोभिया, गलापड़ी, सेलावट, कुंभार का कोट, जीगिया, निनरिया, जालिया, घामट।

मुहार के खडीण की झील जेसलमेर से छः सात कोस दक्षिण बड़ी जगह है, आसपास की पहाड़ियों का जल आने से एक कोस में पानी भर जाता, उसमें भी ५०००) गेहूँ का बीज बोया जाता है। इतना ही भोग आ जाता। पानी सूखने पर थाह में कई बेरियाँ बनी हुई हैं, जिनमें से बीस या पचीस तो पक्की बँधी हुई हैं। जल उनका मीठा, उन पर छोतरें, साग, भाजी, ईख पैदा होते हैं। यह भी बड़े हासिल का स्थान है। उस झील पर ब्राह्मणों के तीन गाँव हैं—गोरहरा, झांझोरा, सियलारा; लुद्रवों का सीयल, पँवार लुद्रवा की प्रजा की नाईं भोग देते हैं। मुहार पहले रावल भीम के समय में भीखासी मालदेवोत के था पीछे रावल मनोहरदास के समय में मान खीमावत को पट्टे में दी गई।

राणा चांपा के पीछे जेसलमेर में जो रावल गद्दी पर बैठा उसने कोटड़े से इतने गाँव लेकर जेसलमेर में मिलाये—मांडाही, बीजोराही, कोड़ीवास, रिड़ी, पेथोड़ाई, सीतहड़ाई, भूबा, धनवा, ओला, बापणा-

सर, जालेली, डांगरी, साँगण, सोलियाई, पीपलवा, नेगरड़ा, भागी-नड़ा, ओला, आरस, चोचरा, जानरा और काणासर।

जेसलमेर से ७० कोस सोढों का ऊमर (अमर) कोट है जिसके आधेटे कोस ३५ दागजाल में जेसलमेर और ऊमर कोट की सीमा मिलती है; वहाँ पास गाँव एक भाँमेरा कोस १८ भूणकामलों का वतन है। गाँव दहोसतोय भाटी सत्ता का जेसलमेर से कोस २२; गाँव फूलिया भाटी मेहाजल का जेसलमेर से कोस ३०, उससे ५ कोस आगे दागजाल है।

मुंहता लक्खा ने सं० १७०० माघ वदि ९ के। मेड़ते के मुकाम जेसलमेर का हाल लिखाया—माल की बुआई; कस्बे में महाजनों के घर प्रति ८ दूगाणी (ताँबे का सिक्का) लगती है। महाजनों के घर २५०० से ५००) वसूल होते। इन अढ़ाई हजार में से १५०० घर ओसवाल और ५०० महेसरी हैं। दिवाली होली की पावन रु० ५००) गुड के। मंगलीक का पेशकश (नज़राना) इस तरह पर है—रु० १५०००) सब देश के ख्वालसे के राजपूत मुसलमानों से आते; देशवाली लोगों से जिजिया और वाव (दण्डवराड़?) के रु० ४०००); रु० २००००) दाण (सायर) व तुलावट के दाण में चलते हुए एक ऊँट तोल २० का मन और रेशम के रु० ३५); साजीव रु० ५); घृत रु० ५); छुहारा रु० ५); नारियल रु० ५); रुई रु० ५); मोम रु० ६); फिटकड़ी रु० ४); लाख लोवड़ी रु० ६); किराने का ऊँट रु० ३); बीकानेर के देश से आवे ते। चलते हुए के ॥।) लगें; घोड़ों की कारवान चलती हुई फ़ी घोड़ा ४) लिये जाते। इन सब के रु० १५०००) आते हैं। कस्बे में जो चीज़ बिके, उसकी तुलावट बिक्री एक मन भर वस्तु पर एक सेर, और रु० ४०) पीरोज़ी पर १) लगता, जिसके ५०००) रु० आते हैं। टकसाल व्याज में है वह पहले ४ था फिर ८ हुआ जिसके

रु० २०००) फुटकर पाठ १, खत्री, कसाई, तंबाकू आदि के रु० १०००); [illegible], गुग्गल, नमक आदि ऐसी जिस ४ या ५ के रु० ८०००); जोड़ रु० ३०००) १०००)=४०००) रु०। गाँवों का हासिल १९०००); ब्राह्मणी गाँव ६० या ७० हैं जो एक मन का डेढ़ मन भोग देते हैं, श्रावणू फसल का भोग २०००), और उनालू का भोग एक मन का डेढ़ मन लिया जाता जिसका १०००) आता है। देशवाल लोगों के गाँवों में बहुत से राजपूतों की जागीर में हैं जिनके एवज़ वे चाकरी देते हैं। जोड़ नाचणा जेसलमेर से २ कोस, पूर्व की तरफ़ एक कोस, घासकरड़; एहेखरा जेसलमेर से कोस २ दक्षिण घाससैवण और दो कोस के बीच में खरना है, लुद्रवे के पास थोड़ा घावड़ी बाँकी जगह है। मुहारादासी जेसलमेर से कोस १६ खडाला में। आलणी कोट गाँव से २ कोस, घाससैवण; ब्राह्मणी गाँव कोटड़े की तरफ़ पश्चिम में जेसलमेर से परे हैं। बोझोलाई, सीतहलाई, कोडियावास, मांढिडिहाई, पेथड़ाई, ऊना, रीडिया, वाफनाइया, थतुवा, बुचकटा, जोगापुड़ा, लाणेला, खंडार की तरफ़ जेसलमेर से पश्चिम; जेसूराणा, गुलिया, कुलधर, चंदेरिया का गाँव। खेतपालिया का टीबी, देवा, नेहड़ाई, टेइया, भानिया, जाँनड़, पोटलिया, पूर्व में जेसलमेर से पोहकरण की तरफ़ घासणापी, आसनी कोट कोस १२।

रतनू गोकुल (चारण) की लिखाई हुई भाटियों की वंशावली—आदि–१–श्रीनारायण, २–कमल, ३–ब्रह्मा, ४–अत्रि, ५–सोम, ६–बुध, ७–पुरुरवा, ८–प्राग, ९–परिग्राइत, १०–निर्दोप, ११–राजा जजात (ययाति), १२–राजा जदु, १३–जादम (यादव), १४–सहस्रार्जुन, १५–सूरसेन, १६–वसुदेव, १७–श्रीकृष्ण, १८–प्रद्युम्न और सांब, १९–अनिरुद्ध, २०–वज्रनाभ, २१–प्रेतारथ, २२–रुचिर, २३–पद्म-

ऋषि, २४–गौतम २५–सहजसेन, २६–जैतसेन, २७–अर्धबिंब, २८–राजा शालिवाहन (के पुत्रों से) बोटी और खोटी शाखा चली जो वालहोलवाणे के पास है। २९–भाटी और राजा रसालू दोनों भाई थे। ३०–वच्छराव, ३१–विजयराव, ३२–मंझमराव, ३३–मंगल राव, ३४–केहर बड़ा, जिसने केहरोर बसाया, ३५–तणुं जिसने तणोट बसाया। ३६–विजयराव चूड़ाला केहर का पुत्र, ३७–देवराज जिसने देरावर बसाया, ३८–मुंध, ३९–बछू के वंशज अणधाभाटी बापाराव के पाहूभाटी, सिंघराव, दुसाझ, जेसल, रावल दुसाझ का, इसका भाई देसल (दूसरी वंशावली में वैजल नाम दिया है) जिसके वंशज अभोहरियाभाटी, अभोहर बिठांडा (भटिंडा ?) के पास है। भाटी दौलतखान फ़ीरोज़शाह (तुग़लक़) का मामा (इसी शाखा में था)।* रावल शालिवाहन, रावल कान्हण जेसल का जिसके वंशज डाभलेवाले बनरभाटी और भैंसड़े व वासणपीवाले। रावल

---

* तारीख फ़ीरोज़शाही का रचयिता शमस शीराज़ अफ़ीफ़ लिखता है कि तुग़लक़ बादशाह के भाई सिपहसालार रजब ने, जो देपालपुर का सूबेदार था, किसी हिन्दू राजा की बेटी से विवाह करना चाहा। सुना कि रणमल भाटी की बेटी बड़ी खूबसूरत है तो उसने रणमल से माँगी। परन्तु उसने मंजूर न किया। तिसपर मुसलमानों की फ़ौज भाटियों के इलाके में पहुँची और प्रजा को लूटने लगी। लोग तङ्ग आकर रणमल के पास आये और उनका बुरा हाल देखकर रणमल की माता रोने लगी। बेटी ने रोने का कारण पूछा और जब सुना कि यह सब कष्ट उसी के निमित्त हो रहा हैं तो माता से कहा कि मुझे क्यों नहीं दे देते। ऐसा ही जानना कि एक लड़की को तुर्क ले गये। रणमल ने उसे रजब के पास भेज दी, नाम उसका सुलताना कदबानू रखा गया और उसी के पेट से फ़ीरोज़शाह तुग़लक़ पैदा हुआ।

चाचग दे, तेजसी राव कालड़ का, रावल कर्ण, रावल जैतसी बड़ा, रावल मूलराज, राणा रत्नसी जैतसी का, रावल देवराज मूलराज का, रावल घड़सी रत्नसी का, रावल केहर देवराज का, रावल लक्ष्मण केहर का, रावल वैरसी लक्ष्मण का, रावल चाचग दे वैरसी का, ऊमरकोट के सोढों ने मारा, रावल देवीदास चाचग का, रावल जैतसी, रावल लूणकर्ण, रावल मालदेव, रावल हरराज, भवानीदास, सिंघ, रावल हरराज, रावल भीम, रावल कल्याणमल, अर्जुन, आखरसी, सुरताण, रावल मनोहरदास कलावत।

भाटी छात्राला कहलावें जिसका कारण आढा महेशदास ने सं० १७०६ फाल्गुण शुदि १५ को यह बतलाया—प्रथम तो कोई रावल पाट बैठे तब छत्र अपने बारहटों के ऊपर धरावे अर्थात् छत्र का दान देने से छात्राला कहलाते। दूसरी जनश्रुति यह भी है कि दिल्ली में छत्र, ग़ज़नी में छत्र, और भारत में जेसलमेर छत्र है।*

(दूसरी वंशावली)—भाटी सोमवंशी हैं, हरिवंश पुराण में इनकी उत्पत्ति ऐसे लिखी है कि श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न की संतान भाटी हैं जो उनके गुण गीतों में कहा जाता है। भुज, नयानगर के स्वामी जाड़ेचा साम कहलाते क्योंकि सुना जाता है कि वे श्रीकृष्ण के पुत्र सांब की संतान हैं। प्रथम राजा यदु से पीढ़ियाँ कही जातीं इसलिए ये यादव प्रसिद्ध हुए। प्रद्युम्न के पीछे भाटी हुआ जिसका वंश भाटी कहलाया। मथुरा छूटने पर कई दिनों तक भाटी लक्खी जंगल में गुढ़ा बाँधकर रहे, जहाँ अब भटनेर है, जो पीछे से वहाँ

* भाटियों के नो गढ़ कहलाते हैं—जेसलमेर, पूंगळ, बीकमपुर, बरसळपुर, मम्मण, बाहड़, मारोठ, देरावर आसणीकोट, और केहरोर।

आबाद हुआ और भाटियों के कारण से उसका नाम भटनेर पड़ा। भुज नवानगर के जाड़ेचों की शाखा—सरवहिया जूनागढ़ के स्वामी, चूड़ासमा अडांच के स्वामी अब धंधूका के परगने में ग्रासिये हैं; यादव याघोर फरोलीवाले वज्रनाभ की संतान हैं।

मंगलराव मभमराव के पुत्र से—जिसको ऊपर तेतीसवीं पीढ़ी में बतलाया है, यहाँ वर्णन आरंभ किया जाता है। मंगलराव के पुत्र—१-नरसिंह, जिसका बेटा राणा राजपाल केलणोंवाली खरड़ का स्वामी था। (इस शाखा का वर्णन आगे किया जावेगा)। २-केहर, जिसने अपने नाम पर सिंध में नया शहर केहरोर बसाया।

३-तणुं, केहर का पुत्र, बड़ा राजपूत हुआ, और अपने नाम पर उसने खाडोल में तणोटगढ़ बनवाया। फिर अरोड़ भक्खर की सेना ने उस पर चढ़ाई की जिसके साथ युद्ध करके तणुं काम आया। तणुं के पुत्र—विजयराव चूड़ाला, और जैतुंग।

४-विजयराव चूड़ाला—बड़ा वीर राजपूत हुआ, उसकी ठकुराई पहले तो बहुत अच्छी थी, फिर सिंध से उस पर सेना आई। विजय-राव देवी का बड़ा भक्त था। माता से इच्छा की कि यदि यह सेना मुझसे परास्त होकर पीठ दिखावे तो मैं तुरंत अपना मस्तक तेरे भेट करूँगा। यह बात उसने मन ही मन में रक्खी किसी से कही नहीं। जब शत्रु-दल से युद्ध हुआ तो देवी रथ पर चढ़कर राव की सहायता को आई और विजयराव ने विजय पाई, मुग़ल भागे, (विजयराव के समय में तो मुग़लों का होना संभव नहीं परंतु पीछे से ख्यात लिखनेवालों ने मुसलमानों के वास्ते मुग़ल शब्द ही का प्रयोग किया है)। घर पर आकर अर्धरात्रि को राव अकेला देवी के मंदिर में गया, हाथ पाँव पखाल, अपनी कृपाण खींच कर कमल पूजा के वास्ते अपनी गर्दन पर धरी कि देवी बोली "नहीं!

नहीं !!" राव ने जाना कि पीछे कोई मनुष्य आया है इसलिए उसने खड्ग हटा लिया। इधर उधर दृष्टि फेंककर फिर गला काटने को उद्यत हुआ, तब देवी ने साक्षात् होकर कहा कि "विजयराव तू कमल पूजा मत कर! हमने तेरी पूजा मान ली। तिसपर भी वह तो सिर उतारने ही लगा तब देवी ने फिर कहा कि ऐसा मत कर! मैंने तुझे बख़्शा और क्षमा किया। तब राव बोला कि माताजी, ऐसे तो मैं टलने का नहीं। देवी ने अपने हाथ की सोने की चूड़ उतारकर विजयराव के हाथ में पहना दी और उसे घर भेजा। उस चूड़ के हाथ में रहने से ही वह चूड़ाला (चूड़वाला) कहलाया। विजयराव खाडाल में रहता था और ऊँच देरावर में वरिहाहा राजपूतों का, जो परमारों में मिलते हैं, अधिकार था। भाटी वरिहाहों का सदा बिगाड़ किया करते इससे वे मन में उनसे पूरी शत्रुता रखते थे। वरिहाहों ने विचारा कि ऐसे तो हम इनसे जीत सकते नहीं कुछ छल करना चाहिए। यह निश्चय कर उन्होंने (संबंध के) नारियल विजयराव के पास भेजे। राव ने स्वयं तो नारियल लिये नहीं, परंतु अपने ५ वर्ष के पुत्र देवराज को झिला-कर उसका संबंध स्थिर कर लग्न दिन भी नियत कर दिया। राव आप अपने बालक पुत्र को व्याहने गया। विवाह हो गया, दूसरे दिन दावत की गई, राव के साथ के सब आदमी आये। तब वरिहाहों ने चूक करके ७५० साथियों समेत विजयराय को मार डाला। उस वक़्त देवराज की धाय डाही ने देवराज को पुरोहित लूणा के सुपुर्द कर कहा कि तेरे पास एक बहुत तेज चलनेवाली साँढ़ है अतः उस पर सवार कराके तू अपने स्वामी को ले भाग और उसके प्राण बचा। लूणा ने वैसा ही किया। पीछे वरिहाहों ने डेरे में देवराज को बहुतेरा ढूँढ़ा परंतु पता न लगा। तब किसी ने कहा कि खोज

देखो, कोई उसे लेकर तो नहीं चला गया है। मार्ग में सांढ के पाँव दिखे, उन्हीं खोजों से कितने एक आदमियों ने पीछा किया परंतु सांढ कब हाथ आनेवाला था। पुरोहित लूणा का घर पोकरन् में था जहाँ देवराजसहित वह कुशलतापूर्वक पहुँच गया। वरिहाहे भी वहाँ आ पहुँचे, और लूणा के पुत्र रतना से पूछा कि क्या तुम देवराज को लाये हो? लूणा ने कहा हम तो किसी को लाये नहीं और जो तुमको वहम हो तो हमारा घर देख लो। उन्होंने फिर-फिराकर सारे गाँव के बालकों को देखा। उनमें देवराज भी नज़र आया, जो अजनबी सा दिखता था। पूछा कि यह लड़का कौन है। ब्राह्मण बोला कि यह मेरा पुत्र है। वरिहाहे बोले कि यदि तेरा पुत्र पौत्र है तो तुम शामिल बैठकर भोजन करो तब हमको विश्वास आवे। लूणा आप तो शामिल न बैठा, परंतु अपने बड़े पुत्र रतनू को देवराज के साथ बिठाकर खाना खिलाया। यह देखकर वरिहाहे लौट गये और देवराज बच गया। लूणा की जाति के ब्राह्मणों ने रतनू को जातिच्युत किया। तब वह योगी बनकर सोरठ में चला गया, वहाँ लूणोत नामी ब्राह्मणों की जाति चलाकर वसुदेव के सिंहथली गाँव में रहने लगा।

देवराज बड़ा हुआ, और तुर्कों की सेवा में रहा। एक बार उस गाँव का एक साँगी नाम रैबारी वरिहाहों के गाँव में गया था, वहाँ देवराज की खास रवाय ने उसको भाई कहकर बातचीत की, और अपनी बेटी हुरड़ को उसे दिखाकर बहुत दुःख प्रकट करने लगी। रैबारी ने कहा तू इतनी दुखी क्यों होती है? बोली कि बेटी जवान हो गई और इसके पति का पता नहीं है। न जाने मर गया या साधु संन्यासी होकर कहीं चला गया है। रैबारी ने कहा कि मुझे बधाई दो, तुम्हारा जामाता जीता-जागता है, जवान हो गया है, और बड़ा योग्य है। यह सुनकर रवाय बड़ी हर्षित हुई

और दीनता कर कहने लगी कि किसी ढब से एक बार देव-
राज को यहाँ ला। रैबारी ने उत्तर दिया कि मुझे तेरा और तेरे पति
का भरोसा नहीं आता। रवाय ने बहुत सौगंद शपथ किये और वचन
दिया (कि उसको किसी प्रकार का कष्ट कदापि न होगा)। तब
रैबारी गया और गुप्तरीति से देवराज को ससुराल में ले आया। सास
ने उसको घर में छुपाकर रक्खा। कितने एक दिनों बाद हुरड़ के
गर्भ रह गया, तब तो उसकी माता ने कई उपाय कर अपने पति को
समझाया। उस पर सब भेद प्रकट किया, जमाई को किसी तरह की
हानि न पहुँचाने का उससे पूरा पूरा बोल वचन ले लिया और देव-
राज को उससे मिला दिया। कई दिनों तक देवराज ससुराल में
रहा। एक योगीश्वर एक रस-कुंपिका रवाय को सौंप गया
था। वह उसके भेद से निरी अज्ञात थी, और वह कुप्पी
उसी कमरे में रखी थी जहाँ देवराज सोता था। अकस्मात् उस
कुप्पी में से एक बूँद छनकर देवराज के कटार पर आ गिरी, और
वह लोहे की कटारी सुवर्ण की हो गई। प्रभात को जब देवराज
जागा और अपना कटार देखा तो उसे निश्चय हो गया कि इस कुप्पी
में रसायन है, और उसको उठाकर अपने हस्तगत किया, और
कमरे में आग लगा दी। रवाय को विश्वास हुआ कि कुप्पी आग
में जल गई।

कुछ समय व्यतीत होने पर देवराज ने अपने सास ससुर से
कहा कि लोग मुझे "हुरड़ बना" कहकर पुकारते हैं, इसलिए मैं तुम
से अलग रहूँगा और नदी के दूसरे तट पर जाकर अपनी झोपड़ी
बाँध वहाँ रहने लगा। लोग उस स्थान को "हुरड़ वाहण" कहने
लगे, और अब तक भी वह इसी नाम से प्रसिद्ध है। देवराज ने
मन में विचारा कि यहाँ रहने से तो मेरे माता-पिता का नाम

डूबता है; अतः वहाँ से अपने मामा भुट्टो (जो देरावर के समीप रहता था) के पास आ रहा। मामा की अच्छी सेवा उसने की। धन तो उसके पास उस रसायन के प्रभाव से बहुत सा था ही, सदा इधर उधर पांच दस कोस फिर आता और गढ़ के वास्ते कोई अच्छा स्थान देखता था। किसी ने उसको वह ठौर बतलाई जहाँ देरावर है और कहा कि कोस ४० की उजाड़ तो सिंध की तरफ है, कोस ६० तथा ८० का रेगिस्तान माड़ की ओर है और यहाँ जल बहुत है। देवराज ने मामा भुट्टी को अपनी सेवा से इतना प्रसन्न किया कि एक दिन मामा ने कहा कि भानजे, कुछ माँग! मैं अपने घर की शक्ति के अनुसार तुझे दूँगा। देवराज ने कहा—ब्रह्म वाचा रुद्र वाचा, मैं दो एक दिन में सोच विचार करके माँगूँगा। दो दिन पीछे कहा कि आश्रय के निमित्त अमुक स्थान पर थोड़ी पृथ्वी चाहता हूँ। मामा ने तो स्वीकार कर लिया, परंतु उसके प्रधान और भाइयों ने कहा कि तुम जानते हो कि यह किस घराने का छोरू है। यदि यह यहाँ बस गया तो तुमको दुःख देगा, और मारेगा। तब तो मामा भी पृथ्वी देने से इनकार कर गया। देवराज बोला कि मैंने कब तुमसे धरती की याचना की थी? तुमने अपनी खुशी से ही मुझको मुजरा कराया, अब इनकार करने में मेरी और तुम्हारी दोनों की बदनामी है, क्योंकि पाँच पंच इस बात को जान गये हैं। मामा ने लिखत कर दिया कि एक भैंसे के चर्म जितनी धरती मैंने तुमको दी। देवराज ने वह पट्टा सिर पर चढ़ाया, भुट्टी ने अपने आदमी साथ दिये तो देवराज ने कहा कि आप इनको आज्ञा दीजिए कि भैंसे के चर्म को भिगोकर चिरावें और बाँध कढ़ावें, उस बाँध के नीचे जितनी धरती आवेगी उतनी ही लूँगा। भुट्टी ने देखा कि बात बेढब हुई

परंतु करे क्या वही कहावत सिद्ध हुई कि बोल बोला और धन पराया। देवराज ने बहुत ही बारीक बाँध कढ़ाई और जहाँ जल था उतनी पृथ्वी के चारों ओर वह चर्म-रज्जु फिराकर उसे अपने अधिकार में कर लिया। फिर बहुत से घोड़े खरीदे, बहुत से मनुष्य नौकर रक्खे, और वहाँ गढ़ की नींव डाली। दीवार बनने लगी, परंतु दिन में जितनी दीवार चुनी जाती उसको रात्रि के वक्त वहाँ का देवता गिरा देता। देवराज हैरान हो गया। तब उसने देवी की आराधना की, पाँच-दस दिन लंघन किये। देवी प्रसन्न हुई और कहा माँग! विनती की कि गढ़ बन जावे, आप उसकी रक्षा कीजिये। माता की आज्ञा हुई कि गढ़ में एक पक्की ईंट तेरी और एक एक कच्ची ईंट मेरे नाम की रखकर चुनवाता जा तो यह दुर्ग अचल और वज्रमय बनेगा, बाहर का कोई इसे जीत न सकेगा, भीतर के मनुष्य का दिया हुआ जावेगा। देवराज ने, देवी के आज्ञानुसार, काम किया और बड़ा दुर्ग बन गया। उस गढ़ में ४ पक्के कूएँ अटूट मीठे जल के और एक तालाब भीतर और एक बाहर भीत के नीचे खाई की ठौर है। सारी सिंध की सीमा पर यह दुर्ग सिरमौर हो गया, मुलतान और सिंध का मार्ग भी उधर ही से चलना शुरू हुआ। आस-पास के लोग मिलाप के साथ तालाब के जल का उपयोग करें, बल-पूर्वक कोई उधर जा भी नहीं सकता था। गढ़ के लगाव कोई नहीं, बड़ा दृढ़, और दस-पंद्रह कोस में वहाँ जल भी और स्थल पर कहीं नहीं है। गढ़ संपूर्ण हुआ, देवराज ने उस रसायन के प्रभाव से अमित धन प्राप्त कर बहुत घोड़े राजपूतों की जोड़ बना ली और वरिहाहों से अपना वैर लेने का विचार किया। अस्त्र-शस्त्र का भी बहुता सा संग्रह कर लिया, और गढ़ को सुरक्षित बनवाया।

वरिहाहों के मारने को सहस्रों दाव-पेच करने लगा, परन्तु जो प्रबन्ध वह यहाँ करे उसकी ख़बर वहाँ पहुँच जावे जिससे वे लोग भी सदा चाक-चौबन्द रहते थे।

इसी अवसर पर वह रस-कुप्पिकावाला योगी देवराज की सास के पास आया और उससे अपनी धरोहर माँगी। वह बोली कि कुप्पी मैंने महल की ओवरी में रक्खी थी, मेरा जमाई वहाँ सोता था, एक दिन उस ओवरी में आग लग गई और कुप्पी भी वहीं जलकर भस्म हुई। यह वृत्तान्त सुनकर जोगी मन में समझ गया कि अवश्य उसमें की बूँद पड़ने से लोहा कञ्चन बन गया होगा। कुप्पी उस जमाई ने ली और किसी को उस पर सन्देह न हो, इस-लिए उसने आग लगा दी। योगी ने रवाय से कहा कि वह कुप्पी जलने की नहीं, तेरे जमाई ने लाय लगाने का प्रपंच रचकर रसायन ले लिया है। वह बोली कि जमाई अब हमारे वस का नहीं, उसने छल कर हमारी धरती ली, और अब हमारे मारने को निरंतर उपाय कर रहा है। वह देवराज यहाँ से ३० कोस पर नया गढ़ बनवाकर वहाँ बसा है। योगी ने भी समाचार मँगवाये तो यही बात सत्य ठहरी। तब वह योगी देरावर गया। उसके ललाट और मुख के तेज को देखकर अटकल से देवराज ताड़ गया कि यह रसायनवाला योगी है, आगे बढ़कर उसके चरण छुए और उसका बड़ा आदर-सत्कार किया। योगी भी देवराज को देखकर प्रसन्न हुआ, उसके (देवराज के) भाग्य ने ज़ोर किया, बाबा के विचार उसकी तरफ अच्छे बँधे। पहले दिन तो योगी ने कुछ बात पूछी ही नहीं, दूसरे दिन एकान्त में कहा कि "बाबा उस कुप्पी का क्या हुआ?" देवराज बोला कि जैसा कुछ हुआ वह तो आप सब जानते ही हैं, मुझे तो आपने सौंपी ही न थी, यह

आपके ही प्रसाद से मेरा दिन फिरा है। जोगी प्रसन्न होकर कहने लगा कि सब बात मैंने जानी। अब तू मेरा नाम और सिक्का सिर पर चढ़ा, देवराज ने कहा बहुत खूब, मेरा अहो भाग्य है कि आपका हाथ मेरे सीस पर रहेगा, इससे मेरी वृद्धि ही है और मेरा गया हुआ राज्य भी पीछा आ जावेगा। वरिहाहों के साथ मेरा वैर है वह भी ले सकूँगा और आपकी कृपा से सब प्रकार से आनंद ही होवेगा। योगी ने आशिष दी कि तेरे बल की वृद्धि हो! फिर अपनी कंथा, पात्र और नाद देकर कहा कि जब पाट बैठे तब, दिवाली दशहरे के दिन, यह धारण किया करना। देवराज ने कंथा और नाद गले में डाले, पात्र को आगे धरा, और जोगी का भेष बनाया।* तब प्रसन्न होकर नाथ ने फिर आशीष दी कि तेरा राज्य दिन दिन बढ़ेगा, तुझसे या तेरी संतान से यह धरती कभी न छूटेगी और तू अपना वैर ले सकेगा! इतना कहकर जोगी तो चला गया और देवराज ने वरिहाहों से बदला लेने को साथ इकट्ठा किया। उसकी स्त्री हुरड़ नित नये रूप बनाकर यहाँ के सब समाचार पिता के पास पहुँचाती थी इसी से देवराज का वरिहाहों पर बल नहीं चल सकता था। एक दिन देवराज पलँग पर बैठा हुआ था तब बिलाई बनी हुई हुरड़ पलँग के नीचे से निकली। देवराज ने पहचान लिया और बर्छा पड़ा था सो उठाकर उसके मारा। इधर तो बिल्ली मरी और वहाँ हुरड़ काल-कवलित हुई। अब देवराज चढ़ा और ९०० मनुष्य वरिहाहों को मारकर उनके गाँव लूटे, अपने श्वशुर का घरबार भी लूट लिया, सास रवाय के वस्त्र लोगों ने देवराज की दृष्टि तले खींचे परंतु उसने उनको मना न किया, देवराज के सोने के मोर उड़े (मनोरथ सुफल

* जैसलमेर में जब नया रावल पाट बैठता तो अब तक जोगिया भेष पहनता है।

हुए.) । सास ने देवराज को गुप्त रीति से घर में रखकर उसकी सेवा की थी इसलिए उसने यह दोहा कहा—"विरस भलो वरि-हाहि, मित भलो नहिं भाटियो । जे गुण किया रवाहि, ते सब कालर भल्लिया ।।" वरिहाहों का खोज उठा दिया, बहुत सा धन माल और घोड़े ऊँट देवराज के हाथ आये, सारी धरती पर उसने अपना अमल किया और उसकी ठकुराई ख़ूब बढ़ी । सिंध की भी बहुत सी पृथ्वी हाथ आई और माड की सही पर अधिकार हुआ । ऐसे भाग्योदय के समय में देवराज ने रतनू को याद किया, उसके पिता लांप को सिंहथली से बुलाकर पूछा कि रतनू कहाँ है जिसको तूने मेरे साथ भोजन कराया था । लांप ने उत्तर दिया कि उसको तो उसके भाइयों ने तब ही जाति से बाहर कर दिया था इसलिये वह योगी होकर सोरठ गुजरात को चला गया । देवराज ने कहा कि तू वहाँ जा, मैं अपने आदमी तेरे साथ देता हूँ और मार्ग-व्यय भी दूँगा, उसको जहाँ होवे वहाँ से ढूँढ़कर ला, क्योंकि मुझ पर रतन का बड़ा अहसान है, मैं उसका अच्छा बदला दूँगा । लांप और देवराज के मनुष्य सोरठ से रतनू को लाये, देवराज ने उसको अपना बारहट बनाया, सिर पर छत्र मंडाया, और देथा चारण की पुत्री के साथ उसका विवाह करा दिया । इस रतनू के वंशज भाटियों के चारण रतनूँ हैं ।

एक बार देवराज धार (परमारों की) पर चढ़कर गया तब देरावर अपने भांजे को सुपुर्द कर गया था । भांजे ने गढ़ पर अपना अधिकार जमा लिया, परंतु जब देवराज ने धावा किया तो भयभीत होकर उसने दर्वाज़ा खोल दिया । यह देखकर देवराज के मन में यह शंका उत्पन्न हुई कि इस गढ़ की भूमि वीरभूमि नहीं और दूसरे स्थान पर राजधानी करने का विचार किया । उस वक्त

लुद्रवे में परमारों का बड़ा राज्य था और दूसरे भी कई स्थान उनके अधिकार में थे। वह लुद्रवा लेने के दाव-पेंच करने लगा। पहले तो चार महीने तक उनकी (पँवारों की) खुशामद सी की, अच्छी अच्छी चीज़ें उनके पास भेजने लगा, साथ में अपने विचक्षण पुरुषों को यह समझाकर भेजता कि वहाँ का सब रंग-ढंग देख आना। इस प्रकार आव-जाव का मार्ग खोला, फिर च्यारेक मास पीछे अपने चार प्रतिष्ठित पुरुषों के साथ सिंध के वस्त्र पँवारों के पास भेज पत्र लिखा कि आप कहो तो खाडाहल में, जहाँ कोई जलाशय नहीं है मैं तालाव बँधवाऊँ, क्योंकि मुझे तीन तालाव बँधवाने हैं। इसमें मेरा तो नाम होवेगा और तालाव तुम्हारी प्रजा व तुम्हारे राजपूतों के काम आवेगा। पहले तो पँवारों ने साफ़ इनकार कर दिया। तब देवराज के भले आदमी महीने तक वहाँ रहे, द्रव्य के बल से सबको बस किये और जेसलमेर से कोस कालाडूंगर खाडाल का मध्य भाग है जहाँ तीन तालाब बनवाने की इज़ाजत ले ली। देवराज उनसे बहुत प्रसन्न हुआ और तणुंसर, विजयरायरस और देवरावसर नाम के तीन तालाब वहाँ कराये। उनके लिए पहले तो सब मसाला अपने कामदार सहित वहाँ भेजा, फिर उस बहाने से आप भी वहाँ जाने लगा। अपने रहने के लिए छोटी सी हवेली भी वहाँ बनवाई और रहने भी लगा। पँवारों का कोई भी आदमी आवे तो उसके संमुख उनकी बहुत बड़ाई करे और कहे कि वे तो राजा हैं, तालाबों में हमारा क्या है, जिसकी धरती उसका पुण्य है और जो उनका मनुष्य आता उसको द्रव्य देकर ख़ुश करता। मसाला लेने को उसके चाकर लुद्रवे जाया करते। उनके हाथ वहाँ के कामदारों, पासवानों, खवास, छड़ीदारों आदि के वास्ते अच्छी अच्छी चीज़ें भेजता। इस प्रकार सारे राज्य को उसने अपने वशीभूत कर लिया। कोई

ऐसा कहनेवाला न रहा कि यह देवराज एक एक दो दो महीने यहाँ रहता है सो अच्छा नहीं है। अब तालाब तो संपूर्ण होने को आये। तब उसने पँवार ठाकुर को कहलाया कि आप कन्या देकर मुझे राजपूत बनाइए, पँवार बोला कि मैं देवराज से डरता हूँ, तो उसने अपने आदमियों को दो-एक महीने वहाँ रक्खे। वे राजलोक (रणवास) में अच्छी अच्छी वस्तुएँ भेजने लगे और राणी के द्वारा फिर कहलाया। राजा बोला कि यह आदमी (देवराज) अच्छा नहीं है, कभी न कभी दग़ा देगा। राणी ने कहा कि क्या दग़ा देगा। हम उसे कहला देंगे कि सौ आदमियों से ब्याहने को आना विशेष भीड़ साथ मत लाना नहीं तो आने नहीं देंगे। अंत में यही निश्चय हुआ, देवराज ने भी इसको स्वीकारा। फिर उसने अपने आदमियों के हाथ कहलाया कि मेरे सिर पर शत्रु बहुत हैं। अमुक दिवस विवाह के लिए मैं आऊँगा। आप इसकी विशेष चर्चा न करें। लुद्रवे के १२ दर्वाज़े हैं, हम अबेरे-सबेरे किसी दर्वाज़े से आवेंगे इसलिए सब दर्वाज़ों के द्वारपालों को आज्ञा हो जावे कि हम जिस पौल से आवें एक दुलहे और सौ सवारों को आने देवे ऐसा हुक्म लिया। द्वारपालों को ख़ूब द्रव्य देकर पहले ही से हाथ में कर लिया था। लग्न के दिन १२ दुलहों के सिर पर मोड़ बाँधकर बारह जानें बनाईं, प्रत्येक वर के साथ एक एक सौ सवार शस्त्रबंद ऊपर ढीले वस्त्र पहने केसरिया किये हुए थे। इस प्रकार बारह सौ सवार एक साथ बारहों दर्वाज़ों से नगर में प्रवेश हुए और भीतर घुसकर पँवारों को मार गिराया और लुद्रवे पर अमल जमा लिया। देवराज ने अपनी आण दुहाई फेरी। कितने एक दिनों पीछे अरोड़ के तुर्कों ने उसे आखेट करते हुए मारा।

उस वक्त धार में परमारों का राज्य था, उनके एक महता बड़ा प्रसिद्ध प्रधान था। एक बार उस पर बहुत सा द्रव्य और एक सौ हस्ती का दंड राजा ने किया। रुपये तो उसने ज्यों त्यों करके भर दिये, परंतु हाथी कहीं मिले नहीं। राजा ने प्रधान के परिवार को क़ैद किया और कहा कि बिना हाथी दिये नहीं छूटेंगे। महता कई राज्यों में फिर गया, परंतु इतने हाथी कहीं मिले नहीं। माँगे हुए हाथी देवे कौन, उस समय रावल देवराज बड़ा दाता, बड़ा जुझार और बड़ा नामी महाराजा था। इसलिये महता उसके पास गया और उसके अधिकारियों से मिला। उन्होंने उसका बहुत आतिथ्य-सत्कार किया, अपने यहाँ टिकाया और आने का कारण पूछा। महता ने अपनी सारी व्यथा कह सुनाई तब उन्होंने उसे रावल से मिलाया और उसकी हकीकत एकांत में कर्णगोचर की। अगले राजा बड़े सज्जन थे। इस प्रकार ऐसे उपकार करने को सदा उनकी इच्छा बनी रहती थी। देवराज ने अपने अधिकारियों से कहा कि यह बड़ा आदमी बड़े दर्बार का प्रधान मेरा नाम सुनकर इतनी दूर आया है तो इसका मनोरथ अवश्य पूर्ण होना चाहिए। महता को एक सौ हाथी और घोड़ा सिरोपाव देकर विदा किया। हाथियों के लिए मार्ग व्यय भी देकर कई महावतों को भी साथ भेजा और उन्हें आज्ञा दी कि इनको धार पहुँचा आओ। महता धार में पहुँचा। हाथियों को सजाकर धार के धणी को नजर किया, उसको बड़ा आश्चर्य्य हुआ और पूछा कि ये हाथी किसने दिये? कहा रावल देवराज भाटी ने। यह सुनकर राजा मन में बड़ा लज्जित हुआ, विचारा कि मैं तो ऐसे घर के नौकरों से घर घर भीख मँगवाऊँ और देवराज उपकार के वास्ते सौ सौ हाथी दे देवे। परंतु इस विचार को मन में रखकर प्रकट में कहा कि भाटियों के

हाथी मारे भूख के मरते थे सो उन्होंने जैसे तैसे करके घर से निकाले और महता के सिर पर वश सड़ा, महता का कुटुंब छूटा और महता ने मार्ग व्यय देकर महावतों को विदा किया, वे पीछे देवराज के पास आए और महता का पत्र नजर किया। रावल ने पूछा कि हाथियों को देखकर पँवारों ने क्या कहा? किसी ने अर्ज की कि वे तो ऐसा कहने लगे कि "भाटियों के हाथी भूखों मरते थे सो नजर से ओझल किये।" यह बात देवराज को बहुत बुरी लगी। उसने तत्काल अपने दो भले आदमी धार को विदा किये और कहलाया कि "हम भूखे हैं इसलिये हमने अपने हाथियों को आँखों अदीठ किया तो पीछे भेज दीजिए। नहीं भेजोगे तो तुम्हारे और हमारे बीच झगड़ा होगा।" वे आदमी धार आये, पँवारों से मिले और रावल का संदेशा कह सुनाया। हँसी में विष पैदा हो गया, देवराज के नाम से सब कोई जानकार थे कि वह जो बात कहता उसे कर दिखाता है, परंतु सौ सौ हाथी खाली बातों के बल से कौन लौटा देता है। रावल के मनुष्य बहुत कुछ कहा-सुनी करके पीछे आये और कहा कि पँवार तो हाथी देते नहीं हैं। तब रावल ने धार पर चढ़ाई की, पँवारों के भेदियों ने इसकी खबर पहुँचाई तो मेड़ते में आकर पँवार देवराज से मिले और दंड देकर संधि कर ली।*

---

* मैं नहीं कह सकता कि यह रिवायत सही है या भाटों की गढ़ंत। परंतु देवराज का समय सं० ८५० या ९०० वि० के लगभग ठहरता है, जिसके लिये आगे मैं अपने लिखे हुए जेसलमेर के हाल में कहूँगा और मालवे का राज लेनेवाला चंद्रावती का परमार राजा उत्पलराज या उपेंद्र या कृष्णराज था, (इसका विशेष वृत्तांत परमारों के हाल में देखो।) जिसका समय विक्रम की दसवीं शताब्दि में आता है तो फिर देवराज का धार के परमारों पर चढ़ाई करना कैसे बन सकता है?

इक्कीसवाँ प्रकरण

भाटियों की शाखाएँ

रैकराज के पीछे रावल मूँध पाट बैठा। उसके पुत्र वछू (वत्सराज या वछराज) और जगसी (जगत्‌सिंह) थे।

रावल वछू (वछराज), रावल मूँध के पीछे पाट बैठा। फिर उसका पुत्र दुसाझ या दूसझ राज का स्वामी हुआ। रावल दुसाझ के पुत्र रावल जेसल, रावल विजयराव लांजा, देसल, जिसके असेइरिया भाटी हुए।

रावल विजयराव लांजा—रावल दुसाझ का पुत्र, बड़ा राजा हुआ। उसका विवाह जयसिंहदेव सिद्धराव (सोलंकी) की कन्या के साथ हुआ था। सिद्धराव के यहाँ कपूर बासिये जल की कुछ चर्चा हुई तब विजयराव ने पाटण में जितना कपूर था सो सब मोल लेकर सहस्रलिंग सरोवर में डलवा दिया जिससे सारे नगर ने कपूर का सुगंधवाला जल पिया, तभी से वह लांजा विजयराव कहलाने लगा।

भाटियों में एक शाखा माँगलिया है। उनके लिये पहले तो ऐसा सुना था कि वे मंगलराव की संतान हैं, परंतु पीछे गोकुल रतनूँ ने कहा कि वे रावल दुसाझ के पुत्र विजयराव लांजा के वंशज हैं। पहले तो वे हिंदू थे, पीछे मुसलमान हो गये। उनका निवास-स्थान जेसलमेर से २५ कोस पश्चिम मंगली के थल में है। वहाँ द्रम (पोला बालू) है। जानकार मनुष्य तो पगडंडी से चला जाता और अजान पगडंडी से हट जावे तो घोड़ा सवार दोनों बालू में

धँसकर मर जाते हैं। मंगली थल की सीमा ऊमरकोट खाडाल से मिलती है; एक ओर सिंध के सावड़ों से चीन्हा में भाखर के गाँव हिंगोल से, और खाटहड़ा खारीसे के पास मैहर से भी सीमा मिली हुई है। मैहर तुर्क थल में रहते, और जेसलमेर के चाकर हैं। गाँव साँखली, खुहिया, लोखारा, बवट ये देजगर ठट्टे के पादशाह की प्रजा, जिनका दो सहस्र मनुष्यों का थोक है। मंगलियों में तीन धड़े (शाखा या विभाग) हैं—चावंडदे, वीरमदे, ढेढिया। इनका मूल गाँव वीरमा, और दूसरों का साहलवा है। जल वहाँ कहीं तो १४, कहीं ३० और कहीं ६० पुर्से तक नीचा है। वहाँ चंडीश महादेव का स्थान है जहाँ मकर-संक्रांति के पीछे ८ दिन तक लिंग के नीचे जल बहता रहता है।

रावल विजयराव के एक पुत्र राहड से राहड़िये भाटियों की शाखा निकली। इनके जेसलमेर राज्य में तीन गाँव हैं। खाडाल में सोपत राहड़ोत के वराह और वर के दो गाँव, थोक १०, एक पुनरोजासर और दूसरा साजनारा। देरासर तालाव पर २० गाँव पौत्र (वंशज) बसते हैं—नीलपा, समदड़ा, काका, देवरासर की वापी, वीखरण में बावड़ी १४०१ थोघाराणां, राहड़ोत का पोतरा, गाँव सालीगड़ा ऊमरकोट के कांठै (मिला हुआ) जेसलमेर से १५ कोस जहाँ पचास,साठ घरों की बस्ती है। उसके पास हटहटारा, सिंहगणा, करड़ा सत्ता का, पोछीणा गाँव हैं। (उपर्युक्त) गाँव नहवर के कोहर (कूप) से ५ कोस हैं। बीकानेर इलाके भरेसर के पास की लाप मंडाराठी की जहाँ जस्सा का पुत्र वैरसल राहड़ ४ वर्ष तक रहा था। रावल विजयराव के पुत्र—भोजदेव, राहड़, देहल, बापाराव। रावल विजयराव से इतनी शाखें चलीं—मांगरिया, पाहू थापारावण व बापराव बछू का। गाहिड़, जिनका गाँव

इलाक़ जोधपुर इलाक़े में है, और बीकानेर में गाहिड़वाला गाँव बीकानेर से तीन कोस पर है।

पाहू भाटियों के ३ गाँव जेसलमेर में हैं—बीभोता, कोटहड़ा और सेतोराई जेसलमेर से ८ कोस किसनावत भाटियों के गाँव पहले तो पूंगल में थे, अब तो बीकानेर के ताल्लुक हैं। ये ४० तथा ५० गाँव पाहुओं के कहलाते हैं—खीखारा, नारायोहर, रायमलवाली, छापासर, मोटासर।

लांजा विजयराव का एक विवाह आबू के पँवारों के यहाँ हुआ था। उसकी सास ने जब उसके दही का तिलक लगाया तब कहा था कि "बेटा उत्तर दिशा का भड़किंवाड़ (रक्षक) होना।" रावल विजयराव तो काल-प्राप्त हुआ और उसका पुत्र भोजदेव जेसलमेर की गद्दी पर बैठा। निपट बड़ा राजपूत हुआ, कहते हैं कि उसने १५ या १६ वर्ष की अवस्था में पचास लड़ाइयाँ जीती थीं। उस वक्त गजनी का पादशाह अचानक आबू पर चढ़ आया और रावल भोजदेव को कहलाया कि तुम हमारी चढ़ाई की ख़बर आबू मत भेजना। हम तेरा कुछ भी बिगाड़ न करेंगे, तू अपने लुद्रवे (राजधानी) में बैठा रह। रावल दुसाझ का पुत्र जेसल भोजदेव से बिगड़कर आसिया बनकर बाहर निकल गया था। उसने पादशाह से कहा कि पँवार भोजदेव के मामा हैं, वह उनको ख़बर दिये बिना रहेगा नहीं। भोजदेव ने पादशाह को विश्वास दिलाया कि मैं तुम्हारे कटक की सूचना आबू न दूँगा। भोजदेव की माता (पँवार) ने यह बात सुनी तब उसने पुत्र को कहा कि बेटा! मेरी माता ने जब तेरे पिता के ललाट पर दही लगाया तब कहा था कि "बेटा जमाई! उत्तर दिशा के भड़किंवाड़ होना।" तेरे पिता ने उसकी बात स्वीकार की थी, अब वह तेरे पिता का वचन भंग होता है। हे पुत्र! आख़िर एक दिन मरना

तो है ही। यह सुनते ही रावल भोजदेव ने नक्कारा बजवाया, पादशाही कटक लुद्रवा से एक कोस मेड़ों के माल में उतरा हुआ था, उसने नक्कारा सुना। जेसल तो पहले से आग भड़का ही रहा था। पादशाह लुद्रवे पर चढ़ आया और भोजदेव वीरता के साथ युद्ध कर काम आया। पादशाह ने नगर लूटा और जेसल के तिलक लगाकर रावलाई उसे दी, और आप वहाँ से पीछा फिर गया। भोजदेव बाल्यावस्था ही में कट मरा था। उसके पुत्र नहीं था।

रावल जेसल—गजनी के पादशाह ने भोजदेव को मारकर इसे पाट बिठाया था। जेसल के मन में विचार हुआ कि यह स्थान चोड़े में है, मेरे सिर पर हजार दुश्मन, इसलिए किसी बाँकी ठौर पर गढ़ बनाना चाहिए। वह गढ़ के लिए जगह देखता फिरता था। अन्त में जेसलमेर से पश्चिम में सोहाग के पहाड़ में गढ़ बनवाना निश्चय किया। ईसा (ईश्वर) नामी १४० वर्ष का एक वृद्ध ब्राह्मण था जिसके बेटे रावल की चाकरी करते थे। गढ़ के वास्ते सामान के गाड़े ब्राह्मण के घर के पास से निकलते थे। उनकी हाहू सुनकर ईसा ने अपने पुत्रों से पूछा कि यह (हल्ला गुल्ला) किसका होता है? उन्होंने उत्तर दिया कि रावल जेसल लुद्रवे से अप्रसन्न होकर सोहग के पहाड़ पर गढ़ बनवाता है। उसके दो बुर्ज़ बन चुके हैं। तब ईसा ने पुत्रों से कहा कि रावल को मेरे पास बुला लाओ। मैं गढ़ के लिए स्थान जानता हूँ सो बतलाऊँगा। उन्होंने जाकर रावल से कहा और वह ईसा के पास आया। ईसा ने पूछा कि आप गढ़ कहाँ बनवाते हैं? जेसल ने कहा सोहाग में। ईसा कहने लगा कि वहाँ मत बनवाइए, मेरा नाम भी रक्खो तो गढ़ की ठौड़ मैं बतलाऊँ, मैंने प्राचीन बात सुनी है। रावल ने ईसा

का वचन स्वीकारा तब उसने कहा कि मैंने ऐसा सुना है कि एक बार यहां श्रीकृष्णदेव किसी कार्यवश निकल आये, अर्जुन साथ में था, भगवान् ने अर्जुन से कहा कि "इस स्थान पर पीछे हमारी राजधानी होगी"—जहाँ जेसलमेर का गढ़ है और उसमें जेसल नाम का बड़ा कूप है—"यहाँ तलसेजेवाला बड़ा जलाशय है।" ईसा बोला कि वहीं मेरी डोली (दान में दी हुई भूमि) कपूरदेसर की पाल के नीचे है, उस सर में अमुक स्थान पर एक लंबी शिला है, आप वहाँ जाओ और उस शिला को उलटकर देखो, जो उसके पीछे लेख हो तदनुसार करना। वहाँ पर लंका के आकार का त्रिकोण गढ़ बनवाना, वह बड़ा बाँका दुर्ग होगा और बहुत पीढ़ियों तक तुम्हारे अधिकार में रहेगा। जेसल अपने अधिकारियों और कारीगरों को साथ लेकर वहाँ पहुँचा, ईसा की बताई हुई शिला को उलटकर देखा तो उस पर यह दोहा लिखा था—"लुद्रवा हूंती ऊगमण पंचाकोसै मांम, ऊपाडै ओमंड ज्यो तिण रह अम्मर नाम।" कपूरदेसर की पाल पर एक रड़ी (ऊँची जगत) साधा। वहाँ रावल जेसल ने सं० १२१२ श्रावण वदि १२ आदित्यवार मूल नक्षत्र में ईसा के कहने पर जेसलमेर का बुनियादी पत्थर रक्खा। थोड़ा सा कोट और पश्चिम की पौल तैयार हुई थी कि पाँच वर्ष के पीछे रावल जेसल का देहांत हो गया और उसका पुत्र शालिवाहन पाट बैठा। जेसल ने ५ ही वर्ष राज्य किया।[1]

रावल शालिवाहन जेसल का बहुत बड़ा ठाकुर हुआ। जेसल ने जेसलमेर के गढ़ का काम शुरू किया परंतु गढ़ महल पौल कूपादि सब शालिवाहन ने बनवाये। बड़ा भाग्यशाली राजा

(१) कर्नल टॉड ने जेसलदेव का सं० १२०९ वि० में राज पाना और सं० १२२४ वि० में काल प्राप्त होना लिखा है।

था, उसने बहुत सी भूमि लेकर राज में मिलाई, बाईस वर्ष राज्य किया (इसी ख्यात में दूसरी ठौर १२ वर्ष लिखा है) ।[1]

कवित्त भाटी शालिवाहन के—

"सहस वीसाहणसूँ वंगसर ढोल समचलत ।
तिण ऊपर खड़ अभंग लीण मतवालो डोलत ॥"
"दस सहस पायदल, फरद पायक फरीधर ।
वीस पट्ट वाजंत्र, रोलहण लारिणत्पाखर ॥"
"खट तीस वंस दरगह खड़े, दीपै जे दीवाण गहि ।
जादव नरिंद जै जै जपत, सकल कमल सालवाहण लहि" ॥१॥
"दुअति दुअति ताय दीपत नमत, अनमीत ताय नासत ।
कहत कहत नन करत, कमें जाय करत सुनकरत ॥"

---

(१) कर्नल टॉड ने जेसलदेव के पुत्रों का नाम सलभन और केलन लिखा है । "रावल सलभन ने काठियों पर चढ़ाई की जो जालोर और आबू के बीच में रहते थे, फिर अपने पाटवी पुत्र बीजल को राज की रक्षा का भार दे आप सिरोही के देवड़ा मानसिंह की बेटी से ब्याह करने को सिरोही गया ।"

(सं० १२२४–३० के दरमियान में देवड़ों का अधिकार ही सिरोही प्रदेश पर नहीं हुआ । यह मानसिंह सिरोही का राव नहीं किंतु जालोर के राव समरसिंह का पुत्र था, जिसके वंश में सिरोही के देवड़े हैं । उसका समय सं० १३२५–३० के लगभग था न कि १२२४–३० ।) "एक धा भाई के बह-काने से बीजल राज का मालिक बन बैठा और यह प्रसिद्ध कर दिया कि रावल सलभन को वन में सिंह ने मार डाला है । जब सलभन पीछा आया तो उसको जेसलमेर का फिर से हाथ आना दुष्कर दिखाई पड़ा अतः वह खाडाल को चला गया और वहाँ बिलोचों के मुकाबले में मारा गया । (क्या भाटियों की ख्यात में भी चहुवाणों की तरह एक सौ वर्ष का अंतर है ?) बीजल के तीन पुत्र बीजड़, वज्जर और हंसराज थे ।"

"नगै दुरंग छुःरूप, आप पित नाम अचिल चल।
वारंगना चंदन करत, जगतधिन संभ्रम जेसल॥"
"सेहरा चंद सूरै समह, राहन सक्के तू डरहि।
जादव नरिंद जै जै जपत, सकल कमल सालवाहण लहि"॥२॥
"सहस एक शृंगार, काम छामा के करिग्रत।
त्रिहुथानह, त्रियरमह, सुसुर बाजित्तर बाजत॥"
"अट्ठेसर मद लहै, कोड़ घाखड़ी कीजत।
लीला अंग सुरंग, त्यैरो वल रीझत॥"
"धनभाख साख अन् अन अवर, असल सलै दाझै असहि।
जादव नरिंद जै जै जपत, सकल कमल सालवाहण लहि"॥३॥
"कुंकण दासण संधण, काठ पंवाल निरंतर।
सेतबंध रामेस, लगो नव दीयांसायर॥"
"झाड़खंड मेवाड़, खंड गुज्जर वैरागर।
वागड़ मद्दिधड़ सहित, खेड़ पावड़ पारकर॥"
"कुरधरा खंड घाबू मंडल सहित पाल ईठहि सवै।
सालवाहण एती सुपह, भोम भेयटी भोगवै"॥४॥
"लासण कोड़ सवाय, उभै हस्ती सौ हैमर।
दस सहस दरक, सहस दस भैंसा सद्धर॥"
"सहस गाय सूवाय, सहस दस गाडर छाली।
मायो एक मोतीयड़े, वसुंध, देवी जब झाली॥"
"सालवाहण जेसल संभ्रम, कवि दालिद्र कप्पियो।
करि वीर सूठा बूजो सुकव, थिर वारहट थप्पियो"॥५॥

रावल शालिवाहन ने चारण रतनू के पुत्र बूजा को सिरवा गाँव शासन में दिया जो आसणी कोट से दो कोस पर है। पानी आसणी कोट से आता है।

रावल बैजल (या बीजल) पाट बैठा, परंतु उसमें कुछ बुद्धि नहीं थी इसलिये भाटियों ने उसको मारकर निकाल दिया[1]।

रावल कालकर्ण (केलण) जेसल का पुत्र गद्दी पर बैठा और १८ वर्ष राज किया। उसका परिवार बहुत बढ़ा, और जैसे जोधपुर में रणमलोतों का पलड़ा भारी है, उसी प्रकार जेसलमेर में कालण के परिवार पर सारी साहिबी का दारमदार है। (भाटियों की) बहुतसी शाखाएँ कालण से मिलती हैं। कालण के पुत्र—रावल चाचगदे, आसराव, भुणकमल असराव का; झांझण, भुणकमल का; भुवनसी वथिरा झांझण का; डगा थिरा का; मेहाजल डगा का; देवा मेहाजल का; अमरा देवा का; तेजसी अमरा का; आसा तेजसी का; अज्जू आसा का। इनके गाँव—भांभेरा उमरकोट के मार्ग पर—जूरा, जेसलमेर से १० कोस उत्तर, विक्रुंपुर में नौखचारणवोला, बीकानेर में हदारी वासजभ के निकट, एक उदलियावास खींदा सर के निकट।

पालण कालण का—जिसका पुत्र जसहड़; जसहड़ के पुत्र दूदा और तिलोकसी, सांगण, ढ्रेग, बैंगण, चंदन। इनके गाँव भैंसड़ा, राकड़वा, साजीत, लूणोई, नैडाण, जैवाँध।

लखमसी कालण का—जयचंद व वीकमसी लखमसी के। साल्ह वीकमसी का; सीहड़ साल्ह का। इनके ब्रह्मसर और सदासर गाँव[2]।

---

(१) कर्नल टॉड का लेख इस ख्यात से उलटा है।

(२) कर्नल टॉड इसकी गद्दीनशीनी का सं० १२४७ देता है और लिखता है कि उसने बिलोचों के सर्दार खिजर खाँ को जीता और १६ वर्ष राज करके सं० १२७१ में मरा। उसके पुत्र चाचगदे, पाल्हण, जयचंद, पीतमसी

रावल चाचगदे—कालण के पीछे गद्दी बैठा और ३२ वर्ष २० दिन राज किया। इसके पुत्र रावल कर्ण, तेजाराव[1]।

रावल कर्ण चाचगदेव का—इसने २८ वर्ष ५ महीने राज किया। (इसी ख्यात में दूसरी जगह २६ वर्ष ५ महीने २० दिन राज करना लिखा है)। रावल कर्ण के पुत्र—रावल जैतसी बड़ा, बहुत वर्ष तक जिया। रावल लखणसेन[2]।

और उसराव थे। पाल्हण और जयचंद के वंश के जसरे और सिहाना भाटी हैं।

(१) टॉड राजस्थान के अनुसार चन्ना राजपूतों से लड़ा, उमरकोट के सोढा राणा को जीतकर उसकी कन्या के साथ विवाह किया। खेड़ में राठोड़ों का राज हो गया था, चाचकदेव ने उन पर चढ़ाई की परंतु राव चाड़ा के बेटे राव टीडा ने अपनी बहन उसको ब्याहकर संधि कर ली। बत्तीस वर्ष राज करके सं० १३०७ में रामशरण हुआ (जोधपुर की ख्यात के अनुसार राव टीडा सं० १३६४ में राज पर था)। उसका पुत्र तेजसिंह पहले ही मर गया था। उसके दो बेटों में से बड़े जैतसिंह को गद्दी न मिली, छोटा कर्ण पाट बैठा।

(२) कर्नल टॉड कहता है कि कर्ण का बड़ा भाई रूठकर गुजरात के मुसलमान हाकिम के पास चला गया। उस वक्त नागोर में मुजफ्फरखाँ (शायद जफ़रख़ाँ हो) हिंदुओं पर बड़ा जुल्म करता था। बराहा जाति के भूमिया हासा की बेटी भगवती उसने माँगी। भूमिये ने इनकार किया और घर बार छोड़कर जेसलमेर की तरफ चला, मुजफ्फर खाँ मार्ग में से उसको सकुटुंब पकड़कर नागोर ले गया। यह सुनकर रावल कर्ण नागोर पर चढ़ा और लड़ाई में मुजफ्फर को मारकर भगवती को सपरिवार छुड़ाया और उसे अपना ठिकाना पीछा दिलाया। बीस वर्ष राज करके सं० १३२७ में मरा (उस वक्त गुजरात में मुसलमान हाकिम कहाँ था और नागोर में मुजफ्फर या जफ़र नाम का हाकिम तो करीब दो सौ वर्ष पीछे हुआ था।)

रावल लखणसेन (लक्ष्मणसेन) ने १८ वर्ष राज किया, बहुत भोला राजा था। राव कान्हड़देव सावंतसीहोत उस वक्त जालोर में राज करता था। उसने अपनी कन्या का नारियल रावल लखणसेन के पास भेजा। रावल की पहली राणी उमरकोट की सोढी बड़ी जोरावर थी, रावल तनिक भी उसके कथन को नहीं लोप सकता था। जब यह नारियल आया तो वह बड़े संकोच में पड़ा, सोढी को पूछने लगा कि रावल कान्हड़दे का बड़ो ठौड़ का नारियल आया है, यदि पीछा फेरें तो सगे संबंधियों में बुरे दीखें, सो अब यदि तुम कहो तो नारियल झेल लें। सोढी ने उत्तर दिया कि जो पहले निम्न-लिखित बातों का पालन करने का वचन दो तो नारियल झेलने दूँ। रावल ने पूछा वे कौन-कौन सी बातें हैं; सोढ़ी बोली—प्रथम तो सम्हिले में कुँवर वीरमदेव आवेगा तब आप कहें कि सम्हिला (पेशवाई) चहुवाणों की भी अच्छी है परन्तु सोढों के मुवाफ़िक नहीं। दूसरे, जब गढ़ में पधारो तब कहना कि नगर उमरकोट के जैसा नहीं है। तीसरा, जब सोनगिरी से हथलेवा जोड़ो (पाणिग्रहण हो) तब कहना कि इसका हाथ सोढी के समान नहीं। चौथा, विवाह होने के उपरांत जब विदा करें तो सोनगिरी को पीछे छोड़कर आप जल्दी यहाँ चले आवें। भोले ठाकुर ने सभी बातें स्वीकार कर लीं और जालोर गया, तब उन्हीं के अनुसार काम किया। रावल कान्हड़दे, वीरमदे, और राजलोग (राणियाँ) सभी दिलगीर हो गये, फिर जब सीख हुई तो रावल कान्हड़देव ने (अपने एक सामंत) सूर मालहण को कई आदमियों समेत अपनी कन्या के साथ भेजा। रावल लखणसेन तो (अपने वचन के अनुसार) जल्दी कर सोनगिरी को पीछे छोड़कर चला गया। सोनगिरी बड़ी उदास होकर

चली और गाँव तिरसींगड़ी के तालाव मण्डल के पास उसकी सवारी का सुखपाल पहुँचा और जल के किनारे ठहरा। वहाँ तालाव में नींवा सीमालोत मृगमद लगाये स्नान कर रहा था। सोनगिरी ने दासी को कहा कि झारी में जल भर ला! वह तालाव से झारी भर लाई। सोनगिरी ने पूछा कि इस जल में ऐसी सुगंध क्यों आती और ऐसी तिरवाली क्यों पड़ती है? दासी ने उत्तर दिया कि नींवा सीमालोत अपने १४० मित्र मण्डल सहित तालाव में जलक्रीड़ा कर रहा है, उसी से जल में यह सुगंध है। सोनगिरी तो मन में पहले ही से जली-भुनी थी, नींवा के पास दासी को भेजा और उससे बात-चीत की। सूर (सामंत) को कहकर उस दिन अपना डेरा वहीं कराया। नींवा (शर्त के मुआफिक अचानक जालोर के साथ पर आन गिरा और) सूर मालन को साथियों समेत मारकर सोनगिरी को अपने घर ले गया। रावल लखणसेन ने तो उसको कुछ भी न कहा, कुछ अर्से पीछे रावल कान्हड़ देव के दूसरा विवाह मंडा। नींवा के यहाँ ऊदलकर चली जानेवाली बेटी की माता पर कान्हड़-देव का प्रेम था। उस राणी ने हठ पकड़ा कि विवाह में मेरे बेटी जमाई को भी बुलाओ। कान्हड़देव ने बहुत समझाया कि अपने कौन हैं, और वे क्या हैं, परंतु स्त्री ने हठ न छोड़ा, तव नींबा के पास निमंत्रण भेजा गया। उसने उत्तर भेजा कि मैंने कुचाल की है सो यदि पंजू पायक (मेरी कुशलता का) ज़ामिन होवे तो मैं वहाँ आऊँ। रावल पंजू का वचन दिलवाकर उसे बुलाया। वह भी ४०० आदमियों को साथ लेकर जालोर आया। वहाँ सूरमालन के पुत्र राजड़िया ने नींवा को चूक करके मार डाला, इस पर पंजू पायक भी चाकरी छोड़ पादशाह के पास चला गया[1]।

(१) टॉड लिखता है कि लखणसेन बड़ा भोला राजा था। चार

राठौड़ सीमाल पहले कान्हड़देव के पास रहता था। कान्हड़देव ने जालोर पर महल बनवाये जिनको देखने के लिये सीमाल को कहा। उसने उन महलों में कुछ कसर बतलाई तब सूर बोला कि तू क्या कान्हड़देवजी से भी अधिक समझता है? इससे उनमें परस्पर विवाद बढ़ गया, और सीमाल ने सूर पर तलवार चलाई परंतु वार खाली गया और सूर की कृपाण ने सीमाल का काम तमाम किया। रावल लखणसेन ने कान्हड़देव की कन्या को ब्याहकर पीछे छोड़ी और आप आगे जेसलमेर चला गया। कान्हड़देव ने अपनी बेटी के साथ सूर मालहण को भेजा था। मंडल के तालाब पर (सीमाल का पुत्र) नींबा स्नान कर रहा था उस वक्त कोई शकुन हुआ (कोई पक्षी बोला)। नींबा ने शकुनी से उसका फल पूछा। उसने कहा कि यह शकुन कहता है कि जो तू चार पहर यहाँ ठहरेगा तो तुझको बाप का वैर मिलेगा और एक रूपवती सुंदरी हाथ लगेगी। तब नींबा तालाब पर ठहरा। इतने में सोनगिरी के सुखपाल के साथ सूर मालण आया, नींबा ने उसे साथ सहित मार गिराया, और कान्हड़देव की बेटी को ले गया।

रावल पुण्यपाल—लखणसेन का पुत्र अपने पिता के पाट बैठा, दो वर्ष ५ महीने राज किया फिर रावल चाचगदे के पुत्र तेजराव के बेटे जैतसी ने उससे राज छीन लिया और उसे पूंगल की गद्दी देकर उधर भेज दिया। कहते हैं कि मूल पसाव पुण्यपाल का पोता था, उसके जेसलमेर से कोस २० ढाण की तरफ कुछड़ी गाँव जागीर में था। लूणराव के जेसलमेर में दो गाँव साझता और अरजणी

साल पीछे सर्दारों ने उसे गद्दी से उतारकर उसके बेटे पुण्यपाल को राजा बनाया।

दावक से ६ कोस। (इसी ख्यात में दूसरी जगह लिखा है कि पुण्य-पाल ने ६ महीने राज किया। वह अपनी विमाता से फँस गया था। इसलिये भाटियों ने मिलकर उसे गद्दी से उतार दिया)।[1]

---

(१) टॉड लिखता है कि यह बड़ा बदमिज़ाज था। एक ही वर्ष राज करने पाया कि जैतसिंह गुजरात से बुलाया जाकर गद्दी पर बिठाया गया। पुण्यपाल के पोते राव राखिगदे ने जोइयों से मारोठ और धोरियों से माल छीनकर वहाँ अपना राज्य जमाया।

बाईसवाँ प्रकरण

जैसलमेर के गढ़ का घेरा

रावल जैतसी (जैत्रसिंह)—इसने भुजबल से राज लिया बहुत प्रतापी राजा हुआ, और दीर्घ काल तक (१८ वर्ष ६ मास ६ दिन) राज किया। इसके पुत्र मूलराज और रत्नसिंह बड़े योग्य थे और राज-काज भी वही सँभालते थे। रावल के प्रधान सीहड़ बीकमसी (विक्रमसिंह) पर रावल का पूरा भरोसा था। आप तो वृद्धावस्था के कारण बैठा रहता और प्रधान कारबार भले प्रकार चलाता था। रावल के भाईबंधु उससे (प्रधान से) द्वेष रखते थे, परंतु रावल एक की भी नहीं सुनता था। जब कुँवरों पर राज-काज की मदार हुई तो सब बीकमसी की बुराइयाँ उनके आगे करने लगे और कुँवरों ने भी कान देना शुरू किया। मूलराज के पास जसहड़ के पुत्र दूदा तिलोकसी, सांगण, बांगण रहते थे जो मन में धरती का ग्रास बेध रखते, परंतु मूलराज रत्नसी जबर्दस्त और प्रधान बीकमसी सबल; इसलिये उनका कुछ बस नहीं चलता था। एक दिन आसकर्ण जसहडोत ने मूलराज को कहा कि रावलजी तो बहुत बूढ़े हुए, और तुम बेपरवाह, राज की खबर लेते नहीं, प्रधान बीकमसी लांचें ले-लेकर अपना काम बनाता जाता है। उपज तो सब वह खा जाता है, तुमको कुछ भी नहीं देता। इस प्रकार आसकर्ण कुँवरों को बहकाने लगा। एक दिन दोनों कुँवर दर्बार में बैठे थे और दूदा जसहड़ोत पास बैठा था। उस वक्त गढ़ों के शाके की बात चली। दूदा ने कुँवरों से कहा कि

जेसलमेर इतना बड़ा राज्य जहाँ पाँच सात पीढ़ी में कोई शाका (बड़ा युद्ध) न हुआ, शाके के विना नाम नहीं रहता है, इसलिए एक शाका अवश्य करना चाहिए। इस पर मूलराज रत्नसी और दूदा ने शाका करना ठान पादशाह से शत्रुता करना (छेड़-छाड़ करना) चाहा, परंतु वीकमसी ऐसी हर्कत नहीं करने देता था। आसकर्ण ने फिर चुगली खाई कि थोड़े दिन पहले वीकमसी ने व्यापारी शेखों के पास रु० १३०००) लिए थे और आपको केवल ७००) ही दिए। कुँवर भी उसकी बातों में आ गए और वीकम को मार डालने का विचार किया। दोहा—

"निरभै दुरंग दुवानरां, सोह अलोचैसीर।
वींकम कंवरां सत्रहै, हियां पलट्टै हीर॥"
"मूल संकण दोयण मुखै, कर लागो कूंडाल।
वीकमसी वी सुत्र सा, रतन पूछतां ढाल॥"

आसकर्ण व मूलराज रतनसी ने वीकम को एकांत में बुलाकर कहा कि तू चला जा। वह बोला कि मैं कहाँ जाऊँ, परंतु इन्होंने रावल की शपथ दिलाकर उसको जाने के लिये तैयार किया।

दोहा—

" के थरयण मूलू सुजण, देखै नाहीं देख।
ए वीकम के वेलिया, वैपारी नै सेख॥"
" सोना रूपा सांवटूं, लाखां लेखा लेह।
लीण महाधण लाख उत, लोभ कंवर लो येह॥"
" सोना जैत संभारिया, हय हय आणै हत्थ।
तूं भाई परधान तूं, बीकम छड़ कुवत्थ॥"
" उर करवत बहि आपरै, सांठ भैंड़ा सप्रमाण।
वीकम सिव मारग वहै, ले दीना सो जाण॥"

" सांम पसावै सांमध्रम, कीधा मैं क्रम कोड़।
प्रगट रिजक दिन पाधरै, जपै विक्रम करजाड़॥ "
" वीकमसी रावल वदै, करदे जो करतार।
हूँ जेसलगिर हेकठां, वलै प्रघानै वार॥"
" विक्रम विदेसज चालियो, विज्जड़ हाथा वांध।
मूलै तोड़ो मुणसुगुर, साहि आलम सूं सांध॥"

मूलराज वीकमसी के सामने कुछ कुचाल नहीं कर सकता था, वह उसे हर वक्त रोकता रहता था। जब वह स्वतंत्र हुआ तो उसने पादशाह से विग्रह करना ठाना। शाह का पीरजादा रूम गया था, वहाँ के सुलतान ने उसको एक करोड़ रुपए का माल दिया, पीछा लौटते हुए वह जेसलमेर होकर आया और वहाँ मुकाम हुआ। शेख की रक्षा के वास्ते २०० पादशाही सवार उसके साथ थे, मूलराज रत्नसी ने उन सबको मारकर उनका सारा माल असबाब लूट लिया और घोड़े भी ले लिए। दोहा—

"मोह मोहसवो हिंदुवां, सिंगारे सुजड़ेह।
तेरै कौड़ो माल ले, पीठ सइदां देह॥"

शेखजादा मारा गया। माल बहुत हाथ लगा, परंतु जाना कि इस पादशाही माल के लेने से उपद्रव अवश्य उठेगा। उसको तो गढ़ के नीचे तहखानों में भरा, परंतु जिन ठाकुरों के बहकाने से यह काम किया था फिर उनसे मन फिर गया। यह खबर पादशाह के कान तक पहुँची, उसने बड़े कोप में आकर कहा कि मैंने इनको कई बार माफ किया परंतु यह अपराध क्षमा नहीं करूँगा। दोहा—

"जेसलमेर दुरंगगढ़, बसैन काही बाक।
खून वगस्सै काफरां तें सुरताण तलाव॥"

"खाशम दाढी कड्ढकर, वातै वै वै हाथ।
साम्रूंगढ़ हूं मूलरयण, लेखूं चंद्रप्रसाथ॥"

पादशाह ने सर्दार कमालदीन को सात हजार सवार से जेसलमेर पर विदा किया और उसने आकर गढ़ घेर लिया। दो तीन वर्ष ऐसे ही बीत गए परंतु गढ़ न टूटा। कमालदीन को चौसर खेलने का शौक़ था। एक दिन मूलराज मामूली वस्त्र पहन और सादे से शस्त्र बाँधकर वहाँ आया जहाँ कमाल चौसर खेल रहा था, और लगा दाँव बताने। वह दाँव अच्छे देता था, कमाल उसके साथ खेलने लगा, दो दिन तो मूलराज की जीत हुई और एक दिन कमालदीन बाजी ले गया। दस पंद्रह दिन ऐसे ही खेलते रहे, फिर कमाल मूलराज को पहचानकर कहने लगा कि तुम सदा आकर हमारे साथ खेला करो, मैं खुदा को बीच में देकर कहता हूँ कि यहाँ आने जाने में कोई भी तुम्हारा किसी तरह का बुरा न करेगा। तब से रावल नित्य खेलने के लिये आने लगा। यह खबर पादशाह तक पहुँची, उसके काूर नाम का एक मरहटा पंचहजारी उमराव था, उसने अर्ज की कि मूलराज व कमालदीन तो चौसर खेलते और मित्र बने हुए रहते हैं, गढ़ लेवे कौन, यदि हजरत नवाजिश फर्माकर हमें हुक्म देवें तो हम जाकर गढ़ फतह करें। पादशाह ने उसका मंसब बारह हजारी किया और जेसलमेर पर जाने का हुक्म दिया। कपूर ने अर्ज की कि हजरत किसी बड़े सेनापति को नायक करके साथ भेजिए, हम उसके नीचे काम देंगे। अपने भाञ्जे और जमाई मिलकेसर (मलिक केसर) को पादशाह ने बड़ी सेना के साथ विदा किया। जब वह जेसलमेर के निकट पहुँचा तो कमालदीन या काफूर (?) पेशवाई को गया और उसने कहा कि धावा करने से गढ़ हाथ न आवेगा, गढ़ में

सामान न रहेगा तब टूटेगा अतएव तुम घेरा डाल दो। उन्होंने यह बात न मानी। कमाल बोला कि जो न मानो तो मेरे नाम एक रुक्का लिख दो कि तुमने जो घेरा डालकर पड़े रहने की सलाह दी थी वह हमें पसंद न आई। मलिक ने रुक्का लिख भेजा, तब उसने अपना काम उनके सुपुर्द कर दिया, वे तो सीधे गढ़ पर चढ़ने लगे।

कमालद्दीन ने मूलराज को कहलाया कि मेरी रोजी जाती है, अब देखें तुम कैसा युद्ध करते हो। मूलराज रत्नसी ने अपने साथ को समझा दिया कि तुर्कों को निकट आने दो, गढ़ के कँगूरे पर हाथ रखते ही कोई भी तीर गोली मत चलाना; शत्रु गढ़ पर चढ़ने लगे, ठठरियों की ओट देकर सीढ़ियों के द्वारा सैनिक जन ऊपर जा लगे, कपूरा योद्धाओं को उत्तेजित करता हुआ बढ़ा, और मलिक-केसर पोली तक पहुँच गया। पंद्रह हाथियों को द्वार के कपाट तोड़ने के लिये आगे किए। मूलराज सिंहद्वार पर दो हज़ार जुझारों को लिये शस्त्र सजकर तैयार खड़ा अपने साथियों को ताकीद कर रहा था कि भेरी के बजते ही प्रहार करना। जैसे ही तुर्क निकट आए और कँगूरों पर हाथ लगाया कि भेरी बजी, और ऊपर से मतवाले भांगर यंत्र चलने लगे (यह यंत्र शायद नपथा के समान हों)। बहुत से शत्रु मारे गए, इधर पौलि के पास से मूलराज टूट पड़ा। लोहे से लोहा मिला, रत्नसी ने भी द्वार खोल-कर साथ दिया और मलिककेसर व सिराजदी (शिराजुद्दीन) मारे गए, दूसरे भी कई उमरा खेत पड़े, और सत्तर हजार मनुष्य वहाँ काम आए। (यह अतिशयोक्ति है)। पंद्रह ही हाथियों को मार गिराए, कपूर मरहटा भागा, और उसके साथ पादशाही सेना भी पलायन कर गई।

दोहा

"केसर मिलक सिराजदी, वेमूलू हत्थाह ।
जाणै कंदोई ऊथलै, खाजोमंझ कड़ाह" ॥ १ ॥
"भाणेजो पतसाहरो, जामादो पतसाह ।
पृसुसज खाधो मूलरज, सबलै ऊभी बाँह" ॥ २ ॥
"रोसां सहर तागसी, खींचिय प्राणो बाण ।
सिरधड़ सहितो संग्रहे, लीधो जोर विनाँण" ॥ ३ ॥
"सित्तर सहस निकंदिया, कोट भयंकर काल ।
बंधव सैण विछोाड़या, के कूटंति कपाल" ॥ ४ ॥
"कांही सेवग सांभरै, केस भरे के सांम ।
भारेहु केल भरि मूलरज, जीतो गढ़ रो कांम" ॥ ५ ॥
"पनरे पट हत्ती पड़े, सतर हजार कबंध ।
कपूरो नै मरहटै, व्है भागा अनमंध" ॥ ६ ॥

फौज भागी। कमालदी ने आकर कहा कि मलिक केसर, सिराजदी और दूसरे भी वड़े आदमी जो मारे गए उनकी लाशें दीजिए, वे मक्के भेजी जायँगी। मूलराज बोला कि लाशें नहीं उनका अग्नि-संस्कार किया जावेगा और दूसरी लाशों को गीदड़ जरख आदि जंगली जानवर खावेंगे परंतु देने के नहीं। कमालदी कहता है कि यदि लाशें न मिलीं तो पादशाह हमारी खाल खिंचवा देगा। अतएव मेरी प्रार्थना सुनकर लाशें दे दीजिए।

"कपूरो नै मरहटो, भडां उतारे भूत ।
माँगै साह कमालदी, केहर रो तावूत" ॥ १ ॥
"मिलक कहै मूला सरस, रयमन कर मनरोस ।
साह आलम पाड़ावसी मुझ संकानी पोख" ॥ २ ॥

"जड़ घड़ जरखां जंववाँ, मिलक कमाल सवग्ग।
पेस करै जे पातसाह, केहर जाळिस घग्ग" ॥ ३ ॥

"तेरी साई पुत्र हूँ, तू मेरा सुरताण।
वाप तूंज मो वाप है, मूलू जोय प्रमाण" ॥ ४ ॥

"मूलू कहै कमालदी, सत्र न कोई देह।
केहर रा तावूत लै, मैं तोनूँ दीनेह" ॥ ५ ॥

"मुसलमान काँधै विहूँ, ऊ तारे तावूत।
मूलू नै कमालदी, बंधव हुवा जुगूत" ॥ ६ ॥

"ऊपाड़े नर वाहणां, असी सोय तावूत।
···बोलमुख, साहध कै जमदूत" ॥ ७ ॥

"तावूताँ उतारिया, प्रहढोई मड़हाण।
पड़िया दिल्ली-रंढणा, भाखि सदुख दीवाण" ॥ ८ ॥

"दसण गयंदां नाँखिया, भारवंध भुज ठोर।
फनछंर भांभापटा करण, जेहा पावस घोर" ॥ ९ ॥

"पेरोसां सुरताण धिख, वल ढल देखै वेव।
कपूरौ नै सरहटै सिर मूँडे गददेव" ॥ १० ॥

"सामिल मिलक कमालदी, सुज भाखै पतसाह।
केहर सार अदोवदे, सेह भाटा चाचाह" ॥ ११ ॥

पादशाह ने फिर कमालदी को भेजना चाहा तब उसने उजर करके अर्ज की कि हजरत ने मरहटा कपूरा के कहने पर मुझे नीचा दिखाया। मेरे भाई-भतीजे और राजपूतों का नाश कराया। मैं भी खराब हुआ और हजरत भी खुश न रहे, इसलिये अब मैं जेसलमेर पर न जाऊँगा। पादशाह ने बहुत आग्रह के साथ कमाल को फिर रवाने किया। दोहा—

"सुण कुरसाण नखाण अन, एकन दूजी बार।
ईसा वचन संभाहियो, गढ़ चैरंद दुवार॥"

कमालदी ८० हजार सवार साथ लेकर आया और गढ़ घेरा। रोज धावे होने लगे। प्रधान वीकमसी ईडर जाकर चाकरी करता था। उसने गढ़ विग्रह के समाचार सुने और जेसलमेर आया। मूळू रत्नसी को कहा कि आप ने मुझ पर चोरी का झूठा कलंक लगाकर मुझे निकाला था परंतु अब आसकर्ण को पूछकर सच झूठ का निर्णय कीजिए। उस वक्त तो मैंने आपसे कुछ न कहा, पर अब साँच की जाँच की जावे। (तहक़ीक़ात से) आसकर्ण झूठा ठहरा। मूळराज रत्नसी ने जान लिया कि यह हमारा वैरी था। इसी लिए इसने हमारे अच्छे नौकर को खोया, इससे उन ठाकुरों में परस्पर बहुत वैमनस्य बढ़ गया। जसहाड़ोतों ने सोचा कि जो ये हमसे रूठे हुए हैं तो हम क्यों मरें। दूदा ने तो (मूलराज को) छोड़ना न चाहा परंतु आसकर्ण ने उसको सोते हुए बाँध दिया और साँचे में पटककर चल निकला। दूदा का विवाह पारकर हुआ था, वह वहाँ जा रहा।

मूलराज ने भी गढ़ को सजा, रावल जैतसी मृत्यु को प्राप्त हुआ (इसी ख्यात में दूसरी जगह लिखा है कि आग में जल मरा)। मूलराज गद्दी पर बैठा और रत्नसी को राणा की पदवी दी। १ वर्ष ७ महीने राज किया। बारह वर्ष तक गढ़ घिरा रहा तब रसद सामान बीत गया। और तो कोई धान्न रहा नहीं केवल कालवी जवार मास ६ को रहा। मूलराज व रतनसी कहने लगे कि यह अभक्ष्य धान है, हम इसे नहीं खावेंगे और मरना विचार लिया।

दोहा

पाँच कलेवर वारसूं, रावल.आलो चेह ।
आपैं सरगढ़ आपस्यां, विजड़ा वार करेह ॥

कमालदी को कहलाया कि तुम मेरे भाई हुए थे, सो आज भाइयों का वक्त आ गया है, हमारा बीज बचाओ ।

दोहा

"सूवां गाढ़े ते हुवै, दीनो वचन सतोल ।
क्यूँ पालीस कमालदी, वंधु तणारा बोल" ॥ १ ॥
"अखै कमालहि मूलरज, सुणनर वै नरनाह ।
साय अमान समंधरै, सहिया सो पतसाह" ॥ २ ॥
"इक भाणेजो साहजी, कंवर बचाय चियार ।
मूलू कहै कमालदी, सांकी घातो सार" ॥ ३ ॥
"असहांजी आमान, मूलू कहै कमालदी ।
मकरै मूसलमान, मिलकस मारै मनवहथ" ॥ ४ ॥
"मोई मा उतप तजे, नोज मजार निवेस ।
कमाल पयंपै मूलरज, ता सन छोई वेस" ॥ ५ ॥
"कमाल पयंपै मूलरज, (सहूंरोप) सुरताण ।
जांघड़ ऊपर सीस छै, पालिस वचन प्रमाण" ॥ ६ ॥

तब इतने सर्दारों को कमालदीन के सुपुर्द किए—घड़सी, लखमण, मेलगदे, भाटो चानणदे, ऊनड़ किले की पौलि खोलकर १२० मनुष्यों से मूलराज काम आया, जिसकी साची का गीत—

"घड़ रयण गलंती घड़ी घड़ी घट ।
पुड़ली नाखत्र माल प्रज, मोर सिखर उर ऊपर मंडियो,

जेसलमेर के गढ़ का घेरा

"[illegible]धूवली न मूलरज, तरग्र धाय निस फौज टूटती,
उ[illegible]नर जाति आवग्ग,
"सुगिर सिरंग उर सुचित जैत सुत,
खित डोलियो नवह तो खग । निसा को जघटी तिन मटती,
"फिरतै नरना खत्र आग्रफेर, उरधज कियो न जैत अगोभ्रम,
मन मूलरज ज्यूँही धूमेर" ॥

तेईसवाँ प्रकरण

रावल दूदा और बादशाही सेना का युद्ध

देवराज मूलराज का पाटन बैठा। मूलराज रतनसी के मरने पीछे दूदा जसहड़ोत रावल हुआ, वह शाका करके काम आया। फिर रावल घड़सी रतनसीहोत ने पादशाह को प्रसन्न करके राज लिया। रावल घड़सी को जसहड़ तेजसी ने मारा, घड़सी के कोई पुत्र न था, उसकी राणी विमलादे रावल मालदेव (मल्लिनाथ) की पुत्री ने राणा रूपसी के दोहित्र केहर को बारू ब्राहण से बुलाकर गोद लिया। केहर देवराज का रावल हुआ। देवराज के पुत्र हमीर के मारोठ जागीर में थी, उसके वंशज अर्जुनोत भाटी जिनकी संतान जोधपुर में चाकर है। हमीर के वंशजों का एक दल जेसलमेर चाकरी करता जो पहले पोकरण के बाहले (नले) पर रहते थे। अर्जुनोत भाटियों में जैता सालोड़ी पीपल बरसाये व्याहने को आया था, परन्तु कारण विशेष से विवाह तो न हुआ और याचक बहुत से इकट्ठे हो गए। उन सबको उसने विना व्याह हुए ही त्याग दिया। जसहड़ के पुत्र दूदा रावल, तिलोकसी, बाँगण, सांगण, आसकर्ण। जसहड़ पील्हण का और पोल्हण काल्हण का पुत्र था। दूदा तिलोकसी टीकायत न हुए थे, जब मूलराज रतनसी के मरने पर गढ़ पादशाह के हाथ आया तब राणा रतनसी के पुत्र घड़सी, कानड़, ऊनड़ को मूलराज ने अपना वंश बना रखने के वास्ते अपने मित्र (पादशाही सेनापति) कमालदी के सुपुर्द किए थे, उनको वह अपने प्राणों के समान रखता था। इसकी खबर पादशाह को हो गई, तब कमालदी

ने उनको घोड़ों पर चढ़ाकर चुपके से निकाल दिए और वे नागोर में जाकर ठहरे।

(जैसलमेर का) गढ़ सूना था, और रावल मालदे का प्रताप उस वक्त बढ़ा हुआ था, रावल के वेटे जगमाल ने गढ़ खाली देखकर उस पर अधिकार कर लेने का विचार किया। वहाँ जा रहने की तैयारी करके ३०१ गाड़े रसद सामान के भरवाकर वहाँ पहुँचा दिए। बारहट चंद्र रतनू माला का बेटा आपत्ति का मारा मेहवे जा रहा था उसने जाना कि गढ़ मेरे स्वामियों के हाथ से जाता है तो भाटी दूदा तिलोकसी को जो पारकर में रहते थे इस बात की खबर पहुँचाई। दूदा तिलोकसी पहले ही गढ़ में आन जमे और पीछे से जगमाल आया, उसने वहाँ घोड़ों के धँस (खुरचिह्न) देखे। पूछा कि यह क्या बात है, बारहट चंद्र ने जो जगमाल के साथ था, कहा कि दूसरा कोई भाटी ऐसा दिखता नहीं जो गढ़ में आ बैठे और शायद दूदा तिलोकसी जसहड़ के पुत्र होवें तो अजब नहीं। जगमाल वहीं ठहर गया और खबर के वास्ते अपने दो राजपूतों को भेजा। उन्होंने जाकर देखा तो दूदा तिलोकसी ही है। उन्होंने उन राजपूतों के साथ जगमाल को जुहार कहलाया और कहा कि हमारा गढ़ था सो हमने लिया। आदमियों ने यह समाचार जगमाल को आन सुनाए तो उसने पीछा कहलाया कि हमारे ३०१ छकड़े सामान के तो भेज दो। उत्तर दूदा की तरफ से यही आया कि वे तो हमने लिये, अब तुम जहाँ देखो हमारे गाड़े ले लेना। यह सुनकर जगमाल पीछा लौट गया और दूदा गद्दी पर बैठा। वह बड़ा वीर राजपूत हुआ।

जब रावल मूलराज व रतनसी ने (शाका करने का) नियम निश्चय किया था उस वक्त दूदा ने भी उनके साथ वही प्रण लिया था।

एक दिन रावल दूदा दर्पण में मुख देखता था कि अपनी डाढ़ी में उसने एक श्वेत केश देखा, उस वक्त उसे अपनी वह प्रतिज्ञा याद आई जो उसने मूलराज रतनसी के साथ ली थी। मन में सोचा कि जरा तो निकट आन पहुँचो, योंही मर जाऊँगा, इससे तो उत्तम यह है कि कोई ऐसा काम करूँ जिससे नाम रहे। अपना यह विचार उसने अपने भाई तिलोकसी को कहा और वह भी सहमत हुआ। तब दूदा तो गढ़ में रहा और तिलोकसी चारों ओर पादशाही इलाके में लूट-मार करने लगा। काँगड़ेवालों को लूटकर बहुत सी घोड़ियाँ ले आया, लाहोर के पास से वाहेली गूजर की भैंसों का टोला लाया और सोने की मथानी भी। पादशाह के वास्ते पानी-पंथ घोड़ों की सोहबत आती थी उसे मार ली। यह तो बड़े-बड़े बिगाड़ थे, दूसरे भी कई उपद्रव किए। बादशाह ने क्रोधित हो फौज बिदा की (पादशाह का नाम नहीं दिया और दूदा का सिर्फ दसमास ७ दिन राज करना लिखा है अतएव उस वक्त भी सुलतान फ़ीरोज़ तुग़लक ही का देहली के तख़्त पर होना सम्भव है)। गढ़ का घेरा लगा, ये तो शाका करना चाहते ही थे, गढ़ सजा और युद्ध करने लगे। इसकी साक्षी में आसराव रतनू ने बहुत कुछ कहा है उसमें के थोड़े से दोहे यहाँ लिखे जाते हैं—

"आवटियो एकोहटा, दे दुरहय मेल्हाण,
सांभर आयो आगरा, गासोधै रिणटाण।"
"एक सूत तैं संमहै, हूंतासेन वहूत,
पेटांलग काटेपरी, किय तुरकै तावूत।"
"मड़ हूवां आयो मुगल, नाया दल पतढाल,
पड़िया दिल्ली पीढणो, गोरण तोड़े गाल।"

रावल दूदा और बादशाही सेना का युद्ध

"[illegible] कहल सतीतणां, सांकल के काणोह,
    लोवत आई सोवनी, तणोज जतुकाणोह ।"

"कलालि नेसारियो, धिवियो दीण बराह,
    हिंदू ग्राधन आवही, नहीं मिलै छै मांह ।"

"परवाणो पतसाहरो, लिख मूकै मेलाण,
    इण गढ़ हिंदू बाँकड़ो, कर ग्रहियां कैवाण ।"

"जेसलमेर दुरंग गढ़, दूठा जदु दो राव,
    मेवाडंबर छत्र सिर, दीध निसाणं घाव ।"

"नीसाणे घावजिया, गाजैं गहरे सद्द,
    आकंपे पतसाह दल, पड हायो परमद्द ।"

"जेती भुंय गोलाव है, सर पूजै लर राव,
    तेती ढूकन सकही, मारै दूदो राव ।"

"ओ मारै क मोकलै, रहिया दल नैठाह,
    हठ हूवो हू देसरस, प्रारंभ पेरोसाह ।"

"हिंदू कोटन छांड ही, न न तुरके मेल्हाण,
    विग्रह तो बारह बरस, दूदै नै सुरताण ।"

"रावल भुरज पधारियो, ए उपाव कवरेह,
    जंत्र मेरु नैबीड़ियो, घृत खंड खीर भरेह ।"

"ऊपड़ियो पतसाह दल, वागी भर निसाण,
    भाटी दानी भीमड़ै, तब गाडभ परमाण ।"

"सुघन भंडारां नीठियो, लिख मोकलिया पत्त,
    जो असताई सावलै, रावल भखण परत्त ।"

"ढोवै ढूकन सकिया, तोखै जोया त्राण,
    थाहर थापो आपरी, गुह रहियो मेलाण ।"

"सूंडाला घड़ सांमही, फेरी जेसलमेर,
पाछो दल पतसाहरो, घिरियो घाते घेर।"
"दूदो कहै तिलोकसी, तो सिर छत्र धरेह,
परतन भंजां आपणो, तूँ गढ़ छल घणो करेह।"
"आद अनाद उपावियो, लोचन हूँ तजवार,
जीभां हूँ गोहूँ किया, कोरड़ उरह मंभार।"
"हाडां हूँ चावल हुआ, रूराई षड धन्न,
तो असताई संभलो, ते क्यूँ टूकै सन्न।"
"रावल अन परतीवियो, सो क्यूँ अन्न भखेह,
तो भ्रोली बोलाय कर, सिर क्यूँ छत्र धरेह।"
"तो वैठे मैं...सिया कड़िया लाख सवाय,
सो चेतां जीवे कवण, कस वां करसी घाय।"
"अंतेवर पृछाड़िया, वाकेहा परिहाण,
सोड़ा आगे इम कहै, से चाढो निरवाण।"
"अंतेवरे कहावियो सांहसे पूरन गत्त,
वांसे नर हो सांकवा साही अच्छ परत्त।"
"रावल जमहर राचियो, कुसलं पुत्र वोहलाय,
नीमणियाँ इतके रह्यो रह्यो जु अनपरताय।"
"कोट तणै छल वंस छल सरगसमैले साध,
मांधू खड़हड़ भाटियै खग आव्रजियो हाथ।"
"दुसल आणी पै देवरज, कहिआणद अणपाल,
पतसाही दल जूझवा, भड़ाभड़ कमाल।"
"सातल सोह हमीरदै, चक्रवत ऐ चहुवाण,
भाला भंवाड़ै पूनरज, अधिक कलह परमाण।"

"[illegible] [illegible]ही वालियो, फिटक संभ्रम कुल सोंड़,
[illegible]डैचो खग खगूसियां रहै हरो राठोड़ ।"
"[illegible] संवा कह करै, कर सोलह सिणगार,
[illegible]राणी रावल अगै, गल तुलछां दलहार ।"
"[illegible] लोचन तेही वदन, तै वेधन गजथन्न,
टुईभायां तणां विसंचणा, जाणा अंतेवर कन्न ।"
"रावल जमहर रचियो, अतर सरंग प्रमाण,
सोढी कहियो सामनूं सो आयो अहिनाण ।"
"जे सोढी सिरकापियो, तो चहरोथियै संसार,
कहसी रावल श्रोकियो, ऐहो दोप निचार ।"
"जेकर काढांदाहिणीं खांडो कहे भालाह,
श्रोली कुचसी प्राहसम मेलो मिल कार्णाह ।"
"रावल श्रंग निसंग करि, श्रावहि केवाण,
चलग काटी छापियो, नाऊ पुरुप सहनाण ।"

रावल दूदो दिलोकसी गढ़ ऊपर हैं, श्रौर पादशाही फौज तलहटी में, इस तरह विग्रह चलते बारह वर्ष बीत गए, धावे कई बार मारे परंतु गढ़ हाथ न आया। एक दिन रावल दूदा ने रड़ी पर की ग्रामशूकरियों के दूध की खीर बनवाकर पत्तलों के लगवाई श्रौर वे पत्तलें तलहटी में फिंकवा दी। सैनिक जनों ने उनको लेजाकर अपने सर्दार को दिखलाई, तब सेनापति ने विचारा कि बारह वर्ष बीत गए तो भी अब तक गढ़ में इतना सञ्चय है कि अब तक दूध दही खाते हैं। अतः यह गढ़ हाथ आने का नहीं। यह समझकर तुर्कों ने अपने डेरे उठा लिये। उस वक्त जसहड़ के पुत्र आसकर्ण के बेटे भाटी भीमदेव ने उनको भेद दिया, कोई कहते हैं कि सहनाई बजवाकर कुछ रहस्य प्रकट किया श्रौर ऐसा भी कहते हैं कि आदमी

भेज कहलाया कि गढ़ में सञ्चय अब टूट गया है। तुमने जो यह दूध देखा सो तो भंडशूरियों का था, तुम पीछे फिरो, दो तीन दिन में रावल गढ़ के दरवाजे खोल देगा। तब मुगल पीछे लौटकर आये। अब रावल दूदा तिलोकसी ने मरने का निश्चय कर लिया। भीम-देव ने भेद दिया। दोहा—

"गेमी नाम धराविये आसावत अण जाण।
भाटी दीनों भीमदे, तेवढ भोद प्रमाण॥"

रावल ने पहले दिन जोहर किया तब राणी सोढी ने उससे निवेदन किया कि आपके शरीर का कोई चिह्न मिले, रावल ने अपने पाँव का अँगूठा काटकर दिया। दशमी के दिन जोहर हुआ और एकादशी को रावल ने जूझ मरना ठाना।

रावल दूदा के एक कन्या ९ वर्ष की थी, वह अग्नि में प्रवेश करने से भयभीत हुई, इसलिए उसको नहीं जलाया गया। दशमी के दिनआधी रात बीते वह बाला रावल के पास ही सोती थी, सारे राज-पूत मरने को तैयार हो बैठे थे, उनमें धाऊ मेछला नाम का एक कुँवारा राजपुत्र १५ वर्ष की अवस्था का था। वह रावल की पगतली सहला रहा था। उसने निसास छोड़ा, रावल ने कहा कि ऐसा क्यों, अपने तो स्वर्ग में पहुँचनेवाले हैं, फिर तुझे इस वक्त यह दिलगीरी कैसे आई ? वह कहने लगा कि मुझे और तो कोई चिंता नहीं, परंतु शास्त्र पुराणों में ऐसा सुना है कि कुँवारे को गति नहीं, स्त्री स्वर्ग का मार्ग बताती है। रावल ने विचारा कि मेरी यह कन्या भी कुँवारी है और यह अच्छा राजपूत है इसी को व्याह दूँ। तत्काल दोनों का विवाह कर दिया। दूसरे दिन वह बाला भी आग में जल मरी। पौलि खोलकर रावल दूदा तिलोकसी युद्ध के निमित्त गढ़ से नीचे उतरे, लड़ाई हुई, रावल के साथ २५ राजपूत और बाकी

दूसरे सहुए थे। पंजू पायक तिलोकसी के मुकाबले पर आया। तिलोकसी ने वार किया। पंजू को तलवार के खेल में प्रवीण होने का घमंड था सो हाथ पाँवों को समेटकर कुढंगेपन से उस झटके को बचाता ही था कि तिलोकसी की तलवार उसके धड़ को चीरती हुई पृथ्वी पर लगी और वह नौ टुकड़े होकर गिरा। साख "तिल्हरै घाव सैं पांजू हैंकतण, नवे कटके हुवो वहि गयो निभ्भरण।" रावल दूदा ने भाई की बहुत प्रशंसा की। तिलोकसी बोला कि भली बात, आज ही आपने मेरी प्रशंसा की है। रावल दूदा ने कहा कि मेरी डीठ लगती है। इतना कहते ही उसी वक्त तिलोकसी का प्राण मुक्त हो गया। रावल दूदा भी एक सौ मनुष्यों सहित काम आया, रावल की स्त्रियाँ दूसरी तो सब गढ़ पर जोहर की आग में जल मरी थीं, एक मांगलिया राणा की बेटी अपने पीहर खींवसर थी, सो पादशाह खींवसर के पास आया। तब उस राणी ने कहा कि दूदा का मस्तक ला दिया जावे ताकि मैं उसके साथ सती होऊँ। हूंफा सादू ने पादशाह के पास जाकर मस्तक माँगा। पादशाह ने कहा—तीन महीने बीत गये अब सिर की क्या पहचान हो सकती है? हूंफा बोला कि दूदा के सिर को मैं पहचानता हूँ, आप मुझे दिखलाइए मैं उससे बातें करवाऊँगा। सिर दिखलाए गए तो दूदा का मस्तक हँसकर बोलने लगा, उसकी साखी का गीत हूंफा सादू का कहा हुआ—

गीत

"झमकेत स्वरग कज नह भारथ कज दूठ दूदड़ै दिया दूजोण।
पह तिण श्रवणे त्रिणे पेखियो, धड़ पांखै नाचंतो घोण॥
वाळंतावर माल बेगड़ा, वकता सुणै हदै वसियो।
जेसल गिरा तिको दिन जाणै, हाथो ताली दे हँसियो॥

हुं हूं फड़ा मरण किम हारूं, घरसां मिली जती घर
सेन्नूँ मूँछ पीरपण मानै, कमल कहै जो हुवै कर ॥
करसूं विण मूंछ भूंह सौ, खूंजकर म्हजब श्रोपियां ।
श्रंजसियां गढां गिलेवा श्रादम, नीरी हड़ हड़ह दूदो हँसियां ॥''

दोहा रावल•दूदा ही का कहा हुश्रा—

"मैं जाणै तैं मेलियां, विसहर माथै पांव ।
ननखत माणी श्रापरी, श्रहिवा खाव म खाव ॥''

गीत वीठू वाहड़ का कहा हुश्रा—

''धर काज धीर कमल धरै धीरतण, श्रापणो वल श्राऊठ गिर ।''
"पाव पर ठवै दूद परगंजण, सरप करण सुरताण सिर ।
सुविष किलंब सिर कैहर जणसल, पाव परठवै सभै पण
कंदल करण घणो कलमसियां, फेर न सकियो किही फण ॥
मिलधर मेछ कमल सहि डोहण, चाच वसोधर दे चलण ।
मूण सवट तो तणो माडचा, मणखंत माणी निभैमण ॥
वड गिर विषम वडोमड रावल, हुंग पाण तैं दइव डरै ।
पोह पतसाह पाल छल पैहडै, कीधा पगतल राज करै ॥''
''जेसलमेरधणी राव जादव, घणदल सरस मचंतै धाय ।
कालहण करो पड़ै कमसीसे, पड़त नफिरियां मिलकां पाय ॥
श्रस्सी लाख श्रालम दल ईखै सांह लक्ख श्राए सुरताण ।
बुरज सुरज फिरियो राव भाटी, दूदोनह फिरियो दीवाण ॥
सुत जसहड़ सामा सुरताणे, नितनित ढोवा कटक नवीन ।
क्रम राखण दीना नवकोटां, दूदै धरमद्वार नह दीन ॥
पटहथ पतसा गयंद सोताहल पै भाजंता जु मुग्र पड़िया ।
दूध दीठा मैं चक्रवत चुणता, कलतरेस श्राभरण किया ॥

[illegible] डुंगर नर केहर जू वाकर पग पग पै खीजै पड़िया ।
[illegible] सु अधपत ग्रधकंठअवाला, जसहड़ संभ्रम अछै जड़िया ॥
[illegible] दे जसहड़ संभ्रम, भिड़ भद्रजाती असुरभगा ।
[illegible] रायहरे दुज्जणसल, मोती सहिलां सवड़ लगा ॥''

गीत भाटी तिलोकसी जसहड़ का—

''[illegible]तलिया तुरंगम खड़ खगजीना, जुड़ वारथ जोगणपुर जाय ।
[illegible] राव तणा कुल आया, तिलोकसी नह वीसरै ताय ॥
भ[illegible] तोन्हरिया भोम...पावण डरिया मूंमंडरियो—
नर वीसरै जकै सनियाई, अनी आई हूं आयो ॥
अविहड़ सन सहड़ अंगाभ्रम, बड़पुर वजै न विहड़ै वंस,
तीजातणो कोट छै कारण, हांमू करतो डड़ियो हंस ॥''

रावल दूदा के बेटे पोते

(भांडा)
वना
रायसाल
भैंरव
नांदण
तेजा
जैसा
भारमल
हाथी
तेजसी
कल्ला
प्रयाग
नरसिंह
करमचंद
रामा
सूजा
आईदास
पीथा
नाना
करण
पंचायण
मोटा
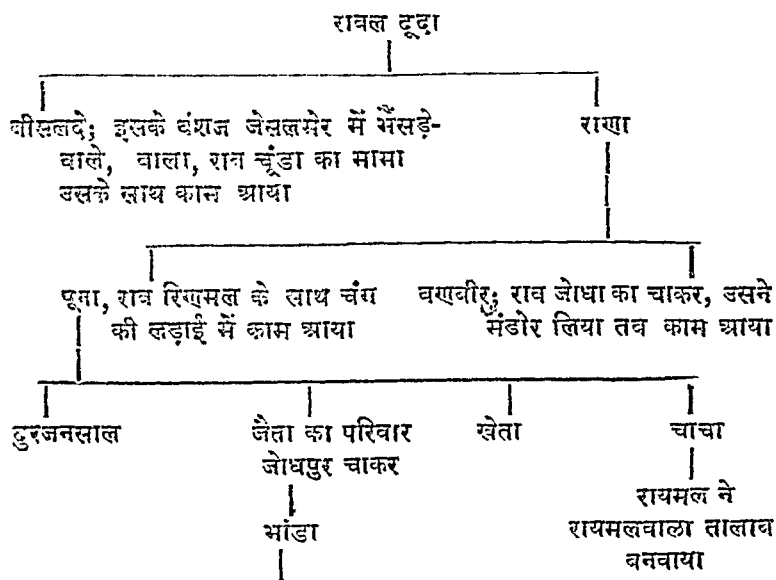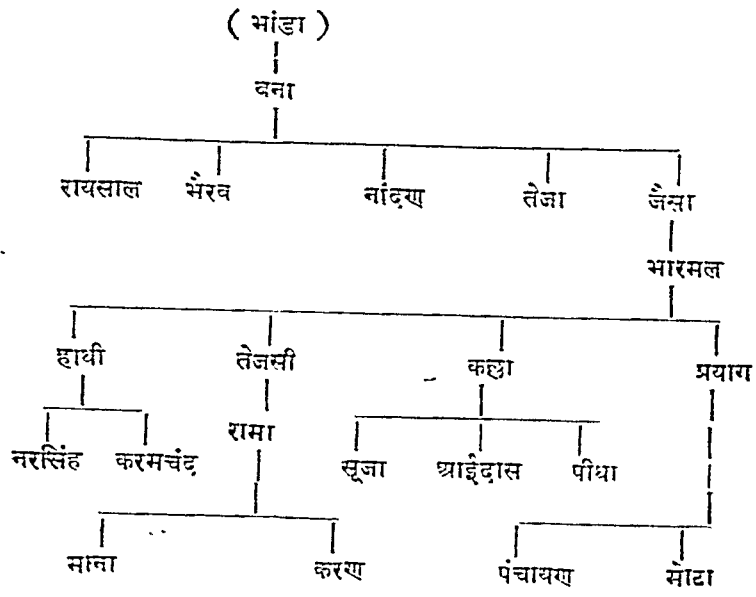
चौबीसवाँ प्रकरण

रावल घड़सी आदि

रावल घड़सी—मूलराज रतनसी शाका करके मरे तब वंश बना रखने के वास्ते रतनसी के पुत्र घड़सी ने ऊनड़ कान्हड़ और एक भांजे देवड़ा को कमालदीन के सुपुर्द किया था। मूलराज इस आपत्काल में कमालदीन का पगड़ी-बदल भाई हो गया था इसलिए कमाल व उसकी बीबी ने उन लड़कों को अपने पुत्रों के समान लाड़ प्यार के साथ छिपा रक्खा और उनके रसोई पानी के लिये दो ब्राह्मण नियत कर दिए थे। जैसलमेर विजय कर जब कमालदीन दरगाह आया तो कपूर सरहठे ने पादशाह से अर्ज की कि मूलराज व कमाल में मैत्री थी इसलिए मूलराज ने अपने भतीजों को कमाल की गोद में दिया है। पादशाह ने कमाल को पूछा कि रतनसी के बेटे व उसका भांजा तेरे यहाँ हैं। यदि हों तो हाजिर कर। उसने अर्ज की कि हजरत मेरे यहाँ तो जाने नहीं और जो होंगे तो मैं निगाह करूँगा। यह कहकर वह घर आया, चारों लड़कों को चार घोड़ों पर चढ़ाकर निकाल दिया और वे नागोर में सकरसर आकर ठहरे। पादशाही फर्मान उन चारों के हुलिए समेत गिरफ़्तारी के वास्ते जगह जगह पहुँच गए थे। नागोर के हाकिम ने उन चारों को पकड़ लिया और पादशाही हुज़ूर में रवाना हुआ। मार्ग में नमाज पढ़ते हुए घड़सी ने उसी की तलवार से उसका मस्तक उड़ा दिया और आप उसी के घोड़े पर चढ़कर निकल भागे, सो चामू आए। अपने भाइयों को वहीं छोड़कर घड़सी भांजे देवड़े को पहुँचाने के

वास्ते आबू गया। पीछा लौटता हुआ मेहवे में आकर एक माली के घर पर ठहरा। मेहवे के राव (मल्लिनाथ) का बेटा जगमाल शिकार को जाता हुआ उधर से निकला तब घड़सी बाहर खड़ा था। उसने जगमाल से जुहार न किया। जगमाल ने पीछा आकर अपने पिता से कहा कि आज अपने गाँव में कोई राजपूत आया है, या तो वह गँवार है या किसी राजवंश का है। रावल ने उसकी निगाह कराई। आदमी ने उसके चाकर से पूछा कि यह कौन है। चाकर बोला—और तो मैं कुछ भी नहीं जानता परंतु एक दिन इसने मुझको मारना चाहा था तब कहा कि जो तू शस्त्र छोड़ दे तो राणा रतनसी की आण (शपथ) खाकर कहता हूँ कि तुझे न मारूँगा। तब तो रावल मालदे ने अनुमान से जाना कि यह रावल मूलराज रतनसी का पुत्र या भतीजा है। उसको बुलाकर बड़े आदर सत्कार के साथ अपने पास रक्खा और जगमाल की बेटी का विवाह घड़सी के साथ कर दिया। पाँच सात महीने के पीछे उसने मालदे को कहलाया कि जो आप कहें तो मैं पादशाही चाकरी में जाऊँ और अपना राज पीछा लेने का कोई उपाय करूँ। रावल मालदे ने प्रसन्न चित्त से उसको विदा दी। घड़सी ने अपने और मनुष्यों को फलोधी के निकट किरड़ा के पास बधाऊड़ा नामी गाँव में रक्खा और आप दस या बारह भाटियों और दो चारणों को साथ लेकर पादशाही हजूर में पहुँचा। बारह वर्ष तक सेवा की परंतु काज न सरा, निपट निराश हुआ और फाकों की नौबत पहुँच गई। ऐसा भी कहते हैं कि घड़सी चतुर था, वहाँ सर्दारों उमरावों के डेरे या बागों में रखवाली पर रह जाता और नित्य प्रति एक रुपया मिल जाता था। इस प्रकार गुजर करके भी वह पादशाही चाकरी करता रहा। एक-बार पूर्व का पादशाह शमसदीन (शमसुद्दीन) दिल्ली पर चढ़-

आया और दिल्ली से २० कोस पर उसकी सेना ने पड़ाव आन डाला। वहाँ से उसने एक कमान (धनुष) दिल्लीश्वर के पास भेजकर कहलाया कि तुम्हारे कटक में कोई ऐसा है जो इस कमान को चढ़ावे। दिल्लीपति ने बीड़ा फेरकर प्रसिद्ध किया कि जो कोई इस कमान को चढ़ावेगा उस पर हमारी बड़ी कृपा होगी। सबने उस धनुष को देखा परंतु उसे चढ़ाने की हिम्मत किसी की न हुई, बहुत से उसके साथ बल करके बैठे रहे। रावल घड़सी के चाकर भाटी जैचंद के पौत्र और ऊदल के पुत्र लूणग ने घड़सी को कहा कि आज्ञा हो तो मैं बीड़ा उठाऊँ। घड़सी ने स्वीकारा, लूणग ने बीड़ा लिया। पादशाही सेवक उसे हजूर में ले गए, कमान उसके सम्मुख धरी गई। लूणग ने उसको चढ़ाकर पादशाह की एक सहेली के गले में डाल दी और यह कहकर डेरे पर आ गया कि अब इसे किसी से कढ़वा लेवें। पादशाह ने अपने बड़े बड़े बलधारियों को बुलाया परंतु कोई उस कमान को निकाल न सका। तब फिर लूणग ही को बुलाकर निकलवाई और खुश होकर पादशाह ने फर्माया कि जो तेरी इच्छा हो सो माँग। लूणग ने अर्ज की कि मेरे और मेरे ठाकुर के चढ़ने के घोड़े दुर्बल हैं सो हमें दो इराकी दिलवाइए। पादशाह ने खास सवारी के दो अश्व उसे दिए। दो दिन के पीछे ही पूरब के पादशाह के साथ युद्ध हुआ, लूणग ने घड़सी को कहा कि अपन लड़ाई से अलग रहें क्योंकि अपने को तो राज पीछा लेना है। यदि हम प्रतिद्वंद्वी को ढूँढ़ निकालें तो अपना लाभ है। युद्ध होने लगा। उस समय घड़सी और लूणग दोनों अश्वारूढ़ हो एक तरफ खड़े रहे और अपने १० जासूसों को भेजकर कहा कि पूरब के पादशाह का पता लाओ। उन्होंने आकर खबर दी कि श्वेत हाथी पर मोतियों की झालरदार अंबाड़ी में

पादशाह बैठा है। ये दोनों उस हाथी के निकट आए और अपने अपने घोड़े उड़ाए। लूणग ने तो एक ही झटके से उस हाथी की सूँड़ काटकर अपनी पाहुरी में डाल दी। घड़सी हाथी के दाँतों पर पाँव टेके अंबाड़ी के भीतर घुसा और पादशाह को नीचे पटककर उसके सिर पर से सवा लाख रुपये के मोल का मुकुट उतारकर ले लिया। दोनों जैसे गये थे वैसे ही लौट आये। इतने में तो दिल्ली की सेना ने पूर्वी सेना को परास्त किया, पादशाह पकड़ा गया। दिल्लीपति के सम्मुख सभी बड़े बड़े उमरा झूठे गाल बजाने लगे, तब बादशाह ने शमसुद्दीन से पूछा कि मेरे इन उमरा में से किसने तुम्हारा मुकाबला किया। वह बोला कि नाम तो मैं जानता नहीं परंतु इन उमरा में से तो कोई न था। वे तो दो हिंदू सवार थे, जिन्होंने मुझे पकड़ा, मेरे हाथी की सूँड़ काटी और मेरे सिर पर से सवा लाख का मुकुट ले गये। यदि मैं उनको देखूँ तो पहचान सकता हूँ। बड़े छोटे उमरा में से तो उसने किसी को न स्वीकारा परंतु सब के पीछे जब घड़सी और लूणग उसके सम्मुख आए तो वह बोला कि यही हैं। घड़सी ने मुकुट और लूणग ने हाथी की सूँड़ पादशाह के सामने रख दी। पादशाह उनसे बहुत प्रसन्न हुआ। उसने फ़र्माया कि जो इच्छा हो सो माँगो। उन्होंने कहा कि हमारा वतन जेसलमेर हमें मिल जावे। पादशाह ने अर्ज मानी, जेसलमेर का मुजरा करा अपने दीवान व बख्शी को हुक्म दिया कि इन्हें फर्मान लिख दो। रावल के साथ काला का पुत्र नेतुंग था जिसके पास बहुत सा धन था। उसे व्यय कर पट्टा करवाया, सब नेगियों को भी इनाम इकराम दिया और सारी सर्कार को राजी किया। एक पादशाह के हलालखोर (भंगी) को कुछ न मिला। उसने कुछ फांस मारी थी परंतु अंत में उसका भी मन मना लिया। फिर पादशाह की दर्गाह से बिदा होकर चले

और जेसलमेर से ३ कोस वासणपी के आगे राजवाई की तलाई पहुँचे, जो जेसलमेर और वासणपी के बीच में है। वहाँ कुछ अपशकुन हुए, वे वहाँ ठहर गए। शकुनी को बुलाकर फल पूछा। वह बोला कि यहाँ किसी मनुष्य का बलिदान करना चाहिए। रावल के साथ १२ मनुष्य भिन्न-भिन्न शाखाओं के थे, केवल रतनू चारण आसराव और उसका बेटा दोनों एक ही घर के थे। बारहट ने विचार करके कहा कि और तो सब शाखा प्रति एक एक जन हैं और हम दो हैं अतः हमारे में से एक को बलि दे दो। यह विचार हो ही रहा था कि एक मेव पादशाही फर्मान लेकर वहाँ आन पहुँचा। इन्होंने समझा कि यह हमारे साथ का साथ लगा आया सो ठीक नहीं (इसमें कुछ भेद है)। पत्र खोलकर पढ़ा तो उसमें लिखा था कि गढ़ मत देना। इन्होंने उस मेव को मारकर खदिर वृक्ष के नीचे बलि में चढ़ाया और नगर में पहुँच फर्मान बतलाकर गढ़ पर अधिकार किया। उस वक्त फिर कुछ शकुन हुआ। रावल ने शकुनी से पूछा, उसने कहा कि गढ़ के साथ रावल कोई ऐसा काम करे कि जिसमें उसका नाम रह जावे। रावल ने अपने नाम पर घड़सीसर तालाब वहाँ बनवाया। तीन वर्ष ६ महीने रावल घड़सी ने राज्य किया। भीम जसहड़ोत के पुत्र तेजसी ने गढ़ की तलहटी में बावड़ी पर गोठ की। रावल घड़सी भी वहाँ आया, जल्दी करके वह घोड़े पर से उतरता था कि तेजसी ने उस पर असि-प्रहार किया, मस्तक टूटकर पृथ्वी पर गिर पड़ा और धड़ को घोड़ा लेकर गढ़ पर चढ़ गया। राणी को खबर हुई। उसने गढ़ का दर्वाजा बंद करवा दिया, तेजसी भी पीछे लगा आया। गढ़ पर से उस पर पत्थर बरसाने लगे जिससे उसके कई साथी मर गए और वह भाग निकला। राणी विमलादे ने विचार किया कि रावल के कोई भाई या बेटा तो है नहीं। अब गद्दी पर कौन बिठाया जावे। तब उसने अपने

सर्दारों से कहा कि कोई ऐसा राजपूत है जो पाँच सात दिन गढ़ की रक्षा कर सके जितने में मैं मूलराज के पौत्र देवराज के पुत्र राणा रूपसी के दोहित्र केहर को वारूछाहिण से बुला लूँ। आसकरण का पुत्र डेल्हा जसहड़ बोला कि मैं गढ़ की रक्षा करूँगा परंतु पीछे तुम हमारे साथ भलाई करना, हम कुछ विनती करें उसे मानना। विमलादे ने स्वीकारा, वचन दिया तब डेल्हा अपने ५०० राजपूतों को लेकर गढ़ के द्वार पर आन बैठा। विमलादे ने कंगूरों पर से आदमी को नीचे उतार केहर को बुलवाया। जब वह आन पहुँचा, टीका उसके ललाट पर दिया। गढ़ का द्वार खुला, सब भाटियों ने आकर केहर देवराजोत को जुहार किया। हरामखोर (तेजसी) भागा। विमलादे ने डेल्हे को जेसलमेर से १२ कोस पोहकरण के मार्ग पर चाधणा गाँव जागीर में दिलाया। (टॉड लिखता है कि विमलादे अपने पति की इच्छानुसार केहर को पाट विठाकर सती हो गई।)

रावल घड़सी के साथ आपत्काल में ये राजपूत थे—जैतुंग, महिपा कोल्हावत, जसहड़ डेल्हा आसकरणोत, जैचंद लूणग ऊदलोत, बारहट आसराव रतनू, आसराव तिहुणराव का तिहुणराव जोगी, देदा बूजा रतन का, चिराई आसराव का। गीत रावल घड़सी का—

घणादीह लग ताहरो नाम रहसी घणोघण जूझार जूवाँ सैधायाह, आप प्राण दिलीऊबेली पूरबरो गो पतसाहा॥ हेकण घाव धरावल आणी पड़गाहे दिल्ली पतसाह, पूरब पोह गमियो पर दीपै रतनावत घड़सी रिमराह॥ वेढक जेसलमेर चालियो कव-सीगल बोलै जस कंठ, वड़रावल सरगापुर वसियो विमलादे सहितो वैकुंठ॥

रावल घड़सी को वहुत दिनों पीछे जेसलमेर मिला था। उस वक्त-देश में हड़या पोहण (भाटी) सवल थे। वे रावल की आज्ञा नहीं

मानते थे। रावल का कुछ बस नहीं चलता था। रावल मालदेव भी
हइयों का जमाई था इसलिए वह उनका पक्ष लेता था। रावल
घड़सी को भी मालदेव की बेटी ब्याही थी अतः घड़सी और जग-
माल मालावत में बड़ी प्रीति थी। रावल मालदेव देवी की यात्रा
के वास्ते द्रेग में आया तब घड़सी और जगमाल भी साथ थे।
घड़सी ने जगमाल को कहा कि ये द्रेग के हइया पोहड़ हमारी आज्ञा
नहीं मानते हैं, जब तक ये जेसलमेर की धरती में रहेंगे तब तक
उसका सुख हमें आने का नहीं। जगमाल बोला कि इनको मार लेना तो
कुछ कठिन नहीं है परन्तु ये रावलजी के कृपापात्र हैं, यह सुनकर
घड़सी उदास सा हो गया। तब जगमाल ने कहा कि चित्त में संतोष
रक्खो। इनको हम किसी तरह मारेंगे। दूसरे दिन प्रभात को जग-
माल ने जाकर रावल मल्लिनाथ को कहा कि हम अमुक गाँव पर
छापा मारना चाहते हैं, सो आप साथ को हुक्म देवें। रावल का यह
नियम था कि प्रभात होते शौचादि से निवृत्त हो स्नान कर ध्यान में
बैठ जाता सो पहर दिन चढ़े तक बोलता न था। जगमाल ने हइया
पोहड़ को तो दरीखाने बिठाया और जाकर रावल के कान में कहा
कि राजपूतों को आज्ञा दीजिए कि मेरे साथ चलें। रावल बोला तो
नहीं, पर हाथ के इशारे से आज्ञा दी। जगमाल ने आकर राजपूतों
को कहा कि उठो, जिस काम के लिए रावलजी ने आज्ञा दी है सो
करें और बाहर आकर प्रकट किया कि हइया पोहड़ों के मारने का
हुक्म है, उन पर टूट पड़े और मार गिराए।[1]

---

(१) नैणसी ने मूलराज रतनसी, दूदा तिलोकसी, व घड़सी का समय
नहीं दिया है केवल रावल जेसल का सं० १२१२ में जेसलमेर बसाना लिख-
कर पिछले राजाओं का राजत्वकाल लिखा है। यदि हम उसके आधार पर
गणना करें तो मूलराज रतनसी का पतन सं० १३४७-४८ में और दूदा ति-

लोकसी का सं० १३५७–५८ में मारा जाना सिद्ध होता है। अब इसी ख्यात में दी हुई दो एक बातों की जाँच करने से स्पष्ट हो जावेगा कि उपर्युक्त समय सही नहीं है।

रावल भोजदेव के पिता का गोरीशाह से लड़ना और जेसल का गोरियों की सहायता से राज पाना ठीक नहीं हो सकता। फारसी तवारीखों के मुताबिक सुलतान शहाबुद्दीन गोरी अपने भाई गयासुद्दीन के हुक्म से जो गोर और गजनी का सुलतान था स० ५६७ हि० (स० ११७१ ई०; सं० १२२६ वि०) में पहले पहल मुल्तान पर चढ़कर आया था।

सं० १३२७ में होनेवाले रावल जैतसी का गुजरात के पादशाह के पास जाना नहीं बन सकता, क्योंकि उस वक्त तो गुजरात में बघेले राज करते थे। सुलतान अलाउद्दीन खिलजी ने सं० १३५३–५१ में राय कर्ण बघेले से गुजरात ली थी।

सं० १३५७–५८ में सुलतान अलाउद्दीन खिलजी पादशाह दिल्ली का था। फारसी तवारीखों में इस जेसलमेर के शाके का कोई जिकर नहीं पाया जाता।

रावल मल्लिनाथ ख्यात में दिए हुए दूदा तिलोकसी के समय से बहुत पीछे हुआ था। दूदा तिलोकसी के समय में तो खेड़ में राव टीडा का होना बन सकता है।

ऐसे ही कर्नल टॉड ने मूलराज की गद्दीनशीनी का समय सं० १३५० दिया है और सं० १३५१ में वह शाका करके काम आया। फिर लिखा कि एक अर्से तक गढ़ मुसलमानों के अधिकार में रहा। जब पाल्हण के पौत्र दूदा तिलोकसी ने मुसलमानों को खदेड़ना शुरू किया तो तंग आकर उन्होंने गढ़ मेहवे के राठौड़ राव मल्लिनाथ के बेटे जगमाल के सुपुर्द कर दिया। दूदा तिलोकसी ने राठोड़ों से गढ़ लिया तब फिर पादशाही फौज आई और दूदा तिलोकसी मुकाबले में मारे गए। गढ़ फिर मुसलमानों के हाथ में आया। घड़सी ने मेहवे के राव की बहन से विवाह किया था जिसकी मँगनी पहले देवड़े राव से हुई थी। उसी अर्से में अमीर तैमूर हिंदुस्तान में आया। यह सुनकर घड़सी दिल्ली गया और तैमूर की फौज से बड़ी बहादुरी के साथ लड़ा, जिस पर दिल्लीश्वर ने प्रसन्न होकर जेसलमेर उसे पीछा दिया। मेहवे के राठोड़ और हमीर के बेटे जैता लूणकर्ण व मेंडू की मदद से उसने जेसलमेर

लेना चाहा था परंतु दूदा तिलोकसी ने गढ़ न दिया। जेसलमेर कितने समय तक मुसलमानों व दूदा तिलोकसी के अधिकार में रहा यह टॉड साहब ने नहीं लिखा है।

यदि हम मूलराज का समय सं० १३५१ का मानकर सुलतान अलाउद्दीन खिलजी के समय में उसका मारा जाना स्वीकारें तो हमको यह भी मानना पड़ेगा कि करीब १०० वर्ष तक जेसलमेर पर मुसलमानों का व दूदा तिलोकसी का अधिकार रहा। इस अवस्था में यह तो कदापि बन नहीं सकता कि मूलराज के मारे जाने के थोड़े ही अर्से पीछे दूदा तिलोकसी के हाथ में गढ़ आ गया हो और क्योंकि दूदा मूलराज का समकालीन था तो यह भी विश्वास योग्य नहीं कि वह मूलराज की मृत्यु के पश्चात् ८० या ९० वर्ष तक गढ़ का स्वामी रहा हो। फिर कैसे संभव है कि उसने जगमाल राठौड़ से गढ़ लिया क्योंकि जगमाल उसके पिता मल्लिनाथ की मृत्यु के पीछे (सं० १४५७ में) मेहवे का स्वामी हुआ। दूसरा सिरोही में देवड़ों का राज भी सं० १३७० के लगभग स्थापित हुआ। उस वक्त तक आबू पँवारों के अधिकार में था। अतः न तो आबू के देवड़े का मूलराज का भांजा होना बन सकता और न घड़सी का आबू उसको पहुँचाना बन सकता है। तीसरा अमीर तैमूर की चढ़ाई हिंदुस्तान पर सं० १४५५ में हुई थी। घड़सी का तैमूर के साथ युद्ध करना समझ में नहीं आता। तैमूर ने दिल्ली फतह कर ली थी। सुलतान महमूद तुगलक शाह परास्त हो गया था। दिल्ली जाते वक्त तैमूर ने भटनेर का गढ़ भी विजय किया था, जिसके वास्ते वह आप अपनी पुस्तक "तुजके" तैमूरी में लिखता है और फिरिश्ता ने उसका वर्णन ऐसे किया है कि "मिर्जा पीर मुहम्मद जहांगीर, शाहजादे अमीर तैमूर, को मुल्तान में कई महीने तक रुकना पड़ा और उसकी सेना का भी वहाँ बहुत नुकसान हुआ। आखिर जब तैमूर का लश्कर पास आया तब वह उनसे जा मिला और भटनेर के हाकिम की शिकायत पिता के पास की। अमीर तैमूर दस हजार सवार साथ ले अजोधन, देपालपुर लूटता हुआ भटनेर पहुँचा। अजोधन देपालपुर के कई लोगों ने भटनेर में जाकर शरण ली थी और गढ़ में इतना स्थान न रहने से बहुत से मनुष्य खाई के पास ही पड़े थे। अमीर ५० कोस मार्ग एक दिन में चलकर भटनेर में दाखिल हुआ। यह गढ़ हिंदुस्तान के नामी गढ़ों में है

और माग से दूर होने के कारण कभी कोई बिगानी सेना वहाँ न पहुँची थी। जो लोग खाई के किनारे ठहरे थे वे सब मारे गए और उनका माल असबाब लूट लिया। राव कुलचंद जो वहाँ का हाकिम था कुफ्फार-हिंद के नामी बहादुरों में से था, वह गढ़ से निकलकर अपनी सेना का परा जमाकर युद्ध पर उतारू हो गया। अमीर के सिपाहियों ने हमला करके उसे शहर में हटा दिया। नगर के निकट अमीर आप लड़ाई में शामिल हो गया और संध्या पड़ते पड़ते शहर फतह हो गया। कई लोग कत्ल किये गये और लूट का माल भी खूब हाथ लगा। फिर अमीर गढ़ की ओर बढ़ा व सुरंगें लगाना शुरू किया। राव ने एक सैयद की मार्फत बड़ी दीनता के साथ अर्ज कराई कि एक दिन की छुट्टी दीजिए, गढ़ खाली कर दूँगा। अमीर ने इसको स्वीकारा, परंतु दूसरे दिन जब करार पूरा न हुआ तो फिर सुरंगों का काम जारी किया गया। राव ने अपने बेटे को अमीर के पास भेजा और दूसरे दिन आप भी बहुत सा नजर नजराना लेकर हाजिर हुआ। कई किस्म के शिकारी जानवर और ३०० घोड़े इराकी भेंट किए। अमीर ने भी उसे भारी खिलअत दी। अपने दो सर्दार सुलेमानशाह और अमीरुल्ला को तैमूर ने गढ़ के दर्वाजे पर इसलिये नियत किया था कि वे उन आदमियों को ढूँढ़ निकालें जिन्होंने काबुली मुसाफिर को, जो मिर्जा पीर मोहम्मद जहाँगीर के नौकरों में से था, मारा था, और उनको सजा दें। तदनुसार ५०० आदमी कत्ल किए गए। इस पर राजा के भाई बेटों ने लड़ाई की। तैमूर ने राजा को कैद कर लिया और शहर में घुसा। नगर-निवासियों ने अपनी स्त्रियों व बाल-बच्चों को आग में जला दिया और वे लड़ने लगे। तैमूर के कई आदमी मारे गये तब उसने नगर को फूँक दिया और वहाँ से कूच कर सरसती में आया।" मालूम होता है कि उस वक्त भटनेर का गढ़ भाटियों ही के अधिकार में था।

उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए ऐसे कहना अन्यथा नहीं कि कर्नल टॉड के लेख की अपेक्षा नैणसी का वृत्तांत विशेष विश्वास के योग्य है। उसने पादशाह का नाम "महम्मद खूनी" दिया है जो शायद मोहम्मद तुगलक हो क्योंकि वह भी बड़ा जालिम पादशाह हुआ है और उसका समय भी दूदा तिलोकसी के समय से मिल जाता है। आश्चर्य नहीं कि मूलराज रतनसी और दूदा तिलोकसी के शाके उसी समय या तो मुहम्मद तुगलक या

फीरोज तुगलक की पादशाहत में (सं० १४४०-५० के लगभग) हुए हों। नैणसी ने भी "गढ़ फतह हुए" उस प्रसंग में रावल दूदा तिलोकसी ने जोहर किया और पादशाह फीरोजशाह की फौजें जेसलमेर आईं ऐसा लिखा है। इस बात की पुष्टि इससे भी होती है कि मलिक कमालुद्दीन मोहम्मद तुगलक का एक नामी सामंत था। मोहम्मदशाह के उत्तराधिकारी फीरोजशाह तुगलक के समय में रावल घड़सी ने जेसलमेर पीछा पाया हो। घड़सी ने यदि किसी पादशाह का मान-मर्दन किया हो तो वह अमीर तैमूर नहीं किंतु बंगाल का शाह शमसुद्दीन हो सकता है जैसा कि नैणसी ने लिखा है कि "पूरब देश का पादशाह शमसुद्दीन चढ़ आया।" अंतर इतना ही है कि फारसी तवारीखों में इस विषय में ऐसा लेख मिलता है कि गोरखपुर के राजा उदयसिंह को जेर करके जब सुलतान (फीरोज तुगलक) स० ७५४ हि० (स० १३५४ ई०) में बँधवा की सीमा में पहुँचा, अलयास हाजी ने (लखनौती का सुलतान जिसने अपना नाम शमसुद्दीन शाह रक्खा था) खुदसरी इख्तियार-कर ताज बादशाही सिर पर रक्खा, बंगाल, बिहार व बनारस तक मुल्क फतह कर लिया। फीरोज उधर गया तो वह बँधवा छोड़कर कदाला गाँव में चला गया। पादशाह के वहाँ पहुँचने पर लड़ाई हुई जिससे पादशाही सेना पीछे हट कर गंगा किनारे आ टिकी। पड़ाव का स्थान अच्छा न होने से पादशाह दूसरी जगह देखने को चला, हाजी अलयास ने समझा कि पादशाह लौटता है। गढ़ में से निकलकर धावा मारा परंतु सफल न होने से पीछा गढ़ में भागा और ४४ हाथी छत्र और उसका सारा राजसी ठाट पादशाह के हाथ आया और प्यादे बहुत मारे गये और बहुत से कैदी पकड़े गये। दूसरे दिन पादशाह ने कैदियों को छोड़ दिया। वर्षा ऋतु आ जाने से पादशाह ने कूच किया। स० ७५७ हि० (स० १३५६ ई०; सं० १४१३ वि०) में लखनौती और बंगाल के सुलतान शमसुद्दीन शाह का एलची फीरोजाबाद में फीरोजशाह तुगलक के दर्बार में आया और बहुत सी भेंट देकर संधि के निमित्त निवेदन किया। पादशाह भी उससे सम्मत हुआ, एलची को आदर-सत्कार के साथ बिदा किया, और उसी दिन से बंगाल और दक्खिन दिल्ली के अधिकार से निकल गए। स० ७५६ हि० (स० १३५८ ई०; सं० १४१५ वि०) में शमसुद्दीनशाह ने अपने चंद उमरा के साथ फिर नजर नजराना भेजा।
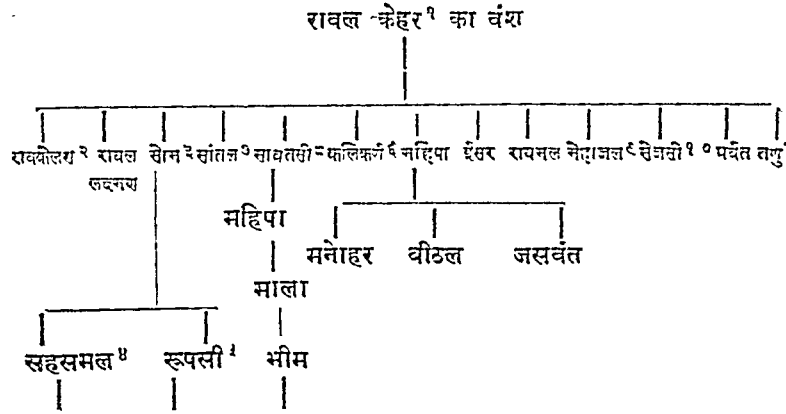
(१) रावल घड़सी के मारे जाने पर उसकी राणी विमलादेवी ने केहर को गोद लेकर गद्दी पर बिठाया। वह बड़ा प्रतापी हुआ, ३४ वर्ष १० मास ६ दिन राज किया और अपनी मौत से मरा।

(२) बड़ा बेटा था जो लाछां देवड़ी के पेट से उत्पन्न हुआ। उसने रावल केहर से पूछे बिना अपना विवाह मेहवचां के यहाँ कर लिया इसलिये केहर ने उसको निर्वासित करके दूसरे पुत्र लक्ष्मण को पाटवी बनाया।

पादशाह फीरोजशाह ने भी ताजी तुर्की घोड़े और दूसरी कई क़ीमती चीज़ें भेजीं परंतु उनके पहुँचने के पूर्व ही शमसुद्दीनशाह मर गया और उसका बेटा सिकंदरखाँ बंगाल का सुलतान हुआ।"

इसके अतिरिक्त यह भी कल्पना हो सकती है कि फीरोजशाह तुगलक—जैसा कि पहले लिख आए हैं—राव रनमल भाटी की पुत्री के पेट से पैदा हुआ तो क्या आश्चर्य है कि इस संबंध के खयाल से उसने रावल घड़सी को जेसलमेर पीछा दे दिया हो।

सारांश कि या तो मूलराज रतनसी के पीछे कई वर्ष तक जेसलमेर दूदा तिलोकसी व उसकी सन्तान के हाथ में रहा हो या मूलराज ही मोहम्मदशाह तुगलक के समय में गद्दी पर आया हो।
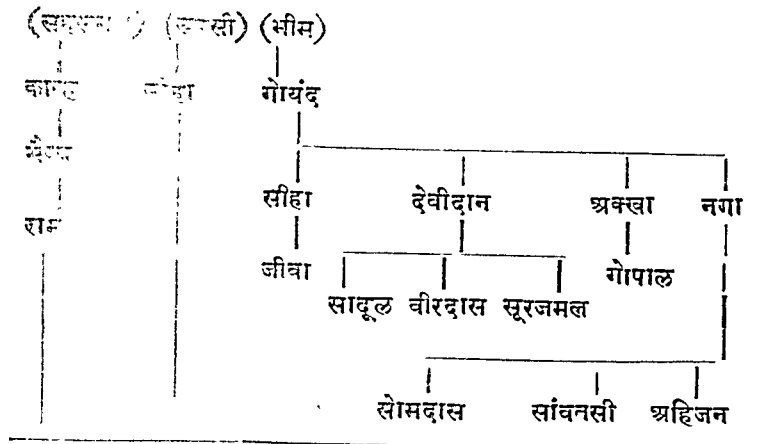
(३) लाछां देवड़ी के पेट का, कई दिन तक विक्रुंपुर का स्वामी रहा। एक बार एक कतार (ऊँटों की पंक्ति) का महसूल चुकाने गया था कि पीछे से केलण ने आकर वीकमपुर पर अधिकार कर लिया। सोमने देरावरली और पाँच सात वर्ष जीवित रहा।

(४) इस पर जेसलमेर का रावल चढ़ आया। सहस-मल ने गढ़ का द्वार खोलकर युद्ध किया और मारा गया। देरावर में, जहाँ उनका अग्नि संस्कार हुआ था, सोम और सहसमल की देव-लियाँ बनी हुई हैं। सहसमल की संतान फलोधी खीचवद में हैं।

(५) अपने भतीजे को लेकर सिंध में चला गया, परंतु राव वरसिंह ने उसे पीछा बुलाकर धोवसा, वजू, कुंपासर, सिंध और पीथासर पाँच गाँव जागीर में दिए। पहले ये गाँव राखसियों के थे। रूपसी की संतान गाँव आवधी व बजू में है।

(६) लाछां देवड़ी के पेट का, जिसकी संतान जैसा भाटी जोधपुर के चाकर हैं।

(७) लाछां देवड़ी के पेट का। (कर्नल टॉड के लेखानुसार इसने सांतलमेर बसाया, जो अब जोधपुर राज्य में है।)
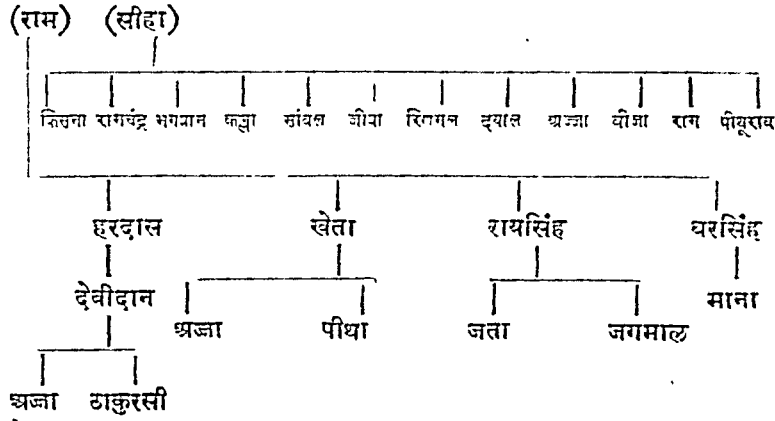
रावल लक्ष्मण केहर के पाट बैठा, वर्ष ३१ दिन १३ राज किया। इसके तीन पुत्र थे—वैरसी टीकेत, रूपसी और राजधर। इनकी संतानों में पाटवी तो लखमण पोतरा कहलाती है और दूसरे लखमण भाटी कहे जाते हैं। रूपसी लखमण का इसकी जुदी शाखा है जो रूपसी करके प्रसिद्ध है; उसमें मादलियावाले और पोतकर्णवाले दो विभाग हैं। जेसलमेर राज्य में रूपसी (भाटी) बहुत हैं। इनका वतन काछा

---

(८) सांवतसी की संतान सांवतसी भाटी कहलाती है। उनकी जागीर में जेसलमेर से दस और गोरहरा से तीन कोस पर कोटड़ो नाम का गाँव है। रावल कल्याणमल और मनोहरदास के राज्य-समय में सांवतसीहोत भाटियों का बड़ा आदर था।

(९) लीलादेवी मेहवची के पेट का, इसकी संतान मेहाजलोत भाटी कहलाते हैं। इनकी जागीर में जेसलमेर से ३० कोस ऊमर-कोट के मार्ग पर मेहाजलहर गाँव है। गाँव वुज के पास तिसा में भाटी नाथा किसनावत रहता है।

(१०) लाछां देवड़ी के पेट का।

लुद्रवा से दो कोस परे है; पहले इनके रावताई थी। नाथा हरदास रूपसी जैसलमेर राज्य में हैं; करमचंद जस्सा का जिसके पुत्र बीका और भागचंद, वीरदास नीसलोत रायसल देवा का, अमरा भाखर का, चंद्रराज का पौत्र; भाटी बीछुल गोयंदोत जोधपुर चाकर।

राजधर, लखमण का जिसके वंशज राजधर भाटी कहलाते हैं, जैसलमेर राज्य में उनके दो कोहर (कुंए) और दो गाँव—घणोली जैसलमेर से एक कोस, सतोही १५ कोस, ऊमरकोट के मार्ग पर जागीर में हैं। बांमणो का सूजेवा, लाठी से कोस ४, रावल कल्याणदास ने भाटी जसवंत को वतन कर दिया था। राजधर का पुत्र जैतमाल। जसवंत वैरसलोत अच्छा राजपूत हुआ, रावल मनोहरदास के समय में वह चार प्रधानों में था। जसवंत के पुत्र—भोपत, उदयसिंह, भोजा, साम, जोगीदास। भोपत का बेटा भागचंद। वैरसल का दूसरा पुत्र सगता (शक्तिसिंह); सगता का पुत्र किसना और विसना (विष्णु); धोधा, वीरदास और सूरजमल।

रावल वैरसी लखमण का—१९ वर्ष, ९ महीने १७ दिन राज किया। पुत्र चाचा (चाचगदेव) टीकेत, ऊगा, मेरा और वणवीर।

ऊगा[१] वैरसिंहोत का वंश
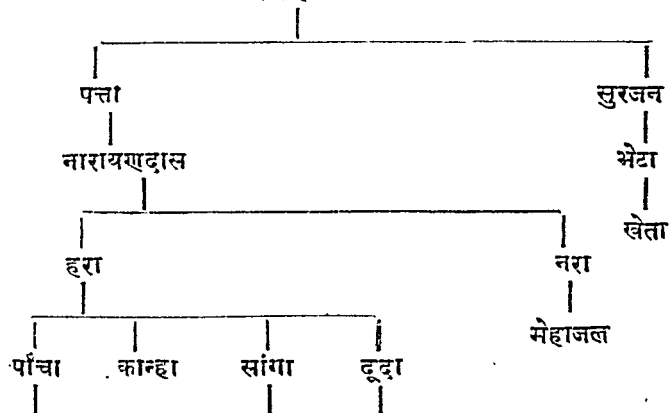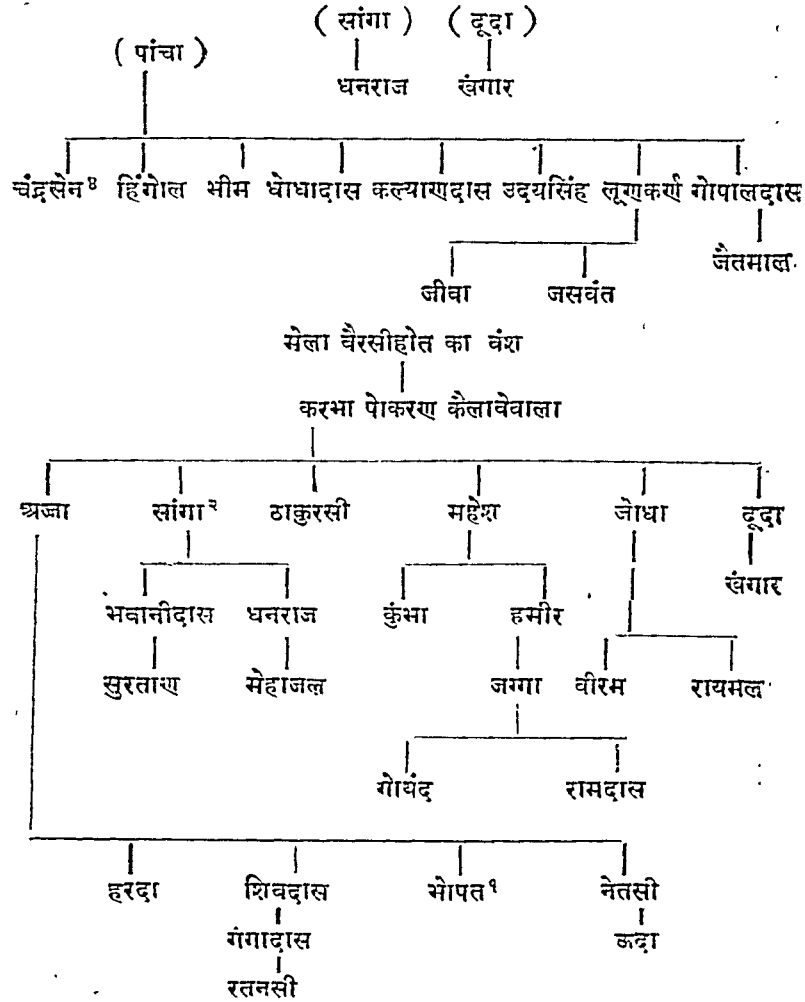
(१) सं० १६५५ में अर्जुन ने मारा।

(२) बादशाह हुमायूँ का चाकर, ठट्टे में काम आया।

(३) वतन सिंध का गाँव सावड़ा जेसलमेर छोड़कर बारोटिया (लूटमार करनेवाला) हुआ।
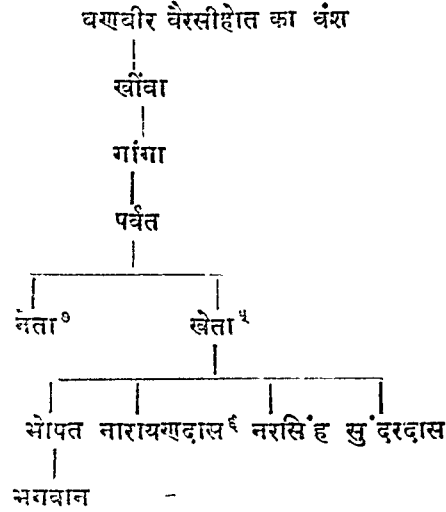
रावल चाचा (चाचकदेव) वैरसी का पुत्र गद्दी पर बैठा, वर्ष १८ मास ११ राज किया। किसी काम के वास्ते सूराकर से ठट्टे गया था। लौटते वक्त ऊमरकोट के स्वामी सोढा मांडण ने अपनी भतीजी का विवाह उसके साथ किया। ऊमरकोट व जेसलमेर के स्वामियों में सदा से शत्रुता चली आती थी। रावल चाचा ने दाणा मांडण के भतीजे भोजदेव भीमदेव को कुछ कुवचन कहे जिस पर भोजदेव ने चूक करके रावल को मार डाला। साथ में जो भाटी थे उन्होंने दो एक कोस पर डेरा जा जमाया और रावल के पुत्र

---

(४) राजा गजसिंह सूरजसिंह के मोहनिया नाम की पातर पासवान थी। उसकी बेटी को सं० १६७९ में गोयंदास भाटी ने जोधपुर में परणाई और चंद्रसेन को जागीर देकर अपने पास रक्खा।

(५) राव जैतसिंह राजावत का नौकर।

(६) खीनावड़ी जागीर में थी।

(७) रा० मोहनदास राजावत के नौकर।

देवीदास को बुलाया। उसने आकर ऊमरकोट घेरा, राणा सांडण निकल भागा परन्तु पीछा कर आठ कोस पर उसे जा लिया और मारा। भोजदेव भीमदेव भी पहले तो निकल भागे थे, पीछे १४० आदमियों सहित आकर मारे गए। राव सांडण का मस्तक वटवृक्ष पर लटकाया गया और ऊमरकोट का गढ़ गिराकर उसकी ईंटें जेसलमेर लाई गई जिनसे कर्ण का महल तैयार कराया।

साखी का गीत—

छत्रपत सुरताण चाचर नां झेवा फूटी दह दिस बात फुड़ी,
संडण गुडिया नहीं महारण ग्रहणे राजकुमार गुड़ी।
त्यै पांतरै वड़ो छत्र पड़ियो वोटण गढ़ां अथग जल वोल,
ने वर रोल किया मृगनैणी राणे कियो न पाखर रोल।
सांडण चाचगदे मारेवा करै जिगन मन कूड़ किये,
ऊतारीयो सनाह आपरो दलह करी सनाह दियो[1] ॥ १ ॥

रावल देवीदास चाचकदेव का—रावल चाचा ऊमरकोट पर चढ़ा था, उन्होंने अपनी बेटी का विवाह उसके साथ कर फिर दगा से उसको मार डाला। उसके साथ के भाटियों ने दो-चार कोस दूर जाकर डेरा डाला और जेसलमेर से देवीदास को बुलाया। जब वह आया तो भाटियों ने उसके तिलक (गद्दी का) करना चाहा परन्तु देवीदास बोला कि मैं अभी टीका लेना नहीं चाहता, या तो मैं अपने पिता के मारनेवाले सांडण को मारूँगा या मैं ही मरूँगा। उसके सब साथी भी पूर्ण उत्तेजित होकर उससे सहमत हुए

(१) कर्नल टॉड ने चाचकदेव का एक ब्याह मारवाड़ के राव जोधा की कन्या से और दूसरा सेता के राजा हयातखाँ की बेटी से होना लिखा है और यह भी कहा है कि उसने मारवाड़वालों से सांतलमेर लिया। देवीदास का नाम वंशावली में नहीं लिया, चाचगदेव के पीछे वैरीसिंह का गद्दी पर बैठना कहा है।

और ऊमरकोट पर धावा कर दिया, गढ़ में जा घुसे और बहुत से सोढ़ों को असिधारा में बहाया। मांडण अपने भतीजों भीमदेव, भोजदेव सहित निकल भागा परंतु पीछा कर आठ कोस पर उसे जा लिया और लड़ाई हुई जहाँ मांडण, भीमदेव व भोजदेव १४० सोढों सहित मारे गए। ऊमरकोट के गढ़ को गिराकर देवीदास उसकी ईंटें जेसलमेर ले गया जिनसे कर्ण महल चुनवाया।

रावल देवीदास के समान कोई प्रतापी रावल जेसलमेर की गद्दी पर न हुआ। उसने आस-पास के सब राज्यों से छेड़-छाड़ लगाई। वर्ष २५ मास ४ राज किया। उसके पुत्र—जैतसी पाटवी, कुंभा, और राम; कुंभा का जगमाल, जगमाल का सांतल, सीहा; और सांतल का बेटा देवराज जिसको राव रणमल्ल ने घणलै में राव चूंडा के वैर में मारा। खालल तोगावत जेसलमेर में चाकर जागीर में गाँव खीवला, बीझोराई सांगड़ के हैं। भाटी केशोदास भारमलोत पोहकरण के गाँव ठरड़ें में रहता है।

राम देवीदास का (मेहवे के) रावल हापा के यहाँ ब्याहा था। उसी प्रसंग से राम का पुत्र शंकर मेहवे ही रहा। जोधपुर भी उसने चाकरी की थी और कहते हैं कि सोजत में गाँव आंबा उसके पट्टे था। शंकर के पुत्र खींवा, सांवल, महेश, ऊदा, व सूरा। खींवा के पुत्र सुरताण व खेतसी; सुरताण के राघव, अचल, वीरा, रामसिंह; और खेतसी के कल्ला व मनोहर। राम का दूसरा बेटा केहर बीकानेर है।

रावल जैतसी देवीदास का—३५ वर्ष चार महीने दस दिन राज किया। कुछ ढीला सा राजा था। बीकानेर का राव लूणकर्ण बीकावत देवीदास का कुछ दोष विचारकर जेसलमेर पर चढ़ आया और नगर से दो कोस वडाणी राजबाई की तलाई पर डेरा कर

इलाके को लूटा। भाटियों ने सावाहा (रात को छापा मारना) का विचार किया परंतु राव बीका के दोहिते भाटी नरसिंह देवीदासोत को जेसलमेर से निकाल दिया था, वह राव लूणकर्ण के साथ था, उसने समाचार पाकर राव को सूचित कर दिया। राठोड़ तैयार हो बैठे और अपनी सेना के पास ४ बड़े काँटों के ढेर लगा दिये। जब भाटी निकट पहुँचे तब उनमें आग लगादीं, प्रकाश हुआ, तब तो भाटी मुड़े और राठौड़ों ने उनका पीछा किया और बहुत से भाटी मारे गए। एक यह भी बात सुनी है कि रावल जैतसी बूढ़ा हो गया तब उसके पुत्र जयसिंहदेव, नारायणदास राम और पुन्नसी ने मिलकर कितने एक दिन रावल को कैद में रक्खा और अपने भाई बाहड़मेरी सीता के पुत्र, रावत भीमा बाहड़मेरे के भांजे लूणकर्ण व रावत करमसी को देश से निकाल दिया। वे सिंध में जा रहे; कुछ समय पीछे रावल जैतसी ने अपने चार बूढ़े भाटियों द्वारा जयसिंहदेव आदि से कहा सुना। भाटियों ने उनको कहा कि रावल को हमारे पास रख दो और राज तुम करो। रावल ने भी यही कहा कि मैं इसमें राजी हूँ। तुम मेरे सपूत हो, लूणकर्ण करमसी कपूत थे जो चले ही गए, बला टली, इस तरह प्रकट में बाप बेटों के बीच पीछे प्रीति हुई। उन दिनों घुड़साल में घोड़े बहुत से थे। रावल ने बेटों को कहलाया कि अपने ऐसी क्या आय है जिस पर इतने घोड़े रक्खें। सवारी के योग्य अश्व रखकर शेष खारीग (स्थान-विशेष) में चरने को छोड़ दो। उन्होंने भी इस बात को स्वीकार किया और अनेक तुरङ्गों को वहाँ रख दिया। रावल जैतसी ने अपने सब बड़े-बूढ़े सर्दारों को हाथ में लेकर भाटियों से कहा कि मैं महादुखी हूँ। पूछा, क्या कारण? तो कहा कि इन बेटों ने छोटे होने पर भी मेरी प्रतिष्ठा भंग की और मुझे कैद में रक्खा

यह बात भाटी विदित हो गई। भाटी बोले कि हम आपकी आज्ञा पालन करने को तैयार हैं। रावल ने वचन माँगा, सब ने वचन दिया। तब रावल ने कहा कि लूणकर्ण को बुलाओ और इनको निकालो। सब ने मिलकर लूणा को पत्र लिखा कि शीघ्र आओ और चारागाह में से घोड़े लो, हम वहाँ के मनुष्यों को कह देंगे कि वे घोड़े तुमको दे देवें। पत्र पाते ही लूणकर्ण करमसी सिंध से चले और निकट पहुँचकर रावत भीम को संकेत-स्थान पर बुलाया, घोड़े लिए, सवारों के दल को तो पीछे रक्खा और बीस पचीस सवार आगे भेजकर नगर के समाचार मँगाए। यह बात प्रसिद्ध हो गई तब जयसिंहदेव ने रावल जैतसी और बूढ़े भाटी पूंजा को पुछवाया कि क्या करना चाहिए? उन्होंने उत्तर भेजा कि इनके पाँव तोड़ना उचित है। ये अपना साथ लेकर चढ़े, वे आगे तैयार खड़े ही थे, दोनों भिड़ पड़े। जयसिंहदेव पतले कलेजे का था, सो उन्होंने मार भगाया। ये भी घायल हुए, वे तो दाहिने बाँये चले गए और लूणकर्ण तो सीधा नगर की तरफ गया। जयसिंहदेव की माता गढ़ में थी। जब उसको ये समाचार मिले तो उसने गढ़ का द्वार बन्द कर दिया। रावल जैतसी ने बुर्जों पर से रस्से डलवाकर लूणकर्ण करमसी व उनके साथियों को गढ़ में प्रवेश कराया। उन्होंने आते ही जैतसी की दुहाई फेरी और वह पीछा सिंहासन पर बैठा तथा लूणकर्ण करमसी ने उसके चरणों में सीस नवाया।

रावल जैतसी का वंश

(१) वाहड़मेरी सीताबाई का बेटा।

२) बाहड़मेरी सीतावाई का वेटा ।

(३) वाहड़मेरी सीताबाई का बेटा।

(४) " " का बेटा।

(५) राव बीकाजी (राठोड़) का दोहिता।

(६) ईडरवाली राणी का बेटा। इसको निकाल दिया तब ईडर चला गया। इसकी संतान ईडर में है।

(७) राव कल्याण सुरताण गढिया पर चढ़कर गया तब वहाँ काम आया।

(८) युद्ध में काम आया।

(९) राव बीकाजी का दोहिता।

(१०) राव बीकाजी का दोहिता।
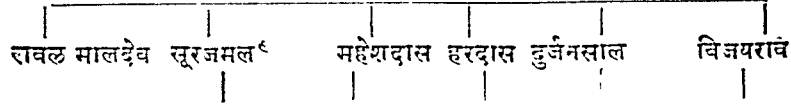
(१) वर्ष २२ मास १० और ३ दिन राज्य किया।

* कर्नल टॉड ने रावल लूणकर्ण को देवीदास का पुत्र और जैतसी का छोटा भाई बतलाया है जो अपने पिता से रूठकर कंदहार चला गया था। रावल जैतसी के मरने पर कंदहारियों की सहायता से उसने अपने भतीजे करमसी से राज्य छीन लिया। अली खाँ नामी एक कंदहारी ने दगा से जेसलमेर के गढ़ पर अधिकार कर लिया था। तब सं० १६०७ में रावल लूण-कर्ण उसके मुकाबले में मारा गया। उसके पुत्र मालदेव व हरराज थे। (हरराज मालदेव का बेटा था, भाई नहीं)।

(सं० १५९६ वि० में जब शेरशाह सूर ने दिल्ली की बादशाहत हुमायूँ से छीन ली और वह भागता हुआ जोधपुर के राव मालदेव से सहायता मिलने की आशा में मारवाड़ की तरफ गया, परंतु उसकी वह आशा निराशा में बदल गई तब ऊमरकोट नामे कोकलोधी के मार्ग से जेसलमेर पहुँचा तब रावल लूणकर्ण ने अपने दूत द्वारा उसे कहलाया कि आप सूचना दिये विना हमारे देश में आये और गोहत्या की, जो हिंदू धर्म के विरुद्ध है इसलिए आगे न जाने पाओगे। उस दूत को कैदकर हुमायूँ आगे बढ़ा। मार्ग में पानी न मिलने से उसका बुरा हाल हुआ। जेसलमेर के पास तालाब पर भी रावल ने अपने आदमी विठा रक्खे थे कि मुसलमानों को पानी न लेने दें। प्यासे मरते हुए हुमायूँ के साथियों ने राजपूतों पर आक्रमण किया और उन्हें मार भगाया। कई मुसलमान भी मारे गये। पखालों में पानी भरकर जब वे आगे बढ़े तो रावल ने अपने पुत्र मालदेव को भेजकर मार्ग के सब कूएँ मुँदवा दिये, तीन दिन तक हुमायूँ और उसके साथियों को अच्छा पानी न मिला। चौथे दिन रावल का दूसरा पुत्र आकर हुमायूँ से मिला और कहा
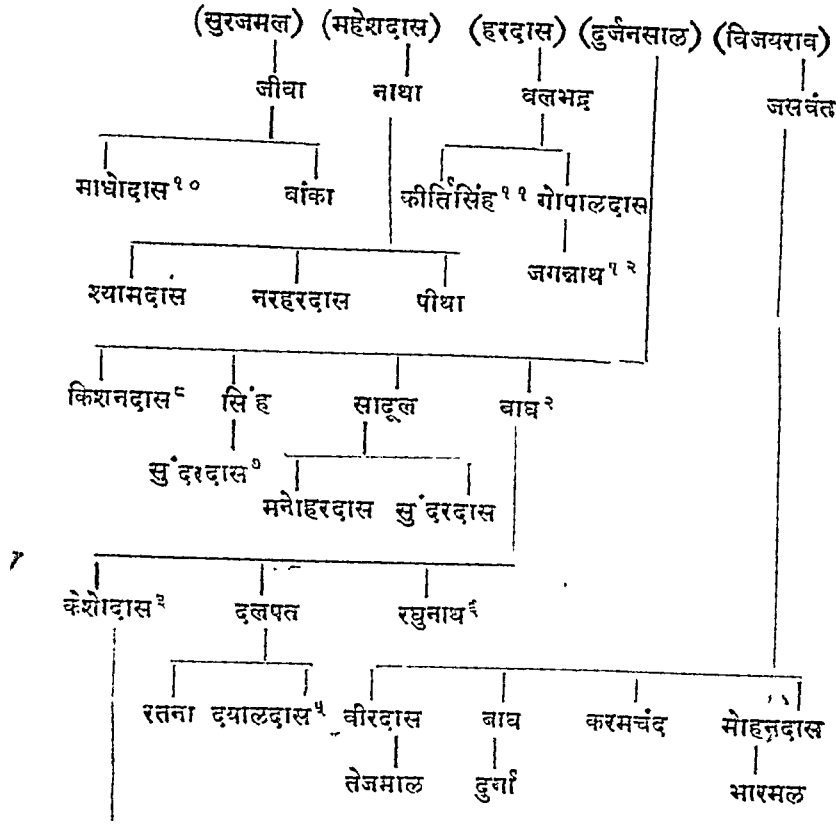
(२) बड़ा ठाकुर था, बादशाही चाकरी की, सं० १६५५ में जोधपुर आ रहा, दस गाँवों सहित सोजत का गाँव आउवा जागीर में था उसे छोड़कर पीछा बादशाही सेवा में चला गया।

(३) जोधपुर चाकर, गाँव भटेनड़ा जागीर में था, सं० १६८६ श्रावण सुदि ३ को काल किया।

कि आप बिना इत्तिला इधर आये इससे आपको इतना क्लेश सहना पड़ा। दूत को छोड़कर हुमायूँ ऊमरकोट चला गया।
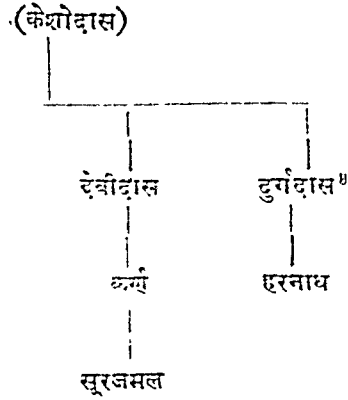
(४) उज्जैन में काम आया।

(५) मुसलमान हो गया।

(६) सं० १६६१ में विराणी गाँव जागीर में था, सं० १६६५ राव महेशदास सूरजमलोत के पास जा रहा।

(७) मोहबतखाँ के पक्ष में कहीं लड़कर मारा गया।

(८) मेहवचों का भांजा, मेहवे में रहता था, बेटी रत्नादेवी।

(९) मोटे राजा का ससुर और सजन भटियाणी का पिता था।

(१०) राव विक्रमादित्य मालदेवोत के पास था; गाँव भाखरड़ो पट्टे में था।

(११) जोधपुर महाराजा का नौकर, सं० १६७४ में गाँव ननेऊ पाया, सं० १६७७ में जालौर के गाँव ओडवाड़ा और जोगाऊ दिये गये और सं० १६८० में पीछे जब्त कर लिये।

(१२) सं० १६६९ में भोपाल गाँव ४ दिये और सं० १६७९ में छोड़े।
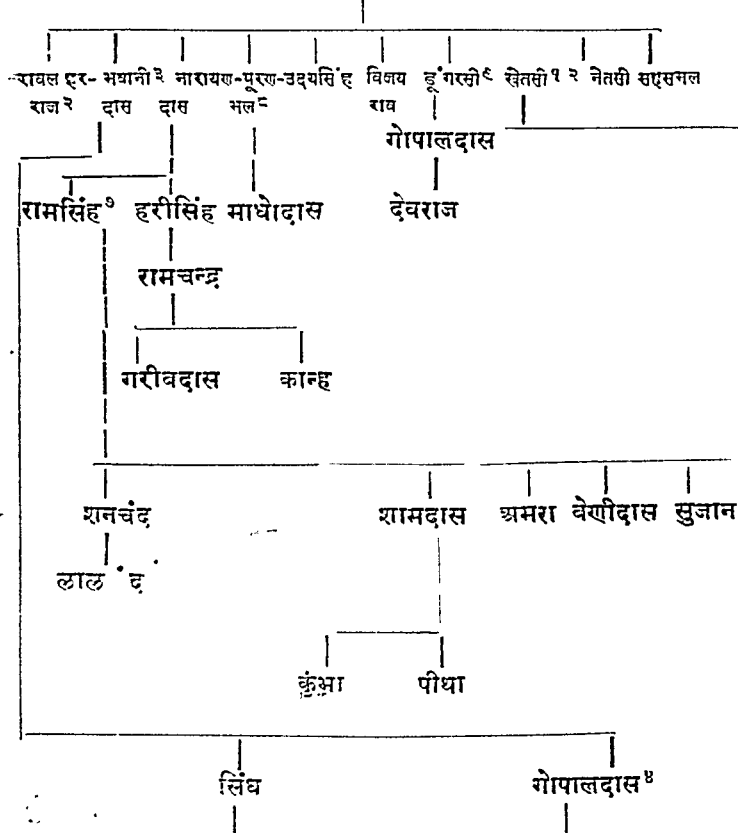
(१) वर्ष १० मास ७ दिन २० राज किया। राडधरे रावत की कन्या राणीवाई को व्याहने के बाद जल्दी ही मर गया।

(२) शिवराजोतों का दोहिता, पद्मा का पुत्र, राव मालदेव की कन्या सजना के साथ विवाह हुआ था।

(३) पद्मा का पुत्र।

(४) सं० १६६३ में चामू लिखमेली पट्टे में थी
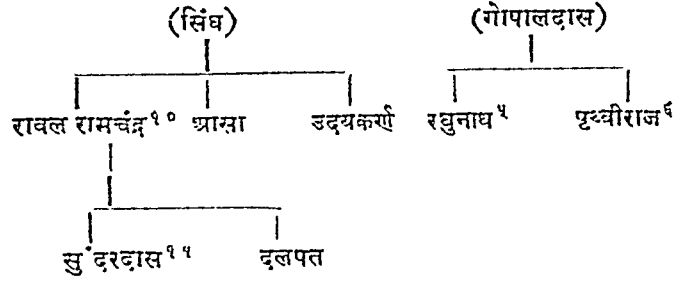
(५) थली में रहता है।

(६) बीकानेर रहता है।

(७) सं० १६७० में गाँव ५ सहित बसर पट्टै।

(८) गाँव १२ सहित रिणमलसर पट्टै।

(९) ईडर में महियड़ माना ने मारा।

(१०) रावल मनोहरदास के पीछे जेसलमेर की गद्दी पर बैठा था।

(११) देरावर में है।

(१२) बड़ा वीर राजपूत, राव जैतसी का दोहिता था। मोटे राजा की बेटी रंभावती को ब्याहा। रावल भीम के राज्य में पहले खेतसी कर्त्ता धर्त्ता था। फिर भीम ही ने उसे निर्वासित कर दिया। पहले तो बहुत से भाटी उसके साथ गये और वे फलोधी में जा रहे थे। भीम का प्रताप बढ़ने पर भाटियों ने खेतसी का साथ छोड़ा तब वह सीहड़ वीरमदेव और राणा भैरवदास सहित राजा रायसिंह का चाकर हुआ और सोरठ में भेजा गया। चार वर्ष पीछे वहीं मरा।

---
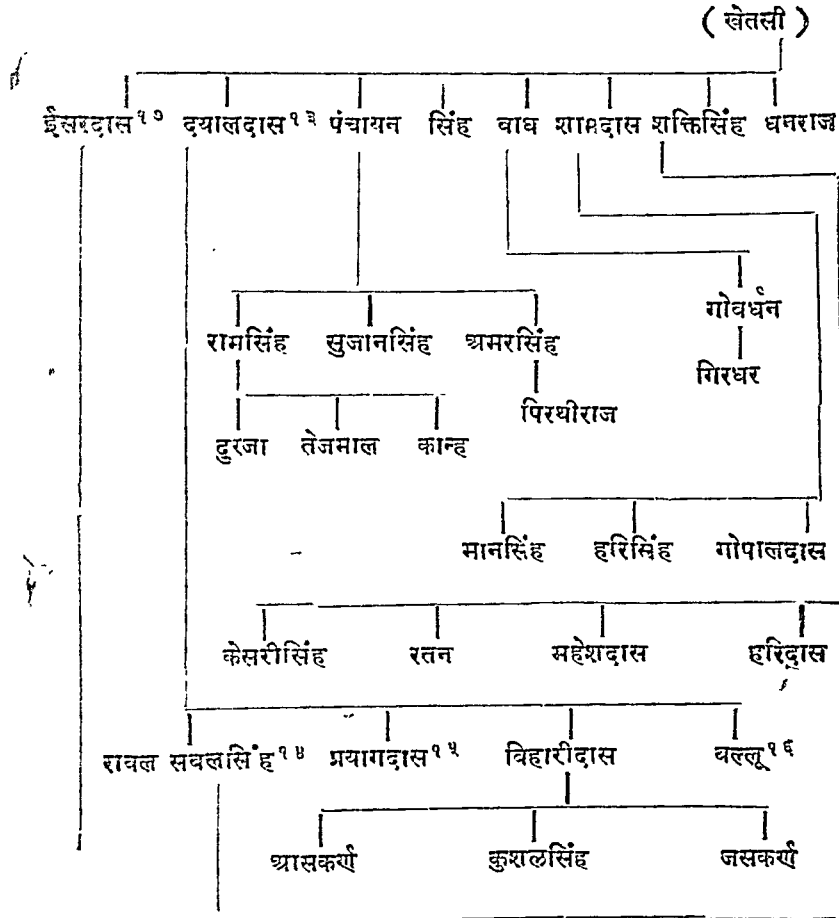
(१३) द्रोणपुर की लड़ाई में राव कल्ला ने मारा।

(१४) सं० १७०७ में रावल मनोहरदास के मरने पर बादशाह ने जेसलमेर दिया, सं० १७१७ श्रावण वदि ६ को काल किया।

(१५) राव जगमाल के साथ काम आया।

(१६) बीकानेर की साँटें लीं तब राव बीका ने मारा।

(१७) गुढ़ा पट्टै, सं० १६५५ में जोधपुर रहता था।
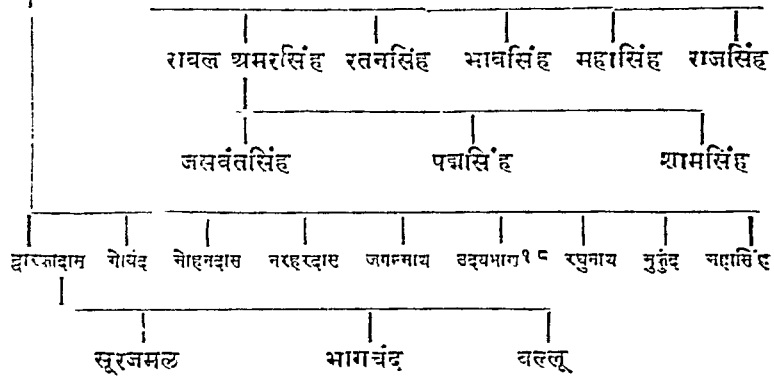
नेतसी[१] मालदेवोत का पुत्र दुर्गदास। दुर्गदास[२] के बेटे जसवंत और कर्ण। जसवंत[३] के हरीसिंह और अजबसिंह और कर्ण का बेटा रामसिंह।

---
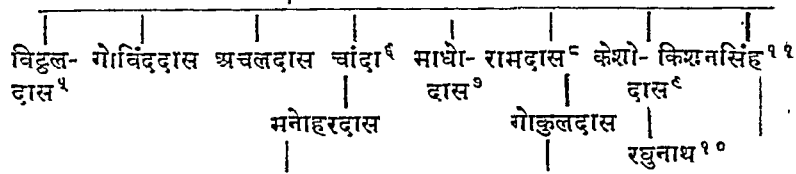
(१८) करमसोतों ने मारा।

(१) बीकानेरी का बेटा, खेतसी का सगा भाई।

(२) जोधपुर का नौकर, सं० १६७५ में जुट पट्टे थी।

(३) पूनासर पट्टे।

(४) बीकानेरी का बेटा, इसकी बेटी पार्वती भटियाणी राजा-सूरजसिंह के साथ ब्याही गई, महाराजा गजसिंह ने १४ गाँव सहित
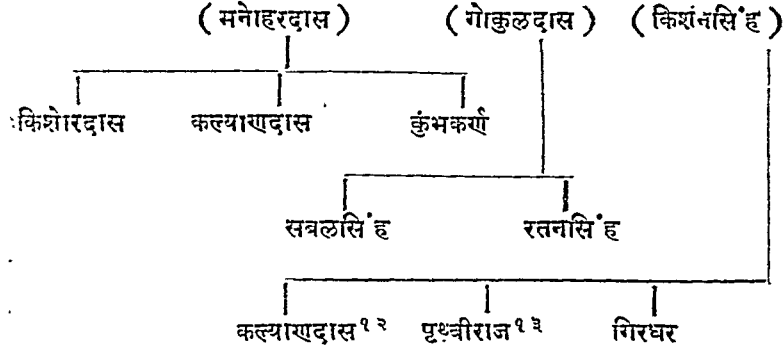
पंचायण खेतसीहोत का वंश--पंचायण के पुत्र रामसिंह, सुजानसिंह और अमरसिंह। रामसिंह के बेटे दुरजा, तेजमाल और कान्ह। अमरसिंह का पुत्र पृथ्वीराज। सुजानसिंह[1] का निवास जेसलमेर के पीपले गाँव में है।

ओयसां जागीर में दो, सं० १६५७ में पीछे ढीकलो से चढ़कर द्रेरावर गया और वहाँ मारा गया।

(५) सं० १६८० में ५ गाँव सहित ओयसां पट्टे।

(६) सं० १६६२ में रिणमल सर पट्टे।

(७) सहसमल के साथ काम आया।

(८) सं० १६७७ में खटोड़ा पट्टे।

(९) सं० १६५९ ओयसां पट्टे।

(१०) ओयसां पट्टे।

(११) बीकानेर का चाकर, सीहलवे काम आया।

(१२) सीहलवे काम आया।

(१३) केसरीसिंह का चाकर, सीहलवे काम आया।

---

(१) सं० १६६० में गाँव ९ सहित भेड़ पट्टे।

खेतसी के बेटे सिंह, बाघ और शामसिंह हुए। बाघ किशनसिंह राठौड़ (किशनगढ़) का साला था और उसके साथ मारा गया। बाघ के पुत्र गोवर्द्धन को राव करमसेन ने मारा। गोवर्द्धन का पुत्र गिरधर।

शामदास खेतसीहोत मोटे राजा (उदयसिंह) का दोहिता था, पांचाड़ी भाद्रेरा गाँव ७ जागीर में थे। शामदास के बेटे—मानसिंह दीवाण (उदयपुर के राणा) का चाकर; हरीसिंह चाँदा मेहवचा के नौकर; गोपालदास लोलियाणे में मारा गया।

शक्तिसिंह खेतसीहोत के सं० १६८५ में खोखरा जागीर में था, सं० १६८६ में चौराई और सं० १६८८ में गाँव ५ सहित भेड़ पट्टे में रही। सं० १६९० में भाटी अचलदास के साथ काम आया। शक्तिसिंह के पुत्र केसरीसिंह, रत्नसिंह, महेशदास, हरीदास[1], देवीदास, रघुनाथ, अजयवा उदा, सुजानसिंह और करमचंद। केसरीसिंह के सं० १६९० में ५ गाँव सहित भेड़ की जागीर थी। देवीदास के सं० १६८८ में मोखरी गाँव जागीर में था; देवीदास के ३ बेटे—हरनाथ, आईदान और भीम। रघुनाथ के पुत्र—भोजा, मुकुंद और सतरसिंह। हरिसिंह के पुत्र—पीथा, अक्खा, नाहर, फतहसिंह, आनंदसिंह, चाँदा, हिम्मतसिंह, सुंदरदास।

धनराज खेतसीहोत को राव कल्ला ने मारा।

---

(१) सं० १६९४ में गाँव ५ सहित भेड़ पट्टे

पचीसवाँ प्रकरण

रावल हरराज आदि

रावल हरराज मालदेव का—सोलह वर्ष १८ दिन राज किया; क्योंकि राड़धरा के राव ने अपनी बेटी को, जिसका विवाह रावल मालदेव के साथ हुआ था, रावल के मरने पर जालोर के खान गजनी खाँ पठान को दे दी थी इसलिए रावल हरराज ने भाटी खेतसी को भेजकर राड़धरा विजय किया और वहाँ के गढ़ को गिरवाकर ईंटें जेसलमेर मँगवाईं। गाँव कोढणा जोधपुर इलाके में था। उसे जेसलमेर में मिलाया और राव चंद्रसेन (मारवाड़) के पास से पोहकरण गिरवी के तौर पर ली। कोटणे के वास्ते रावल मेघराज से बड़ी बदाबदी हुई, ६ मास तक उभय पक्षवाले परस्पर लड़े, पीछे अपनी पुत्री का ब्याह कर कोढणा दिया और सात गाँव उसके लिए—ओला, बर्णोड़ा, डोगरी, बीझोराई, कोटड़ियासर, भीमासर और खेडावल। रावल हरराज के पुत्र भीम पाटवी राव माला का दौहित्र, बाई सजना के पेट का, रावल कल्याणदास रावल भीम के पीछे गद्दी बैठा। सं० १६६८ में रावल भीम ने राजा गजसिंह को रामकर्ण कल्ला की बेटी ब्याह दी। भाखरसी पादशाही चाकर, फलोधी पट्टे में थी। भाटी सुरताण पादशाही चाकर, इसके पुत्र गोपाल और भगवानदास, राव गोपाल बीड़ में काम आया। अर्जुन राव मालदेव का दौहित्र[1]।

---

(१) रावल हरराज तक तो जेसलमेर के स्वामी स्वतंत्र रहे, हरराज ने मुगल शाहंशाह अकबर की सेवा स्वीकारी। अबुल्फ़ज़ल अपनी किताब

रावल भीम हरराज का—सं० १६१८ मंगसर वदि ११ का जन्म, ३५ वर्ष ११ महीने १२ दिन राज किया। सं० १६७० में जेसलमेर में काल प्राप्त हुआ। बड़ा प्रतापी, बड़ा दातार, बड़ा जुझार व जबर्दस्त राजा हुआ। पादशाह अकबर की पास बहुत चाकरी की। रावल भीम ने पृथ्वीराज के पुत्र जगमाल को कोटड़े का स्वामी बनाया था परन्तु रतनसी के पुत्र भैरवदास ने जगमाल को मारकर कोटड़े पर अधिकार कर लिया। जगमाल के पुत्र उदय-सिंह व चाँदा रावल भीम के पास पुकार ले गये। तब रावल चढ़ आया, भैरव भी सम्मुख हुआ। रावल ने उससे गाँव माँगा, उसने देना स्वीकारा नहीं। सींव से कोस ४ बहड़वे से कोस १॥ गाँव लूणोदरी की तलाई पर लड़ाई हुई, और भैरवदास ७ राज-पूतों सहित मारा गया। रावल ने भैरव के पुत्र राणा किसना को कोटड़े का टीका दिया। जैसा भैरवदासोत, भाण नाराणोत हड़वे जागीरदार व भगवानदास हरराजोत भीलाहीवाला बागी होकर निकल पड़े और राज में बहुत बिगाड़ करने लगे और मेहवे में जा रहे। सात वर्ष पीछे कोटड़े का आधा भाग देकर जैसा को पीछा बुलाया।

जब रावल भीम जेसलमेर की गद्दी पर था तब ऊहड़ गोपाल-दास के बेटे अर्जुन भूपत व मांडण पोहकरण के बहुत से गाँव-मारकर वहाँ का वित्त (गाय भैंसादि पशु) ले निकले। पोह-करण के थानेदार भाटी कला जयमलोत भाटी पत्ता सुरताणोत और

अकबरनामे में लिखता है कि वि० सं० ९७८ हि० (सं० १५७० ई०, सं० १६२७ वि०) में अजमेर होता हुआ पादशाह नागोर पहुँचा, वहाँ आंबेर के राजा भगवानदास के द्वारा जेसलमेर के राय हरराज ने पादशाही सेवा स्वीकारकर अपनी बेटी बादशाह को ब्याह दी, जिसका देहांत सं० १६३४ वि० में हुआ।

भाटी नंदा रायचंद के पीछे पड़कर वलसीसर आये, उनको रात भर वात (कहानी) के बहाने भुलावा देकर गोपालदास के बेटों ने कोटड़े से अपने आदमियों को रातोंरात बुलाया और प्रभात होते ही ढोरों को आगे करके रवाना हुए। पोहकरणवालों ने उनका मार्ग रोका। लड़ाई हुई, उभय पक्ष के कई मनुष्य मारे गये। पोह- करण के साथ के भाटी कल्ला व नेता जयमलोत, शिवा केलवेचा अज्जा का, भाटी नंदा रायचंद का, केलण, पेखल, मोकल, सोभ्रम का और मेघा गांगावत खेत पड़े व केल्हण घायल हुआ। रावल भीम को भाटी गोयंददास (गोविंददास) ने कहा कि गोपालदास मेरी आज्ञा के बाहर है आप उससे समझ लीजिए। रावल ने जेसलमेर की सब सेना देकर अपने छोटे भाई कल्याणदास को कोटड़े पर भेजा और उसे विजय किया। उस वक्त गोपालदास जोधपुर में था, वहाँ के गढ़ की तालियाँ उसके पास रहती थीं। रात्रि को कासिद ने आकर सूचना दी, वह तत्काल गढ़ का दर्वाजा खुलवा- कर चढ़ा। भाटियों का कटक गांगाई में ठहरा हुआ था सो दिन निकलते ही गोपाल अपने साथियों समेत वहाँ आ उपस्थित हुआ और दिन धौले तलवार बजाकर काम आया। भाटियों की तर्फ कोटड़िया सुरताण भाटी गांगा बीरमदेवोत, रावल जैतसी का पौत्र जैराइत का जागीरदार मारे गये; और ऊहड़ों के साथ में करमसी, कंवरसी, महेश, गोयंद, चहुवाण, शंकर सिंघावत, वीसा- देवड़ा, गोपा, रांदा (चांदा), ईदा, दो ब्राह्मण, और एक मांगलिया खेत पड़े। आसिया पीरा की कही हुई रावल भीम की भाखरी (छन्द)—

भीम भलां भलो रावल राय हरांद नख दीपियो।
ऊपर अमरावां नव धारणो परियो ॥

आपरां सेने साखती साजत सीधरां नित गैहमरां ।
हूकल हैमरां धूसण खरधरां गहण गिरवरां ।।
गिरवरां गाहहंगाह गढ़पत वाह देख गावहि ।
खत्रराह जाण गराह खलदलदाह दुवाह पड़िगाह ।।
थाह अथाह पेरस ग्राह जसगुणग्राह ।
वह साहनिय वप वड़ा बिरदां वीरवै वैराह ।।
कुलचाल नित छात्राल कंदल भीम कालाल ।
भुजाल सुंडाल दरगह सावता वेडाल ।।
ऐंग वड़ाल किरमाल चल रिणताल ।
केता जीवणा जगमाल ।।
खगझाट मुवहथाट खेसण वाट दह अवियाट ।
भिड़ घय रिसघड़ा भांजण दुयण वालण हाट ।।
रिपनाट परमल हाट रावल धरण पर-
घर घाट पितपाट राखण पाट ।।
पतनृप काट हुंत निराट, सुरताण सूं दीवाण ।
संचित ताण सरतुंडताण देवाण जम दढ पाण ।।
दाखव राणजिम रंढराण आराण ।
कजसझड़ांण उभेमछैर अवलीमाण ।।
वाखाण प्रथी प्रमाण बाँधै ।
भाण जिम कुल भांण ।।
कंधार साह जियार कोपिय कीधमुख हलकार ।
तिणवार धर अहिकार नियत्तन समै भूपतसार ।।
भुजमांर भर जणियार भाटी खार खधवध खार ।
हरहांर हुव दरवार हूंता वले थाट विडार ।।
दलपत छत्रपत माल दे गढ़पत गोत्र गवाल

संतदत लूणकरण सम बड़ बड़ै विरद विसाल

जैतसी देवीदास जगपड़ सत्रां चांपण सीम

उज्जलै सोही कीध उज्जल भूपपरियां भीम ॥

गीत रावल भीम का, वंशावली का, नवलारतनूं ने कहा; कुछ अशुद्ध सा है :—

दाद्दै जैसल करण दाद्दै दल······व नगदेव वैरसीह,

लखमण विरद विसालमाला हरो मन मोट मोटै ।

पाट मेरगिर भाटियां भँवाड़ै भला भींवजी भोपाल ।

धरमी केहर दूदै घड़सी घेरण घर छोगाळा ॥

रतन मूलू जैतसी छात्राल ।

करन तेजल कुलकलाधारी नवकोट

हराउत खागधारी रैण रखसापाल ।

चाच काल्हण हणमा सालवाहण जे

लचाह दुसाभ्भ बछूह मूंध देद विजपाल हुवा ।

तणे वंस हुवोहि हुकाक हरि हस रावराजा

जाणै राणरो चलर ढाल ।

तणुं केहरे मंभ्मराव मंगलराव नुंगेस

भूपाले भूपाल भाटी बड़ा वखत वडाल ।

जादव जगत जैत जेसाणै

भीमेण जाणणा छतीसभाख साख उजवाल ।

वाल वुधतणां अरू सोढाल गजसमाण

बरज अवुधं वंश सूरत विसाल ।

प्रदम्न कान्हपाट परम भगत पूरो

सुवर सुजाण देह सोहै साखपाल ॥[1]

(१) रावल भीम ने जेसलमेर के गढ़ की मरम्मत कराई । सं० १६४७ वि०

रावल कल्याणदास हरराजोत रावल भीम का छोटा भाई (भीम के निस्सन्तान मरने पर) गद्दी पर बैठा। १४ वर्ष ६ महीने १५ दिन राज किया। ढीला सा ठाकुर था। राजपूतों और प्रजा का अच्छा पालन किया। शरीर बहुत भारी था। पाट बैठने पीछे एक बार बादशाह के हजूर में गया। बाकी सदा गढ़ में बैठा रहा। उसके जीतेजी सारी दौड़धूप कुँवर मनोहरदास करता था, वह तो केवल एक बार ही रावल भीम के राज-समय में कोढणां पर गया और ऊहड़ गोपादास को मारा था।[1]

रावल मनोहरदास कल्याणदास का—वर्ष २२ राज किया, बड़ा शूरवीर, निर्भीक और कार्य्यकुशल राजा हुआ। कई लड़ाइयाँ जीतीं, सं० १७०६ के मगसर मास में काल किया। पुत्र नहीं था सो भाटी सर्दारों और राणियों ने भाटी रामचंद्रसिंहोत को पाट बैठाया।

मनोहरदास के युद्ध—कुँवरपदे में एक लड़ाई बिलोचों के साथ करके अलीखाँ को मारा। इस युद्ध में अग्रलिखित भाटी सर्दार मारे गए

में मिर्जा खाँ खानखाना के साथ रहकर उड़ीसा और बंगाल की लड़ाइयों में अच्छी कारगुजारी दर्शाई। अपनी बेटी का विवाह शाहजादे सलीम के साथ कर दिया। जब सलीम (जहाँगीर) बादशाह हुआ तो उसने उसे "मलिकए जहाँ" की पदवी दी। रावल भीम के नाथू नामी एक पुत्र दो मास का होकर मर गया था इसलिए पादशाह जहाँगीर ने उसके छोटे भाई कल्याण को जेसलमेर दिया।

(१) तुजके जहाँगीरी में लिखा है कि सं० १०२५ हि० (सं० १६१६ ई० सं० १६७३ वि०) में कल्याण जेसलमेरी को बुलाने के वास्ते राजा कृष्णदास भेजा गया था। कल्याण हाजिर हुआ। उसका बड़ा भाई रावल भीम बड़े मर्तबेवाला था। जब वह मर गया और दो महीने का एक बालक छोड़ गया, वह भी जीता न रहा तो कल्याण को राजगद्दी का टीका देकर रावल की पदवी प्रदान की और दोहजारी जात एक हजार सवार का मनसब दिया॥

वा घायल हुए—भाटी रायसिंह, भीमावत सादंतसी, सीहड़ धनराज उधरणोत, भाटी बाँकीदास, जसावत रूपसीहोत सोढो, जस्सो, सांगो, खमेर जिनका गाँव देवा ढेहिया के पास। जब जसोल पर चढ़ आए तो बहुत से जसोलियों को मारे। जगमाल मालावत के वंश के पोखरणे राठौड़ बरोहटिये हो मेहवे में जा रहे और पोखरण लूटा तो रावल मनोहरदास ने उनका पीछा किया। ४० कोस पर जेसलमेर मेहवे की सरहद के पास उन्हें जा लिये, फलसूंड से कोस ६ और कुसमला से कोस ढाई पर लड़ाई हुई। पोखरणों के १४० जुझार काम आए और वे भागे। राठौड़ों के इतने सर्दार मारे गए—राठौड़ सुंदरदास देवराज का, मथुरा राणा का, राठौड़ जगन्नाथ बीजा का, माला देवराज का, मेवा राणा का, सेवा महेश का और भाटी अचल सुरताण का, पीछे पोखरणे आकर रावल के पाँवों पड़े तब उनको पीछे बुला लिये सं० १६९४ पौष वदि ८ को इस्माइलखाँ बिलोच के बेटे मुग़लखाँ को विक्रमपुर के गाँव भारमलसर में मारा तब इतने राजपूत मारे गये—सीहड़ देदा धनराज का, धनराज उद्धरणहिंगोल राखारेवाला, राठौड़ देवीदास भवानीदास का। खाडाल के दस गाँव मारकर वहाँ के पशु लिये[1]।

रावल रामचंद्र सिंह का—रावल मनोहरदास के निस्संतान मरने पर राजलोक (राणियों) को मिलाकर टींके बैठा और भाटियों को भी अपने पक्ष में कर लिया। उस वक्त सीहड़ रघुनाथ भाणोत वहाँ उपस्थित न था। जेसलमेर में सीहड़ कर्ता-धर्ता था, इसलिए

(१) टॉड ने रावल भीम के पीछे कल्याण के पुत्र मनोहरदास का गद्दी बैठना लिखा है और हिंदराजस्थान के अँगरेजी भाषांतर में (भूल से) मनोहरदास को भीम का भाई कहा व अपने भतीजे को मारकर गद्दी बैठना लिखा है।

रघुनाथ के मन में इसकी आँट पड़ गई। उन दिनों में भाटी सबलसिंह दयालदासोत राव रूपसिंह भारमलोत (कछवाहा) के यहाँ नौ दस हज़ार साल के पट्टे पर चाकरी करता था और पादशाह शाहजहाँ की रूपसिंह पर बड़ी कृपा थी। उसने सबलसिंह के वास्ते पादशाह से अर्ज की और पाँव लगाया। पादशाह ने भी उसको जेसलमेर की गद्दी देना स्वीकार किया, और भाटी रामसिंह पंचायणोत और कितने ही दूसरे भी भाटी खेतसी की संतान सबलसिंह से आ मिले। इसी अवसर पर महाराजा जसवंतसिंह ने पादशाह से अर्ज की कि पोहकरण हमारा है किसी कारण से थोड़े अर्से से भाटियों को वहाँ अधिकार मिल गया सो अब हजरत फर्मावें तो मैं पीछा ले लूँ। पादशाह ने फर्मान कर दिया। महाराजा सं० १७०६ के वैशाख शुदि ३ को जहानाबाद से मारवाड़ में आया और ज्येष्ठ मास में जोधपुर आते ही राव सादूल गोपालदासोत और पंचोली हरीदास को फर्मान देकर जेसलमेर भेजा। रावल रामचंद्र ने पाँच भाटी सर्दारों की सलाह से यह उत्तर दिया कि "पोहकरण पाँच भाटियों के सिर कटने पर मिलेगा।" जोधपुर में कटक जुड़ने लगा और उधर पादशाह को भी खबर हुई कि रामचंद्र ने हुक्म नहीं माना। अवसर पाकर सबलसिंह ने पेशकश देना और चाकरी बजाना स्वीकार कर जेसलमेर का फ़र्मान करा लिया। भाटी रघुनाथ व दूसरे भाटी भी रामचंद्र से बदल बैठे और गुप्त रीति से उन्होंने सबलसिंह को पत्र भेजा कि शीघ्र आओ हम तुम्हारे चाकर हैं। पादशाह ने जेसलमेर का तिलक देकर सबलसिंह को विदा किया और रूपसिंह ने खर्च देकर सहायता की और कई आदमी नौकर रक्खे। सात आठ सौ मनुष्यों की भीड़भाड़ से सबलसिंह ने फलोधी की कुण्डले में भोलासर पर

आकर डेरा दिया। जेसलमेरवाले भी १५०० तथा १७०० सैनिकों से शेखासर के परे जवणावधारा की तलाई पर आ उतरे। सेना-नायक भाटी सीहा गोयंददासोत था। पोहकरणवाले और केलण (भाटी) भी साथ में थे। सबलसिंह ने आगे बढ़कर उन पर धावा किया। उस वक्त ये सर्दार उसके साथ थे—भाटी केसरीसिंह शक्तिसिंहोत, भाटी द्वारकादास ईसरदासोत, भाटी हरीसिंह शक्ति-सिंहोत, भाटी मोहनदास, जगन्नाथ, उदयभाण ईसरदासोत, भाटी बिहारीदास दयालदासोत, भाटी अचलदास गोयंददासोत, मोहन-दास किशनदासोत, राजसिंह भगवानदासोत, रामचंद्र गोपाल-दासोत, गिरधर गोवर्द्धनोत, और राठोड़ हरीसिंह भीमसिंहोत। जेसलमेर के साथ में ये बड़े सर्दार थे—रावजैसिंह मोहनदासोत, भाटी सीहा गोयंददासोत, भाटी श्यामदास साँवलदास गोपाल दासोत सिरड़िया, भाटी रघुनाथ ईसरदासोत, भाटी दलपत सूर-सिंहोत, और भाटी किशनबल्लुओत। दिन-दिहाड़े युद्ध हुआ। सबलसिंह जीता और जेसलमेर की सेना भागी। इतने सर्दार खेत रहे—विक्रमपुर के साथ में दो नेतावत भाटी जयमल रासावत और राव जैतसी भाणोत; ४ सोलंकी जग्गा, देदा, कम्मा और कहा; दो सिंहराव मनोहर वदेदा; दो जैतुंगहरदास व जगमाल; भुणकमल, हाथी अज्जू का, खालतवीदा, भाटी खंगार नरसिंह का शेखा सरिया, पाहूमेहाजल पोहकरण के मारे गये धनराज नेतावत, भाटी भैपत रायसिंहोत, रासिरंग डुंगरसीहोत और राहड़ वीदा।

तत्पश्चात् महाराजा (जसवंतसिंह) की सेना जल्द ही पोह-करण आई। सबलसिंह भी खाररेड़ा के ७०० आदमियों सहित महाराजा से आ मिला। सं० १७०७ के कातिक मास में गढ़ से आध कोस के अंतर पर डुंगरसर तालाब पर डेरा हुआ। तीन

दिन तक गढ़ पर धावे किये जिससे भीतरवाले भयभीत हो गये। सबलसिंह ने भाटी रामसिंह पंचायणोत को, राव गोपालदास विट्ठलदास व नाहरखाँ से मिलकर, गढ़वालों के पास भेजा और गढ़ में के सब मनुष्यों को निकलवाया। भाटी पत्ता सुरताणोत जूझकर काम आया। फिर सबलसिंह उपर्युक्त सर्दारों से मिलकर जेसलमेर को रवाना हुआ। एक आध कोस गया होगा कि खबर आई कि रावल रामचंद्र ने भाटी सर्दारों से कहा कि मुझे अपने कुटुंब व मालमते सहित निकल जाने दो तो मैं देरावर चला जाऊँगा। सीहड़ रघुनाथ, दुर्गदास, सीहा, देवीदास व जसवंत पाँच भाटियों ने रामचंद्र की बात मानी और कहा कि चले जाओ। तब वह माल असबाब व अच्छे अच्छे घोड़े ऊँट लेकर देरावर में जा रहा है और राजधरों की शाखा का भाटी जसवंत वैरसलोत उसके साथ गया है। यह समाचार सुनते ही सबलसिंह आतुरता के साथ जेसलमेर आकर गद्दी बैठा। रावल रामचंद्र ने दस महीने बीस दिन राज किया[1]।

रावल सबलसिंह (दयालदास का पुत्र और खेतसी रावल मालदेवोत का पौत्र) ने नौ दस वर्ष राज किया। इसका पुत्र अमरसिंह अपने पिता के मरने पर सं० १७१६ में गद्दी बैठा[2]। इसके पुत्र जसवंतसिंह और हरीसिंह।

---

(१) खड़ाल व देरावर पीछे को बहावल खाँ पठान (भावलपुरवाला) ने छीन लिया और रावल रामचंद्र के संतान भागकर बीकानेर गये जहाँ उनको गुडियाला जागीर में मिला। कर्नल टाड लिखता है कि महाराजा जसवंतसिंह ने अपने भाई नाहरखाँ कूंपावत को भेजकर पादशाही हुक्म से सबलसिंह को जेसलमेर की गद्दी पर बिठाया। उस सहायता के बदले पोहकरण का पर्गना लिया।

(२) सबलसिंह को सं० १७१२ में पादशाह के तरफ से एक हजारी

रावल जसवंतसिंह अमरसिंह का—इसका कुँवर जगतसिंह तो पिता के विद्यमान होते ही पेट में कटार मारकर मर गया था श्रौर उसका बेटा बुधसिंह अपने दादा के पीछे गद्दी बैठा। कहते हैं कि उसको शीतला निकली तब उसकी दादी बीसलदेवी ने उसे विष देकर मार डाला। फिर जसवंतसिंह का पुत्र तेजसिंह गद्दी पर बैठा तब भाटी हरिसिंह अमरसिंहोत उस पर चढ़ आया श्रौर अखैसिंह के कहने से चूककर उसको मार डाला[1]। रावल अखैसिंह उस वक्त बाहर चला गया श्रौर तेजसिंह (घायल होने पश्चात्) प्रायः चार घड़ी जीवित रहा। तब उसने अपने पुत्र सवाईसिंह को गद्दी पर बिठाया। थोड़े ही काल पीछे अखैसिंह को साथ लेकर चढ़ आया, सर्दार कामदार उससे प्रसन्न थे श्रौर बुधसिंह का छोटा भाई होने से राज का अधिकारी भी वास्तव में वही था, जेसलमेर में पाट बैठा।[2]

मनसब मिला था। रावल अमरसिंह के साथ में बीकानेर के राजा अनूपसिंह ने कांधलोत राठौड़ों को जेसलमेर पर भेजा परंतु अमरसिंह ने उन्हें पराजित किया।

(१) कर्नल टॉड ने रावल सबलसिंह, अमरसिंह, जसवंतसिंह, बुधसिंह, तेजसिंह का समय नहीं दिया श्रौर न नैणसी ने इनका राजत्वकाल लिखा है। केवल इतना जाना जाता है कि रावल सबलसिंह का देहान्त सं० १७१६ में हुआ। उसके पीछे ६० वर्ष तक अमरसिंह, जसवंतसिंह श्रौर बुधसिंह ने राज किया। जसवंतसिंह के पुत्र—जगतसिंह, ईश्वरीसिंह, तेजसिंह, सर्दारसिंह श्रौर सुलतानसिंह। बुधसिंह श्रौर अखैसिंह जगतसिंह के पुत्र थे। सं० १७७६ में तेजसिंह गद्दी पर बैठा श्रौर तीन वर्ष राज किया।

(२) जेसलमेर में दस्तूर है कि राजा श्रौर प्रजा सब मिलकर वर्ष में एक बार घड़सीसर तालाब की मिट्टी निकालने जाते हैं। पहले एक मुट्ठी कीचड़ महारावल निकालता है श्रौर फिर दूसरे लोग उसको साफ कर देते हैं। इस दस्तूर के मुवाफिक तेजसिंह उस तालाब पर गया था। वहाँ अखैसिंह

रावल अखैसिंह जगतसिंह का—बड़ा प्रतापी राजा हुआ, चालीस वर्ष तक राज किया। उसके पुत्र—मूलराज पाटवी, भाटी रतनसिंह मूलराज का सगा भाई सोढों का दोहित्र, भाटी पद्मसिंह करमसोतों का दोहिता; पुत्री तीन—चंद्रकुमारी महाराज गजसिंह (बीकानेर) को ब्याही, विनयकुमारी महाराजकुमार राजसिंह (बीकानेर) को ब्याही। ये दोनों चहुवाणों की दोहितियाँ थीं। तीसरी विजयकुमारी महाराजा विजयसिंह (मारवाड़) के महाराजकुमार फतहसिंह को ब्याही थी। वह करमसोतों की दोहिती और पद्मसिंह की सगी बहन थी। जिस वक्त महाराजा अभयसिंह का पुत्र रामसिंह दखनियों की सेना लेकर मारवाड़ में आया और नागोर व जोधपुर को घेर लिया उस वक्त महाराजा विजयसिंह की राणी शेखावतकुँवर फतहसिंह सहित जेसलमेर गढ़ में रही। जब सेना हटी तब विजयकुमारी का विवाह फतहसिंह के साथ कर दिया गया।

केलणोत भाटी

मझमराव के पुत्र साँगा का बेटा राणा राजपाल हुआ। राजपाल के पुत्र—बुध, लहुआ, छेना, छीकस पहोड़, अटेरण, लखेड़, हरया। राजपाल का राजस्थान मथुरा में था। मथुरा मुगलों (मुसलमानों) ने ली और राजपाल मारा गया तब उसका

और हरीसिंह ने उसे घायल किया परंतु अखैसिंह को पूरी सफलता न हुई। तेजसिंह के मरने पर उसका बालक पुत्र सवाईसिंह गद्दी पर बिठाया गया था। उसको अवसर पाकर अखैसिंह ने मार डाला और सं० १७७६ में राज लिया। इसके समय में दाऊदखाँ अफगान के पोते और मुबारिकखाँ के बेटे बहावलखाँ ने खडाल और देरावर के परगने भाटियों से छीने थे सं० १८१८ तक अखैसिंह ने राज किया।

बेटा बुध खरड़ में आ बसा, इसी से खरड़ को आज तक 'बुधेरा' कहते हैं। उसके ताल्लुक़ १४० गाँव कहे जाते थे जिनमें मुख्य ये हैं—बाप, बावड़ी, नीबली, कानासर, चूनी, लीकड़ा, भदलो, अहवा, नाचणा, सतिहारो, धंटियाली, बारू, कामधो, सोनासर, खीरवा, झाड़हर, चूटहर, अंतरगेढ़ा आदि।

खरड़ के कोहर (कुएँ)—हेमराजसर, पड़िहार हेमराज का खुदवाया हुआ बड़ा जलाशय है, गहरा २५ पुर्सा, पानी मीठा है। आकला, गीधला, चांडी, नरसिंहवाला, खीचियेंवाला, तोलाऊँ, बीजा, अवाह गहरा १७ पुर्सा पानी मीठा, नादडा, मीठड़िया, कीलणो, भड़लो गाँव, बारू, नाचणा, हरभम केलणोत का अंतरगढ़ा, धंटियाली, सतिआहो, झाड़हर, वालाणो, ताणांणो।

तलाइयाँ—राणा रूपड़ा की, आठ मास तक पानी रहता है, राव का तालाब, आठ मास तक पानी रहता है, खजूरी, मेलूरी, जगमाल की तलाई, देवीदास की तलाई, जवणी की तलाई, सोहेड़ राजपूतों की खुदाई हुई, अचलाणी में ६ मास तक पानी रहता है, सेखासर का बड़ा तालाव सेखा का खुदवाया हुआ, खीरवा, मेरारी, बेरोलाई, वैगण, धाररी, देराणी, जेठाणी, नीबालिया।

पहले यह खरड़ पड़िहारों की थी, राणा रूपदे पड़िहार ने दगा से कम्मा को मारकर खरड़ का इलाक़ा लिया था। राव केलण विक्रुंपुर का स्वामी हुआ; उसके पुत्र रिणमल के बेटे गोपाल, जगमाल और अचला। जगमाल ने गोपा से खरड़ छीन ली तब अचला मुलतान के तुर्कों को चढ़ा लाया और उनकी सहायता से जगमाल को मारकर अपने बड़े भाई गोपा को पीछा गद्दी पर बिठाया। जगमाल का पुत्र जैता पड़िहारों का भानजा था, पिता के मारे जाने पर वह ननिहाल में जा रहा। पीछे पड़िहारों का बल दिन-दिन घटता

गया और भाटी प्रबल होते गये। पड़िहार भूखे थे इसलिए भाटियों ने पहले तो उनसे घोड़े ऊँट लिये, फिर कुछ दे दिलाकर गाँव भी ले लिये। अब तक बहुत से गाँवों में पड़िहार रहते हैं। खरड़ विक्रुंपुर से जुदी है, यहाँवाले जेसलमेर जुदी चाकरी देते हैं।

पोहड़ राणा राजपाल के—पहले इनके पास बहुत भूमि थी अर्थात् नाहवार, विजणोट, नांदणोट, कोटड़ा, कालाडूंगर, जेसुराणा, सापली, द्रेग आदि। कहते हैं कि सारी खड़ाल के स्वामी पोहड़ (भाटी) थे। नींभड़ पोहड़ कोटड़े का स्वामी था और रायमल साजाल के वेला नाम की एक भैंस थी जो कोटड़े के गाँव शिव की बाड़ी में बिगाड़ किया करती थी। माली नींभड़ पोहड़ के पास कोटड़े जाकर पुकारा तब नींभड़ ने उस भैंस को कटवा डाला। इस पर राठोड़ों और पड़िहारों में लड़ाई हुई, फिर रावल माला (मल्लिनाथ) ने द्रेग पर चढ़ाई कर हड्यों (भाटियों) को मारा। राणा राजपाल की संतान हड्या और पोहड़ दोनों का साथ ही नाश हुआ। इस विषय का एक गीत भी है जिसमें नाम दिये हैं।

विक्रुंपुर के भाटी—रावल केहर का बड़ा बेटा राव केलण, जिसके वंशज केलण भाटी, विक्रुंपुर का पहला राव हुआ। पिता से पूछे बिना केलण ने कहीं सगाई कर ली; इससे अप्रसन्न होकर रावल केहर ने उसे गद्दी से वंचित रखकर जेसलमेर से निकाल दिया और छोटे बेटे लक्ष्मण को टीकायत बनाया। केलण पहले तो आसनीकोट में जा रहा परंतु फिर विचारा कि यहाँ तो जेसलमेर का स्वामी मुझे टिकने नहीं देगा। इतने में उसके पिता का भी देहांत हो गया। विक्रुंपुर उस वक्त ख़ाली पड़ा हुआ था, वहाँ केलण ने आकर अपने गाड़े छोड़े। गढ़ में झाड़-झंखाड़ बहुत उगे हुए थे। उन सबको जलाकर वहाँ रहने लगा। जब रावल

घड़सी आपत्काल में अपना राज वापस लेने को पादशाही चाकरी करता था। तब जयतुंग व केल्हा का पुत्र महिपा रावल के साथ थे। उन्होंने उसकी अच्छी सेवा बजाई और खर्च से भी पूरी सहायता की थी। राज पाने पर रावल ने अपने सब साथियों का सत्कार किया। उस वक्त महिपा को भी कहा कि तुमने मेरी सेवा बहुत की है सो अब तुम जितनी भूमि माँगो मैं तुमको दूँ। उसने पांढ़करण से १६ कोस व फलोधी से ८ कोस खरड़ की राणा की तलाई से लेकर वीठणोक तक की भूमि माँगी। वीठणोक बीकानेर से १७ कोस और जोगी के तलाव व देवाइत के तलाव से ४ या ५ कोस है। रावल घड़सी ने वह धरती जैतुंग को दे दी। कितने एक अर्से तक विकुंपुर जैतुंग के पास रहा फिर पूंगल पर मुलतान की सेना आई और उसे विजय करके तुर्कों ने विकुंपुर भी आ घेरा। जैतुंग केला ने अपने प्राणों के साथ गढ़ दिया। मुद्दत तक गढ़ तुर्कों के अधिकार में रहा जहाँ उन्होंने एक मसजिद भी बनवाई और मुलताननिवासी साहू वीदा का बनवाया हुआ एक जैन मंदिर भी गढ़ में है। जब तुर्कों को वहाँ खान-पान की कठिनाई पड़ने लगी तब वे विकुंपुर को छोड़कर चल दिये और राव केलण आसनीकोट से वहाँ आ बसा। कोट में के जलाये हुए झाड़-झंखाड़ों के ठूँठ अब तक दीख पड़ते हैं। विकुंपुर का गढ़ ऊँचाई पर है, दर्वाजा अच्छा और भीतर एक घर भी सरस है। गढ़ के चारों ओर की दीवार तो सामान्य सी ही है; परंतु किडाणा नाम का एक कूप दर्वाजे की दीवार के नीचे ही है, उसका जल खारी और ४० पुर्सा नीचा है। पाँच-सात कोस तक कहीं जल नहीं। लोग सब गढ़ में रहते हैं। विकुंपुर फलोधी से २५ कोस, जेसलमेर से ७० कोस, बीकानेर से ४० कोस, देरावर से ६० कोस और पूंगल से ४४ कोस की दूरी पर है।

विक्रुंपुर से १६ और फलोधी से ८ कोस वाप नाम का वड़ा गाँव किरड़ा के पास है जिस पर ठाकुराई का आधार है। वहाँ पाली-वाल ब्राह्मण बहुत बसते हैं और बनियों के घर भी ५०। ६० हैं। वाप की भूमि सेजे (सजल) वाली है और वहाँ गेहूँ सब ठौर पैदा होते हैं। काठे गेहूँ के एक मण बीज से साठ मण पैदा होते हैं, ज्वार की फ़सल भी अच्छी होती है। सुकाल में दो लाख मण गेहूँ तथा तीन लाख मण जोऊरे (चने?) हो जाते हैं। सिरहड़ जैसे और भी अच्छे गाँव हैं। विक्रुंपुर के राव के दो सहस्र मनुष्यों की जोड़ और भूमि भी भली है। देरावर मुल्तान का मार्ग वहाँ से जाता है जिसकी आय भी अच्छी हो जाती है। राव केलण ने वहाँ अपनी ठाकुराई भली भाँति जमा ली।

तलाई विक्रुंपुर के पास—तिलाणी १ कोस, जिसमें १ मास जल रहता है; राणीवाला नोखसेवड़ा के बीच ४ मास जल ठह-रता; भाटी का चंद्राव सेवड़ा से कोस...चार मास जल रहता, वे सेवड़ा के निकट २ मास जल रहता; वरजांग जैतुंग सेवड़ा के बीच कोस तीन, ४ मास जल रहता; गोपारी नीवली के पास चार मास का जल; हरख जैसिंह का सिरहड़ जल १० मास; गोधणलो सिरहड़ के पास, ६ मास का जल, पुरानी तलाई है; हरराज की लोहड़ो तलाई सिरहड़ के पास, ४ मास का जल; सिरहड़ में तलाई १००, कुएँ ३ मीठे वीस पुर्से ऊंडे; लोहड़ीसिरहड़ में मीठे जल के कुएँ १८; तलाई घणी जैतारी ५ मास का मीठा जल; मथुरी में जल ४ मास रहता; दलपत की वाव, तालाब राणाहल में ८ मास जल रहता; कुएँ बहुत; पूनादे की (तलाई), विक्रुंपुर वरसलपुर के बीच १२ कोस; बोका सोलंकी का तलाव उत्तर की ओर कोस ३, जल ४ मास रहता; खेतपाल का टोभा कोस २, इसमें दो मास जल

रहता; वाखलवाला कोस ३, जिसमें ४ मास जल ठहरता है। अचलाणी विकूंपुर से १० कोस राणेरी के पास, जल मास ६; नींवा मुँहता की नीवलो १२ कोस, जल मास ४ का; मांडाल मांडा मुँहता की, ६ कोस, ४ मास का जल; कानड़ियारी कान्हा सोढा की, राणेरी के पास, कोस १०, दो मास का जल; लूडी रामसर विकूंपुर से कोस...दो मास का जल।

विकूंपुर में राजपूतों और दूसरे की बाँट में गाँव व कुएँ इस प्रकार हैं—जसहड़ों के गाँव नोखड़ा कुएँ १०; सिंधरावों के नारायणसर, भारमलसर, वाढेणार, भोंदासर; टाँवरिया मकवाणों के भेला और टावरियोंवाला गोगलियार; भूण कमलों के गोगलीसर; नेतावत भाटियों के चारणोंवाला गाँव नोखा; गहलोतों के सेवड़ा, कुएँ २०, इसमें दो विभाग हैं—गहलोतोंवाला गहलोतों के और पुरोहितोंवाला पुरोहितों के। सोलंकियों के सोलंकियोंवाला; सोम (भाटियों) के ग्रावथी, वजू, कूंपासर, पीथासर व सूलावत। रिणधीरपोतों के जसूवेरा; डाहलिये राजपूतों के गाँव नागरैर कोहर किडांणे पीवे। नाथों के नाथों का कोहर। बड़ी सिरड़ पहले पाहुवों के थी; पीछे राव सूरसिंघ ने अपने भाई ईसरदास को दी। जैतुंगों के कोलियासर, नागराजसर, गिरराजसर, चिहू, बहदड़ा, जूडियसित्रड़ा—चारणों के तीन गाँव, दो तो गाडणों के—खंडाखेलो और मेयोरा देवा का, और एक वरजांगरा कन्हैया के व एक रतनू चारणों के। सिरहड़ बड़ो पहले पाहुवों के थी, पीछे जसहड़ों के रही, अब भवानीदास के बेटे वहाँ हैं। कुएँ १८, तलाई वणी, वाव भाटो दलपत की, कुएँ गहरे पुर्सा ४ पानी बहुत मीठा, वाव दोय पानी पुर्सा ४ पर पुष्कल व मीठा। तालाब मेवड़ासर, भर जावे तो बारह मास तक जल रहता है। नीवली में कोहर (रहंट)

६, तालाब भालाओंवाला बड़ा है। कोई तो उसे मैमसर और कोई विकुंपुरसर कहते हैं; विकुंपुर से १६ कोस, कुओं में जल पुष्कल, फलोधी से १३ और बीकानेर से २५ कोस है।

इसी काल में रावल लखमसेन का पुत्र राव राणंगदे भाटी, पुण्यपाल का पोता, जिसको कहते हैं कि राव चूंडा ने मारा था, निपूता गया। राव राणंगदे की स्त्री ने राव केलण को कहलाया कि जो तू मुझको घर में रक्खे तो (पूँगल का) गढ़ मैं तुझको दूँ। केलण ने प्रपंच के साथ उत्तर दिया कि "बहुत खूब।" आप पूँगल गया, राणंगदे की स्त्री ने कहा कि धारेचा (नियोग ?) की रीति करो। केलण बोला कि आज तो रावाई लेने का दस्तूर करने का मुहूर्त्त है, कल दूसरी रीति भी कर ली जावेगी। तब उस दिन पाट बैठकर रावाई का तिलक कराया और हाथ व जिह्वा (रीझ मौज और प्रिय भाषण) से सबको प्रसन्न किया। दो-एक दिन बीतने पर वह अन्तःपुर की देहुड़ी पर गया और राव राणंगदे की स्त्री को जुहार कहलाया। राणी ने प्रत्युत्तर भेजा कि मेरे साथ तूने जो कौल किया था उसको अब पूरा कर। केलण बोला कि ऐसी बात कभी हुई नहीं, मैं कैसे कर सकता हूँ। ऐसा करने से जगत् में सब संबंधी मेरी हँसी करेंगे और फिर कोई भी मेरे साथ संबंध न करेगा। राव के कोई पुत्र नहीं तो उसका वैर मैं लूँगा। राणी ने जब देखा कि अब इस बात में कुछ मज़ा नहीं रहा तब बोल उठी कि बहुत ठीक, मेरा अभिप्राय भी वैर लेने ही से था। इस प्रकार राव केलण ने पूँगल लिया, फिर मुलतान जाकर मुसलमानों को नागोर पर चढ़ा लाया और राव चूंडा को मरवा डाला। केलण बहुत वर्षों तक राज करता रहा। उसके अधीन इतने गढ़ थे—

दोहा

पूंगल वीकमपुर पुण विम्मणवाह मरोट ।
देरावर नै केहरोर केलण इतरा कोट ॥

राव केलण के देरावर लेने की एक बात ऐसी भी सुनी है कि सोम, केहर का सगा भाई, देरावर में मर गया तब ४०० मनुष्यों को लेकर राव केलण वहाँ शोक-मोचन कराने को आया। सोम के पुत्र सहसमल ने उसको गढ़ में न घुसने दिया परंतु वह कई सौगंद शपथ व कौल वचन करके गढ़ में आया और पाँच-सात दिन तक रहा। सहसमल ने कहलाया कि अब जाओ। परंतु उसने गढ़ न छोड़ा। तब सहसमल रूपसी क्रोधित होकर अपना माल-मता गाड़ों में भर, गढ़ छोड़कर, निकल गए और सिंध में जा रहे। देरावर केलण के हाथ आया। तदुपरांत केलण जल्दी ही मर गया। विकुंपुर, वरसलपुर, मोटासर और हापासर की सब धरती पर केलण का अधिकार था। केलण के पौत्र राव शेखा की संतान में भूमि इस प्रकार बँट गई—३६० गाँव पूँगल के ताल्लुक़। कोई ऐसा भी कहते हैं कि गाँव १५० थे। ७५ गाँव विकुंपुर के ताल्लुक़; ८४ गाँव वरसलपुर के; और १४० गाँव हापासर में किशनावत भाटियों के पास रहे। हापासर पाहुवों का कहलाता है। पहले तो जेसलमेर के अधिकार में था, पीछे बीकानेर के महाराज सूरसिंह ने जबर्दस्ती उसको बीकानेर में मिला लिया और किशनावत वहाँ चाकरी देने लगे। हापासर बीकानेर से १२ कोस पर है। पहले जेसलमेर की सीमा बड़ी वजाल तक थी जो राणोहर से १२ कोस महाजन के निकट है। किशनावतों के गाँवों की तफसील—हापासर, मोटासर, खारवास, राणोहर रायमलवाली, बीजल, बाधी, धवलासर, आकेवला, राजासर, सूरासर, वेडरण, लालावर, पीठ-

वाला, मोटेलाई, नागराजसर, लाखासर, अखासर, देदाहर, चूहड़-सर मोरियोंवाला, लाकड़वाला, वंध, जगदेवाला, मंडण, खोखारण, भावाहर और कलाकसा।

राव केलण के पुत्र—चाचा, रिणमल, विक्रमादित्य, आका, कलिकर्ण और हरभम। चाचा पूँगल में; रिणमल विकुंपुर में राव था जिसकी संतान खरड़ के भाटी हैं; आका को राव नाथू रिणमलोत ने मारा; उसकी संतान सेखा सरिया भाटी; हरभम की संतान हरभम भाटी जिनके गाँव नाकणा और सरनपुर हैं। कलिकर्ण की संतान तणांणे गाँव में और विक्रमादित्य के वंशज परिवारों में हैं।

राव चाचा केलण का पूंगल में पाट बैठा। राव केलण ने जितने गढ़ लिये उनमें से विकुंपुर रिणमल केलणोत को दिया। राव चाचा के अधिकार में इतने कोट थे—पूँगल, केहरोर, मरोठ, मगलवाहण और देरावर। चाचा के पुत्र—राव वैरसल पूँगल की गद्दी पर, रावत रिणधीर को भाईबँट में देरावर मिला। उसने वरसलपुर का नया कसबा बसाया। कुंभा, महिरावण रावत रिण-धीर के पुत्र देरावर में न ठहर सके क्योंकि वह सारे सिंध देश का नाका है, इसलिए विकुंपुर में नोखसेवड़े चले आये। अब नेतावत भाटी वहीं रहते हैं। रावल लूणकर्ण ने देरावर लिया तभी से वह नगर जेसलमेर ताल्लुक हुआ। राव वैरसल ने गाडीण प्रसायत बारहट खीवा को दुष्काल में सिंध जाते हुए रोककर अपने पास रक्खा और इतना दान दिया—

"दुय मिरि चंदन अढार वरजल वंम मोताहल।
सेर एक सोवन्न पंच रूपक भालाहल।।"
"बार जूथ नर महिष चादर पट बारह।
च्यार तुरी चत्र ऊँट गाय इक सर विरहै।।"

"भाटियाँ राव हुवसी भुवण, लाभधम्म सोभागतुक।
वैरसल हाथ मांडावियो, चाय इतै चाचग सुअ ॥"
"खींदे समोन बारहट वैरड समोन राय ।
जातै जग जासी नहीं दूहो चवे पसाय ॥"

(वैरसल के पुत्र—"सेखो राव तिलोकसी, जोगाइत जगमल्ल ।
चैरागर रा डीकरा, एकै एकह भल्ल ॥")

विक्रुंपुर राव केलण के दूसरे पुत्र रिणमल ने पाया था। उसका पुत्र गोपा कपूत हुआ तब राव शेखा (पूँगल) के पुत्र हरा ने विक्रुं-पुर उससे छीन लिया। राव हरा का पुत्र राव वरसिंह हुआ जो पूंगल और विक्रुंपुर दोनों ठिकानों का स्वामी था। उसने वड़ी वड़ी लड़ाइयाँ कीं। राव वरसिंह का कवित्त—

पंचसहस मो गरै सहस पंचह धमधारै
पंचसहस पेसरै किये कंवड़ै करारै ।
रैवारी रतड़ी फिरै आगै पड़दारै खड़ै
वाग मोकली चित्त भाटियाँ करारै ॥
वाहड़गिर खांवड़ कोटड़ैं छडोटण सकियो
गोरहर लगो जू मेहणो त्यैंनु तारण आवियो ।
कहकहिया कणछिया कछलागी किरमालां
कमालां मारिया पूठ जिरहाँ कमालां ॥
खेड़ीतां खूंदतां धसै धर पाये हैमर
घूघर रीलरचह रूपां वाजै रिणपाखर ।
सरणाय साह नीसाण सर कूपिये ढोलां
रवकियें त्रूटती रातहर भमतणँ जगमाल जगाविया॥

राव वरसिंह का पुत्र राव दुर्जनसाल विक्रुंपुर का स्वामी हुआ। वह सोनगिरे खींवा का दोहिता था और मोटा राजा (उदयसिंह) उसकी पुत्री पोहपावती (पुष्पावती) को व्याहा था जो मोटे राजा के जोधपुर बहाल होने के पूर्व ही मर गई। राव दुर्जनसाल के पुत्र—राव डुंगरसी, सूरजमल, भवानीदास, सुरताण और रायमल।

राव डुंगरसी—विक्रुंपुर का स्वामी बड़ा ठाकुर हुआ। उस वक्त मोटा राजा फलोधी में रहता था और देश में दाण भी बहुत लगता था। घोड़े के सौदागरों की एक सोहवत फलोधी को आती थी, राव डुंगरसी ने अपने भाई भवानीदास को भेजकर सौदागरों को बुलवाया और उनसे दाण चुकाकर आगे विदा किया। मोटे राजा ने उनकी रक्षा के निमित्त अपने आदमी भेजे थे, उनके सुपुर्द करके भाटी भवानीदास पीछा फिरा और मांडणसर में आकर उतरा था। वहाँ राव वैरसी जैतावत व उसके साथियों ने भवानीदास को मार डाला। राव डुंगरसी कुछ न बोला, परंतु मोटा राजा भाटियों से छेड़छाड़ करने और उनकी बुराई करने लगा, (उनका गाँव) वालेसर लूट लिया तब राव डुंगरसी सब केलण भाटियों को इकट्ठा कर ढाई हजार सेना सहित कुंडल में राव के तालाब पर आया। मोटा राजा भी पाँच-सात सौ आदमियों की भीड़भाड़ लेकर भाटियों पर चढ़ धाया, सं० १६२७ के आश्विन के अंत और कार्तिक के प्रारंभ में युद्ध हुआ, विजय भाटियों को मिली। भाटियों की तरफ वरसलपुर का स्वामी राव मंडलीक मारा गया और राठौड़ों के भी कई मनुष्य खेत रहे। मोटा राजा हार खाकर फलोधी आया और भाटी वहीं से फिर गये। राव डुंगरसी के पुत्र राव उदयसिंह पाटवी, वलूचों व सम्मा ने पूँगल के राव आसकर्ण को मारा था।

उदयसिंह ने सम्मा को, बहुत साथियों सहित, मारकर वैर लिया। मेहवे तलवाड़े पर भी कुँवर पदे चढ़कर गया था परंतु वहाँ हार खाई और उसके बहुत से आदमी मारे गये। डुंगर का दूसरा बेटा देवीदास था।

राव उदयसिंह के पुत्र—सूरसिंह पाटवी, ईसरदास, अर्जुन और कचरा। ईसरदास सिरड़ में रहता था। सं० १६८५ में जब भाटी वस्ता फलोधी का हाकिम था तब उसने ईसरदास को मारा। उसके पुत्र रघुनाथ, हाथी, नाहरखान, लखमीदास, पूरा, सहसा, कर्ण जिसको विक्रमादित्य के पुत्र अचलदास ने मारा, रासा (बीकानेर नौकर होकर बीठणोत के पास जा रहा, वह स्थान अब तक रासे का गुढ़ा कहलाता है जहाँ पाँच सौ सात सौ घर की वस्ती थी), बाघ और सबलसिंह, अर्जुन, कचरा उदयसिंहोत (बीकानेर का चाकर मांडल में रहता था)।

राव सूरसिंह (वा सूरजसिंह)—विक्रुंपुर का स्वामी हुआ। यह बड़ा निर्भय राजपूत था। इसने बड़े-बड़े काम किये। एक बार जब नागोर की जागीर मोहबतखाँ (महाबतखाँ) के थी तब वह बीकानेर, नागोर व फलोधी के बहुत से मनुष्य लेकर चढ़ आया। राव सूरसिंह दो-ढाई सहस्र आदमियों के साथ सीधा बाप जाकर उतरा। तब फलोधी के हाकिम मुँहता जगन्नाथ ने मध्यस्थ होकर संधि कराई। सं० १६६२ में दलपत के पुत्र पृथ्वीराज अखैराज बाघीतरे के वास्ते हीमा के भाटियों के पीछे पड़े हुए थे उसी समय राव उदयसिंह व उसके पुत्र बल्लू के बीच वैमनस्य हो गया। तब बल्लू विक्रुंपुर छोड़कर कैर में पर्वत के पास आ रहा। वहाँ पोकरण के थाणे पर रहनेवाले भाटी दुर्गादास मेघराजोत, भाटी द्वारकादास और एका,

हंमीर और राव सूरसिंह सहित सब भाटी आये। वहाँ पर वह आया तो दुर्गदास, द्वारिकादास, रघुनाथ, एका और विक्रुंपुर जेसलमेर का सारा साथ दौड़ा। फलोधी से १५ कोस परे मांगलियों के गाँव मूंडेलाई में जाकर डेरा दिया; जहाँ दुर्जनसाल का पुत्र खेतसी रहता था। उसने इनको देखकर ढोल बजवाया। राव पृथ्वीराज अखैराज ने भी शस्त्र सँभाले। लड़ाई होने लगी जिसमें राव सूरसिंह अपने पुत्र वल्लू समेत मारा गया और भाटी द्वारिकादास, दुर्गदास, रघुनाथ व पोकरण के साथ भागा, हमीर व मथुरा दो आदमी राव सूरसिंह के साथ काम आये। राव सूरसिंह के पुत्र—वल्लू पिता के साथ मारा गया, उसका बेटा किशनसिंह और किशनसिंह का कुशलसिंह। किशनसिंह ने सं० १७२१ पौष वदी २ को ननेऊ से आकर राव विहारी को मारा फिर तेजसी ने किसना को मार डाला था। किसनसिंह के अतिरिक्त प्रयागदास, मोहनदास, विहारीदास, चंद्रसेन, दलपत और खेतसी राव उदयसिंह के पुत्र थे। प्रयाग का पुत्र पत्ता। सूरसिंह के पीछे मोहनदास को विक्रुंपुर का टीका दिया गया। मोहनदास के पीछे उसका पुत्र जयसिंह राव हुआ परंतु सं० १७११ में विहारी ने गढ़ लिया। जयसिंह का पुत्र मालदेव था। विहारीदास कई दिन तो बीकानेर चाकरी करता रहा फिर रावल के आज्ञानुसार उसने जयसिंह से विक्रुंपुर ले लिया। वह कुछ आलसी सा था। सं० १७२१ के पौष वदी २ को विहारी का पुत्र ब्याहने गया था, पीछे गढ़ में थोड़े से आदमी थे तब भाटी किसना (वल्लूओत) ने ननेऊ से दसेक आदमियों सहित आकर विहारी को मारा। विहारीदास के पुत्र राव जैतसी और गजसिंह चंद्रसेन का पुत्र जगरूप; दलपत साहबदे के पेट का जैतावतों का भानजा था।

राव केलण का वंश
राव चाचा[1]
रिणमल[2]
विक्रमादित[3]
अका[4]
कलिकर्ण[5]
हरभम[6]
देवा
रायमल
वीदा
शेखा
खींवा
चांपा
नापा
रूपा
खेता
रत्ता
वारू
सांगा
जालप
शिवा
तोगा
किसना
वरसिंह
ईसरदास
मांडण
रावत
भाण
अनिंद
भांजण
केसा
सहसा
सुरताण
कल्ला
माना
नांदा
नारायणदास
रायसिंह
धरमा
कचरा
जीवा
राव वैरसल[7]
रावत रणधीर[8]
कुंभा
महिरावण
वीरमदे
लक्ष्मण
मूला
अजा
वीजा
नेता
शेखा
तिलोकसी
जोगा[11]
जगमाल[9]
सहसा
भैरवदास
जैतसी
अखैराज
पंचायण[10]
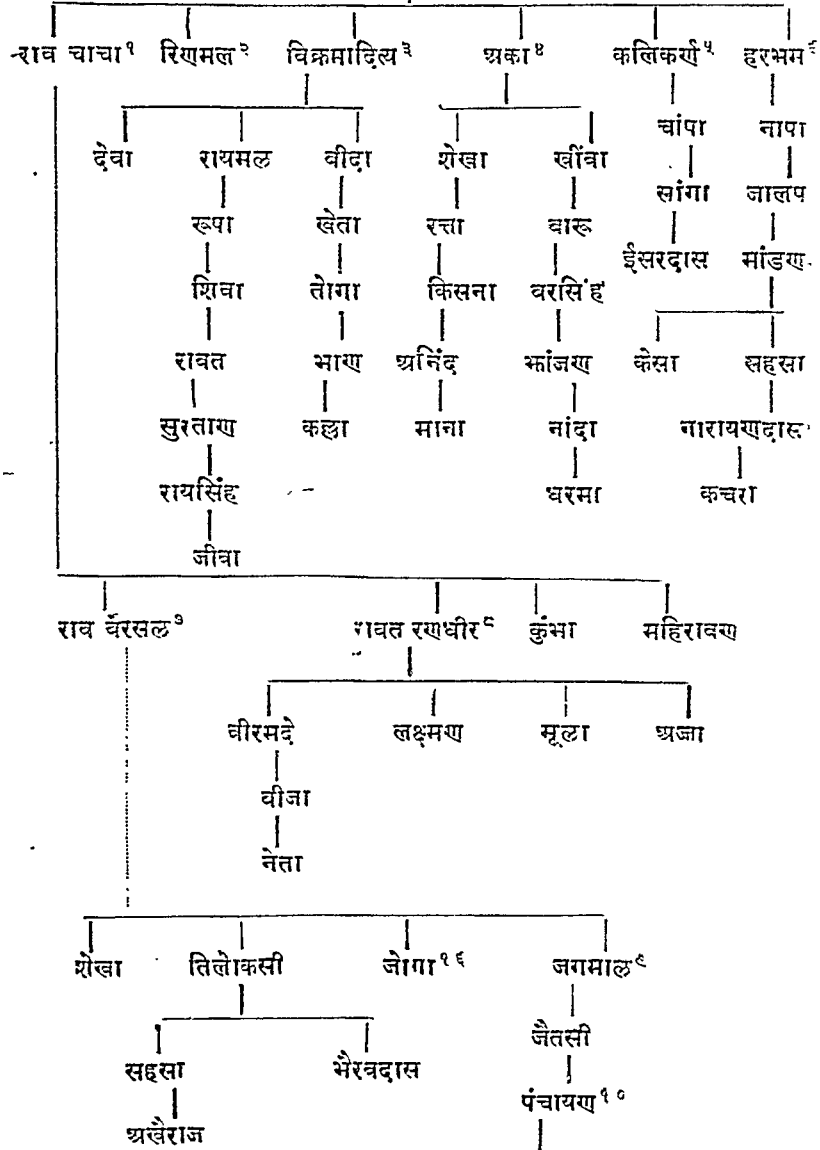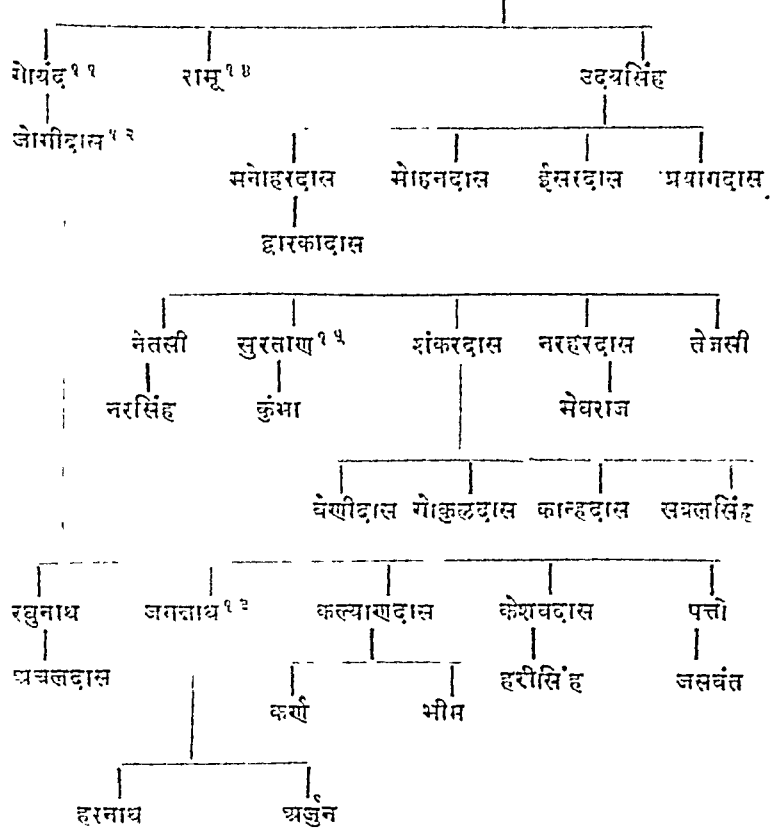
*(१) पूँगल का स्वामी।
(२) विक्रुंपुर की गद्दी पर।
(३) परिवारों का स्वामी।

---

* पुस्तक में इस प्रकार के जितने टिप्पण दिये गये हैं वे सब मूल ग्रंथ के हैं, भाषान्तरकार के नहीं।

(४) इसके वंशज शेखा सरिया भाटी, इसका को राव नाथू रिणमलोत ने मारा ।

(५) इसके वंशज तणांणे गाँव में हैं ।

(६) इसके वंशज हरभम भाटी नाचणे, सरनपुर, खरड़ और खोरवे में हैं ।

(७) वरसलपुर वसाया ।

(८) देरावर भाई-बँट में मिली थी, संतान नेतावत भाटी । विकुंपुर के गाँव नोखसेवड़े में ।

(९) समण वाहण लिया परंतु जगमाल की मृत्यु होने के वाद वहाँ तुर्कों का अधिकार हुआ ।

(१०) राव वाघा की बेटी व्याही ।

(११) गोयंद की कन्या सुजानदेवी राजा सूरसिंह (मारवाड़) के साथ व्याही गई थी ।

(१२) बड़ा राजपूत, जोधपुर रहता था, बींझवाड़िया गाँव ४ सहित पट्टे था, सं० १६६१ में मोहवतखाँ के पक्ष में काम आया ।

(१३) चाँदरख पट्टे, दौलतावाद में मोहबतखाँ के काम आया ।

(१४) राव चंद्रसेन (मारवाड़) का सुसरा, राणी सोहद्रा का पिता ।

(१५) जोधपुर का नौकर, मेड़ते का गाँव राजोर पट्टे में था ।

(१६) भाई-बँट में केहरोर की जागीर आई, वरसलपुर में भी कुछ भाग था । बड़ा दाता हुआ । मरने पर केहरोर तुर्कों ने ले लिया ।

वैरसल चाचावत का वंश—वैरसल के पुत्र शेखा तिलोकसी आदि तिलोकसी के बेटे सहसा और भैरवदास[1]। सहसा का बेटा अखैराज।

(राव मंडलीक)
(धनराज)[१३]
राव नेतसी[८]
खेतसी
राव पृथ्वीराज[९]
राव दयालदास
रामचंद्र
सबला
वीरमदेव
दलपत
वाघ
राव कर्ण
राव रघुनाथ
गोपालदास[१४]
खेतसी
ठाकुरसी
रायमल
डूंगरसी
सीहा
लक्ष्मीदास
रामसिंह
नरहरदास[१५]
उगरा
राजसिंह
आसकर्ण
सिरंग
दुर्गदास
महेशदास
नाथा[१७]
रावोदास
वाव
बिहारी
देवीदास
गोरधन
हरराम[१६]
माधोदास
जगमाल
गोयंददास
कल्याणदास[१८]
हरदास
मनोहरदास
कान्ह
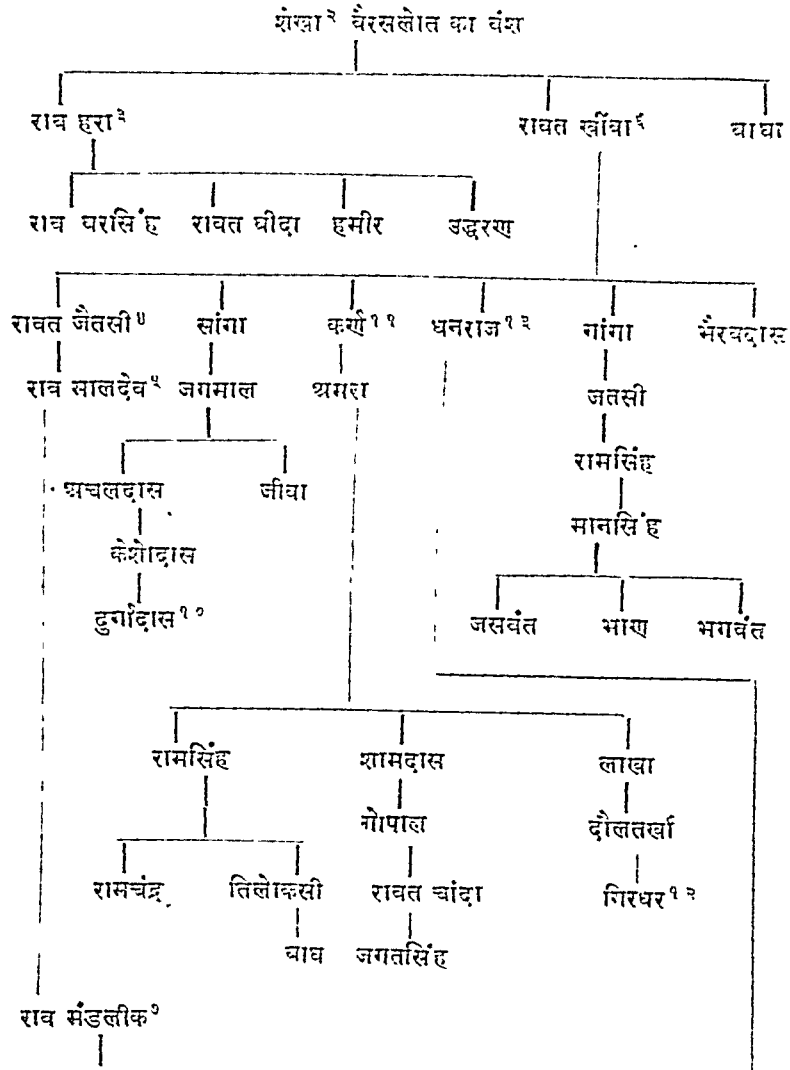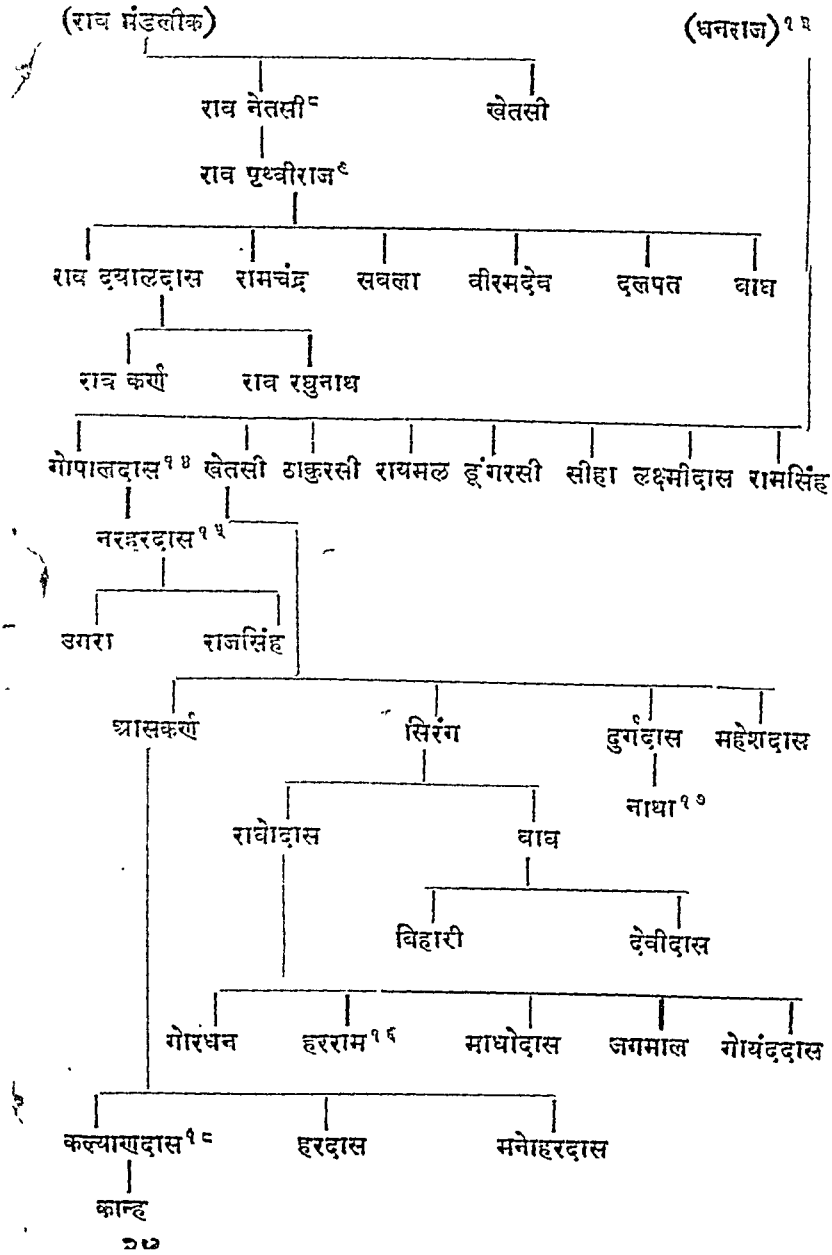
दोहा—"जोगाइत जीश्रार, पाना ऊथलसी परम ।
तोने बीजी त्यार, वेहरो होसी वैरव्त ॥"

---

(१) मरोठ का स्वामी था, भैरवदास के निस्संतान मरने पर जैसा ने मरोठ ली ।

(२) पूँगल का स्वामी, एक बार इसको मुगल पकड़कर मुल्तान की तरफ ले गये थे, राव बीका ने छुड़ाया ।

(३) पूँगल का स्वामी ।

(४) बरसलपुर का ठाकुर, तुर्कों ने मारा ।

(५) बरसलपुर का ठाकुर ।

(६) बरसलपुर का ठाकुर ।

(७) बरसलपुर का ठाकुर, सं० १६२७ में मोटे राजा (उदयसिंह) के साथ कुंडल में लड़ाई हुई वहाँ मारा गया ।

(८) बरसलपुर का स्वामी, ससियाणे में बलोचों ने मारा ।

(९) बरसलपुर का स्वामी ।

(१०) जोधपुर में फलोधी का गाँव मेहाकोर पट्टे ।

(११) अपने पिता खींवा के साथ काम आया ।

(१२) खजवाणा पट्टे ।

(१३) राव मालदेव का नौकर, विकुंपुर कोहर बहुत से गाँवों सहित जागीर में था । फलोधी के थाने में रहता था । पूँगलपति राव जैसा ने चांडी गाँव लूटा तब उसने वाहर करके उसको पोहला के पास जा लिया । जैसा, पृथ्वीराज और भोज को मारा और लड़ाई जीती ।

(१४, १५) भटनेर काम आये ।

(१६) जोधपुर वास ।

(१७) राव सत्रसाल के साथ काम आया ।

(१८) बीकानेर निवास, नाथूसर चाखू पट्टे ।
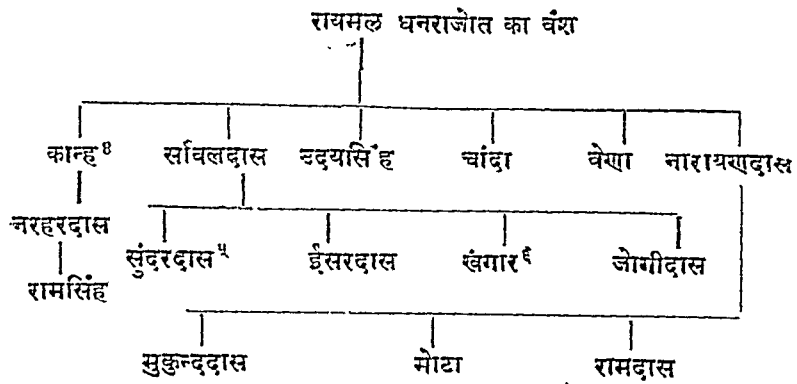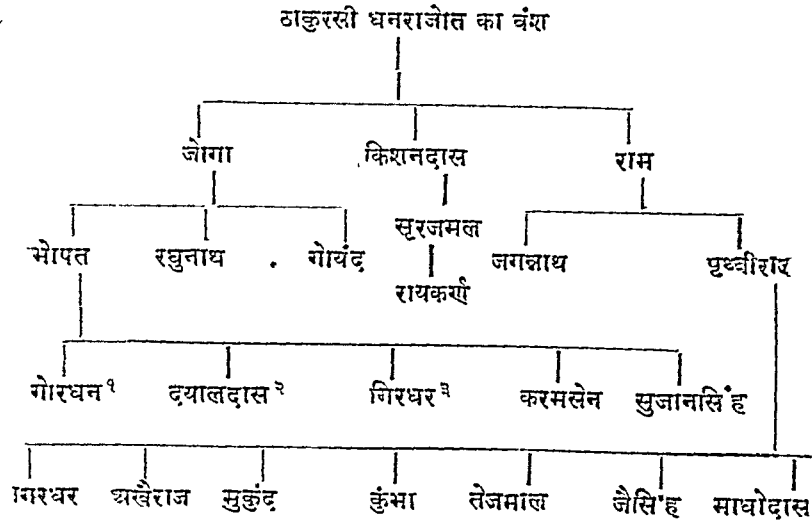
लक्ष्मीदास[9] धनराजोत के पुत्र—कल्याणदास और दूदा। कल्याणदास का बेटा लाडखाँ[10]।

डूंगरसी धनराजोत का बेटा करमसी

सीहा[७] धनराजोत का वंश
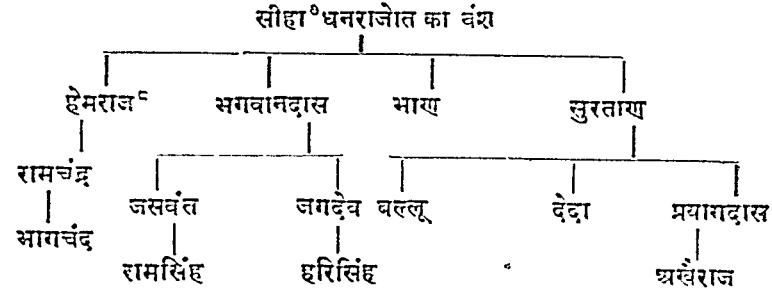
शेखा वैरसलोत के पुत्र वाघा[११] का वंश
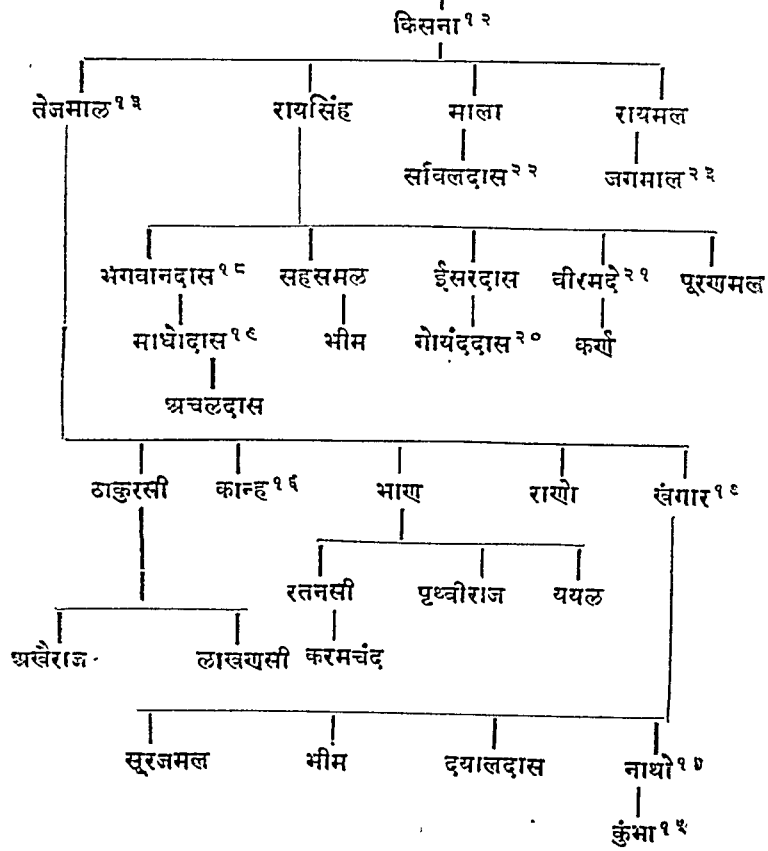
(१) खींदासर पट्टे । (२) नाभासर पट्टे ।

(३) सीहाग पट्टे । (४) जोधपुर नौकर मेहाकोर पट्टे ।

(५) जांभेला पट्टे । (६) जोधपुर नौकर चीमणवाह पट्टे ।

(७) हडफे में मारा गया । (८, ९) भटनेर में काम आये ।

(१०) बीकानेर में निवास, सोवाणिया पट्टे ।

(११) शेखा के वंशज शेखावत भाटी, पूंगल में हापासर के साथ १४० गाँव बँटा लिये ।

(१२) किसना की संतान, किसनावत भाटी बीकानेर की चाकरी में रहते थे। जब फलोधी मोटे राजा को मिली तब पीछे नाम के वास्ते आधी फलोधी किशना को दी गई ।

(१३) बड़ा उखाड़ पछाड़वाला राजपूत था ।

(१४) अच्छा राजपूत, खारवा के चूहड़ सर में रहता है ।

(१५) खारवा रहै ।

(१६) जोधपुर महाराजा का नौकर, सं० १६८५ में मेड़ते का मीठडिया गाँव पट्टे में था ।

(१७) जोधपुर नौकर था, सं० १६५९ में पाँच गाँव सहित वीठणोक पट्टे में थी, राजा सूरसिंह ने तेजमाल के साथ इसको भी मारा ।

(१८) सं० १६७७ में जोधपुर रहता था, चामू सावरीज पट्टे में थी ।

(१९) जोधपुर नौकर ।

(२०) किशनावतों में मुखिया, रायमलवाली राणोर में रहता था ।

(२१) जोधपुर नौकर, सं० १६५९ में १४ गाँवों सहित कालाणो पट्टे ।

(२२) हापासर में रहता था ।

(२३) दहेरे भाचाहर में रहता था ।

राव वरसिंह[1] हरावत का वंश
राव दुर्जनसाल[2]
राव जैसा[3]
कल्ला[4]
पातल[5]
जोधा
करमचंद
सांतल
किशनदास
राणो
जगमाल
भगवान
अखैराज
जोगाइत
कल्याणदास
रघुनाथ
धनराज
लखमीदास
पीथा
राघोदास
गोपाल
भीमराज
राव डुंगरसी
सूरजमल[6]
रायमल
सुरताण[8]
भवानीदास[9]
गोयंद
कल्याणदास
दयालदास
तेजमाल
रामचंद
जसवंत[7]
लखमीदास
वल्लू
किशनदास
सादूल[10]
गोपालदास[11]
मानसिंह
रतनसिंह
भगवान
वल्लू
पूरा
रामा
मनोहरदास
सुंदरदास
जसवंत
शामदास
सांवलदास
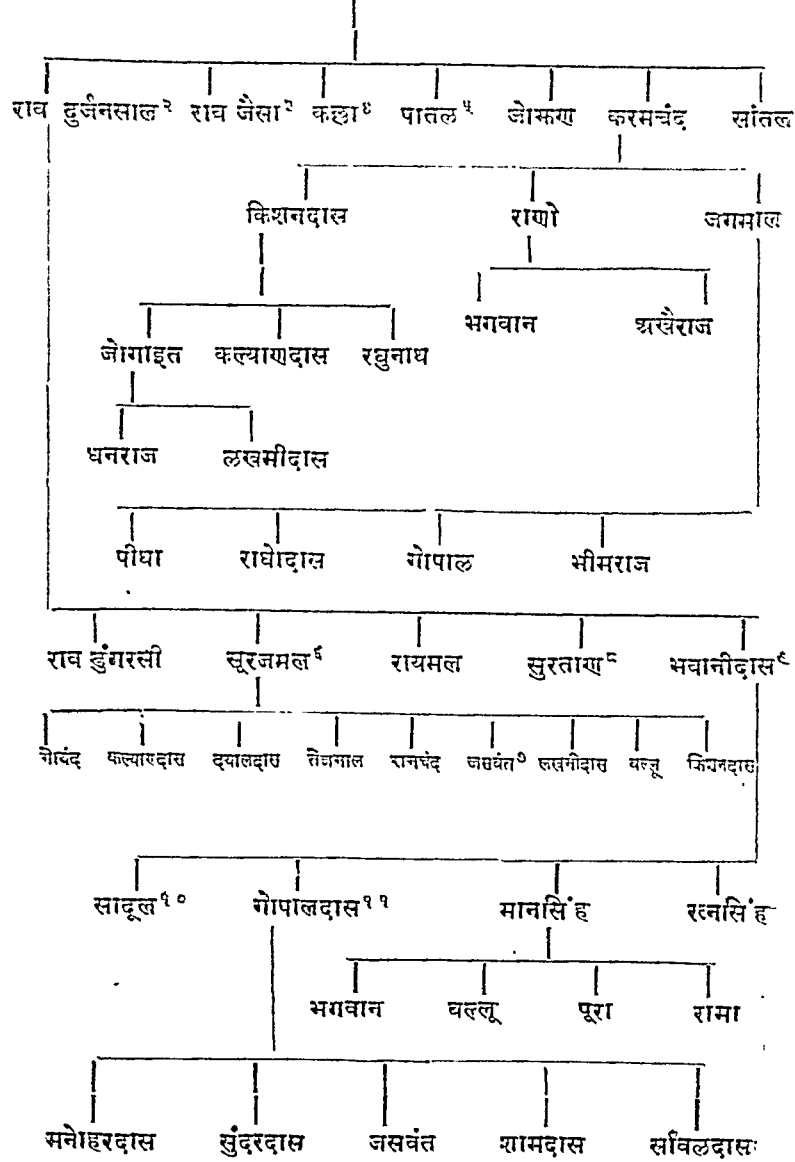
(१) पूँगल, विकुंपुर दोनों का स्वामी।

(२) विकुंपुर का स्वामी।

(३) पूँगल का स्वामी।

(४) किरड़ड और वाप के बीच रहता था, उस स्थान को कल्ला की कोठड़ी कहते हैं। एक बार राव जैसा कहीं गया था, पीछे से कल्ला ने पूँगल पर अधिकार कर लिया, फिर वह जल्दी ही मर गया और पूँगल का टीका उसके भाई पातल को हुआ।

(५) छः मास तक पूँगल की गद्दी पर रहा फिर जैसा ने पूँगल पीछी ली। पातल की संतान नोखड़े में है।

(६) जोधपुर का चाकर, विकुंकोहर पट्टे।

(७) जोधपुर का चाकर ननेऊ पट्टे। सं० १६६३ में काम आया।

(८) मोटे राजा का चाकर, फलोधी की गौवें घेरीं, उस वक्त काम आया।

(९) सिरहड़ में रहता था, पीछे सेवा के मामले में सं० १६२५ के लगभग मोटे राजा ने फलोधी रहते मारा।

(१०) राजा रायसिंह के साथ काम आया।

(११) सिरहड़ में रहा, पातावत ने नाल के पास मारा।
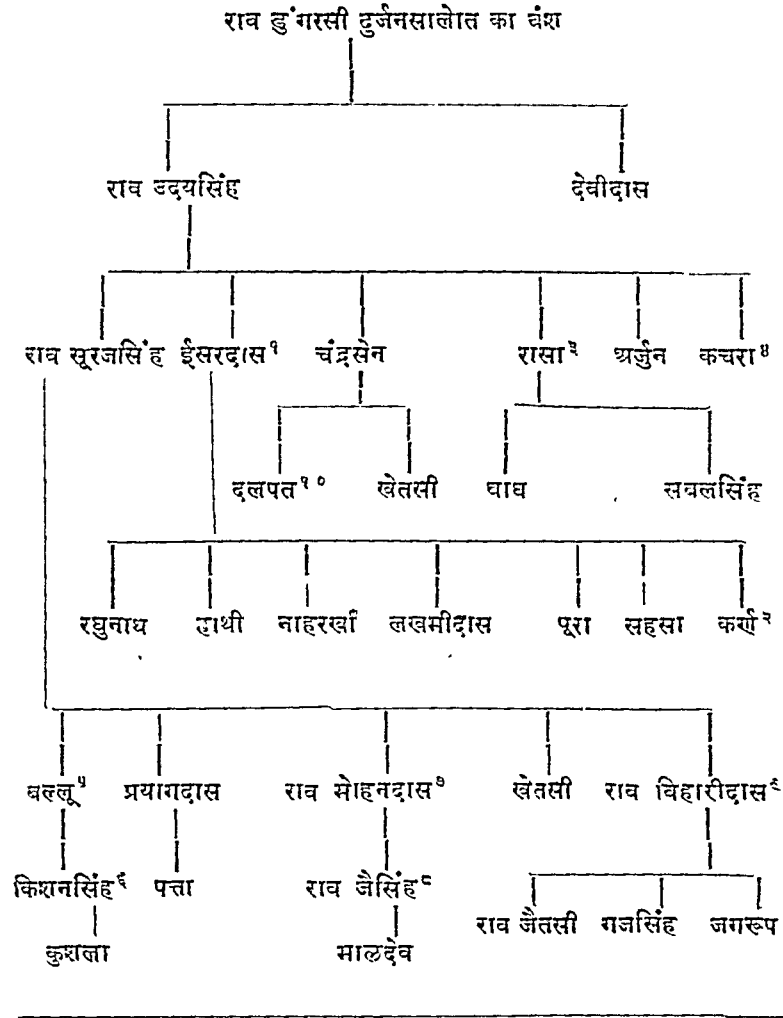
(१) सिरड़वासिया पट्टे में था, सं० १६८५ में भाटी वस्ता ने मारा।

(२) विक्रमादित्य के पुत्र राव अचलदास ने मारा।

(३) बीकानेर का चाकर, बीठणोक के पास जा रहा। अब तक उस स्थान को रासा का गुढ़ा कहते हैं। वस्ती घर ५०० तथा ७०० की सदा रहती थी।

(४) बीकानेर का चाकर, मांडाल गाँव में रहता था।

(५) अपने पिता सूरसिंह के साथ सं० १६९२ में मूंडेलाई की लड़ाई में मारा गया।

(६) ननेऊ से चढ़के राव विहारी को मारा फिर तेजसिंह ने किशना का काम तमाम किया।

(७) सूरसिंह और वल्लू के मारे जाने पर विक्रुंपुर की गद्दी पर बैठा था।

(८) मोहनदास के मरने पर विक्रुंपुर का टीका हुआ था, सं० १७११ में विहारीदास ने गढ़ लिया।

(९) पहले तो कई दिन बीकानेर चाकर रहा, फिर रावल के हुक्म से विक्रुंपुर लिया। भला, परंतु ढीला सा ठाकुर था, सं० १७२१ पौष वदी २ को विहारी का पुत्र व्याहने गया, पीछे गढ़ में थोड़े से मनुष्य रह गये थे तब भाटी किशना ने ननेऊ से आकर १० आदमियों सहित मारा।

(१०) साहिबदेवी का पुत्र, जैतावतों का भांजा।

राव जैसा वरसिंहोत (पूँगल का स्वामी)—इसके वंशज जैसावत भाटी कहलाते हैं। जैसा बड़ा बाँका राजपूत हुआ, उसने मरोठ भी ली थी और २२ लड़ाइयाँ जीतीं, अंत में मुलतान की फ़ौज से लड़ता हुआ मारा गया। राव मालदेव गाँगावत (जोधपुर) ने अड़ोस-पड़ोस के सारे राज्यों को धर दबाया था। पूँगल पर भी उसकी सेना आई। चाड़ी का ठाकुर राव भाण भोजराजोत कटक के साथ था। उससे झगड़ा कर जैसा चाड़ी गाँव पर चढ़ गया, वहाँ तीन लड़ाइयाँ जीतीं—एक में राव पृथ्वीराज भोजराजोत को चाड़ी के खेड़े में मारा। गाँवकरण का स्वामी कल्ला रतनावत पातावत को साथ सहित रिणमलसर के पास जा लिया, लड़ाई हुई जिसमें कल्ला को घायल कर (जैसा ने) गिराया और उसकी एक आँख भी फूट गई। आगे राव (मालदेव) का पोहकरण के थाने का साथ लेकर राव भोजराज का बेटा राण और भाटी धनराज फेलण—फलोधी के थाने के—दोनों आते थे, उनको बीकानेर के गाँव लाखासर के पास आ दबाया, लड़ाई हुई, राण भोजराजोत के १७ आदमी मारे गए और राण लिपट घायल हुआ परंतु मरा नहीं। भाटी धनराज को भाटियों ने बचा लिया। यह लड़ाई भी जैसा ने जीती। ऐसा भी सुना जाता है कि राव जैसा कितने एक दिन जोधपुर राव मालदेव के पास रहा था और मेड़ते के पट्टे का गाँव रायण उसके पट्टे में था। वह पातावतों का भांजा था, कुछ काल चोटीले भी रहा। उस वक्त पातावतों ने उसको बड़े आदर से रक्खा था। गीत राव जैसा का—

"अण भागो कलह खील सत अध कै, असुर घड़ाँ चोरंग चढ़ एम।
जो जीवीजे तो सालिया, जै मरजे तो जैसा जेम॥"

विक्रुंपुर के स्वामियों के दूसरे राज्यों से संबंध—

राठोड़ों के साथ—

राव चंद्रसेन (जोधपुर) राव डुंगरसी की बेटी व्याहा।

मोटा राजा (उदयसिंह) राव दुर्जनसाल की बेटी हरखाँ को परणा; भाटी जगमाल खींवावत के यहाँ व्याह किया, भाटी जयमल कल्लावत की बेटी व्याहा।

बीकानेर के स्वामियों के साथ संबंध—

राजा रायसिंह भाटी भवानीदास की बेटी जसोदा व्याहा।

राव सूरसिंह राव आसकर्ण (पूँगलिया) की बेटी व्याहा। भाटी तेजमाल किशनावत की बेटी परणा।

राजा कर्णसिंह भाटी सुदर्शन मानसिंहोत सिरडिया की बेटी व्याहा।

कछवाहों के साथ—

महासिंह मानसिंहोत राव आसकर्ण पूँगलिया की बेटी व्याहा।

माधोसिंह राव डुंगरसी विक्रुंपुरवाले की बेटी व्याहा।
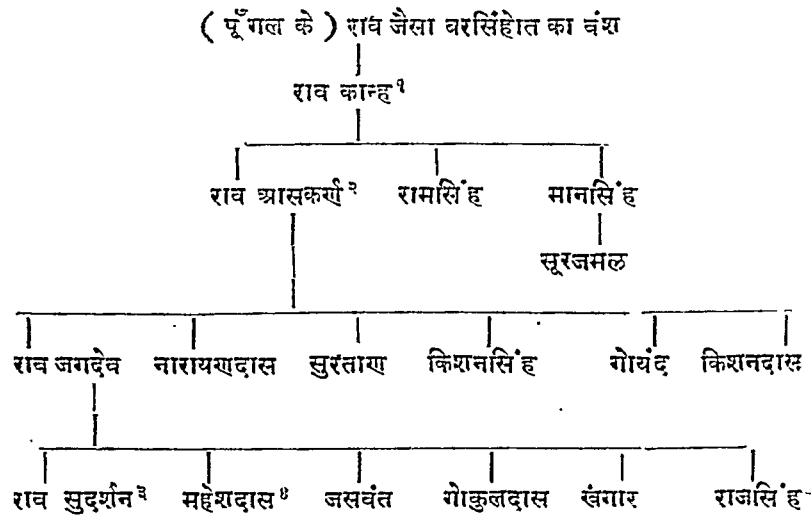
जैसा भाटी—केहर (रावल) के पुत्र कलिकर्ण के बेटे जैसा से शाखा चली, जो जैसा भाटी कहलाते हैं। जैसे जेसलमेर छोड़ के फलोधी के किसी गाँव में नहीं रहे, एक वार किरड़ड के पास आ बसे थे। वहाँ मूल नक्षत्र में जनमी हुई राणी लक्ष्मी को हर-भम के यहाँ उसके ननिहाल भेज दी और जैसा नागोर के गाँव आडड़े में गया। वहाँ गढ़ बनवाया और रक्षा के निमित्त अपने आदमी छोड़कर वह चित्तोड़ में राणाजी के पास जा रहा। राणा कुंभा ने उसको १४० गाँव सहित मल्ला सोलंकीवाला ताणा पट्टे में दिया। वहाँ उसने रामदास मालहण के बाप को मारा। एक वार उसने दीवाण से कहा कि आप कहें तो मैं दरगाह (पादशाही खिदमत में) जाकर जेसलमेर को धक्का पहुँचाऊँ। राणाजी ने रुखसत दी, वह दिल्ली जाकर दो मास वहाँ रहा और वहीं मरा। राणाजी ने उसके पुत्र भैरवदास को राव की पदवी

---

(१) पूँगल का स्वामी, जैसा को तुर्कों ने मारा तब कान्ह भी कैद हो गया था। राजा रायसिंह ने बादशाह से अर्ज़ कर छुड़ाया।

(२) पूँगल का स्वामी। सम्मा बलोच पूँगल पर चढ़ आया तब आसकर्ण गढ़ से निकलकर नगर के बाहर मैदान में उनसे लड़ा और बहुत राजपूतों सहित मारा गया।

(३) राव मान खींवावत का दोहिता, सं० १७२२ में राजा कर्ण (बीकानेरी) ने इससे पूँगल छीन ली।

(४) सं० १७२२ में बीकानेरवालों ने मारा।

ताणे का पट्टा १४० गाँव से दिया। भैरवदास की वसी नागोर के गाँव भाउड़े ही में थी। बलोचों ने वहाँ के गौ, भैंस आदि घेरे। भैरव उनसे जा भिड़ा और लड़ाई में, ४० साथियों सहित, मारा गया। ताणे का पट्टा राणा ने उसके पुत्र अचलदास को दिया। भाउड़े में वसी रह न सकती थी तब राणी लक्ष्मी ने राव सूजा (मारवाड़) से अर्ज़ कर वसी के वास्ते गाँव चोपड़ाँ दिलवाया। वसी वहाँ रहती और अचला मेवाड़ में रहता था।

हम्मीर भाटी—हम्मीर देवराज का और देवराज मूलराज का पुत्र था। यह जेसलमेर के चाकर हैं। नरा अज्जावत, अज्जा किशनावत और किशना चूंडावत, आगे का हाल मालूम नहीं। जैसलमेर के ४ भाटी प्रधानों में एक हंमीर भाटी थे। जब भाटियों का अधिकार पोकरण पर था तब बहुत से हंमीर भाटी कैर पहाड़ी के वहाले पर रहते थे। इनका एक गाँव, जेसलमेर से ४ कोस, मछवाला जैसुराणे के पास है। मथुरा रायमलोत, मथुरा हराउत और माना शिवदासोत का एक गुढ़ा (छोटा गाँव) कैर पहाड़ी के पास था, जहाँ राव पृथ्वीराज अखैराज दलपतोत राव उदयसिंह वाघावत के वैर में सं० १६६२ में इनके गाँव मार के एक सहस्र गौवें ले चला। राव सूरसिंह, बल्लू, हम्मीर, पत्ता, मथुरा, माना पोकरण का संघ वहारू हो पीछे लगा, मूंडेलाई में मांगलियों के यहाँ जाकर ठहरे, वहाँ पृथ्वीराज ऊपर आ पड़ा, लड़ाई हुई और राव सूरसिंह बल्लू मारे गए, मथुरा भी काम आया और पत्ता अत्यंत घायल हुआ। मथुरा हरावत के पुत्र—जोगा और रतना; कांधल शिवदासोत का बेटा देवराज; रायमल के पुत्र शक्ता, पत्ता, हरचंद, रूपसी; भाटी दुर्गदास मेघराजोत, मेघराज वीरमदासोत। हंमीर की संतान—

मूलराज के पुत्र देवराज का बेटा हंमीर, हंमीर का लूणकर्ण[1], लूणकर्ण का सत्ता[2], सत्ता का अर्जुन[3], अर्जुन का सावंत[4], सावंत का सीहा[5], और सीहा का पुत्र रायपाल[6]।

राणा रायपालोत
पत्ता[४१]
ईसरदास[४३]
रायमल
सादूल
नाथा
वैरसल
सूजा[४२]
आईदान[४४]
पंचायण
लूणा
कान्ह
अखैराज रायपालोत
भगवानदास
केशोदास
मनोहरदास[४८]
रावोदास[४९]
सुंदरदास
शामदास[४६]
पंचायण[४७]
गोपालदास[४५]
जैसा[२६] रायपालोत
गोपालदास[२७]
राव रायसिंह[३१]
गोयंददास[३५]
भाण[३९]
माधोदास[२८]
विट्ठलदास[३०]
सुरताण[३२]
नरसिंहदास[४०]
रावोदास[३३]
मोहनदास
वल्लू[३४]
हरराम
शिवदास
भीम
दूदा
नरहरदास[३६]
सुंदरदास[३७]
महेशदास[३८]
रतनसी
कल्याणदास

---
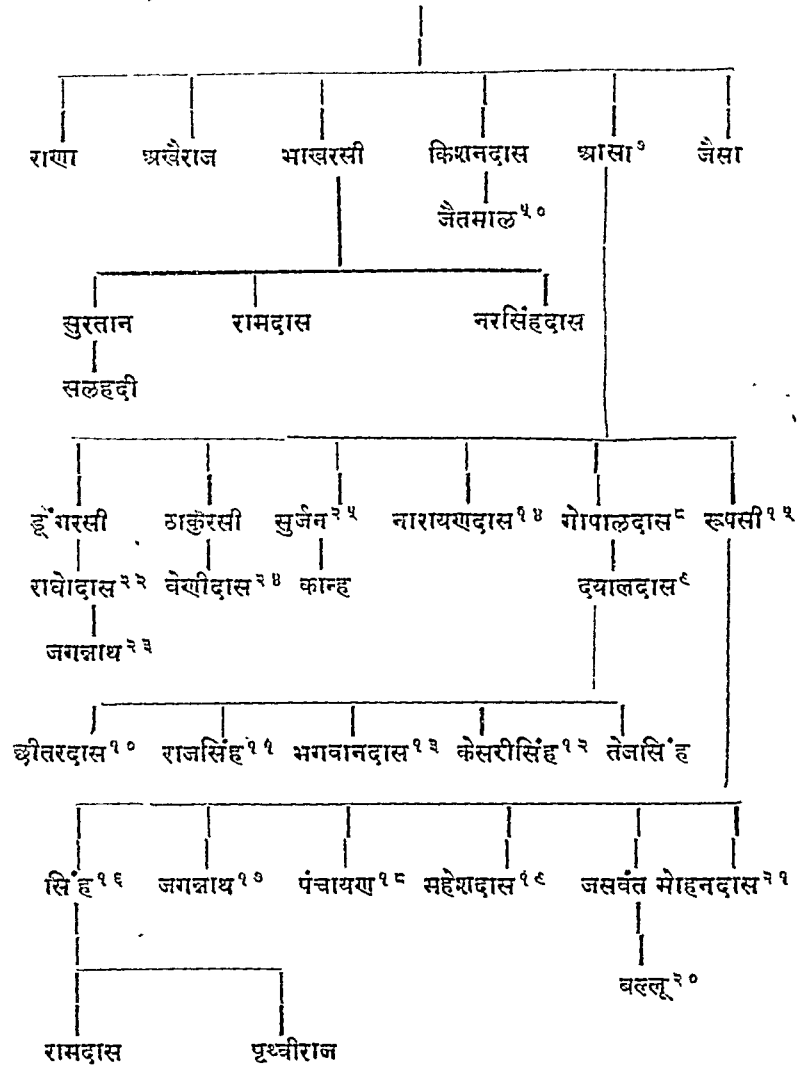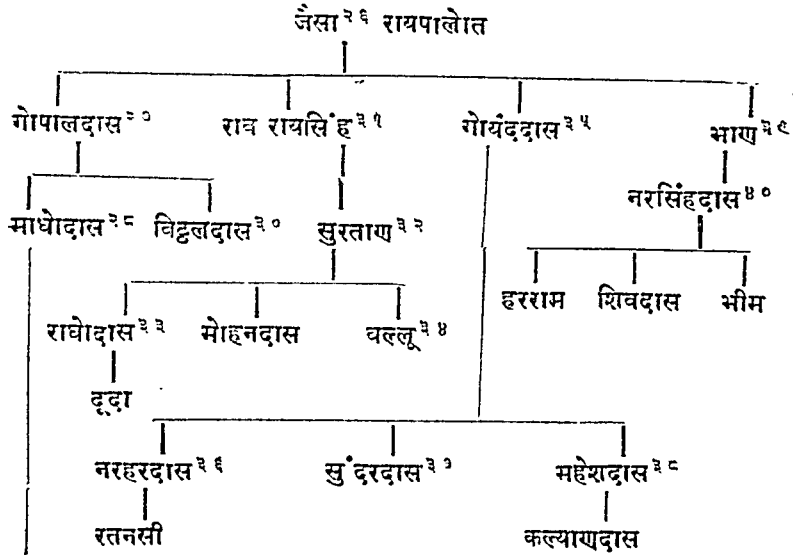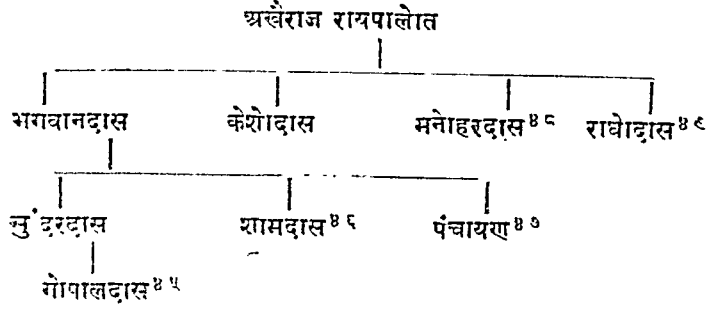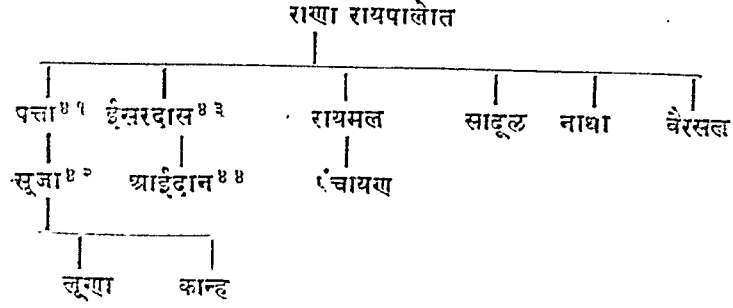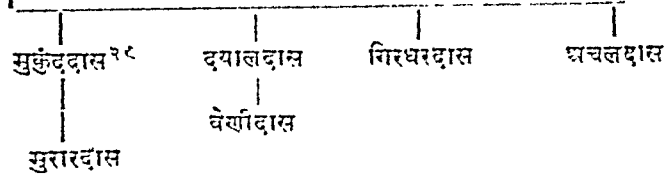
(१) इसकी संतान जोधपुर दर्बार के चाकर।

(२) राव रणमल के साथ चित्तौड़ काम आया, इसने राव को वचन दिया था कि मैं आपके साथ प्राण दूँगा।

(३) राव बीका का मोहिलों के साथ युद्ध हुआ जिसमें मारा गया।

(४) बीकानेर राव लूणकर्ण के काम आया।

(५) मौत से मरा।

(६) राव मालदेव का नौकर, खींवसर और नागोर के गाँव अटबड़ा खेजड़ला पट्टे में थे; फिर राव चंद्रसेन के पास रहा। जब राव चंद्रसेन ने मोटे राजा से फलोधी में युद्ध किया तब रायपाल लड़कर मारा गया।

(७) राजा भगवानदास कछवाहे के पास रहता था। वहीं मरा।

(८) बड़ा राजपूत, बादशाही चाकर था। सं० १६६६ में बसी रखने को खेजडला पट्टे में रहा। सं० १६६९ में राजाजी के साथ दक्षिण से गुजरात में होकर आया जिससे पादशाह नाराज़ हो गया। सं० १६७१ में जोधपुर चाकर हुआ और दूधवाड़े का पट्टा पाया।

(६) सं० १६६७ में जोधपुर नौकर हुआ और ओलवी पट्टे में दी गई। सं० १६७८ में २४ गाँव सहित भादराजूण मिली। सं० १६८२ में भादराजूण छूटकर ओलवी ही रही। सं० १६६० में जालौर की फ़ौजदारी दी। सं० १६६१ में हुकूमत व पट्टा उतरा तब दूधवाड़े अपनी बसी उठाकर बारै गाँव में गुढ़ा बाँधा। सं० १६६१ जेठ सुदी ११ को राव चाँद बाघोत मेहवचा, जो मेवाड़ में राणाजी के पास नौकर था, चढ़ आया और दयालदास को मारा।

(१०) पहले तो गोपालदास के पास था। सं० १६६० में जब दयालदास को दूधवाड़ा दिया तब ओलवी इसको मिली थी। सं० १६६३ में छोड़कर राव अमरसिंह के पास गया, सं० १६६५ में वापस आने पर भादराजूण का पट्टा राजसिंह के शामिल मिला था। वे दोनों परस्पर लड़े और राजसिंह ने भादराजूण की गढ़ी में छीतरदास को मारा।

(११) पहले छीतर के साथ भादराजूण जागीर में था, सं० १६६६ में ४ गाँव सहित खमदोला पट्टे में मिला।

(१२) सं० १६६२ में ४ गाँव सहित खेजड़ला पट्टे में था।

(१३) दयालदास के साथ काम आया।

(१४) राजा मानसिंह का चाकर था, उसके मरने के पीछे जोधपुर रहा। सं० १६७३ में मेड़ते का गाँव कुड़की पट्टे में था, सं० १६७६ में छूटा तब पीछा राजा भावसिंह के पास जा रहा।

(१५) सोजत का वापारी गाँव ३ गाँवों सहित पट्टे, सं० १६५१ मे जोधपुर का गुढ़ा मिला। बड़ा राजपूत था।

(१६) सं० १६६७ में सोजत का गाँव रीवडी पट्टे, सं० १६७७ में मल्हार पाया।

(१७) पहले तो दयालदास का नौकर था, सं० १६७३ में मेड़ते का गाँव दोढोलाई पाया, सं० १६८५ में आगरे से आता हुआ मारा गया।

(१८) सं० १६७५ में खींवसर की वेरावस पट्टे, सं० १६८४ धारणवाय चौकड़ो पाया।

(१९) राव दलपतसिंह (वीकानेर) के पास था, जब दलपत की वादशाही सेना से लड़ाई हुई और वह मारा गया तब मोहनदास भी हाथी गोपालदासोत के साथ काम आया।

(२०) सं० १६७४ में जालौर का खारा नरसाणा पट्टे, सं० १६७७ में तुवरां और मेड़ते की चोखा वासणी थी।

(२१) सं० १६७४ में जालौर का सेराणा था, सं० १६७७ में जैतारण का नीलांवा और सं० १६८० में मेड़ते का चौकड़ो पट्टे रहा।

(२२) सं० १६७७ में जालौर का साहला गाँव ५ सहित पट्टे, सं० १६७८ में तिमरणी की मुहिम में काम आया।

(२३) सं० १६७८ में मेड़ते का वोड़ाहड़ और जालोर के ३ गाँव पट्टे में थे।

(२४) सं० १६६७ में ५ गाँव सहित चोपड़ाँ पट्टे, सं० १६७६ में पट्टा ज़ब्त हुआ तब शाहज़ादे खुर्रम के पास जा रहा और पूर्व में मरा।

(२५) सं० १६७२ में चांपासर, सं० १६७५ में जैतारण का महसिया और सं० १६८० में मेड़ते का माणकियावास था।

(२६) पहले तो पृथ्वीराज पातावत के पास था, सं० १६४१ में मोटे राजा का नौकर हुआ और दाँतीवाड़ा पाया। जैसा की पूछ प्रधानों में होती थी, सं० १६४९ में लाहोर में मरा।

(२७) राजा रायसिंह को छोड़ जोधपुर नौकर हुआ। सं० १६५२ में दाँतीवाड़ा, सं० १६५५ में सोजत की चंडावल और १६५६ में ३ गाँव सहित खेजड़ला पट्टे था।

(२८) बड़ा राजपूत, खेजड़ला पट्टे सं० १६६६ में ओलवी और भांगेसर मिले। बादशाही दरबार में वकील होकर रहता था। सं० १६८७ में मरा।

(२९) सं० १६८७ में भांगेसर पट्टे।

(३०) सं० १६६७ में बीलाड़े का कूंपड़ावस, सं० १६७४ में जालोर का रेवता और सं० १६७७ में लवेरे का नांदिया पट्टे में था, छोड़ के भावसिंह कानावत के पास जा रहा।

(३१) सं० १६६० में पीपाड़ का बाड़ा पट्टे, सं० १६६२ में सांडवे में काम आया।

(३२) सं० १६६९ में सूरजवासणी और सं० १६८० में धवा की सिलणी पट्टे।

(३३) सं० १६७४ में बीलाड़े का गाँव हरस पट्टे।

(३४) सं० १६८९ में लुड़ली पट्टे।

(३५) सं० १६५२ में बीलाड़े का जैतीवास पट्टे, सं० १६७१ में भाटी गोयंददास के साथ काम आया।

(३६) सं० १६७६ में भाटी गोयंददास के पक्ष में लड़कर पूरे लोह पड़ा, सं० १६७२ में जैतीवास का पट्टा क़ायम रहा, सं० १६९२ में मरा।

(३७) सं० १६८० में भाभेलाई और सं० १६९२ में जैतीवास पट्टे।

(३८) सबलसिंह राजावत के पास रहता था।

(३९) सं० १६५० तेजा का राजला पट्टे, सं० १६५४ में वीजा-वासणी दी, सं० १६६१ में छोड़ी। मेड़ते में भाण वेणीदास राजा पूरणमल का फौजदार था, कान्हदास के लोगों ने उस पर दोष लगाया जिससे राजा अप्रसन्न हो गया। जब राजाजी देश में आये तो उन्होंने भाण और वेणीदास को महंदअली (महम्मदअली) द्वारा दरबार में बुलवाया। नकीब पुकारा कि वेणीबाई और भाणीबाई जुहार करती हैं। ये दोनों छोड़कर किशनसिंह के पास जा रहे। सं० १६७७ में पीछे जोधपुर आये, भाण को ३ गाँव से कुहर पट्टे में दिया। सं० १६७६ में जोधपुर का सिकदार रहा था।

(४०) सं० १६७७ कुहर पट्टे, सं० १६९२ में सांवलता और कपूरिया पाया।

(४१) माधोसिंह कछवाहे का चाकर, अजमेर काम आया।

(४२) सं० १६७२ में ५ गाँव से भांडोलाव पट्टे, सं० १६७३ में मेड़ते का गंगड़ाणा, १६७८ में गजसिंहपुरा और १६८७ में ४ गाँव से वींझवाड़िया पट्टे।

(४३) मेवाड़ का नौकर पुर का परगना पट्टे।

(४४) मेवाड़ का नौकर।

(४५) खुर्रम के साथ की लड़ाई में मारा गया।

(४६) करमसेन का नौकर। पँवारों की लड़ाई में मारा गया।

(४७) करमसेन के पास।

(४८) कछवाहा प्रतापसिंह के पास, पूरब की मुहिम में काम आया।

(४९) कछवाहा प्रतापसिंह के पास पूरब में मारा गया।

(५०) राठौड़ जसवंत डुंगरसींहोत के पास था, जसवंत के साथ मारा गया।

पच्चीसवाँ प्रकरण

जैसा कलिकरोत का वंश

(१) सूजारे निवास, जब भैरवदास जैसावत को सूर मारा
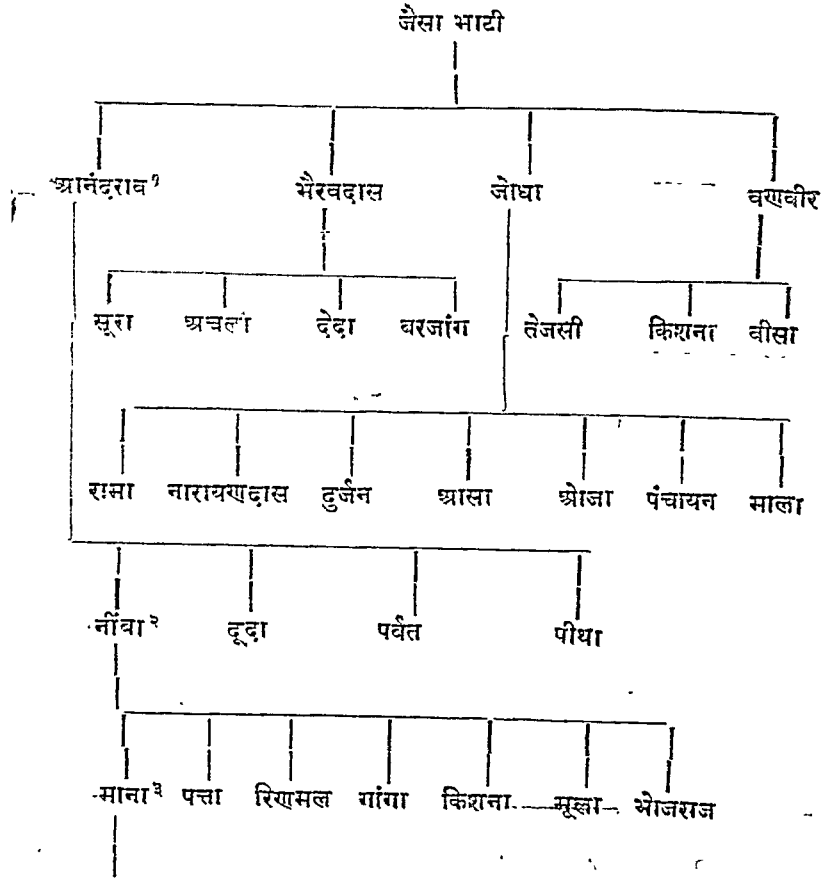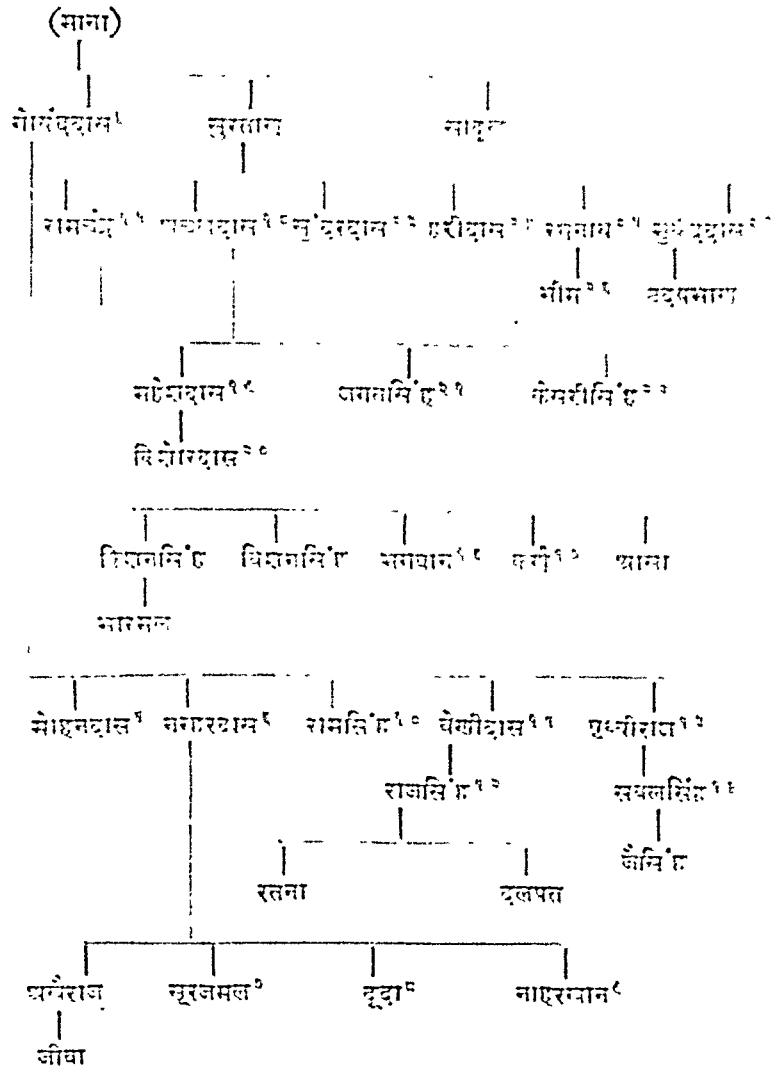
ने मारा तो आनंद ने सूर को गडेवाड़ की अहिलाणी में जाकर मार लिया।

(२) राव मालदेव का नौकर, लवेरा पट्टे, वहीं रहता था। इसके कढ़ाई सदा चढ़ी रहती और पाकशाला चलती ही रहती थी। शेरशाह सूर के साथ राव मालदेव की लड़ाइयों में घायल हुआ तब चाकर उठाकर घर लाए, पीछे काम आया।

(३) जब मोटा राजा फलोधी में था तब माना उसकी चाकरी में रहा और कुंडल की लड़ाई में भी शामिल था।

(४) गोयंददास बड़ा राजपूत हुआ, सं० १६४० में मोटे राजा के पास था और लवेरे की वासणी पट्टे में थी। एक बार वह पादशाही दरगाह में भेजा गया। गोयंद काम सुधार आया तब प्रसन्न होकर मोटे राजा ने सिवाणे का गाँव माँगला फिर दिया। सं० १६४३ में लवेरा पाया। सं० १६५१ में मोटा राजा मरा, सं० १६५२ में राजा सूरसिंह ने लवेरे के साथ गाँव २५ और दिये और अपना प्रधान बनाया। सं० १६६३ में लवेरे के साथ आसोप भी पट्टे में दिया और दरगाह में भी गोयंद प्रसिद्ध हो गया। सं० १६७१ ज्येष्ठ सुदी ८ को अजमेर के मुक़ाम राव किशनसिंह उदयसिंहोत (राजा सूरसिंह का भाई) राजा के डेरे पर गोयंद को मारने के लिए आया। कटाकटी में गोयंददास, राव किशनसिंह, कर्ण शक्तिसिंहोत आदि बहुत से आदमी मारे गये। यह लड़ाई बादशाह जहाँगीर के डेरों के पास अजमेर में हुई।

(५) सं० १६६३ में कुँवर गजसिंह टोडे राजा जगन्नाथ के यहाँ ब्याहने को गया था, वहाँ शीतला निकली और बहुत बीमार हो गया। गोयंददास ने अपने पुत्र मोहन को कुँवर पर वारा जिससे कुँवर को तो आराम हुआ और मोहन मर गया।

(६) सं० १६७२ में राजा सूरसिंह ने डोवर का पट्टा, सात गाँवों सहित, दिया था। सं० १६७६ के वैशाख में इसने रा० नरहर ईसरदासोत को वैर में मारा। तब पट्टा ज़ब्त हो गया और नरहर आफ़त का मारा शाहज़ादे ख़ुर्रम के पास जा रहा। वहाँ से छोड़कर सिंगले गया और कँवले गाँव में रहा। वहाँ उसे मृगी रोग हो गया, पीछा राजा गजसिंह ने पाँवों लगाया और मेवरा पट्टे में दिया। सं० १६६५ में मर गया।

(७) महाराजा गजसिंह का नौकर तिलाणेस खेतासर पट्टे।

(८) सं० १६६६ में नरहरदास पर भाटी मालदेवोत और गोयंद सहसमलोत नागोर से आये। दूदा भी मुक़ाबले में जाकर लड़ा और मारा गया।

(६) महाराजा जसवंतसिंह का चाकर, सं० १७२१ में गाँव धवा पट्टे।

(१०) सहेवचो पूरां का पुत्र, सं० १६७२ में भाटी गोयंद-दास मारा गया तब लवेरा रामसिंह और पृथ्वीराज को शामिल में मिला था। सं० १६७७ में बुरहानपुर में रामसिंह से छुड़ाकर लवेरा पृथ्वीराज को दिया तब रामसिंह शाहज़ादे शहरयार के पास जा रहा। कश्मीर जाते रा० ईसरदास कल्याणदासोत के चाकर ने रामसिंह जगमाल को रात के वक्त डेरे में घुसकर मारा। सं० १६७२ में एक बार आसोप मिली थी। सं० १६७६ में राजा गजसिंह ने आसोप राजसिंह को दिया और रामसिंह को भटेंड़ा मिला।

(११) सं० १६७२ में तीन गाँवों सहित रड़ोद आसरी पट्टे में थी। सं० १६७८ में रड़ोद राजसिंह को दी तब वेणीदास घर

आ बैठा। सं० १६८० में ३ गाँव से धाणवाणा पाया। सं० १६८५ में पागल होकर मर गया।

(१२) अणवाणा पट्टे।

(१३) पूराँ महेवची का पुत्र, सं० १६७२ में आसोप और लवेरा दोनों पट्टे में थे। सं० १६७७ में कुँवर अमरसिंह के साथ (नागोर) गया, फिर पीछा जोधपुर आया तब लवेरा पट्टे में पाया। महाराजा जसवंतसिंह का कृपापात्र था, सं० १७०४ में प्रधान का पद पाया और ४००००) की जागीर मिली। दो-एक वर्ष पीछे अलग किया गया। सं० १७०६ में पादशाही चाकर हुआ और सं० १७२० में मरा।

(१४) अच्छा राजपूत था, सं० १७१६ में रा० इंद्रभाण केसरीसिंहोत गाँव डेह में रहने लगा और सबलसिंह पर चढ़ आया। इसने भी मुक़ाबला किया, अस्सी आदमियों सहित लड़कर मारा गया।

(१५) सं० १६५७ मगसर सुदि ७ का जन्म। सं० १६७० में कैलावा पट्टे में दे अपने आदमी भेज बड़े आदर से बुलाया। चित्तोड़ में राणा जगर के पास था। सं० १६७८ में बुरहानपुर से राव रत्नसिंह के पास चला गया। सं० १६८० में मनाकर पीछा आया और कैलावा दिया। सं० १६६१ में फिर छोड़ बैठा, चाकरी नहीं करे। फिर राव शत्रुशाल के पास रहा। काबुल जाते रा० किशोरदास गोपालदासोत के चाकर ने मारा।

(१६) जूट पट्टे।

(१७) श्रीजी का चाकर, विमलोखा पट्टे।

(१८) सुरताण के पट्टे का बिर्कुकोहर १७ गाँवों सहित दिया। सं० १६७८ में राव रतन के पास जा रहा, सं० १६८० में पीछा

आया और विकुंकोहर पट्टे में आया। सं० १६९० में फलोधी' थाने पर रक्खा। वहाँ बलोचों ने गौवें घेरीं, उनको जा पकड़े और लड़ाई में मारा गया।

(१९) सं० १६९० में विकुंकोहर पट्टे, सं० १७१४ में उज्जैन काम आया।

(२०) विकुंकोहर और मतोड़ा पट्टे।

(२१) थबूकड़ा पट्टे।

(२२) सं० १६९० में ओयसाँ की डाभड़ी पट्टे, सुंदरदास के वैर में सोढों ने मारा।

(२३) जोधपुर का मेवरा पट्टे। लवेरी की साँढें सोढों ने घेरीं तब वाहर में सोढों से लड़कर मारा गया।

(२४) सं० १६७५ में मेहकरण राम की मुहिम में मर गया।

(२५) सं० १६८० में मेवर पट्टे, सं० १६९१ में चामूँ दी थी, फिर राव अमरसिंह के साथ गया, सं० १६९५ में पीछा लाया और मेड़ते का चामूँ और साथाणा व फलोधी का जैसला दिया। सं० १६९६ में झावर पट्टे, सं० १७०४ में देश की खिदमत दी, सं० १७१४ में उज्जैन के जंग में अति घायल हुआ। महाराजा ने आदर के साथ ८०००) आय का कई गाँवों सहित लवेरा दिया और भोवाल भी।

(२६) श्रीजी का चाकर।

(२७) सं० १६७१ में गोपासरिया और वारणाऊ पट्टे में थे, सं० १६८८ में खींवसर की नागरी और सं० १६९३ में बोझ-वाडिया दिया।

पत्ता[1] नींबावत का पुत्र भोपत;[2] भोपत के बेटे ईसरदास,[3] जगमाल[5] और कान्ह[6]। ईसरदास के पुत्र—मनोहर, वरसिंह, नरसिंह, गोपालदास, अखैराज, लखमीदास[7] और साँवलदास।

रिणमल[8] नींबावत के बेटे माधोदास[9] और वाघ। वाघ का लखमीदास।

गांगा[10] नींबावत का पुत्र कल्ला;[11] कल्ला के बेटे हरीदास,[12] माधोदास, जगन्नाथ, साँवलदास और प्रयागदास[13]। हरीदास का पुत्र जसवंत।

किशना[3] नींबावत। मूला[14] नींबावत। भोजराज[15] नींबावत।

दूदा आनंददासोत का पुत्र मेघराज; मेघराज का नारायणदास; नारायणदास[20] का कल्ला।

---
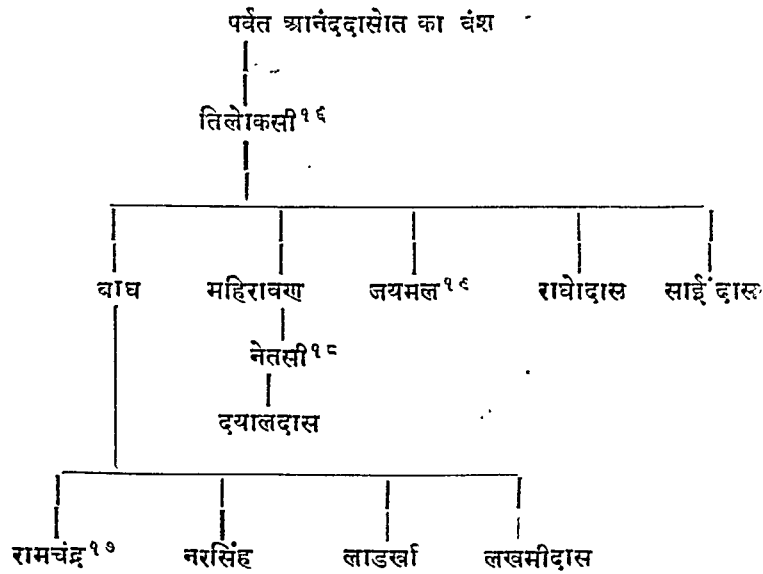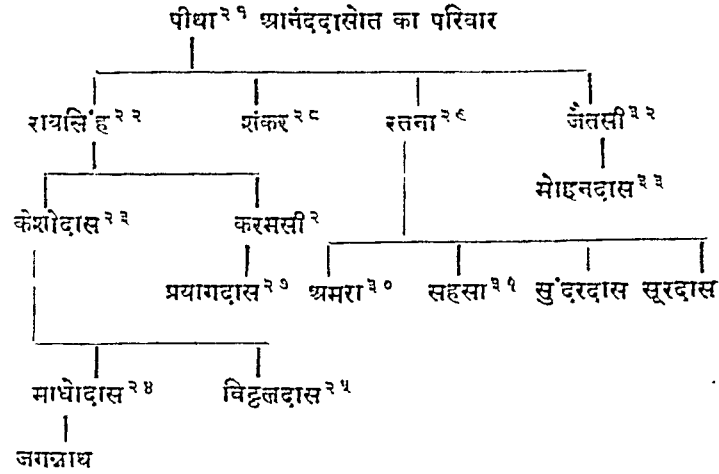
(१) नींवा के बाद टीकेत हुआ।

(२) नींवा की सब धरती भोपत ही के रही, आपत्काल में गुढ़ा पर राणाजी का साथ आया तब भोपत मारा गया।

(३) सं० १६४० में गांगावाड़ी, लवेरे की बासणी और सं० १६५८ में भोवादी टीकाई दी गई, सिवाने के गढ़ का रक्षक भी था।

(४) उज्जैन काम आया।

(५) दक्षिण में मरा।

(६) गोयंददास (भाटी) के साथ काम आया।

(७) फलोधी में राव मालदेव के काम आया।

(८) राव चंद्रसेन के समय जोधपुर के घेरे में रामपोल पर तैनात था, वहाँ काम आया।

(९) सं० १६६५ में सोजत का राजगियावास पट्टे, सुरताण के पास था, अचलदास के साथ मारा गया।

(१०) राव चंद्रसेन के आपत्काल में जोधपुर गढ़ के द्वार पर लड़कर काम आया।

(११) सं० १६४० में लवेरी की मढली, सं० १६४१ में रोहणवा और लवेरे की वासणी पट्टे में थो।

(१२) सं० १६७१ में पृथ्वीराज की चाकरी में बेठवास का पाना पाया और सं० १६७९ में हथूंडिया पट्टे में था। सं० १६८७ में छोड़कर अचलदास सुरताणोत के पास जा रहा और उसी के साथ काम आया।

(१३) अजमेर में गोयंददास के साथ काम आया।

(१४) जेसलमेर की सेना आई तब राव मालदेव के काम आया।

(१५) पट्टा छोड़ा और कटार खाकर मर गया।

(१६) मेड़ते में देवीदास जैतावत के साथ काम आया, राव मालदेव का चाकर था।

(१७) सं० १६६७ में रामावास पट्टे था, छोड़कर भाटी अचलदास के पास जा रहा और उसके साथ काम आया।

(१८) अचलदास के साथ मारा गया।

(१९) मोटे राजा का चाकर, लोहावट की लड़ाई में मारा गया।

(२०) सं० १६५२ में ईसर नावड़ो पट्टे।

(२१) राव मालदेव का चाकर, मेड़ते में देवीदास जैतावत के साथ काम आया।

(२२) सं० १६४० में चाँपासर, सं० १६४३ में सोजत का नापावत और पीछे बाँधड़ा पट्टे में रहा।

(२३) बाँधड़ा पट्टे।

(२४) सं० १६७२ में रूँदिया पट्टे में था, सं० १७१४ में उज्जैन काम आया।

(२५) रूँदिया पट्टे, पहरे पर एक चाकर खड़ा था उसने मारा।

(२६) रूँदिया पट्टे, अजमेर में गोयंददास के साथ मारा गया।

(२७) सं० १६८२ में जालेली पट्टे, फिर फलोधी का गाँव छीला दिया।

(२८) राव चंद्रसेन आपत्काल में भादराजण गया, वहाँ शंकर मारा गया।

(२९) मोटे राजा ने फलोधी में भाटी भवानीदास को मारा, उस लड़ाई में काम आया।

(३०) सं० १६९२ में लोलावस पट्टे।

(३१) गुजरात में काम आया।

(३२) सं० १६५६ में सोजत राव शक्तिसिंह को दी गई तब शक्तिसिंह के साथियों ने रात के वक्त विष्णुदास पर छापा मारा, वहाँ जैतसी काम आया।

(३३) सं० १६८३ में बाँधरा पट्टे।

(आनंदराव के भाई) जोधा जैसावत का वंश
रामा[1]
नारायण
दुर्जन
आला
भोजा
पंचायण
माला
किशना[2]
वीरमदे
राणा
ऊदा
कान्ह[3]
सूरजमल[10]
गोयंद[11]
गांगा[15]
तेगा
हरदास[4]
देवीदास[6]
मनोहर[12]
कुंभा[13]
भाण[14]
अखैराज
रतन
मेघराज
पत्ता
द्वारकादास
विट्ठलदास[5]
मोहनदास
मुकुंददास
शक्तिसिंह
डूंगरसी
रामसिंह
दूदा
शत्रुसाल
राजसिंह
उदयसिंह
आसा
पृथ्वीराज
जगन्नाथ
जैतमाल
जैसा
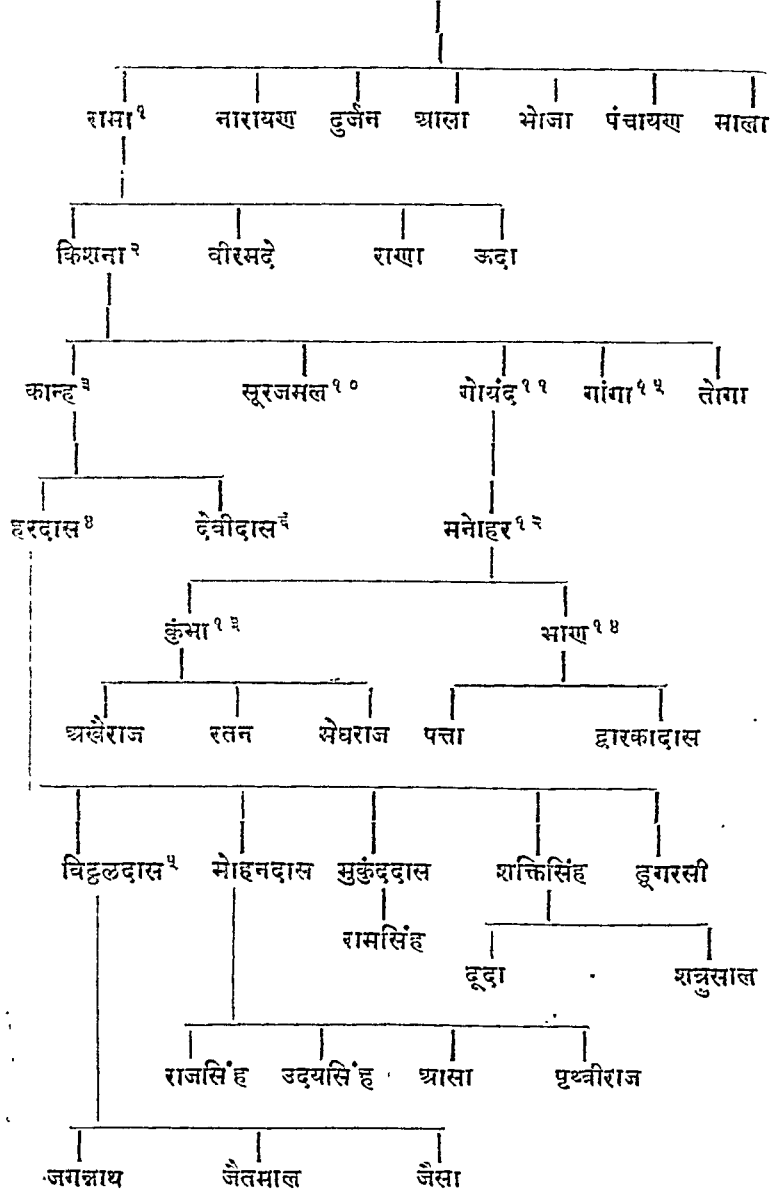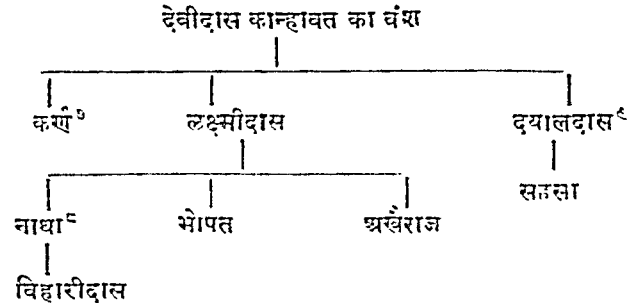
(१) राव मालदेव ने १५ गाँव सहित बालरवा पट्टे में दिया था; पूँछड़ में रहता था। जब राव जैसा भावदासोत को भांगेसर के थाने पर भेजा तो रामा को भी उसके साथ दिया। वहाँ वह बहुत घायल हुआ और डेरे पर लाते ही मर गया।

(२) मोटे राजा का चाकर था। जब रामा काम आया तो बालरवा वीरमदे रामावत के हुआ, इसलिए किशना चाकरी छोड़कर बीकानेर चला गया, जब मोटे राजा को फलोधी मिली तब पीछा आया और राजाजी के साथ समावली गया, फिर जब मोटे राजा को जोधपुर मिला उस वक़्त पीछा देश में आया।

(३) जब मोटे राजा ने कुंडल में भाटियों से लड़ाई की तब कान्ह युद्ध में पूर्णरीत्या घायल हुआ, फिर समावली गया। सं० १६४० में जब जोधपुर मोटे राजा के हाथ आया तब भावी के डेरों पर चार गांव सहित बालरवा और कूड़ी का पट्टा कान्ह को दिया गया। गढ़ पर रहता था, सं० १६६६ में मरा।

(४) बालरवे का पट्टा बरकरार रहा, सं० १६८९ में ज़ब्त किया गया तो वह राव अमरसिंह के साथ चला गया। सं० १६९६ में काबुल से लौटने पर बालरवा पीछा दिया और गढ़ का किलेदार बनाया।

(५) सं० १६८३ में मोखेरी पट्टे, सं० १६८७ में दो गाँव सहित सावरीज दिया, सं० १६-६१ में अमरसिंह के साथ गया और सं० १६-६५ में पीछा आया तब चोहड़ मूंडवा पट्टे में पाये।

(६) सं० १६५६ में जब शक्तिसिंह को सोजत दी गई तब भाटी सुरताण ने राजा सूरसिंह के साथ जाकर सोजत को घेरा था, उस वक्त देवीदास किशनसिंह (राठौड़) को बुलाने के वास्ते सुरताण को भेजा। उसने जाना कि किशनसिंह पाली में है। किशनसिंह के सहायी लाला के भाखरसी सादूलोत से वैर था जो वालीसों की भूमि में रहता था। लाला उधर गया, लड़ाई हुई, भाटी देवीदास और लाला मेलावत मारे गये और अर्जुन ऊहड़ और भीम सहायी किशनसिंह को ले निकले।

(७) सं० १६७२- में हीरादेसर रासावत लखमीदास के शामिल पट्टे। सं० १६८३ में तांवड़िया मिला उसे छोड़कर भीम-कल्याणदासोत के पास जा रहा।

(८) सं० १६-६० में नांद्रिया पट्टे में था, सं० १६-६१ में अमरसिंह के साथ गया और १६-६६ में पीछा आने पर काठसी गाँव दिया गया।

(६) सं० १६८० में फलोधी का वरजांगसर पट्टे।

(१०) मोटे राजा का चाकर, लोहावट की लड़ाई में मारा गया।

(११) सं० १५५६ में भगतावासणी और १६५७ में आनावस पट्टे।

(१२) गोयंददास के साथ अजमेर में मारा गया।

(१३) सं० १६६८ में आनावस पट्टे, छोड़कर राव अमरसिंह के साथ गया, पीछा आने पर गाँव नांदिया पाया।

(१४) उज्जैन में काम आया।

(१५) सं० १६४३ में आनावस पट्टे, सं० १६५७ में दक्षिण में काम आया।

वीरमदे[1] रामावत का वंश

रायसिंह[2] भवानीदास[7] ईसरदास[14] भगवानदास[15] जसवंत[16] शक्तिसिंह[22] प्रयागदास[23] राघोदास

पीथा[17] जगहर[18] भोपत सूजा[20] भोजराज[21] मनोहर[24] विट्ठल-दास[25]

जैतसी[26]

मुकुंददास

देवीदास[19] अर्जुन

रामसिंह शामसिंह सबला रामसिंह

लक्ष्मीदास टीका

माधोदास मांडण दयालदास मेघराज

सहसा मानसिंह सुंदरदास

भाखरसी[8] साँवलदास[10] नरहरदास[12]

बाघ[11]

रामचंद्र[13] रघुनाथ करमचंद

कर्ण

जगन्नाथ[9] अमरा सादूल जैतमाल

लाखा

सबला भावसिंह

केशोदास[3] लूणा[6] रूपसी
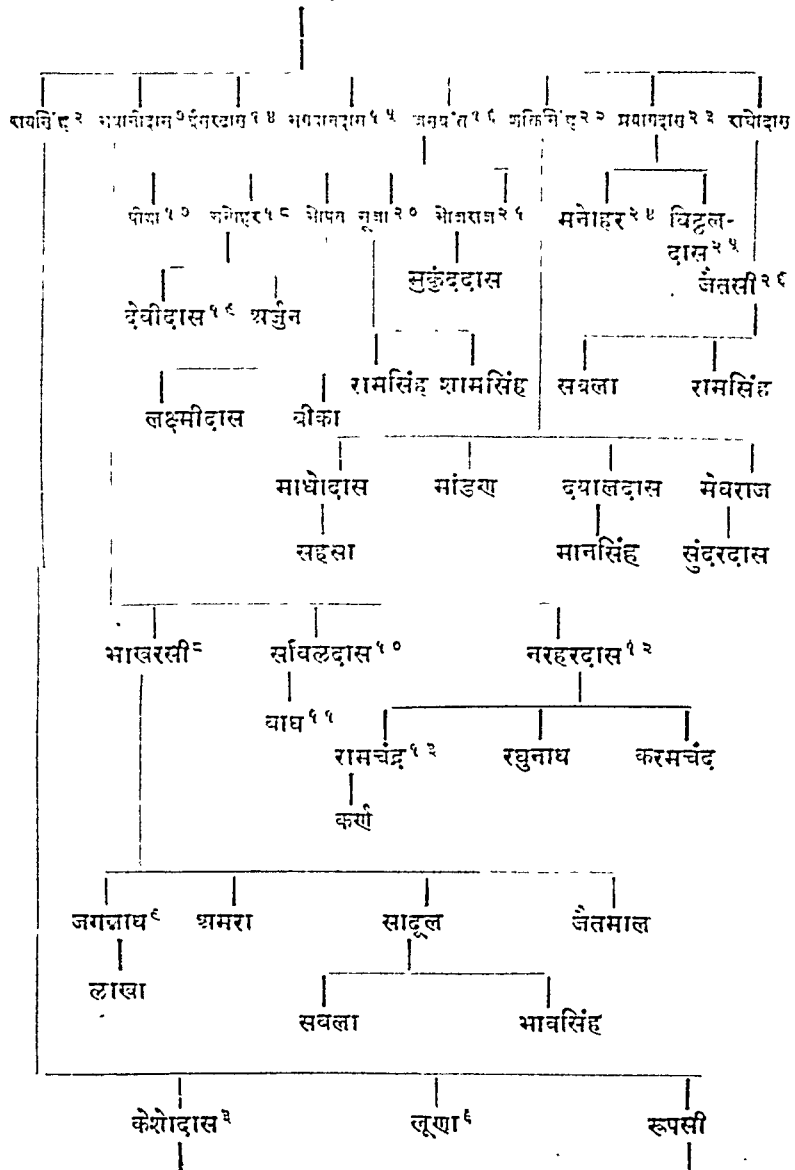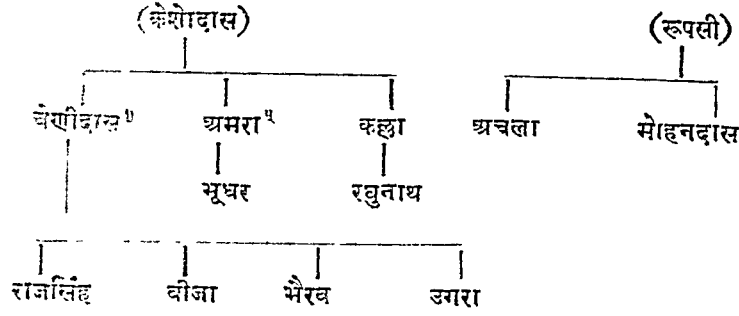
(१) झालरवा पट्टे।

(२) राव चंद्रसेन के आपत्काल में भादराजण में था। राव ने वैरीसाल पृथ्वीराजोत, गोपालदास भाणोत, ऊहड़ और जयमल इन ४ ठाकुरों को घोड़ों की कारवान लूटने को भेजा था। वहाँ लड़ाई में मारा गया।

(३) सं० १६४० में चोपड़ा पट्टे, छोड़कर किशनसिंह के पास रहा। पीछा आने पर सं० १६७४ में कराडो दी गई। सं० १६७५ में ४ गाँव सहित भवराणी पट्टे में थी। सं० १६८० में मेड़ते का गाँव धधोलाव पाया और सं० १६८३ में मरा।

(४) सं० १६८१ में राव अमरसिंह के साथ गया था; वहाँ काबुल से आते हुए दरिया अटक में डूबकर मर गया।

(५) सं० १६८३ में मेड़ते का गाँव सीहार पट्टे में था।

(६) सं० १६५६ में भाटी देवीदास के साथ किशनसिंह (राठौड़) के काम आया। खछाणी लाला के दावे में खेतसी सादूलोत पर चढ़कर गये थे, गोड़वाड़ के गाँव खेवटावास में लड़ाई हुई।

(७) राव चंद्रसेन के गाँव बालरवे में था, वहाँ थोरियों के साथ लड़ाई में मारा गया।

(८) संवेराई पट्टे, सं० १६७७ में वेरू पाया। सं० १६९३ में राव अमरसिंह के पास गया और वहीं मरा।

(९) सं० १६९५ में गोलावास की थाहरी पट्टे।

(१०) सं० १६६१ में त्रिगटी पट्टे, सं० १६६५ में ब्रह्मावासणी और सं० १६६६ में सांवत कुँआ पाया। सं० १६७० में कुँवर गजसिंह और भाटी गो'ददास ने कुंभलमेर लिया। राणा के आदमियों से लड़ाई हुई जिसमें मारा गया।

(११) सं० १६७० में त्रिगटी पट्टे में थी।

(१२) सं० १६६३ में भांहरा पट्टे, सं० १६७३ में सोजत का चाडंडिया, सं० १६७४ में सोजत की वोल, सं० १६८१ में जूट पट्टे में था। सं० १६८४ में भगवानदास के साथ कड़ी गाँव में काम आया।

(१३) सं० १६८४ में जूट पट्टे, सं० १६९१ में राव अमरसिंह के साथ गया।

(१४) राव चंद्रसेन ने घोड़ों की कारवान लूटने को अपने आदमी भेजे, यह भी उनमें था, रायसिंह के साथ मारा गया।

(१५) राव चंद्रसेन के आपत्काल में साथ रहा, सवराड़ की लड़ाई में मारा गया।

(१६) सं० १६४० में चेराई, वीरसरा और ढिकाई पट्टे में थे, अच्छा राजपूत था, सं० १६७६ में उसके मरने पर गाँव ज़ब्त हो गये।

(१७) जसवंत के साथ चेराई में हिस्सा था। सं० १६७७ में बुरहानपुर से नवाब दक्षिण गया, मार्ग में दखनियों से लड़ाई हुई, वहाँ बाण लगने से मरा।

(१८) सं० १६८३ चेराई में हिस्सा था, सं० १६६० में मरा।

(१९) सं० १६६५ में भाखरी ऊदावस पट्टे।

(२०) सं० १६७० में धींगाणा पट्टे, सं० १६८८ में चेराई थी।

(२१) सं० १६७२ में सबलसिंह राजावत के रहा।

(२२) सं० १६४१ में दो गाँव सहित पाँचला पट्टे।

(२३) सं० १६४० लवेरे का पूटला पट्टे, पीछे उसके बदले सोयला दिया सो छोड़कर बूँदी राव भोज के पास चला गया, वहीं इसका विवाह हुआ था। सुसराल गया था वहाँ शत्रुओं ने मार डाला।

(२४) किशनगढ़ में रहता था।

(२५) किशनगढ़ में रहता था।

(२६) सं० १६६८ में आयसां का गाँव चंडालिया पट्टे।
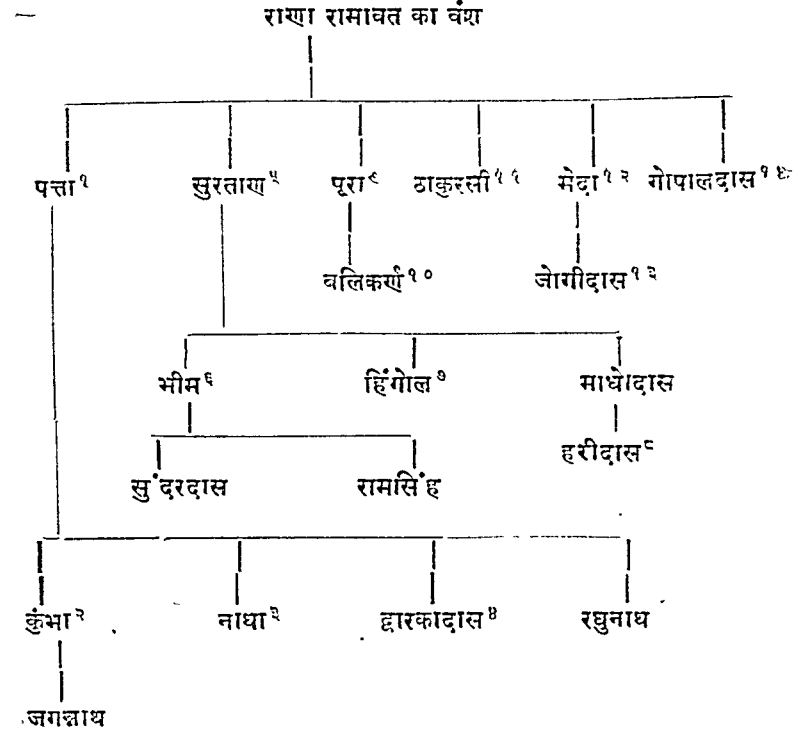
(१) सं० १६४० ढीकाई पट्टे, फिर खुडियाला पाया; सं० १६६० में सावंतकुवा पट्टे था, सं० १६६३ में मांडवे की लड़ाई में काम आया।

(२) सं० १६६३ खुडियाला पट्टे; सं० १६७१ में अजमेर गोयंददास के साथ काम आया।

(३) सं० १६७२ खुडियाला पट्टे।

(४) सं० १६८१ खुडियाला पट्टे।

(५) सं० १६४० बहलवा, फिर ऊदीवास पट्टे।

(६) बड़ा राजपूत था, किशनसिंह (राठौड़) की उस पर बहुत कृपा थी, उसी के साथ काम आया।

(७) सं० १६५१ गांवड़वास पट्टे, ईडर से पीछा बुलाया और सं० १६५८ में खेड़ला और अड़चीणा दिया, पीछे मर गया।

(८) किशनगढ़ में रहता था।

(९) मांडण कूंपावत के पास रहता था, सं० १६४३ में बादशाह ने मांडण को आसोप दिया और वह अपने देश में आया तब करमसोतों से लड़ाई हुई, जिसमें पूरा मारा गया।

(१०) सं० १६६४ में आसोप की चिनड़ी पट्टे में थी, फिर उदयसिंह भगवानदास मेड़तिया के पास जा रहा।

(११) सं० १६... में ओयसाँ का रोहणा पट्टे, फिर चंगार-बाड़ा दिया। दक्षिण में मरा।

(१२) सं० १६४० में बेराही में बरजांग का पाना पट्टे में था, सं० १६४२ में ओयसां का बुरवटा पाया और सं० १६५१ में चंडालिया मिला।

(१३) सं० १६७४ चंगावड़ा पट्टे। सं० १६७७ में नवाब बुरहानपुर से इच्छापुर पर चढ़ धाया, वहाँ लड़ाई में बाण लगने से जोगीदास मरा।

(१४) सं० १६६...में चंडालिया पट्टे।
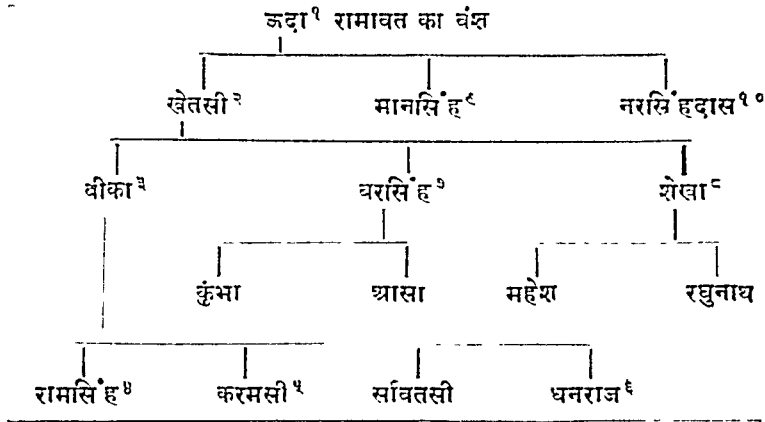
(१) जोधपुर के गढ़ के घेरे के समय काम आया।

(२) कल्याणदास रायमलोत के पास रहता था, सं० १६४५ में कल्याणदास सिवाने काम आया तब खेतसी भी पूर्ण घायल हुआ। कान्ह किशनावत ने उसे उठाया और आराम होने पर सं० १६४६ में जोधपुर के जाटीवास का पट्टा पाया।

(३) जाटीवास पट्टे।

(४) सं० १६८६ में चंवल नदी पर पठानों के साथ लड़ाई हुई, वहाँ पृथ्वीराज वल्लुओत के काम आया।

(५) जैसावस और टीवडी पट्टे में थी।

(६) जाटीवास पट्टे।

(७) सं० १६७१ भगतावासणी पट्टे, सं० १६८६ मेड़ते का सिहारा पाया।

(८) सं० १६८४ मेड़ते का जोधड़ावास पट्टे।

(९) खेतसी के गुढ़े पर तुर्क चढ़ आये और लड़ाई हुई जिसमें काम आया।

(१०) मानसिंह के साथ खेतसी के गुढ़े काम आया।
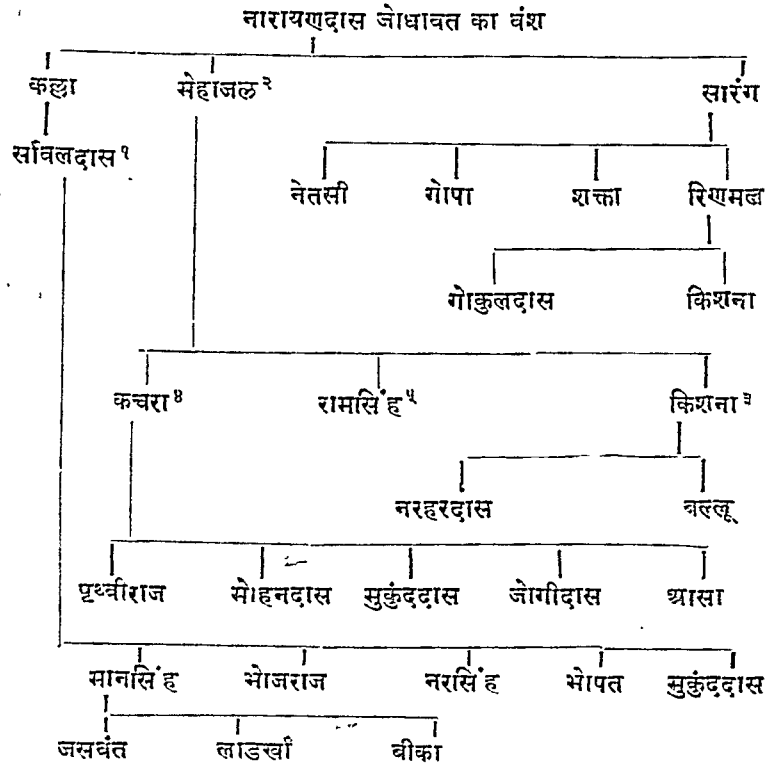
(१) ओचसां की कोंभरी पट्टे, अजमेर सं० १६७१ में गोयंददास मारा गया तब यह उसके साथ पूरा घायल होकर पड़ा था। सं० १६८३ में पूर्व से आता हुआ मार्ग में मर गया।

(२) वीरोणो पट्टे।

(३) वीरोणी पट्टे, सं० १६६२ में मांडवे की लड़ाई में मारा गया।

(४) सं० १६५२ में सूरजवासणी पट्टे थी, फिर किशनसिंह के पास जा रहा। सं० १६७२ में पीछा आया तब काभड़ा पाया। विंझुपुर कोहर पर पानी के लिए लड़ाई हुई, वहाँ भाटी अचलदास ने उसको मारा।

(५) सं० १६६२ में लवेरे का गाँव खारी पट्टे में था।

दुर्जन[1] जोधावत-पुत्र नेतसी,[2] नेतसी का कचरा[3] और कचरा के बेटे अमरा और पीथा।
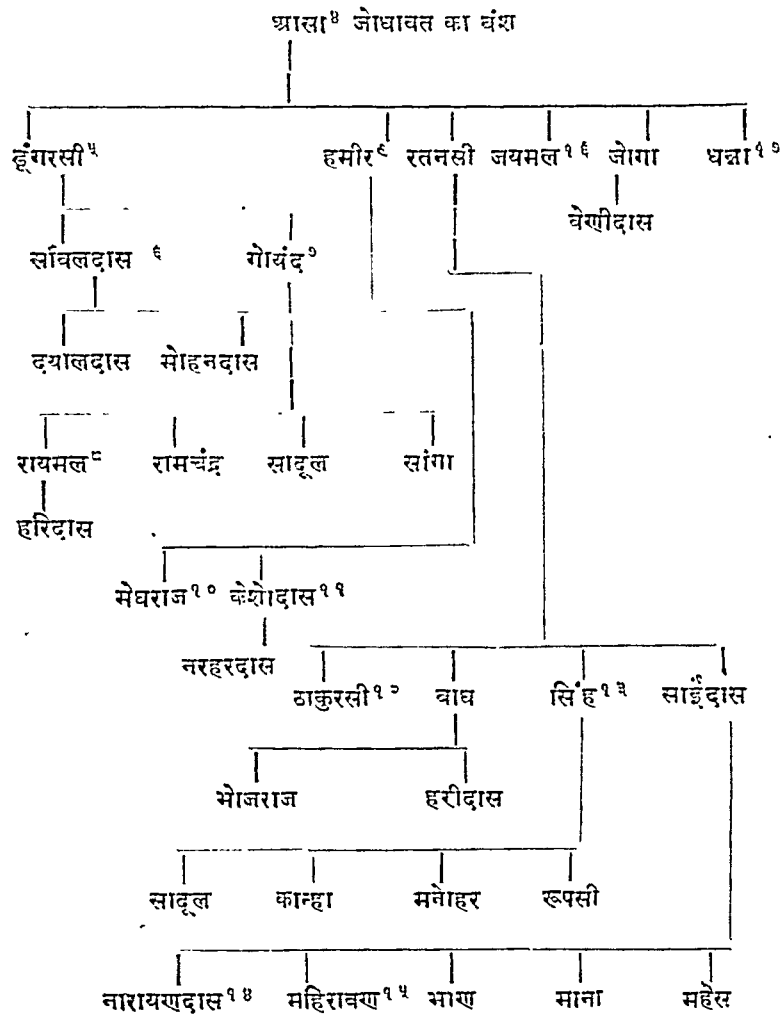
(१) राव मालदेव के काम आया।

(२) राव रायसिंह चंद्रसेनोत के साथ सिरोही काम आया।

(३) हरीसिंह किशनसिंहोत के पास रहता था।

(४) राव चंद्रसेन के आपत्काल में जोधपुर काम आया।

(५) सं० १६४० में वेराही आसा का पांना पट्टे में था, सं० १६५१ में चामूं की वासणी रही फिर चामूं दी गई और पीछे चांपासर पाया।

(६) सं० १६४० में साणेवी पट्टे, पीछे चांपासर दिया।

(७) सं० १६७३ चामूं पट्टे, सं० १६७१ वारणाउ पट्टे।

(८) सं० १६८१ में चामूं छूटी, गाँव में रहता था। एक वार ऊँट पर चढ़कर किसी काम के वास्ते रवाइणिये गया था। महेवचा देवीदास पातावत वारोटिया हो रहा था, उसने पाँचले गाँव के पास २२ साँढ़ें घेरीं, रायमल वार दौड़ा, लड़ाई हुई और मारा गया।

(९) फलोधी में भाटियों से मोटे राजा की लड़ाई हुई वहाँ मोटे राजा के पक्ष में लड़कर मारा गया।

(१०) सं० १६४६ खेतासर पट्टे। सं० १६५२ में गुजरात जाते हुए कोली काबों से लड़ाई हुई, वहाँ काम आया।

(११) खेतासर पट्टे, सं० १६५४ में छूटा।

(१२) मेड़तियों के काम आया।

(१३) दासलोतों का दोहिता, राड़धरे दासाजी के काम आया।

(१४) चामूं पट्टे।

(१५) हरदास भाटी के काम आया।

(१६) जोधपुर के गढ़ पर आसा के साथ काम आया।

(१७) राव मालदेव की तरफ लड़कर फलोधी में काम आया।

भोजा[1] जोधावत के पुत्र—वैरसल, वीरा, राजधर और पंचायन। वैरसल का गोपालदास[2], गोपालदास का राघोदास[3]। वीरा का देवीदास। राजधर के पत्ता और कल्याणदास[4], पत्ता का बेटा केशोदास।

पंचायन जोधावत बड़ी लड़ाई में मारा गया। पुत्र जगमल[5], का केशोदास[6]।
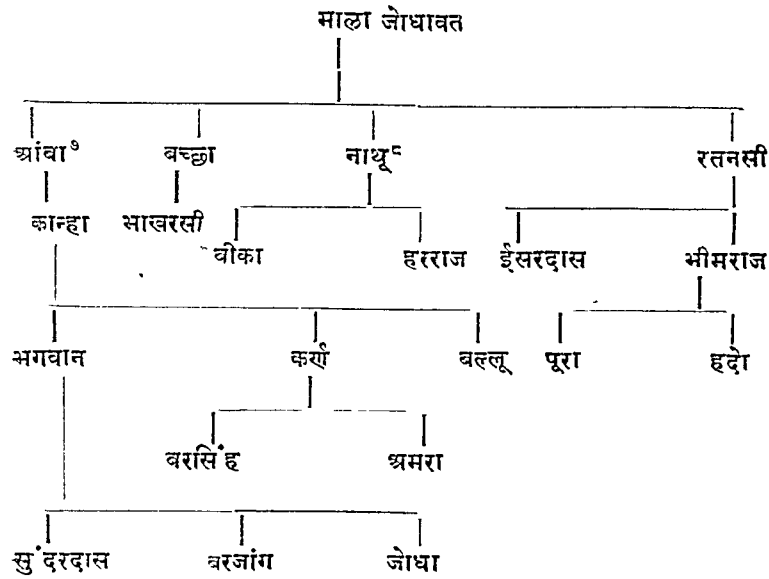
भैरवदास[9] जैसावत के पुत्र—सूरा, अचला, देदा, वरजांग और कन्या करमेती[10]।

डूंगरसी

शंकर[20]

(डूंगरसी)
(शंकर)
हंमीर २१
वैरसल २६
गोयंद २२
कान्हा २७
कंसा
पीथा २८
दूदा
धनराज २३
कचरा
नरसिंह २५
लखमीदास
रासा २४
मुकुंददास
दयालदास २६
शक्ता
दलपत
हरदास ११
सांवलदास १५
माना
ऊदा
ईसरदास १२
सुरताण
भोपत
सहसा
भोपत
सुंदरदास
भाण
राणा
नरहर १६
वल्लू १७
जैता १८
भोजराज
नारायणदास १९
कुंभा १३
लछमण
राम १४
श्यामसिंह
केसरीसिंह
जयसिंह
नारायणदास
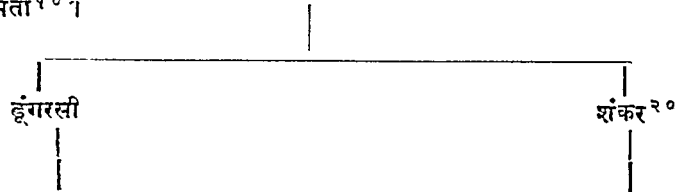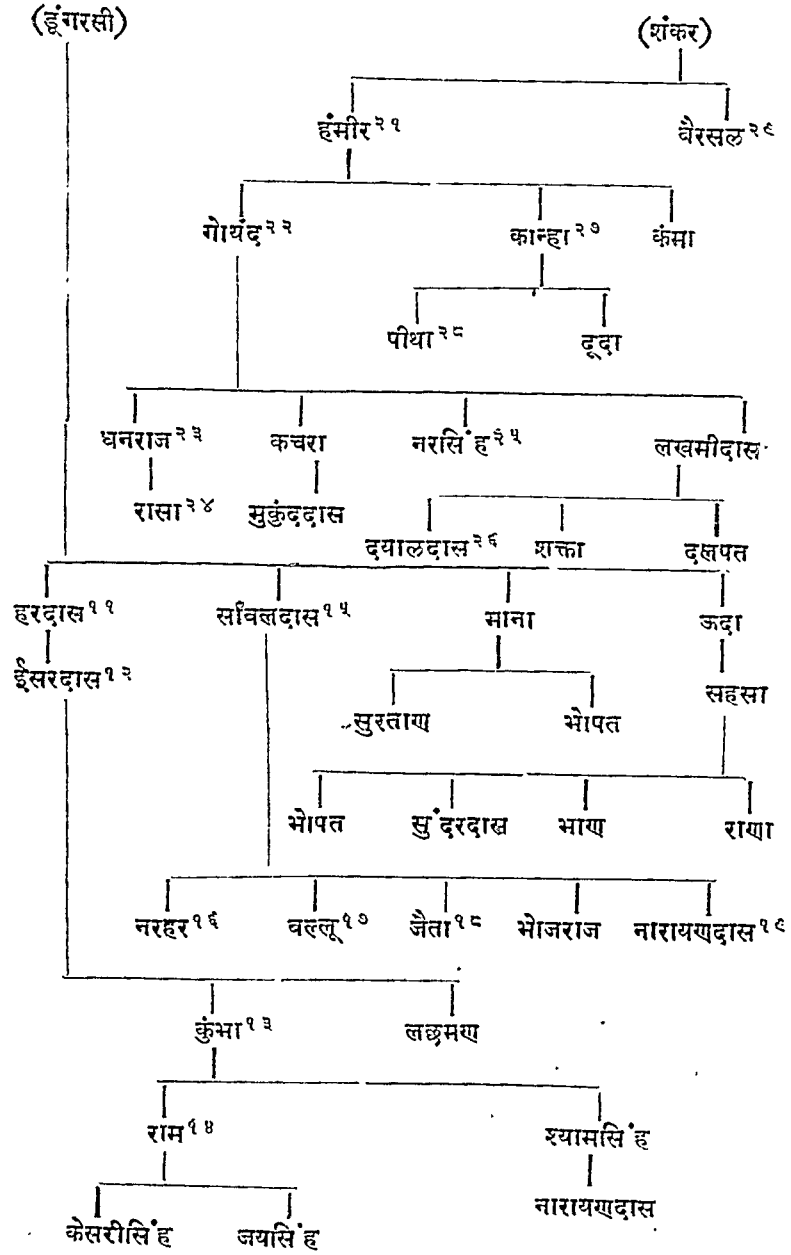
(१) सं० १६०० में (शेरशाह) सूर पादशाह आया तब जोधपुर की पोल पर तुर्कों से लड़कर काम आया।

(२) सं० १६५६ सोजत का वूडेलाव पट्टे।

(३) महेशदास दलपतोत का नौकर।

(४) बीकानेर के देश में।

(५) राव मालदेव के फलोधी के भाटियों से लड़ाई हुई वहाँ काम आया।

(६) द्वारकादास मेड़तिये के पास।

(७) झझूरी की लड़ाई में मारा गया।

(८) झझूरी की लड़ाई में मारा गया।

(९) राव सूजा ने सोजत का गाँव धवलेरा दिया, वहाँ रहता था। राव के चाकर सूर माल्हण के चोपड़ां पट्टे में थी सो सीमा पर झगड़ा-हुआ वहाँ सूर माल्हण ने भैरवदास को मारा और आप भागकर राणाजी की धरती में जा रहा। आनंद जैसावत जेसलमेर से साथ लेकर आया और अहराणी इंद्रवड़े में भैरवदास के वैर सूर माल्हण को मारा।

(१०) करमेती का विवाह रा० मेहराज अखैराजोत के साथ हुआ था, जिसके पेट से कुंपा ने जन्म लिया।

(११) वड़ा राजपूत, राठोड़ भोजराज मालदेवोत के पास रहता था, भोजराज की तुर्कों से लड़ाई हुई जिसमें हरदास मारा गया।

(१२) पहले मोटे राजा का चाकर था, गाँव माणेवी और वाद में साणकलाव पाया। वड़ा राजपूत था।

(१३) देवराज का भांजा, सं० १६८० में सावड़ाऊ कालियाठड़ा पट्टे, सं० १६८८ में मरा।

(१४) सं० १६८८ में दो गाँव सहित सावड़ाऊ ईसरदास को

शामिल पट्टे। सं० १६५४ में जुदा पट्टा कराया। सं० १६८७ में माणकलाव से विसाइणा रामपुरे जा बसा।

(१५) सनावतों के पास बहलवे में रहता था।

(१६) सं० १६६७ में कागल पट्टे थी।

(१७) सं० १६७० में गीयालो पट्टे।

(१८) सं० १६७२ आंवलां पट्टे।

(१६) राजसिंह के पास इडोवे में रहता था।

(२०) बड़ा राजपूत, राव मालदेव का अजमेरगढ़ इसके हवाले था। सूर बादशाह आया तब लड़ाई कर मारा गया। जोधपुर के गढ़ में पाज पर छतरियाँ बनी हुई हैं—एक भाटी शंकर सूरावत की, दूसरी भाटी तिलोकसी वरजांगोत की और तीसरी अचला शिवदासोत की है।

(२१) फलोधी में भाटियों के साथ मोटे राजा की लड़ाई हुई वहाँ मारा गया।

(२२) बूटेची पट्टे।

(२३) बूटेची और भालेरिया पट्टे, सं० १६३४ में रामड़ावास पाया।

(२४) सं० १६५२ में बोड़ानड़ा पट्टे।

(२५) घीघीलिया पट्टे।

(२६) उज्जैन काम आया।

(२७) सं० १६४१ में सूराणी, सं० ४२ में पाली का आंकड़ावास और पीछे बोड़वी पट्टे में थी। नाथा धायभाई का जमाई था।

(२८) बोड़वी और सांवत कूवा पट्टे में था फिर राजसिंह के पास जा रहा।

(२६) फलोधी के लोहावट की लड़ाई में मोटे राजा के लिये काम आया।

अचला[1] भैरवदासोत का वंश
करमसी
संसारचंद[2]
जैतसी
रायमल
मेरा
साँवलदास[3]
कचरा[18]
कल्ला[15]
मनोहर[16]
माधोदास[17]
दयालदास
उदयसिंह
नाथा
महेश
सादूल[19]
सुरजन[20]
भोपत[23]
अर्जुन
मोहनदास
बल्लू[21]
गिरधरदास[22]
खेतसी
विट्ठलदास अंधा
धनराज[4]
नरसिंहदास[6]
प्रयागदास[8]
नाथा
पृथ्वीराज[5]
कर्ण
रूपसी
रामचंद्र[7]
रासा
बलराम
मुकुंददास
हरीदास
लाडखाँ
महेशदास
भीम[9]
केशवदास[14]
आसा
बिहारीदास
सबला[11]
सूजा[12]
दूदा[13]
गोयंद
लखमीदास
रतनसी[10]
सुंदरदास
वेणीदास
कुंभा
हरीसिंह
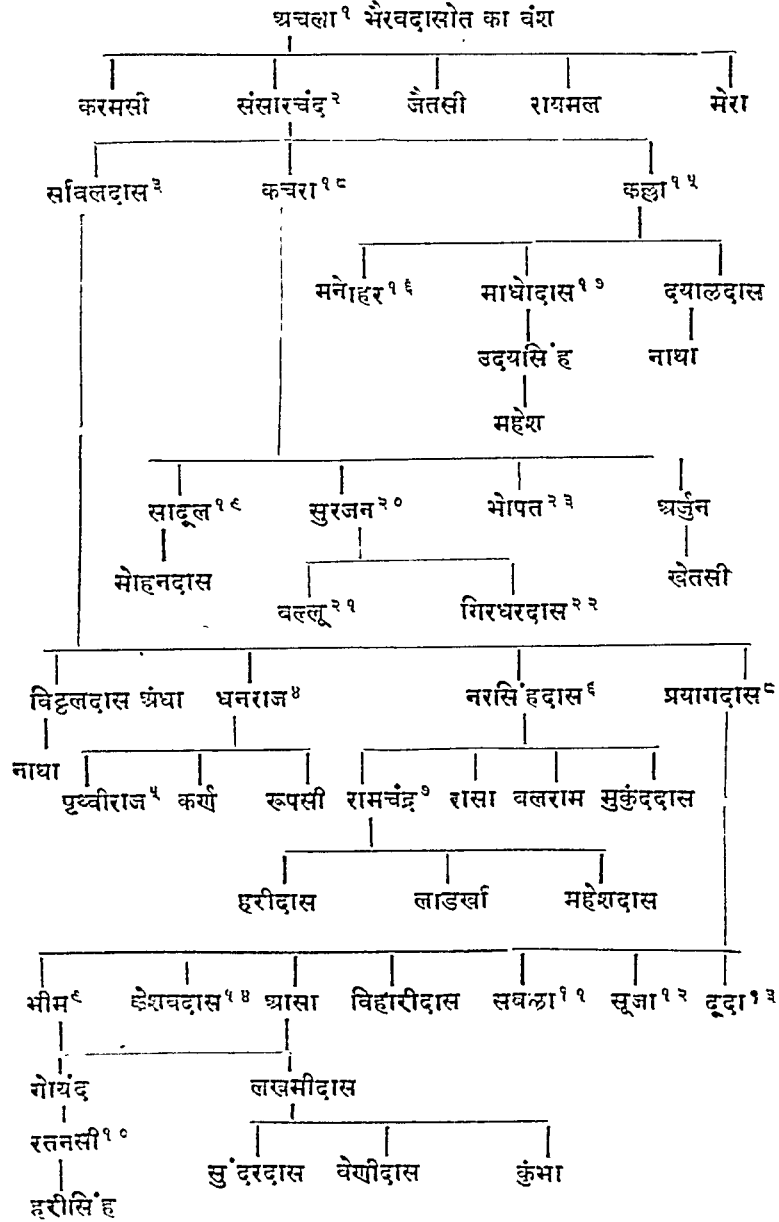
(१) चित्तोड़ राणाजी का चाकर था, १४० गाँव से ताणा पट्टे और बसी चोपड़ां में थी। रामदास के पिता माल्हण को जैसा ने मारा। उस वैर में रामदास ने ६ आदमियों सहित अचला को चोपड़ां में मारा।

(२) मांडण कूंपावत के पास रहता था। सं० १६२४ में पत्ता नंगावत ने राणा का गाँव झंटाडिया मारा, उस वक्त मांडण भी राणाजी का नौकर था। पत्ता मांडण के गाँव के सम्मुख होकर निकला था। राणाजी ने मांडण को कहलाया कि हमारा गाँव लूट-कर पत्ता तुम्हारे सामने से चला गया और तुमने उसको दंड नहीं दिया, इसलिए अब तुम भी जाकर उसका गाँव मारो। मांडण ने भादराजण और वावला जा लूटा, तब चौताले के अभा सांखला से लड़ाई हुई, वहाँ संसारचंद काम आया।

(३) सांखलों ने संसारचंद को मारा इसलिए उन्होंने साँवल-दास को अपनी बेटी ब्याहकर वैर तोड़ा। सांखली के पेट से धनराज पैदा हुआ। सं० १६४० छडाणी पट्टे, सं० १६६२ में गुजरात के दांतीवाड़े के कोलियों की लड़ाई में मारा गया।

(४) सं० १६५८ में सिवाने का कूंपावास मनोहरदास कल्लावत के शामिल पट्टे में था, सं० १६६३ में सावरला, फिर कीटणोद, सं० १६९२ में झांव और सं० १६९५ में कीटणोद पीछा दिया। भाटी साँवलदास संसारचंदोत, वैरसी रायमलोत, ईसरदास रायमलोत और कल्ला रायमलोत, ये चारों मोटे राजा के पास आ रहे थे, उस वक्त दरबार आते सामने एक नेवला खड़ा हुआ देखा। साथ में नींबा महेशोत शकुनी था। उसने कहा कि तुम्हारी चाकरी जोधपुर

रायमल अचलावत का परिवार
वैरसी[१]
ईसरदास[६]
वड़सी[१०]
भाण[७]
जोगीदास[२]
महेश[११]
अमरा[८]
तेजमाल[९]
दलपत
नाथा
सबलसिंह
आसकर्ण
नारायणदास
मनोहरदास
हरीदास[३]
चतर्भुज[४]
शामदास[५]
रघुनाथ
मोहनदास
लखमीदास
रतनसी
गिरधर

मेला[१२] अचलावत का परिवार
अखैराज[१३]
गोपालदास
किशनदास[१४]
जोगा[१७]
केशोदास[१९]
नारायणदास[२२]
जैता[१८]
खेतसी[१५]
जगन्नाथ[१६]
कुंभा
हरराम
रूपसी
लखा
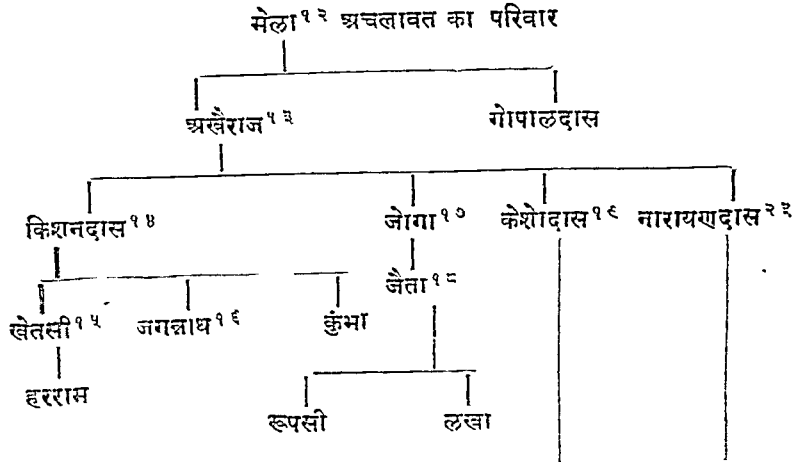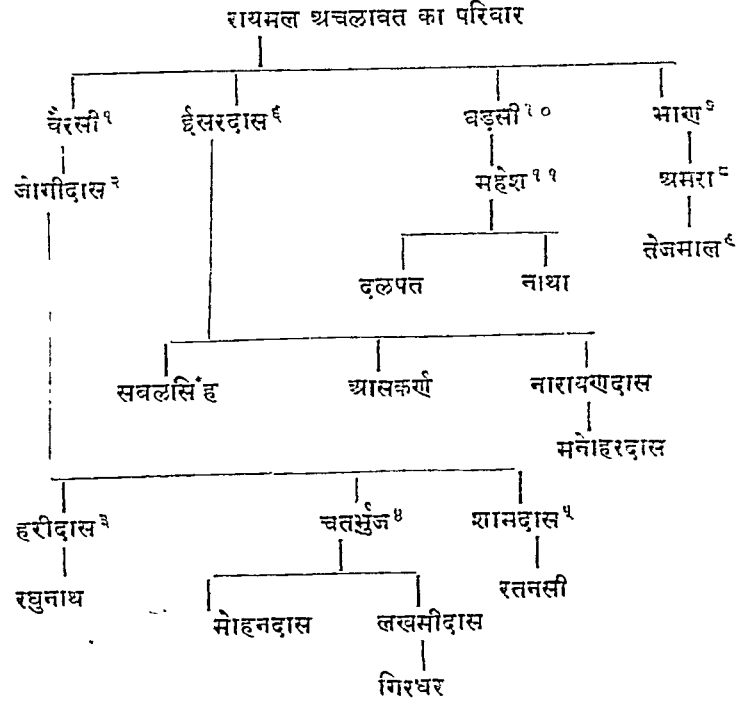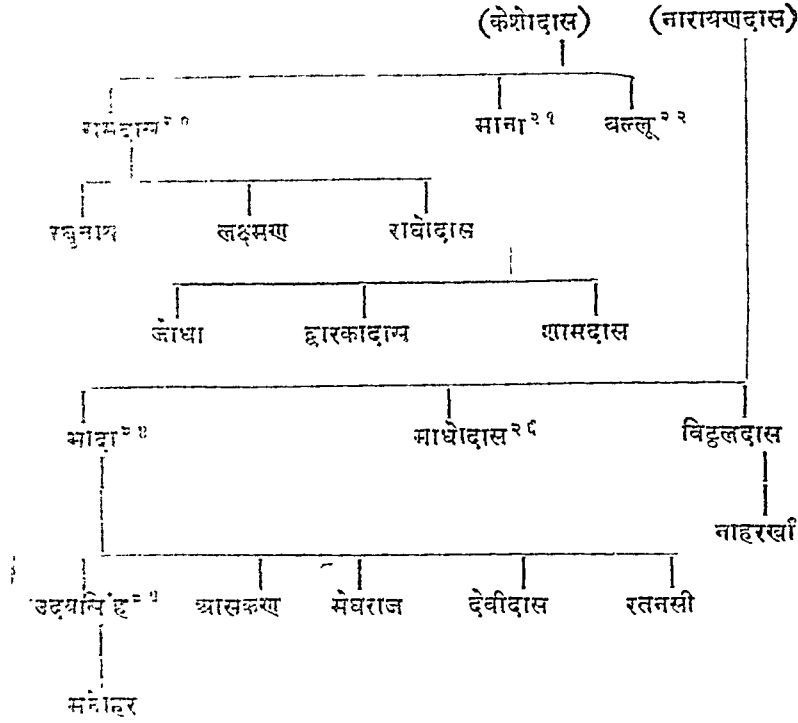
गोपालदास[27] मेरावत के पुत्र–सूरजमल[28], पूरणमल, कान्ह, भगवान। सूरजमल के बेटे—गोयंददास, सुंदरदास[29], केशोदास, रामसिंह। कान्ह का पुत्र रामदास, रामदास का गोवर्द्धनदास। गोयंददास के आसा, दलपत।

करमसी अचलावत के पुत्र—ठाकुरसी और हरराज। ठाकुरसी के बेटे सहसा[30] और सिंह[31]; हरराज का सांईदास, सांईदास के पुत्र राघोदास और रायसिंह।

जैतसी अचलावत का बेटा रतनसी, रतनसी का सुरताण और सुरताण के पुत्र–मेघराज, सूरा, सुंदरदास और भोजराज।

(१) सिवाने का लालाणा और जाजीवाल पट्टे। सं० १६५८ दक्षिण में अंबर (हबशी) की लड़ाई में बाण लगा।

(२) सं० १६५८ जाजीवाल पट्टे था, छोड़कर राणाजी का चाकर हुआ । सं० १६६४ में पीछा आया और जाजीवाल पाया। वीर पुरुष था, सं० १६७६ में मरा।

(३) सं० १६५८ जाजीवाल पट्टे, सं० १६६२ में मरा।

(४) सिवाने का महेला पट्टे।

(५) सं० १६६२ में जाजीवाल पट्टे।

(६) बड़ा राजपूत और कार्यकुशल आदमी था। राव रायसिंह चंद्रसेनोत के साथ सिरोही की लड़ाई में बहुत से लोह लगे, पीछे करमसेन के पास जा रहा। चांदा खीची को करमसेन ने मारा तब ईसरदास ने बरछे की दी थी। सं० १६७१ में गोयंददास भाटी मारा गया तब पट्टा छोड़ के जोधपुर का नौकर हुआ और ४ गाँवों सहित बोटू पट्टे में पाई, परंतु उसे भी छोड़ बैठा।

(७) पूरणमल मांडणोत का नौकर, सं० १६४० में पूरणमल के साथ सिरोही काम आया।

(८) जोधपुर का रामड़ावास पट्टे, दक्षिण में मरा।

(९) सं० १६७८ सांवतकूवा, सं० १६८६ भांहरा और सं० १६९० में लवेरे का गाँव खादी पट्टे में था।

(१०) राव चंद्रसेन के गुढ़े फूलाज में तुर्क आये, वहाँ लड़कर मारा गया।

(११) सं० १६... में पीपाड़ का बीनावास पट्टे, सं० १६७२ भादराजण का पाँच भदरा दिया, फिर करमसेन के पास जाकर रहा और वहीं मरा।

(१२) कूंपा के पास था, बड़ी लड़ाई में कूंपा के साथ मारा गया।

(१३) मांडण कूंपावत के पास था, सीहा सिंधल को मारा वहाँ काम आया।

(१४) सं० १६...पांचोला पट्टे, सं० १६६४ विलोड़ का बीझवाड़िया और सं० १६७२ में पीछा पांचोला पट्टे दिया गया, फिर मरा।

(१५) सं० १६८० में मेड़ते का जैसावस, सं० १६८८ में जगन्नाथ के शामिल सोजत की थाहर वासणी, सं० १६८९ में छाछा-लाई और सं० १६९१ में कम्मा का वाड़ा पट्टे में था। गाँव खांड-परा सिंह जैतमालोत के थी, जल्दी ही (सीमा का) झगड़ा उठा और खेतसी मारा गया।

(१६) आधा सहेव पट्टे।

(१७) सं० १६४२ में रावणियाणा का गाँव कणबीर दिया था, सं० १६४...में सोजत का पांचनड़ा और सं० १६५२ में सोजत की महेव दी गई। अच्छा आदमी था।

(१८) भगवानदास नारायणदासोत का नौकर।

(१९) सं० १६५० में लवेरे का गाँव रामकोहरिया पट्टे।

(२०) सोजत का गाँव हिंगोला की वासणी सं० १६६४ में पट्टे थी, फिर सिंधावासणी दी गई।

(२१) सं० १६७३ में सिवाने की उमरलाई, सं० १६७९ में सिवाने का लालाणा पट्टे में था।

(२२) राव अमरसिंह के साथ काम आया।

(२३) ओयसाँ का गाँव कौंफरी और फिर सोजत का महेव पट्टे में था।

(२४) सूराणी पट्टे. फिर महेव दिया गया। सं० १६७१ में अजमेर गोयंददास भाटी के साथ काम आया।

(२५) सं० १६७२ महेव पट्टे।

(२६) उदयसिंह के शामिल आधी महेव पट्टे।

(२७) सोजत का गाँव वाघवस पट्टे में था। रा० सांडण कूंपावत ने सीहा को मारा तब काम आया।

(२८) सं० १६६२ में बांधड़ा पट्टे।

(२९) मेड़ते का गाँव ईटावा भोजा दौलतखाँ के शामिल पट्टे में था।

(३०) सं० १६५९ में लवेरे का बूरवटा और सं० १६६७ में मेड़ते का सांडावरा पट्टे में था।

(३१) मेड़ते का मांडावरा, सं० १७५९ में, त्रिवटी सं० १६६५ में और मेड़ते का माणकियास सं० १६६६ में पट्टे था।

बरजांग[1] भैरवदासोत का वंश
वीरमदे[2]
भवानीदास[7]
जगमाल
गांगा[15]
खीवा[14]
लक्खा[3]
सांवलदास
बीजा
जैतसी[8]
किशना
राम
ठाकुरसी[11]
सूजा
भगवानदास[9]
हरीदास
कल्ला
सुरताण
ईसरदास[12]
सहसा
हरीदास
बीका
तिलोकसी
अखैराज
मेघराज[13]
रावोदास[10]
सूजा
राजसिंह
ईसरदास
सहसा
आसा
साधोदास
सुंदर
माना
रासा
राजसिंह[4]
मानसिंह
गोयंद
विट्ठलदास
जगमाल
महेशदास[6]
कर्ण
नाथा[5]
अमरसिंह
जैतसिंह
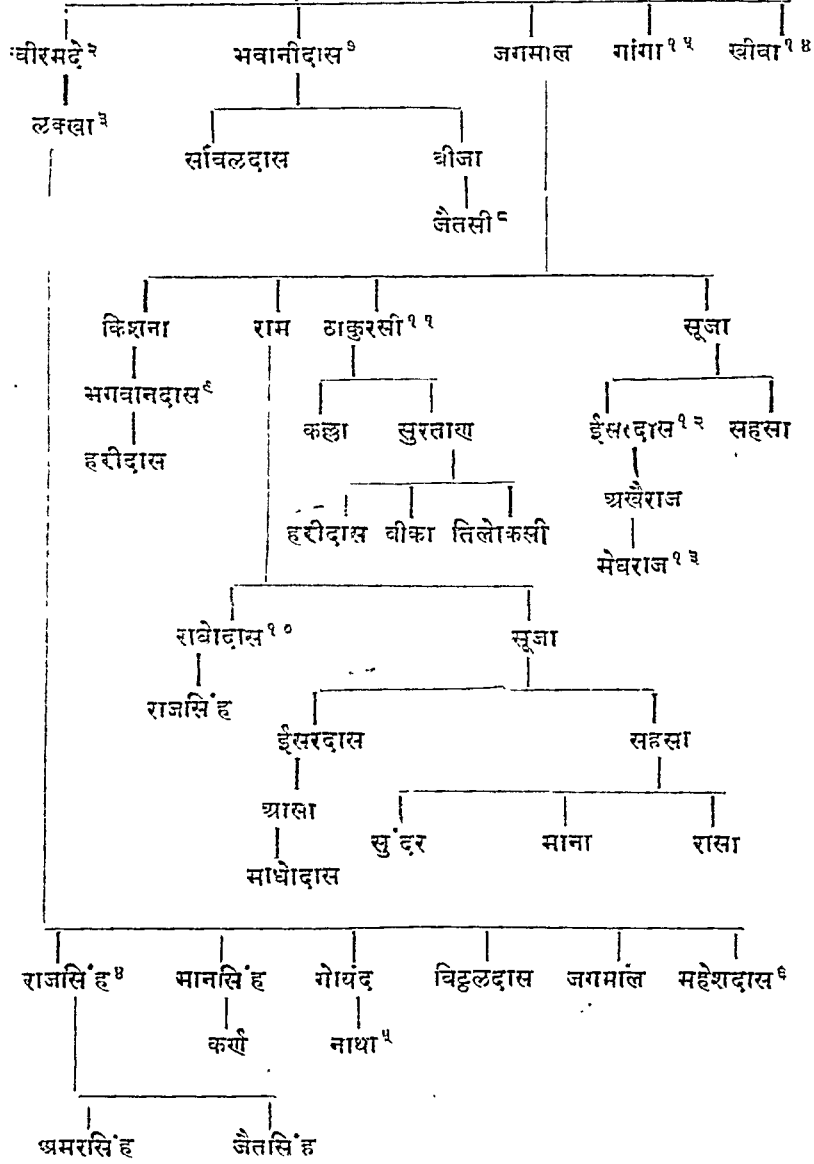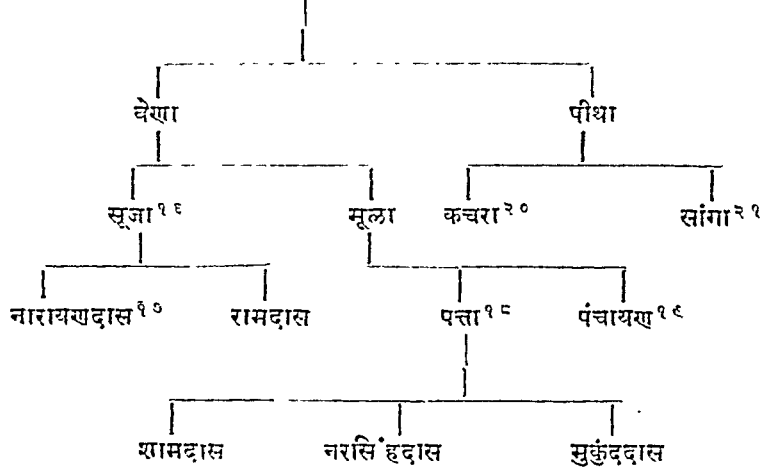
(१) राव मालदेव ने (शेरशाह) सूर पादशाह के पास एक पुरोहित और वरजांग भाटी को प्रतिनिधि करके भेजा था, पादशाह ने उनको पकड़कर कैद कर लिया। जब शेरशाह मरा तब वे छूटकर आये। वरजांग को वेराई और महेव पट्टे में दी थी। वेराई में उसका बँधाया हुआ वरजांगसर तालाव और वरजांगसर कुँवा है। महेव में जोगी का आसन बनाया।

(२) वागड़ में काम आया।

(३) चौहाणों के वैर में मारा गया।

(४) उज्जैन में काम आया।

(५) गौड़ों ने मारा।

(६) गौड़ों ने मारा।

(७) वागड़ में काम आया।

(८) वागड़ में रहता था।

(९) मान खींवावत का नौकर ।

(१०) जसवंत सादूलोत का नौकर ।

(११) सं० १६६६ में भोवाद पट्टे ।

(१२) कांभडा गाँव में भाटी अचलदास सुरताणोत ने मारा ।

(१३) अचलदास सुरताणोत के साथ काम आया ।

(१४) वागड़ में काम आया ।

(१५) कूंपा के पास था । कूंपा ने उसे सूर पादशाह के पास भेजा । पादशाह ने बंदी बनाकर रक्खा । शेरशाह से लड़ाई होने के वक्त कूंपा के साथ काम आया । गांगा का कूंपा महराजोत के साथ सहोदर भाई का सा संबंध था ।

(१६) आसरानड़ा पट्टे ।

(१७) पहले आधा आसरानड़ा और पीछे पूरा पट्टे ।

(१८) आधा आसरानड़ा पट्टे ।

(१९) आधा आसरानड़ा पट्टे ।

(२०) वेणीदास पूरणमलोत का नौकर ।

(२१) रा० लक्ष्मण नारायणदासोत के पास था । उसी के साथ काम आया ।

रणधीर[1] जैसावत का वंश
तेजसी[2]
बीसा[16]
रायसिंह
पीथा
भाण[17]
नरहरदास[18]
चतुर्भुज[19]
लाडखां
केशोदास[20]
दलपत[21]
रामदास
हरीदास
किशना
कान्हा[3]
मालकर्ण[7]
मेदा[12]
पातल[13]
सादूल[15]
वल्लू
मनोहर[14]
अमरराज
पृथ्वीराज[4]
सिंह
वाघ[6]
भोपत
भोजराज
भाण
शंकर[5]
दूदा
जगन्नाथ
भाम
केसरीसिंह
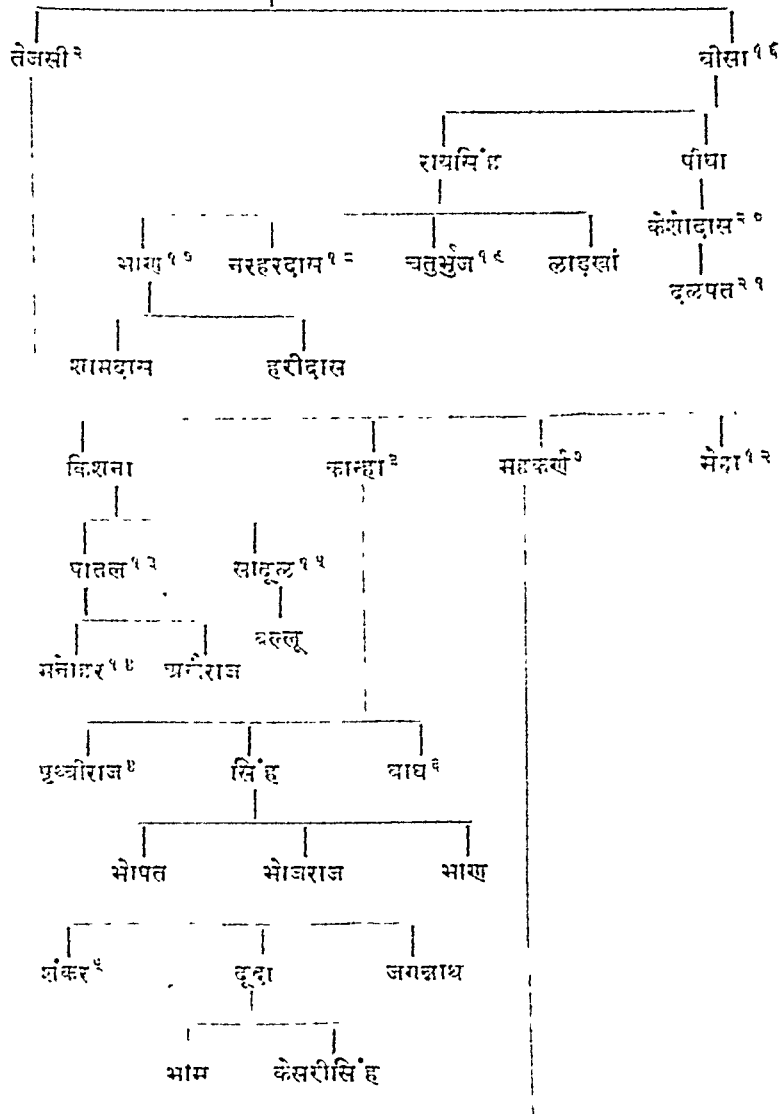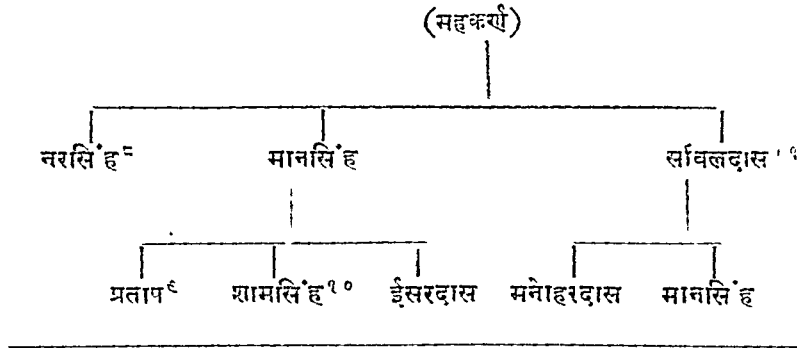
(१) खैरवा पट्टे।

(२) राव मालदेव का नौकर, खैरवा पट्टे। राव मालदेव ने भांगेसर में लड़ाई की वहाँ दणवीर बहुत घायल हुआ और उसे उठाकर लाये। (आराम होने पर) गुजरांवाली वाहतखड़ में फ़ौजदार करके भेजा।

(३) भोजराज मालदेवोत का नौकर, भोजराज के साथ काम आया।

(४) सं० १६६७ में गूंदाच का गाँव वाला, सं० १६७० में पीपाड़ का अरटिआ और पीछे गोधावास पट्टे में रहा। सं० १६७१ में अजमेर में भाटी गोयंददास के साथ काम आया।

(५) सं० १६७२ में दो गाँव सहित अरटिआ पट्टे, सं० १६८४ में पूनासर और सं० १६८७ में साँवलता पाया। सं० १६९२ में राव अमरसिंह के पास गया।

(६) कान्हा के साथ मारा गया।

(७) डुंगरपुर काम आया।

(८) सं० १६७५ में मालवे की तरफ से आया तब गोधेलाव पट्टे में दिया था।

(९) सं० १६८६ में जाल्हणे की मुहिम में काम आया।

(१०) काठसी पट्टे।

(११) खटोड़ा पट्टे था, छोड़कर करमसेन के पास गया और घोड़े की लात से मरा।

(१२) अच्छा ठाकुर था। राव चंद्रसेन मेहा की बेटी परणी थी। आपत्काल में चंद्रसेन के पक्ष में लड़कर मारा गया।

(१३) सं० १६४१ में तांबड़िया और सं० १६६५ में करमसीसर पट्टे में थे।

(१४) करमसीसर पट्टे।

(१५) वागड़ से आया तब मोटे राजा ने बड़ला पट्टे में दिया था।

(१६) राव मालदेव के आपत्काल में भांगेसर की लड़ाई में काम आया, ऊगा मेहेवचा के शामिल।

(१७) नागोरवालों से लड़ाई हुई तब भाटेर में काम आया।

(१८) भाटेर में काम आया।

(१९) जोधपुर की भगतावासणी पट्टे, सं० १६७१ में कुँवर गजसिंह और भाटी गोयंददास ने राणा का कुंभलमेर लिया तब काम आया।

(२०) वांधड़ा पट्टे।

(२१) सं० १६७६ में गोपालदास भीमोत के साथ काम आया।

रूपसीहोत भाटी

भाटियों में एक शाखा रूपसीहोतों की कहलाती है। रूपसी रावल लखमण का पुत्र था, उसके बेटे वीजा, नाथू और पत्ता। बीजा रूपसीहोत का परिवार—बीजा का सांगा, सांगा का मेला, मेला के भैरवदास[1] और भीमराज, भीमराज का पुत्र वेणीदास। भैरवदास के बेटे—रायसिंह[2], सूजा[3], नरहरदास, रामसिंह, लाडखाँ, उदयसिंह, जगन्नाथ और राजसिंह। सूजा के पुत्र कुंभा और आसा हुए। रामसिंह के कीरतसिंह और हरदास हुए। लाडखां के अखैराज और भोजराज हुए। उदयसिंह के विट्ठलदास और मुकुंददास हुए।

(शिवदास)
जालप[६]
नींबा
रायसिंह
दूदा
गोपालदास[७]
मोहन
सुरताण
कान्ह
अचला
सादूल
भाखरसी
महेशदास
तेजसी
दयालदास
द्वारकादास
चांदा
हरीदास
शामदास
पृथ्वीराज
देवीदास
रामा नाथू का परिवार
नरवद
देवराज
साना
जयमल[१३]
धीरा[२०]
वीरदास
जगन्नाथ
राघोदास[२१]
उदैसिंह
वाघा
बांकीदास
भागचंद
कुंभा

- (जयमल)
  - कल्ला
    - [illegible]
      - [illegible]
        - [illegible]
    - डूंगरसी
      - भोपत
      - सांवलदास
      - जैसा
    - वेणीदास[14]
  - नेता
    - रामदास[15]
      - नाथा
        - आसा
        - भीमा
        - कुंभा
      - पांचा
        - भाना
      - सीहा
        - रतना
        - जगमाल
    - दलपत[16]
      - खींवा
        - हेमराज
    - धनराज[17]
  - पत्ता
    - लखमीदास
      - नरहरदास
        - बीजा
      - दुर्गा
        - शामदास
        - सुंदरदास
      - भैरवदास
        - आईदान
      - विट्ठलदास
        - रामचंद्र
      - रासा
        - कान्ह
    - गोकुल[19]
      - सूला
        - करमचंद
      - मेघराज
        - लाडखां
    - जैसा[18]
      - नरसिंह
        - सादूल
    - ईसरदास
      - अखैराज
      - सहसा
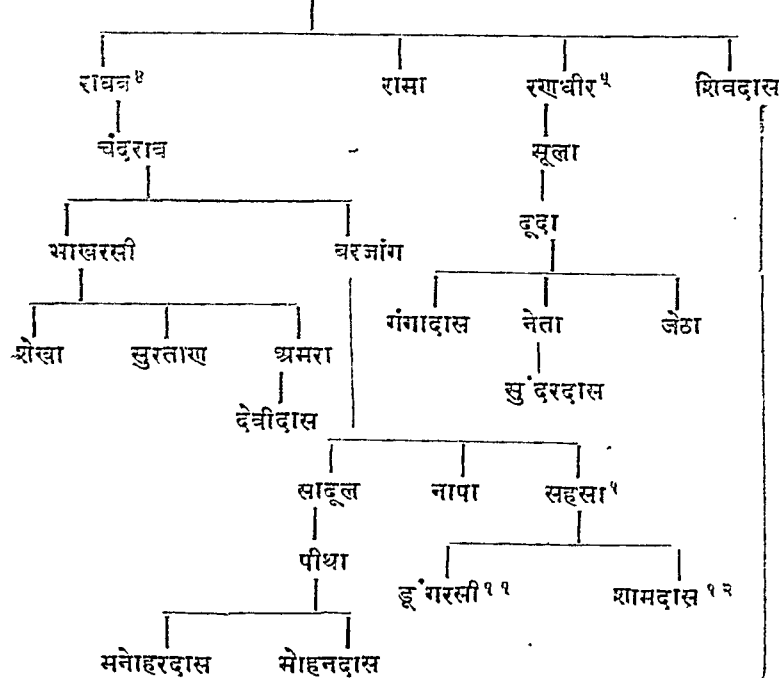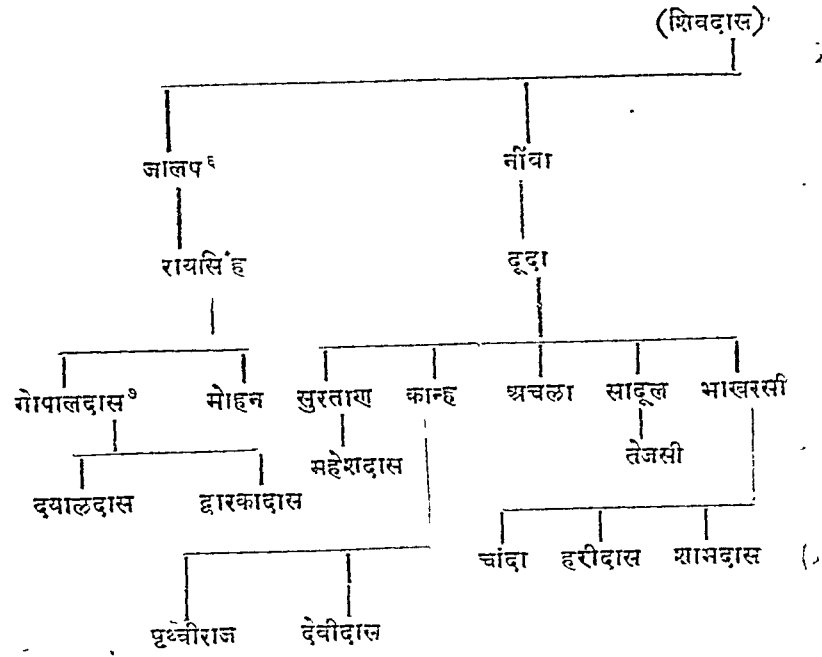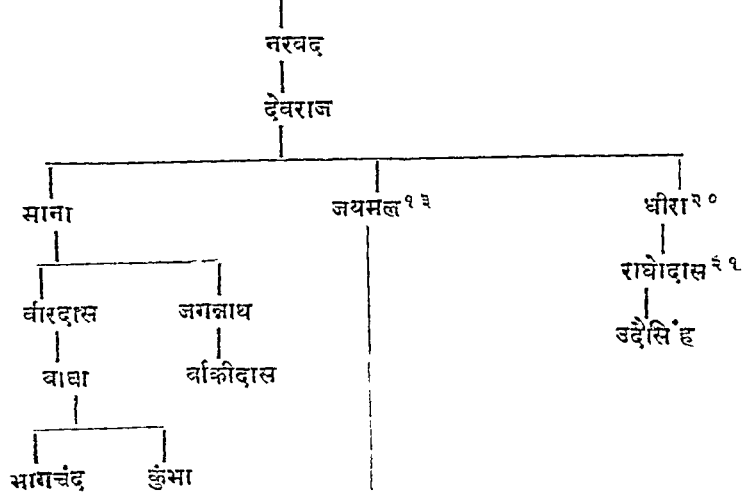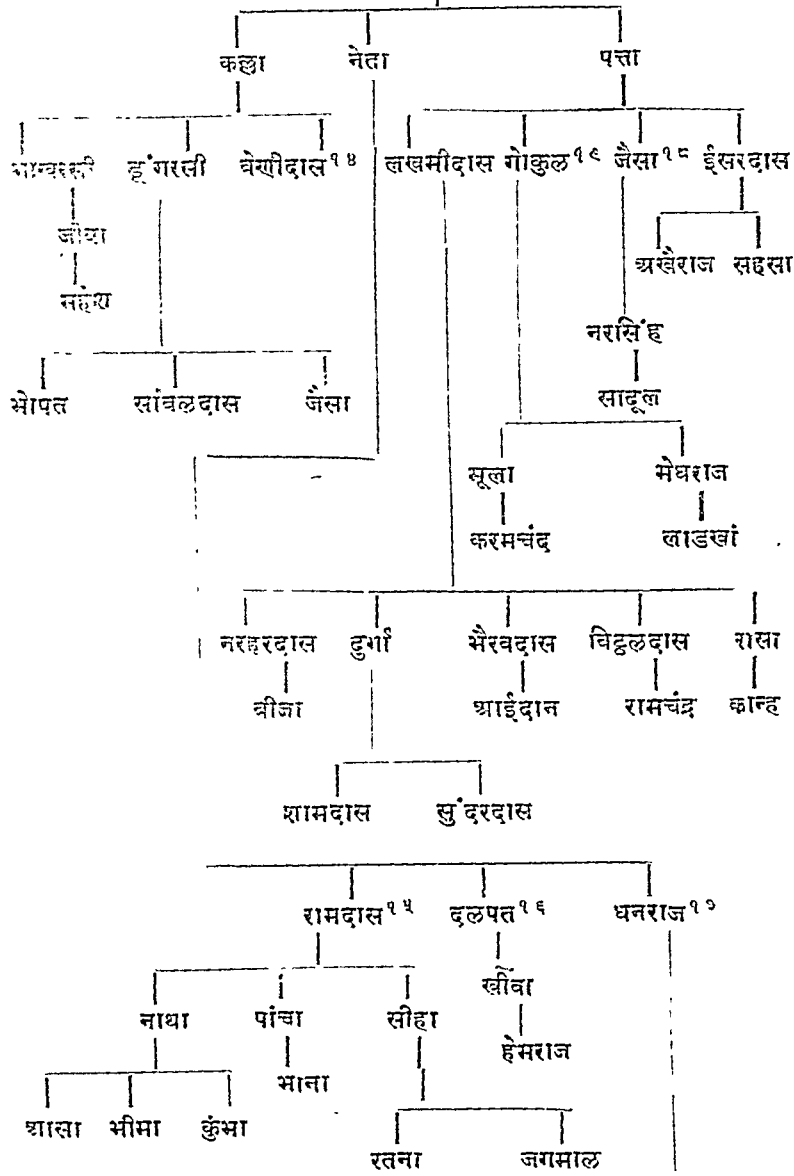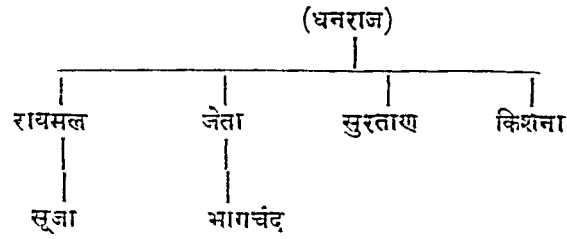
पत्ता रूपसीहोत का परिवार

पत्ता का हरदास, हरदास का नर्वद,[८] नर्वद का राणा। राणा के बेटे गोयंददास, गोपालदास[९]। गोयंददास का विट्ठल-दास; गोपालदास का हरिदास, हरिदास का जगन्नाथ, जगन्नाथ का अखैराज।

---

(१) सं० १६५१ में राठौड़ रामदास चांदावत का नौकर था, फिर जोधपुर रहा, सं० १६७० में मेड़ते का सिकदार हुआ और सं० १६७७ में मादलिया पट्टे में पाया।

(२) कांभड़ा पट्टे।

(३) भाटी गोयंददास के साथ मारा गया।

(४) इसकी संतान जेसलमेर में है।

(५) जेसलमेर में है।

(६) राव मालदेव का चाकर, राम के साथ देसोटे गया।

(७) राव जगन्नाथ का नौकर।

(८) भांगेसर की लड़ाई में राठौड़ जस्सा ने मारा।

(९) बाघावास पट्टे, सं० १६४१ में गुजरात काम आया।

(१०) सोढों की लड़ाई में काम आया।

(११) जगन्नाथ के पास ।

(१२) सोरठ में काम आया ।

(१३) जोधपुर के गढ़ पर काम आया ।

(१४) पोकरण काम आया ।

(१५) पोकरण की लड़ाई में काम आया ।

(१६) पोकरण की लड़ाई में काम आया ।

(१७) रावल रामचंद्र के साथ सबलसिंह की वाप से लड़ाई हुई, वहाँ मारा गया ।

(१८) करमसोतों की लड़ाई में मारा गया ।

(१९) पोकरण की लड़ाई में मारा गया ।

(२०) मेड़तियों के पास था, सं० १६१० में पृथ्वीराज जैतावत की लड़ाई में काम आया ।

(२१) राव गोपालदास के पास था ।

पूंगल के राव

(१) राव केलण, (२) राव चाचा, (३) राव वैरसल, (४) राव शेखा, (५) राव हरा, (६) राव वरसिंह, (७) राव जैसा, (८) राव कान्ह, (९) राव आसकर्ण, (१०) राव जगदेव, (११) राव सुदर्शन, (१२) राव गणेशदास, (१३) राव विजयसिंह, (१४) राव दलकर्ण, (१५) राव अमरसिंह

विकुंपुर के राव

वरसिंह ने कंवर पट्टे में राव गोपा से विकुंपुर लिया। राव सिंह पूंगल टीके बैठा तब उसने अपने पुत्र दुर्जनसाल को विकुंपुर दिया। (१) दुर्जनसाल, (२) डुंगरसिंह, (३) उदयसिंह, (४) सूरसिंह, (५) मोहनदास, (६) जैसिंह, इसको विहारी सूरसिंहोत ने रावल सबलसिंह से मिलकर निकलवा दिया और आप राव हुआ परंतु किशनसिंह ने उसे मार डाला। (७) राव विहारी, (८) जैतसी, (९) सुंदरदास, (१०) लाडखां, (११) हरनाथ।

वैरसलपुर के राव

यह नगर रावल वैरसल ने बसाया। (१) रावत खींवा शेखावत. (२) तेजसिंह, (३) मालदेव, (४) मंडलीक, (५) नेतसी, (६) पृथ्वीराज, (७) दयालदास, (८) कर्णसिंह, (९) भवानीदास, (१०) केसरीसिंह, (११) लखधीर, (१२) अमरसिंह, (१३) मानसिंह। मुग़ल चकत्ता भाटी कहते हैं। चकत्ता भोपत का, भोपत वालंद का, वालंद और राजा रसालू शालिवाहन के पुत्र और शालिवाहन अर्धविंब का बेटा था।

खारवारे के भाटी

[illegible] [illegible]खावत, किशना वाघावत, तेजमाल किशनावत, खंगार तेजमालोत, नाथा खंगारोत, कुंभकर्ण नाथावत, विहारी कुंभावत, जोध विहारी का और जैता जोधावत ।

जेसलमेर के रावल

रावल मूलराज, सोढा रणछोड़ गंगादासोत का दोहिता। अखैसिंह, बुधसिंह, जोरावरसिंह खावडियों के दोहिते। जगतसिंह, ईसरीसिंह, सोढों के दोहिते। जसवंतसिंह, पदमसिंह, जयसिंह, विजयसिंह, सोढों के दोहिते। जूझारसिंह, हलवद के झालों का दोहिता। अमरसिंह, रत्नसिंह, बाँकीदास, रायसिंह रूपनगर के दोहिते। सबलसिंह, विहारीदास समियाणे के बाला रायमलोत के दोहिते। दयालदास, पंचायण, ईसरीसिंह, शक्तिसिंह, राव सांतलमेर के दोहिते। खेतसी, हरराज, भवानीदास, डूंगरसी, सहसा, नारायणदास, मालदेव, लूणकर्ण, दूलाभाई, मरोठ सरवभाई, सरदारसिंह, तेजसिंह जसोल के राव के दोहिते। सूरतसिंह सोढों का और गजसिंह, हरीसिंह, इंद्रसिंह जसोल के मेहवचों के दोहिते। मूलराज से पीढ़ी तीन जगतसिंह रावल के भाई जैतसी सोढों के दोहिते। देवीदास, चाचगदे, वैरसी, रूपसी, राजधर, लक्ष्मण सं० १४६४ में लक्ष्मीनारायण का मंदिर कराया। सोमा, केलण, केहर, वलकर्ण, बीजो, तणुंराव के (वंशज) भटनेर, राजपाल कीर्तसिंह के (वंशज) भटनेर तुर्क हुए। देवराज, हमीर, सत्ता, मूलराज, रतनसी, राणा जिसके पुत्र घड़सी कान्हड़, बड़ा जैतसी कर्ण, जसहड़ के बेटे दूदा रावल। रावल तेजराव,

तिलोकसी, भीमदेव, आसकर्ण, भोज दगे से मारा गया। रावल चाचगदे, जयचंद, आसराव, पाहुण, सांगण, वांगण गाँव कोहर। कालण, शालिवाहन, राव बीजल, वांदर सं० ११३४ राजा लाया-हालूं, सू रेतरासलूणो, उछरंग मोकल सुथार हुआ, सं० १२४६ काम आये बलोचों की लड़ाई में। जेसल, विजयराव लांजा ने २५ वर्ष लुद्रवे में राज किया। विजयराव के बेटे भोजदे, राजसी जिसके पुत्र राहड़ से शाखा चली। विजयराव की बेटियाँ लांग और लाछ शक्तियाँ हुईं। रावल दुसाझ, सिंवराव, मूल पसाव, उणग, वाघराव के पाहू भाटी कहलाये, उणगराव के वंशज गाँव गुढ़े में। सिंवराव की संतान सिंघराव भाटी कहलाते, उनके गाँव खूहड़ी, फुलिया वतन[१]।

जेसलमेर के राजाओं की वंशावली (भाषांतरकार की तैयार की हुई)

नं०	टाड राजस्थान से	देहांत संवत् विक्रमी	नैणसी की ख्यात से	राज करने का समय सं० विक्रमी	प्राचीन लेखों से	विशेष विवरण
१	राजा रिक्ष					विक्रम संवत् से ५० वर्ष पूर्व (टॉड)
२	,, गज					,, ,, ३२ (,,)
३	,, शालिवाहन					सं० ७२ वि० (,,)
४	राव बालंद		राव भाटी			दूसरी शताब्दी के शुरू में (,,)
५	,, भाटी		,, बछराव			
६	,, मंगलराव	७८७	,, विजयराव			
७	,, मंक्मराव	७९०	,, मंक्मराव			
८	,, केहर	८७०	,, केहर			
९	,, तन्नू		,, तणुं			
१०	,, विजयराव	९९४	,, विजयराव			
११	रावल देवराज		रावल देवराज			
१२	,, मूंध		,, मूंध			
१३	,, बछराव	११००	,, बछ			
१४	,, दुसाझ		,, दुसाझ			

सं०	टॉड राजस्थान से	देहांत संवत् विक्रमी	नैणसी की ख्यात से	राज करने का समय सं० विक्रमी	प्राचीन लेखों से	विशेष विवरण
१५	रावल लांजा विजयराय	१२०४	रावल लांजा निर्जयराय			
१६	,, भोजदेव	१२०६	,, भोजदेव			
१७	,, जेसलदेव	१२२४	,, जेसल	१२१७ तक		पाँच वर्ष राज किया सं० १२१२ से (नैणसी)
१८	,, शालिवाहन दूसरा		,, शालिवाहन	१२२६ ,,		
१६	,, बीजलदेव	१२५७	,, बैजल			ढाई मास राज किया (नैणसी)
२०	,, काल्हण	१२७५	,, काल्हण	१२४७ ,,		
२१	,, चाचगदेव	१३०७	., चाचकदेव	१२७६ ,,		
२२	,, कर्णदेव	१३२५	,, कर्णदेव	१३०८ ,,		
२३	,, लखणसेन	१३२६	,, लखणसेन	१३२८ ,,		
२४	,, पुण्यपाल	१३३२	,, पुण्यपाल	१३२८ ,,		मास ६ राज किया, सौतेली माता से चूका, अतः गद्दी से उतारा गया। (नैणसी)
२५	,, जैतसिंह	१३५०	,, जैतसी	१३४६ ,,		चाचक के पुत्र तेजसी का बेटा, आग में जल मरा। (नैणसी)
२६	,, मूलराज	१३५१	,, मूलराज	१३५८ ,,	१४२५-२७-३६	मूलराज के बेटे देवराज का समय

२७	,, दूदा।	१३६१	,, दूदा	१३६९ ,,		
२८	,, वड़सी		,, वड़सी	१३७३ ,,		
२९	,, केहर		,, केहर	१४१० ,,		
३०	,, लखणदेव		,, लखमण	१४४१ ,,	१४५८-७३	
३१	,, वैरसी		,, वैरसी	१४६१ ,,	१४९३-९४	
३२	,, चाचकदेव दूसरा		,, चाचकदेव	१४८० ,,	१५०५	
३३	,, देवीदास		,, देवीदास	१५०५ ,,	१५३६	
३४	,, जैतसी दूसरा		,, जैतसी	१५४१ ,,	१५८३	
३५	,, करमसी		,, लूणकर्ण	१६०७		
३६	,, लूणकर्ण	१६०७	,, मालदेव	१६१७		
३७	,, मालदेव	१६१८	,, हरराज	१६३५		
३८	,, हरराज	१६४५	,, भीम	१६७२	१६७३	
३९	,, भीमसी	१६७३	,, कल्याणदास	१६९५		
४०	,, मनोहरदास		,, मनोहरदास			राज-च्युत किया गया। (नैणसी)
४१	,, रामचंद्र		,, रामचंद्र	१७०७		
४२	,, सबलसिंह	१७०७ गद्दी बैठा	,, सबलसिंह	१७१६		रावल मालदेव के पौत्र दयालदास खेतसीहोत का बेटा था।
४३	,, अमरसिंह		,, अमरसिंह			अमरसिंह का बड़ा बेटा जगतसिंह तो कटार खाकर मर गया और उसका पुत्र बुधसिंह गद्दी बैठा जिसको उसकी दादी ने

सं०	टाड राजस्थान से	देहांत संवत् विक्रमी	नैणसी की ख्यात से	राज करने का समय सं० विक्रमी	प्राचीन लेखों से	
						जहर देकर मारा; राज जसवंतसिंह के पुत्र तेजसिंह को मिला। तेजसिंह को अमरसिंह के पुत्र हरीसिंह ने घड़सीसर तालाब पर मारा और अखैसिंह को गद्दी बिठाया। (नैणसी)
४४	रावल जसवंतसिंह					
४५	,, तेजसिंह	१७७६				
४६	,, अखैसिंह	१८१८				
४७	महारावल मूलराज दूसरा	१८७७				
४८	,, गजसिंह	१९०२-३				
४९	,, रणजीतसिंह	१९२१				
५०	,, वरीसाल	१९४८				
५१	,, शालिवाहन जी (विद्यमान)					

भाषांतरकार का मत (पृ० ४४३ से ४५१ तक नैणसी का नहीं)

इन भाटियों के प्राचीन इतिहास पर भी थोड़ी दृष्टि डालें तो कहना पड़ेगा कि अन्यान्य राजस्थानों की ख्यातियों की भाँति भाटियों की ख्याति के कई पुरावृत्त सं० १४०० के पूर्व संदिग्ध ही जान पड़ते हैं। नैणसी ने तो रावल देवराज से पहले होनेवाले राजाओं के नाममात्र या कुछ वर्णन ही दिया है, परंतु कर्नल टॉड भाटियों की प्राचीन राजधानी ग़ज़नी बतलाकर मुसलमानों से परास्त होने पर उनका इधर आना कहता है। टॉड राजस्थान के अनुसार सुबाहु का पुत्र रिझ युधिष्ठिर सं० ३००८ वर्ष पहले हुआ। उसका विवाह मालवे के राजा वैरिसिंह की कन्या सुभगसेना के साथ हुआ था। वह फ़रीदशाह नामी किसी मुसलमान पादशाह के मुक़ाबले में मारा गया। रिझ का पुत्र गज था जिसने युधिष्ठिर सं० ३००८ वैशाख वदी ३ रविवार रोहिणी नक्षत्र में ग़ज़नी का नगर बसा वहाँ अपनी राजधानी स्थापित की और म्लेच्छों के मुक़ाबले में मारा गया। राजा सलभन का राज्य सारे पंजाब में सं० ७२ वि० में था। उसने दिल्ली के राजा जयपाल तंवर की कन्या से विवाह किया। सं० ७८७ में होनेवाले राव केहर का विवाह जालौर के आल्हणसी देवड़ा की बेटी के साथ हुआ. इत्यादि इत्यादि।

युधिष्ठिर संवत्, जिसे कलियुग संवत् भी कहते हैं, ३००८ वाँ वर्ष विक्रम सं० २००१ के बराबर अर्थात् विक्रम संवत् चलने के १६ वर्ष पूर्व आता है। उस वक्त वैशाख वदी ३ को न तो रविवार पड़ता और न कभी वैशाख वदी में रोहिणी नक्षत्र आता है। मुसलमानों की उस समय तो क्या वरन् उससे सात सौ वर्ष पीछे तक उत्पत्ति ही नहीं हुई थी। मालवे में उस वक्त वैरिसिंह नाम के किसी राजा का होना पाया नहीं जाता। सं० ७२ वि० में प्रथम तो

दिल्ली का वसना ही सिद्ध नहीं होता, वहाँ का राजा जयपाल तंवर विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी में राज्य पर था। जालौर के चौहानों में आल्हणसी का समय सं० १२१८ वि० होना उसके लेख से सिद्ध है। यदि यह भी मान लें कि वह आल्हणसी नहीं, किंतु अणहिल हो जो आल्हण से पाँच-छः पीढ़ी पहले हुआ था, तथापि उसका भी राव केहर का समसामयिक होना बन नहीं सकता है।

आगे कर्नल टॉड लिखता है कि भाटी पहले यादव कहलाते थे, फिर अपने पुरुषा भाटी के नाम से भाटी प्रसिद्ध हुए। राव भाटी राव बालंद का बेटा था और बालंद राव सलभन का। सलभन के १५ पुत्रों में एक राजा रसालू भी था। यदि राव सलभन को दिल्ली के राजा जयपाल तंवर का समकालीन मानें जो सुलतान सुबुक्तगीन और सुलतान महमूद ग़ज़नवी से लड़ा था तो सलभन का समय सं० १०५८ वि० के लगभग आवेगा और उसके पौत्र राव भाटी का सं० ११०० वि० के लगभग; परंतु जोधपुर राज्य के गाँव घटियाले में मिले हुए प्रतिहार राजा बाउक या कक्क के सं० ६०४ व ६१८ के लेखों से सिद्ध होता है कि कक्क से तीन पीढ़ी पहले होनेवाले राजा शीलुक प्रतिहार ने वल्लमंडल के राजा भट्टिक देवराज को जीता था (मुलतान वा उसके आस-पास का प्रदेश पहले वल्लमंडल कहलाता था और कक्क के भट्टिक वंश की राणी से छः पुत्र हुए थे।) यदि शीलुक के पीछे होनेवाले राजा झोट व भिल्लादित्य प्रतिहार का समय ४० वर्ष का मानें तो शीलुक का सं० ८७८ वि० के लगभग राज्य पर होना संभव है, अतः भट्टिक देवराज भी उसी समय (८६०-८०) के आस-पास हुआ और राव भाटी के नाम से ये भाटी कहलाये हों तो अवश्य राव भाटी देवराज के पहले हुआ था। जेसलमेर के मंदिरों में कितने एक पुराने शिलालेख हैं जो राजपूताना

और सेंट्रल इंडिया की Report of a search of Sanskrit manuscripts for the year 1904-05 and 1905-06 में छपे हैं उनमें दो-एक लेखों में विक्रम और भट्टिक संवत दोनों दिये हैं अर्थात् रावल वैरिसिंह के लेख में "श्री विक्रमार्क समयातीत सं० १४-९४ वर्षे भाटिके सं० ८१३ प्रवर्तमाने।" रावल भीमसिंह के समय के लेख में "नृपति विक्रमादित्य समयातीत सं० १६७३ रामाश्वभूपतौ वर्षे शाके १५३८ प्रवृत्तमान भट्टिक (सं०) ९९३" इन लेखों से भाटिक और विक्रम संवत् में ६८० वर्ष का अंतर आता है अर्थात् वि० सं० ६८० = भट्टिक सं० १। यदि यह सं० राव भाटी का चलाया हुआ माना जावे तो राव भाटी का सं० ६८० में विद्यमान होना सिद्ध है। इस समय से हम रावल देवराज के उपर्युक्त समय का मिलान करें तो क़रीब-क़रीब ठीक आ मिलता है, परंतु कर्नल टॉड का सं० ९६४ का समय उपर्युक्त समय से अनुमान १०० वर्ष के पीछे का है। नैणसी की ख्यात के अनुसार रावल जेसल से सबलसिंह तक ४५४ वर्ष में २३ राजा हुए अर्थात् प्रत्येक के राज्य-समय का औसत १९·७४ आता सो ठीक है परंतु राव भाटी से रावल जेसल के समय तक ५३७ वर्ष में कुल १३ राजा कहे यह विश्वास के योग्य नहीं। विक्रम की नवीं शताब्दी में अरबी भाषा में लिखी हुई पुस्तक चाचनामा में भाटिया नाम के एक नगर का वर्णन है कि सिंध देश के राजा चाच ब्राह्मण के पुत्र धरसिया ने अपनी बहन का विवाह भाटिया के राजा के साथ करने को उसे अपने भाई दाहिर के पास भेजी थी। ज्योतिषियों ने उस कन्या के नक्षत्र देखकर कहा कि इसका पति सारे सिंध का स्वामी होवेगा, अतः दाहिर ही ने उसके साथ विवाह कर लिया। तारीख़ यमीनी में सुलतान महमूद ग़ज़नवी का

भाटिया पर चढ़ाई करना लिखा है—"सुलतान मुलतान के पास सिंध नदी उतरकर शहर भाटी की तरफ़ चला, वहाँ विजयराव नाम का राजा था। गढ़ में से निकलकर वह मुसलमानों के मुक़ाबले को आया कि उन्हें अपने हाथियों, योद्धाओं और बल-प्रताप से डरा दे। तीन दिन-रात लड़ाई होती रही, चौथे दिन सुलतान ने धावा करने का हुक्म दिया। मुसलमान 'अल्लाहो अकबर' का हाँक लगा काफ़िरों पर टूट पड़े और उनकी सेना में हलचल मचा दी। सुलतान ने अपने हाथ से कई दुश्मनों को मारा और उनके हाथी छीन लिए। विजयराव चुपके से चंद साथियों सहित जंगल में भाग गया और पहाड़ों में जा छिपा। मुसलमानों ने पीछा किया तो अंत में वह कटार खाकर मर गया, आदि।" तारीख़ फ़िरिश्ता में लिखा है कि जब सुबुक्तगीन का बाप मुलतान में आकर लूट-मार करने और लौंडी ग़ुलाम पकड़कर ले जाने लगा तब लाहोर के राजा जयपाल ने भाटिया राजा से सलाह की। जान पड़ा कि हिंदू सेना उत्तर की सर्द हवा को सहन नहीं कर सकती तब भाटिया राजा के द्वारा उसने शेख़ हमीद अफ़ग़ान को नौकर रक्खा और उसे लमग़ान का हाकिम बनाकर वहाँ अफ़ग़ानी सेना नियत की। अंत में शेख़ हमीद सुबुक्तगीन से मिल गया। सुलतान महमूद के भाटिये के हमले के बयान में फ़िरिश्ता लिखता है कि राजा विजयराय मुसलमान हाकिमों को बहुत तकलीफ़ देता था और मातहत होने पर भी अनंदपाल (जयपाल का पुत्र) को ख़िराज की रक़म नहीं देता था। इन उपर्युक्त वर्णनों में भाटिया एक नगर और जाति दोनों अर्थ में प्रयुक्त हुआ है और संभव है कि भाटियों का नगर होने ही से वह भाटिया लिखा गया हो। अबूरीहान अलबेरूनी ने भाटी के नगर को मुलतान से १५ फरसंग (५४ मील के क़रीब) बतलाया

हैं। यद्यपि इस नगर के विषय में विद्वानों में मत-भेद है, कोई उसको भटनेर और कोई बेहरा बतलाते हैं, तथापि संभव है कि वह भटनेर हो जो भाटियों की पुरानी राजधानी रहा है। कर्नल टॉड लिखता है कि लुद्रवे में मुझे विजयराय का एक लेख दसवीं शताब्दी का मिला, यदि यह सन् ईसवी से अभिप्राय हो तो उस लेख का विजयराय सुलतान महमूद के समय का विजयराय हो सकता है। टॉड ने राव भाटी के पुत्र मंगलराव के समय में ग़ज़नी के ढंडी बादशाह से लाहोर घेरा जाना लिखा है और सलभनपुर चढ़ आने के समय मंगल का जंगल में भाग जाना भी कहा है। आश्चर्य नहीं कि ढंडी बादशाह से अभिप्राय सुलतान महमूद ही से हो क्योंकि घटना-काल से पीछे दंत-कथाओं के आधार पर लिखी हुई बड़वे भाटों की ख्यातों में प्रायः ऐसे फेर-फार पाये ही जाते हैं। एक ऐसी भी कल्पना की जाती है कि हिंदुस्तान में आने के पूर्व ग़ज़नी नगर भाटियों की राजधानी था तो शायद वे काबुल के हिंदू राजा हों, परंतु अलबेरूनी ने उन राजाओं को ब्राह्मण कहे और अनंदपाल जयपाल के पुरुषा बतलाये हैं। क्या भट और भाटी के भ्रम में पड़कर तो अलबेरूनी ने ऐसा नहीं लिख दिया? काबुल आदि उत्तरीय प्रदेशों में शासन करनेवाली यौद्धेय जाति के कई सिक्के मिले हैं जो बौद्धमतानुयायी थे। वही यौद्धेय जंजूया या जोइया के नाम से पुकारे जाते थे। कर्नल टॉड ने राव सलभन (शालिवाहन) के एक पुत्र का नाम जंज दिया है, जिसकी संतान जंजूया कहलाई। यह संक्षेप रीति से भाटियों की प्राचीनता का दिग्दर्शन मात्र है। इसमें कोई संदेह नहीं कि भाटी वंश बहुत प्राचीन है और उत्तरी भारत में पहले इनका प्रबल राज्य रहा फिर मुसलमानों से खदेड़े जाने के कारण ये सिंध, मुलतान से इधर रेगिस्तान में आये।

प्रसंगागत पुराणों के अनुसार यहाँ यादवों का भी थोड़ा सा हाल दिया जाता है। यादव चंद्रवंशी हैं। राजा ययाति ने दानवों के पुरोहित शुक्राचार्य की कन्या देवयानी से विवाह किया, जिसके गर्भ से यदु और तुर्वसु नाम के दो पुत्र हुए। देवयानी के साथ दानवराज की कन्या शर्मिष्ठा भी दासी होकर रही थी। ययाति के सहवास से उसके भी द्रुह्यु, अनु और पुरु तीन पुत्र हुए। पुरु को राजा ने अपना युवराज बनाया। तुर्वसु को पूर्व में, (हरिवंश पुराण में दक्षिण का देश देना लिखा है जहाँ उससे दसवीं पीढ़ी में होनेवाले चार भाइयों ने अपने-अपने नाम पर पांड्य, केरल, कोल और चोल के राज्य स्थापन किये), द्रुह्यु को पश्चिम, यदु को दक्षिण और अनु को उत्तर दिशा में देश बाँट दिये। यदु की संतान यादव कहलाये जो पहले सिंधु नदी के नीचे के प्रदेशों में बसे थे, फिर धीरे-धीरे पूर्व की ओर मथुरा, माहिष्मती और चेदि तक फैल गये। अनु से आठवीं पीढ़ी में होनेवाले उशीनर के पाँच पुत्रों में से शिवि के वंशज शैव, नृग के यौद्धेय और नैव की संतान नवराष्ट्र प्रसिद्ध हुए। पुरु के वंश में जरासंध, द्रुपद, दुर्योधन आदि राजा हुए। द्रुपद के वंशज तो पौरव नाम से ही प्रसिद्ध रहे परंतु कुरु और पाण्डु के पुत्रों के नाम से दुर्योधन व युधिष्ठिर आदि कौरव और पांडव कहलाने लगे। यादव-वंश में जगद्विख्यात श्रीकृष्णचंद्र ने जन्म लिया। उन्होंने मथुरा को छोड़ द्वारावती को राजधानी बनाया। उनके समय में यादवों का सार्वभौम राज्य हो गया था। पुरु के पौत्र दुष्यंत ने मेनका अप्सरा के गर्भ में विश्वामित्र के वीर्य से उत्पन्न हुई शकुंतला के साथ विवाह किया, जिसके भरत नामी पुत्र हुआ। कहते हैं कि वह आर्यावर्त का चक्रवर्ती राजा था और उसके नाम पर देश का नाम भारतवर्ष

प्रसिद्ध हुआ। मद में मतवाले होकर यादव प्रभासक्षेत्र में परस्पर लड़कर मर मिटे।

शौरसेनी शाखावाले मथुरा व उसके आस-पास के प्रदेशों पर राज्य करते रहे। करौली के यदुवंशी राजा शौरसेनी कहे जाते हैं। समय के फेर-फार से उनसे मथुरा छूटी और सं० १०५२ में बयाने के पास मनी पहाड़ी पर बसे। राजा विजयपाल के पुत्र तहन-पाल (त्रिभुवनपाल) ने तहनगढ़ का क़िला बनवाया। तहनपाल के पुत्र धर्मपाल और हरीपाल थे जिनका समय सं० १२२७ का है। हरीपाल ने तहनगढ़ अपने भाई से छीन लिया, परंतु धर्मपाल के पुत्र कुँवरपाल ने वह स्थान पीछा लिया। हरीपाल ने मुसलमानों की सहायता से पुनः अधिकार प्राप्त किया, सहायक सुलतान शहाबुद्दीन ग़ोरी था। परिणाम यह हुआ कि सं० ५९२ हि० (सं० ११९६ ई०, सं० १२५२ वि०) में सुलतान ने बयाने पर अधिकार कर लिया। कुँवरपाल के वंशज अर्जुनपाल ने सं० १४०५ वि० में करौली का नगर बसाकर वहाँ अपनी राजधानी स्थापित की। मालवे के सुलतान महमूद ख़िलजी ने करौली फ़तह कर वह राज्य अपने बेटे फ़िदवी ख़ाँ को दे दिया। क़रीब १५० वर्ष तक करौली के राजा इधर-उधर बसकर अपने दिन काटते रहे, फिर राजा गोपाल ने शाहंशाह अक-बर की कृपा से अपने राज्य का कुछ विभाग पाया।

द्वारका के यादवों में सुबाहु नाम का राजा हुआ जिसने अपने दूसरे पुत्र दृढ़प्रहार को दक्षिण में राजा बनाया। दृढ़प्रहार के पुत्र सेउणचंद्र ने सं० ९०० वि० के लगभग सेउणपुर नगर बसाया। पहले ये यादव दक्षिण के प्रतापी सोलंकी और राष्ट्रकूट-वंश के सामंत थे, कलचुरियों और सोलंकियों के परस्पर के झगड़ों में वि० सं० १२४४ के लगभग सोलंकियों के महाराज्य का बड़ा विभाग छीनकर

सेडणचंद्र से बीसवीं पीढ़ी में होनेवाला राजा भील्लम स्वतंत्र हो गया और देवगिरि या दौलतावाद का प्रबल राज्य स्थापित किया, जिसका नाश सुलतान अलाउद्दीन खिलजी ने सं० १३६५ वि० में कर दिया।

दक्षिण में दूसरा महाराज्य होयसल शाखा के यादवों का द्वार-समुद्र में था। सुलतान अलाउद्दीन खिलजी ने इनको भी पराजित किया था। अंत में सुलतान मुहम्मद तुग़लक़ ने विक्रम की चौदहवीं शताब्दी के अंत में उनको विजय किया, परंतु राजा बल्लाल के मंत्री देवराज ने मुसलमानों को निकाल पीछा अपना अधिकार जमाया और विजयनगर के महाराज्य का स्थापक हुआ। देवराज के वंशजों का प्रताप इतना बढ़ा कि वे शनैः शनैः दक्षिण देश के बड़े विभाग के स्वामी हो गये। बादशाह बाबर अपनी पुस्तक 'वक़ाए बाबरी' में लिखता है कि जब मैं हिंदुस्तान में आया तो यहाँ (मुसलमानों के अतिरिक्त) दो बड़े हिंदू राजा थे अर्थात् उत्तर में राणा सांगा और दक्षिण में बीजानगर (विजयनगर) के महाराजा। दक्षिण में बहमनी ख़ानदान का मुसलमानी राज्य स्थापित हुआ और फिर वही वंश पाँच राज्यों में विभक्त होकर बीजापुर, गोलकुंडा, अहमदनगर, बरार और बीदर की जुदा-जुदा सलतनतें बन गईं। सन् १५६५ ई० में इन पाँचों ने मिलकर विजयनगर के राजा रामराय पर चढ़ाई की। बूढ़ा राजा ख़ूब लड़ा परंतु अंत में मारा गया। उसकी सेना भाग निकली और वहीं उस महाराज्य के प्रताप का सूर्य अस्ताचल की ओट में चला गया। पीछे उसके वंशज कुछ अर्से तक चंद्रगिरि में रहे थे।

यादवों की जाड़ेचा शाखा के ५ बड़े राज्य काठियावाड़ व उसके परे हैं। कच्छ में सम्मा, जामनगर, धरोल, मोरवी, गोंडल और राजकोट। चूड़ासम्मा शाखा के यादव पहले जूनागढ़ गिरनार के स्वामी थे, सन् १४७० ई० (सं० १५२६ वि०) में गुजरात के सुलतान

महमूद बेगड़ा ने इस राज्य की समाप्ति की। कलचुरि भी यादवों की एक शाखा थी परंतु अब उनका भारतवर्ष में कोई राज्य नहीं है।

सरदारों की पीढ़ियाँ (नैणसी से)

भूकरके मूंगोत	अमरसिंह	**सिरंगसर की पीढ़ियाँ**
मदनसिंह	खड्गसेन	धीरतसिंह
सवाईसिंह	**अजीतपुर की**	हिम्मतसिंह
कुशलसिंह	**पीढ़ियाँ**	फ़तहसिंह
पृथ्वीराज	दलसिंह	**भनाई की पीढ़ियाँ**
खड्गसेन	शिवदानसिंह	देवसिंह
करमसेन	दीपसिंह	जगमाल
मनोहरदास	कीरतसिंह	रूपसिंह
भगवानदास	फ़तहसिंह	फ़तहसिंह
सिरंग	रामसिंह	**गाँव साखू**
बाय के सरदार	किशनसिंह	**किशनसिंहोत**
प्रेमसिंह	मनोहरदास	नवलसिंह
बहादुरसिंह	**सिधमुख की**	डूंगरसिंह
दौलतसिंह	**पीढ़ियाँ**	जगरूप
पृथ्वीराज	रघुनाथसिंह	सुजाणसिंह
जारिया के सरदार	भवानीसिंह	दुर्जनसिंह
लालसिंह	जालमसिंह	जगतसिंह
अनोपसिंह	सुरताणसिंह	किशनसिंह
संग्रामसिंह	उत्तमसिंह	महाराजा रायसिंह
भवानीसिंह	प्रतापसिंह	**बंधा की पीढ़ियाँ**
साहबसिंह	किशनसिंह	फ़तहसिंह

सवाईसिंह
अजवसिंह
अमरसिंह
रघुनाथसिंह
जगजीवनदास
किशनसिंह

करणीसर की पीढ़ियाँ

सुखसिंह
जैतसिंह
इंद्रसिंह
रघुनाथसिंह
....
....
जालमसिंह
सूरतसिंह
इंद्रसिंह
लालसिंह
पहाड़सिंह
रघुनाथसिंह
....

गाँव नींबा की पीढ़ियाँ

खेमसिंह
पेमसिंह
बाघसिंह
रामसिंह

भीमसिंह
जगतसिंह
किशनसिंह

आदले के रूपावत

सतीदान
भगवंतसिंह
पद्मसिंह
रामचंद्र
कल्याणदास
दुरंगदास
भीमराज
दयालदास
भोजराज
सादूलसिंह

गाँव ढीगसरी की पीढ़ियाँ

सवाईसिंह
बखतसिंह
फतहसिंह
कर्णसिंह
दयालसिंह
....
ऊमरसिंह
गजसिंह
रघुनाथसिंह

हररामसिंह
जैतसिंह
दयालदास

गाँव सेलू की पीढ़ियाँ

दलसिंह
चैनसिंह
भीमसिंह
नरसिंहदास
शामदास
सुंदरदास
नारायणदास
जैमल
भाणा
भोजराज
सादूलसिंह

केलणसर की पीढ़ियाँ

भगवंतदास
सावंतसिंह
उदयसिंह
जयसिंह
सुंदरदास

गाँव कुदसू की पीढ़ियाँ

हठीसिंह	नारायणदास	नारायणदास
सूरतसिंह	नरसिंह	वैरसी
केसरीसिंह	लूणकर्ण	**गाँव उडसर के**
उदयसिंह	**गाँव कतर के**	**सरदार**
जगसिंह	**सरदार**	शेरसिंह
गाँव रिड़ी की	छतरसिंह	देवीसिंह
पीढ़ियाँ	लाडखाँ	भगवंतसिंह
जैतमाल	गोरखदान	भोजराज
आनंदसिंह	रामसिंह	दुर्जनसाल
भावसिंह	**गाँव गेड़ाप के**	बलभद्रदास
संग्रामसिंह	**सरदार**	**गाँव काणासे के**
......	बहादुरसिंह	**सरदार**
गजसिंह	जोरावरसिंह	भारतसिंह
देवीसिंह	गुमानसिंह	सवाईसिंह
नरसिंहदास	गोरखदान	रघुनाथसिंह
तिहाणदेसर के	रामसिंह	भोजराज
नारणोत	**गाँव मैंदसर के**	दुर्जनसाल
सूरजमल	**सरदार**	बलभद्रदास
मोहबतसिंह	बहादुरसिंह	**गाँव केरझड़ के**
दौलतसिंह	उदयसिंह	**सरदार**
आईदान	जोरावरसिंह	सुरताणसिंह
रामसिंह	रघुनाथसिंह	आईदान
उदयसिंह	भागचंद	हठीसिंह
सांवलदास	वीरमदे	केसरीसिंह
जैमलदास	बलभद्र	हररामदास

सुंदरदास
भोपतसिंह
नारायणदास
वैरसी

कल्याणसर के सरदार

जसराज
गजसिंह
हटीसिंह

रतनसोतों की पीढ़ियाँ

अमरसिंह
वैरीसाल
शेरसिंह
शिवदानसिंह
भीमसिंह
अभयराम
प्रतापसिंह
उदयभाण
जसवंतसिंह
अर्जुन
रत्नसिंह
राव लूणकर्ण

नाथवाणे के सरदार

साधोसिंह
वखतसिंह
भावसिंह
अभयराम

कुंभाणे के सरदार

किशनसिंह
चैनसिंह
जोरावरसिंह
केसरीसिंह
अभयराम

कालवास के सरदार

भवानीसिंह
साहवसिंह
खड्गसेन
लखमीदास
उदयभाण
नाहरसिंह
सरूपसिंह

रंगाईसर के सरदार

सुखरामदास
चतुर्भुज
सावंतसिंह
उदयभाण

रावतसर के रावत

नाहरसिंह
विजयसिंह
हिम्मतसिंह
आणंदसिंह
चतरसिंह
लखधीरसिंह
राजसिंह
जगतसिंह
राघोदास
उदयसिंह
किशनदास
राजो
कांधल
राव रिणमल

धाँधूसर के सरदार

शेरसिंह
बहादुरसिंह
जोरावरसिंह
लखधीरसिंह

राणासर के सरदार

अर्जुनसिंह
इंद्रसिंह
सवाईसिंह
रघुनाथसिंह
लखधीरसिंह

गाँव पलू की पीढ़ियाँ

जसवंतसिंह	केसरीसिंह	धनराज
सूरतसिंह	अखैसिंह	मानसिंह
सामदेव	सुदर्शनसेन	गोविंददास
केसरीसिंह	साहेर के सरदार	केशोदास
जगतसिंह	रामसिंह	गोपालदास
सत्तासर के	अर्जुनसिंह	सांगा
सरदार	दुर्गदास	संसारचंद
रूपसिंह	देवीसिंह	बीदा
आणंदसिंह	जैतपुर के सरदार	राव जोधाजी
मानसिंह	पद्मसिंह	बैनाते की पीढ़ियाँ
साहबसिंह	सरूपसिंह	उदयसिंह
किशनसिंह	सूरसिंह	दुर्गदास
जगतसिंह	अर्जुनसिंह	वीरभाण
कलासर के सरदार	देवीसिंह	लखमीदास
भोपतसिंह	चंद्रसेन	गोयंददास
हिम्मतसिंह	मनहरदास	दुसारणी के सरदार
मोहकमसिंह	गोपालदास	हणूंतसिंह
सबलसिंह	उदयभाण	जैतसिंह
सुदर्शनसेन	बीदासर के	सरदारसिंह
दौलतखान	बीदावत	दीपसिंह
जसवंत	रामसिंह	किशनसिंह
उदयभाण	उमेदसिंह	अचलदास
दुणियासर के सरदार	जालमसिंह	गोयंददास
भावसिंह	केसरीसिंह	गाँव पूहड़ी के
जोरावरसिंह	कुशलसिंह	सरदार

दल्लू
नवलसिंह
गुमानसिंह
जोरवरसिंह
फतहसिंह
कुंभकर्ण
किशनसिंह
खंगार
जालपदास
सूरसेन
संसारचंद

गाँव गौरीसर के सरदार

नवलसिंह
वाघ
प्रतापसिंह
मानसिंह
किशनदास

कणदारा के सरदार

दलपतसिंह
हरनाथसिंह
दीपसिंह
बखतसिंह
फ़तहसिंह
देवीदास
लाखणसी
खंगारसी

जारासर के सरदार

बुधसिंह
खड्गसिंह
मानसिंह
किशनदास

सेलेरी के सरदार

जूझारसिंह
सावंतसिंह
श्यामसिंह
मानसिंह

गाँव लोवे के सरदार

कीरतसिंह
पृथ्वीसिंह
भवानीसिंह
बैरीसाल
बखतसिंह

गाँव हरदेसर के सरदार

परसराम
धीरतसिंह
मोहकमसिंह
मनरूप
सगतसिंह
खंगार

गाँव सांडवे के सरदार

रणजीतसिंह
जैतसिंह
भीमसिंह
धीरतसिंह
दानसिंह
मोहकमसिंह
जगमाल
मनहरदास
जसवंतसिंह
गोपालदास

गाँव पड़िहारे के सरदार

जामलसिंह
ईसरीसिंह
दानसिंह

पातलसर के सरदार

जयसिंह
माधोसिंह

दानसिंह

जादाणी के सरदार

नाहरसिंह

कन्हीराम

प्रयागदास

मोहकमसिंह

गाँव चीतखावे के सरदार

अभयसिंह

रायसिंह

प्रयागदास

गाँव काकू के सरदार

ऊमजी

हिम्मतसिंह

इंद्रभाण

मोहकमसिंह

गाँव जीसी के सरदार

पद्मसिंह

जोधसिंह

अमरसिंह

मालदेव

मनहरदास

गाँव वसू के सरदार

रायसिंह

भगवंतसिंह

अमरसिंह

मालदेव

गाँव कल्याणसर के सरदार

गोविंददास

दौलतसिंह

फतहसिंह

अखैराज

देवीदास

मनहरदास

गाँव लखमणसर के सरदार

जैसिंह

फतेसिंह

आईदान

डुंगरसी

मनहरदास

गाँव चंडावे के सरदार

पहाड़ो

कुंभो

प्रताप

जगमाल

गोहिल

अथ वार्ता गोहिल खेड़ के स्वामियों की—खेड़ में गोहिलों की बड़ी ठाकुराई थी*। वहाँ के राजा मोखरा की बेटी बूट पद्मिनी (जाति) की स्त्री थी। उसके रूप की प्रशंसा ख़ुरासान के बादशाह ने सुनी तब उसने तीन लाख सवार की सेना खेड़ पर भेजी। तुर्कों ने आकर नगर घेरा, गोहिल भी सम्मुख हुए, चार दिन तक

* खेड़ मारवाड़ राज में लूणी नदी के मोड़ पर बालोतरे से १० मील पश्चिम में है।

बराबरी का युद्ध चलता रहा, फिर जोहर करके गोहिल मैदान में आकर जंग करने लगे। तलाव बहवनसर के तट पर बहुत से गोहिल काम आये, (राजा मोखरा मारा गया), तुर्क भी बहुत खेत रहे और उनकी रही-सही सेना फिर गई। सेना आई उस वक़्त बहवन (मोखरा का पुत्र) कहीं बाहर गया हुआ था, इससे बच रहा और टीके बैठा। बूट भी बच गई, परंतु बहुत से योद्धाओं के मारे जाने से राज निर्बल पड़ गया। उस वक़्त बाहड़मेर के स्वामियों (पँवार) ने आकर गोहिलों को दबाया। गाँव नाकोड़े के पास गढ़ बनवाया और गोहिलों से धरती छीन लेने का विचार किया। तब बहवन ने मंडोवर के राव हंसपाल (पड़िहार) को कहलाया कि पँवार मुझसे पृथ्वी छीनते हैं सो या तो मेरी सहायता करो नहीं तो फिर तुमको भी ये कष्ट देंगे। पड़िहार ने उत्तर भेजा कि तुम्हारी बेटी बूट पद्मिनी है उसको हमें परणावो तो तुम्हारा साथ दें। इन्होंने देशकालानुसार अपनी स्थिति देखकर बूट का विवाह कर देना स्वीकारा। बूट ने अपने भाई को मना किया कि मेरा विवाह मत कर, परंतु उसने न माना। पड़िहार हंसपाल सैन्य लेकर खेड़ आया तब पँवारों ने खेड़ की गौएँ घेरीं, पड़िहार व गोहिल मिलकर बाहर चढ़े और नाकोड़े के पास पँवारों को जा लिया। गौएँ तो गढ़ में पहुँचा दीं तब हंसपाल ने गढ़ पर धावा किया, दर्वाज़ा टूटा और वहाँ पँवारों के ४०० व गोहिल और पड़िहारों के ३०० योद्धा खेत रहे। हंसपाल का मस्तक कट गया परंतु धड़ गौओं को लेकर खेड़ में आया, वहाँ पनिहारियों ने कहा कि "देखो! सीस के बिना धड़ चला आता है।" हंसपाल वहीं गिर पड़ा। पड़िहार विवाह करने को आये, फेरे दो फिराये गये और बूट बोली कि "अब गोहिल तुमसे छूटे (उऋण हुए)"; पड़िहारों ने उत्तर दिया कि "छूटे"। फिर

बूट ने कहा कि "(भाई!) मैंने तो तुमको पहले ही मना किया था कि विवाह मत स्वीकारो, परंतु तुमने न माना। अब गोहिलों से खेड़ और पड़िहारों से मंडोवर जावे!" ऐसा शाप देकर बूट ऊपर उड़ गई। उसके पति ने उसे पकड़ने को हाथ बढ़ाया तो उसकी साड़ी हाथ में आ गई और वह तो उड़कर अलोप हो गई।

गोहिलों से खेड़ राठौड़ों ने ली उसकी बात—गोहिल खेड़ छोड़कर एक बार कोटड़े के इलाके बरियाहेड़े में गये। वहाँ से धांधलों ने कूटकर निकाल दिया तब कुछ काल तक जेसलमेर से कोस १९ सीतबुहाई (गाँव) में कितने एक दिन रहे, परंतु वहाँ भी राठोड़ों ने पीछा न छोड़ा। जेसलमेर का रावल गोहिलों के यहाँ ब्याहा था अतएव वे रावल के पास गये और उसने उन्हें थोड़े दिन जेसलमेर में रक्खा। जहाँ ये रहे वह स्थान गढ़ के दक्षिण तरफ़ आज तक 'गोहिल टोला' कहलाता है। फिर वहाँ से वे सोरठ में गये और शत्रुंजय (जैनियों का प्रसिद्ध तीर्थस्थान) से ४ कोस सीहोर गाँव में रहे। गोहिलों के अधिपति रावल कहलाते। अच्छे रजपूत भूमिए हैं। ४०० गाँवों में उनको भूमचार का ग्रास लगता है। शत्रुंजय के स्वामी भी गोहिल ही हैं। पालीताणे का (राजा) शिवा गोहिल वहाँ जो यात्री आता है उससे कुछ लेकर फिर संघ को शत्रुंजय (गिरि) पर चढ़ने देता है। गोहिलों के चारण भाट उनको मारवाड़ का विरुद देते हैं।

ग्रास की विगत (ब्यौरा)—सोरठ देश में सीहोर नाम का एक स्थान है वहाँ घोघे के पर्गने में रावल अखैराज का ग्रास लगता, ऐसे ही लाठी परगने के ३६० गाँवों में ग्रास है। लोलियाणा और जिवाणा धोधुंके से १७ कोस है। सोरठ में देवपट्टन में सोमइया (सोमनाथ) महादेव का बड़ा ज्योतिर्लिंग था जिसको स० १३०० (१३६४ या १३६८ के लगभग) में अलाउद्दीन जाकर उठा लाया।

उस वक्त गोहिल भीम के पुत्र अर्जुन और हमीर (बादशाह की सेना से युद्ध कर) काम आये थे, उन्होंने बड़ा नाम किया; वेगड़ा नामी एक भील भी उनके साथ लड़कर मारा गया था* ।

झाला मकवाणा

हलवद नगर झालों का वतन, अहमदाबाद से ४० कोस; नवानगर और हालार से (मिली हुई) सीम नवानगर ३० कोस है ।

---

* काठियावाड़ में एक प्रांत गोहिलों के नाम पर गोहिलवाड़ कहलाता है। गोहिल अपने को चंद्रवंशी मानकर अपने मूल पुरुष शालिवाहन को सं० ७७ वि० में दक्षिणपथ में पैठण का राजा बतलाते और कहते हैं कि हम दक्षिण से खेड़धर में आये और वहाँ से सियाजी राठौड़ ने हमें निकाला इत्यादि । वास्तव में कर्नल टॉड के लेखानुसार खेड़ पर राज्य करनेवाले गोहिल पैठण के शालिवाहन के वंशज नहीं, किंतु मेवाड़ के राजा शालिवाहन के वंश के हैं । गंगाधर कवि रचित 'मंडलीक-चरित' काव्य में काठियावाड़ के गोहिलों को सूर्यवंशी कहा है (मंडलीक-चरित हस्तलिखित ६—२३) । सोरठ में राज स्थापन करनेवाला पहला गोहिल सेजकजी था जिसने अपनी कन्या गढ़ गिरनार के चूड़ासमा रा कैवाट के बेटे को ब्याह दी और रा कैवाट ने थोड़े से गाँव सेजक को जागीर में दिये । सेजक के पुत्र राणा, सारंग और शाहजी थे । राणा के वंशज भावनगरवाले, सारंग के वंशज लाठीवाले और शाहजी के वंशज पालीताणावाले हैं ।

"भावनगर शोध-संग्रह" नामी पुस्तक में छपे हुए मांगरोल की बाव के एक लेख में, जो सिंह सं० ३२ (सं० १२०२ वि०) का है, वर्णन है कि चालुक्य राजा कुमारपाल के समय में गुहिल-वंश में साहार हुआ जिसका पुत्र सहजिग (सेजक) था । यदि गोहिलों का सेजक और लेख का सहजिग एक ही हों तो सियाजी राठौड़ से बहुत पहले गोहिलों का सोरठ में होना पाया जाता है । गिरनार के यादव राजा महीपालदेव का उपनाम रा कैवाट था जो सं० १३०२ वि० से सं० १३३६ वि० तक राज पर रहा । रा कैवाट के पुत्र खंगार तीसरे ने सोमनाथ महादेव के मंदिर की मरम्मत कराई थी जिसे सुलतान अलाउद्दीन खिलजी ने उजाड़ दिया था ।

हलवद पाधार (गाँव का गोरेमा या खुली हुई भूमि) में बसा है, तालाब पर गढ़ है, चौड़ा बहुत है, भीतर हज़ार दो हज़ार मनुष्य रह सकते हैं। गढ़ में मीठे पानी का एक कुआँ है। हलवद के निकट झाड़ी थोड़ी और चौगान बहुत है। खेती ज्वार, बाजरा, तिल और कपास की होती है; ऊनाली, पीवल, माल नहीं, सेवज (सेजे से ?) अच्छा पैदा होता है। निकटवर्त्ती गाँवों में कुएँ हैं। नगर की आबादी सं० १७१६ में यह थी—ब्राह्मण १०००, वणिक ७७० मध्ये महेसरी ४००, ओसवाल ३००, राजपूत ३००, मोची १००, घाँची १०, सुनार २०, छीपा ५०। हलवद से दूरी पर के गाँव—अहमदाबाद ४० कोस, बीरमगाँव २० कोस, नवानगर ३० कोस, बाँकानेर २० कोस, वढ़वाण १५ कोस, दसाड़ा ३० कोस, मोरवी १५ कोस।

हलवद से दूसरे दर्जे का बाँकानेर है जिसका ताल्लुक़ हलवद से है, वह हलवद से २० कोस। काठियावाड़ से मिलता हुआ है। उसके साथ गाँव १२० लगते जिनमें २३ गाँव अभी बसते हैं। देवतकहीसो झाला डीलैबूढक तो मारवाड़ में हैं। जेसलमेर राज्य में खांडाल की तरफ ४ तथा ५ गाँव देवता के हैं—डोवर, सिवा सांखला के गाँव से ५ कोस सीताहर के पास, मांगणी के तलौ डवर से २ कोस, जूजल काबेरा डावर से एक कोस, लाठीहरभावर से दो कोस खाडाल में।

गुजरात देश में झालावाड़ के गाँव १८०० कहे जाते हैं। झाले मकवाणों से मिलते हैं (एक ही हैं)। मूल गाँव तो हलवद ही में हैं; इनको (झालों को) पाटड़िया कहते हैं। पाटड़ी हलवद से ६ कोस है। पहले तो इन झालों का वतन पाटड़ी था। झाला महमंद पाटण के स्वामी मूलराज सोलंकी का चाकर था। जब सीहा राठौड़ और मूलराज ने लाखा जाड़ेचे को मारा तब कहते हैं कि लाखा हाथी के हौदे में बैठा था। सो झाला महमंद ने उसके बरछी लगाई। उसकी

रीझ में मूलराज ने १८०० गाँव से झालावाड़ महमंद को दी। उस वक्त ये परगने झालावाड़ कहलाते थे—७४७ वीरमगाँव के, यह बहुत अच्छी जगह, रु० ३०००००) आज भी उपजते हैं, दाम एक करोड़ गाँव ७३७। २५२, वीरमगाँव ताल्लुक़ २१६ वीरमगाँव के साथ और ३६ मूल। दाम रु० ३८५-६६८); १६२ भूमियों के नीचे ज़ोर तलब; ११२ हलवद ४६ गाँव जुदा पर्गना हुआ उसके साथ गये थे; ६ पाटण में; ३७ मुंजपुर में; ६२ गाँव ऊजड़ चालीस पचास वर्ष से। पाटड़ी हलवद से कोस ८ (६ पहले लिखी) जहाँ घर २०० तथा २५० कोली, बोहरे, बनिये और ग्रासियों के हैं। नमक की आगर हैं, ताल्लुक़ वीरमगाँव से है, उपज रु० ७०००), ४० गाँव कोली कान्ह के अधिकार में हैं वह अमल नहीं देता, दाम रु० ३६०७६२२)। ८७ गाँव भूमियों के नीचे जो दबाव पहुँचने पर हासल देते हैं; ३६ गाँव मूली रायसल पंवार के; ८६ हासलीक (हासल देनेवाले); चूड़ा राणपुर वढ़वान के ताल्लुक़ हैं, बाचण से ३० और वीरमगाँव से कोस ३०, वहाँ आज़मखाँ ने अच्छा गढ़ बनवाया। गाँव १२३ वढ़वान ताल्लुक़ अलग दाम रु० ५५४३४८); २७ गाँव चूड़ा राणपुर में; ४५ भूमियों के अधिकार में; ४० गाँव ऊजड़; ११० हासलीक; ३६ मूली के परगने में; वीरमगाँव के ताल्लुक़ ३६; और गाँव ४ बादशाही के मुवाफ़िक़। दूसरे गाँव काठियों ने दबा लिये। पँवार रायसिंह भूमिया है—धंधूका धोलका, मोरवी, काठिआवाड़, खाचरोंवाली ठौड़, झूंझूवाड़ा। चूड़ा राणपुर में आबादी—७० बनिये, १५० (घर) भरवाड़ पटेल, १०० सिपाही। गढ़ के नीचे देराणी जिठाणी नाम की नदी सदा बहती रहती है, गढ़ में क़िलेदार मलिक बेग बादशाह की तरफ़ से रहता है, उसको दो गाँव की जागीर है। वीरमगाँव जिसके जगीर में होने से वह ५०० सवार काठियों के मुक़ाबले पर रखता है।

झालों की वंशावली—प्रथीराज का झाला सुलतान, चंद्रसेन और रायसिंह, तीनों मानसिंह के पुत्र बाँकानेर में बसे। ईडर के राव कल्याणमल की भतीजी या रा० केशोदास नारायणदासोत की कन्या का विवाह मानसिंह के साथ हुआ था। सो छड़े साथ से ईडर जाता था, यह ख़बर राणा आसकर्ण को लगी। हलवद से ७ कोस गाँव माथके में ठहरा हुआ था जहाँ १२ साथियों समेत आसकर्ण ने उसे जा मारा।

मानसिंह हलवद का स्वामी, उसका उत्तराधिकारी रायसिंह बड़ा राजपूत हुआ। उसने जसा और साहिब को मारा। बाद झाला रायसिंह मानसिंहोत और जाड़ेचा जसा हरधवलोत व साहब हमीरोत के लड़ाई हुई जिसका हाल—

जब मानसिंह झाला ने रायसिंह को निकाल दिया तब वह अपने बहनोई जाड़ेचा जसा के पास जाकर एक वर्ष तक रहा था। एक दिन जसा (जसराज) और रायसिंह चौपड़ खेल रहे थे। उस वक़्त एक व्यापारी नये नगर से भुज को जाता था। उसके साथ नगाड़ा था, उसे बजाता जाता था। मार्ग जसा के गाँव धोलहर की सीमा में होकर निकलता था, इसलिए जसा नगाड़े का शब्द सुनकर बोला कि "यह नगाड़ा कौन बजाता है ? ऐसा कौन है जो मेरे गाँव की सीमा में नगाड़ा बजाता निकले ?" पांडू (साईस) को हुक्म दिया कि घोड़ा तैयार कर ला ! और साथ (सिपाही सरबंदी) को कहता जाना कि सज-सजाकर शीघ्र आवें, मैं इससे (नगाड़ा बजानेवालेसे) लड़ाई करूँगा। झाला रायसिंह ने कहा—"मेरे ठाकुर ऐसी हलकी बात क्या करते हो ? मार्ग का गाँव है, कई इस रास्ते आवेंगे जावेंगे, तुम किस-किसके साथ लड़ाई करोगे ?" जसा ने कहा कि जो मेरी सीमा में नगाड़ा बजाता निकलेगा उससे मैं लड़ाई करूँगा। रायसिंह बोला कि लड़ाई नहीं कर सकोगे। तब जसा

ने ताना देकर कहा कि "मालूम पड़ता है कि राज (आप) मेरी सीमा में नगाड़ा बजावेंगे।" रायसिंह ने उत्तर दिया कि मैं राजपूत हूँ तो तुम्हारी सीमा में आकर नगाड़ा बजाऊँगा। जसा ने कहा कि जो नगाड़ा बजाओगे तो मैं भी लड़ाई करूँगा। यहाँ तो इतनी ही बात होकर रह गई। व्यापारी के नगाड़े की जसा ने ख़बर मँगाई तो नौकर ने आकर ख़बर दी कि व्यौपारी लोग हैं, मार्ग चल रहे हैं। यह सुनकर जसा बोला कि क्या करूँ, व्यापारी हैं जिससे जाती करता हूँ, नहीं तो मेरी सीमा में नगाड़ा बजावे और मैं लड़ाई न करूँ।

चार-पाँच मास बीते कि झाला मानसिंह काल-प्राप्त हुआ तब उसके राजपूत सर्दारों ने विचारा कि अब टीका किसको देना चाहिए, रायसिंह के भाई तो बालक हैं और रायसिंह बाहर है और जो किसी को नहीं देते हैं तो धरती रहेगी नहीं, टीके के योग्य तो रायसिंह ही है। यह सलाह कर एक धावक को बुलाया और उसे रायसिंह के पास भेजा। उसको समझाकर कहा कि तू जाकर कहना कि ठाकुर तो मर गये, धरती तुम्हारी है सो शीघ्र पधारिए। जसा और राय-सिंह साले बहनोई झरोखे में बैठे हुए थे कि जसा ने हलवद के मार्ग से धावक को आते हुए देखा और रायसिंह को कहा कि हलवद की तरफ़ से कोई क़ासिद आता हुआ दीखता है। वे तो ऐसी बातें कर ही रहे थे कि इतने में धावक आकर दरवाज़े पर उतरा, भीतर जाकर जुहार किया। तब जसा व रायसिंह ने पूछा कि तुम क्यों आये हो? रजपूत बोला कि ठाकुर मर गये और राज को राजपूतों ने बुलाया है सो जल्दी पधारो, राज की धरती है। जसा ने रायसिंह को कपड़े करा दिए, ख़र्च और घोड़ा दिया और कहा कि जल्द जाइए। जब रायसिंह सवार होते वक़्त जसा से विदा माँगने लगा तब उससे कहा कि राज ने मुझको ताना दिया था अतः जो मैं राज-

पूत हूँ तो अवश्य आपकी सीमा में नगाड़ा बजाऊँगा। जसा ने कहा कि जिस दिन तुम मेरी सीमा में नगाड़ा दिलवाओगे, मैं भी आ खड़ा होऊँगा। जब पहले ऐसी अदाबदी की बात हुई तब तो लोगों ने समझा कि ये साले बहनोई हँसी-मज़ाक़ कर रहे हैं, परंतु जब रायसिंह ने विदा होते समय बात दोहराई तो सबने जान लिया कि वह हँसी नहीं थी और इसमें अवश्य कुछ उपद्रव खड़ा होगा। रायसिंह आकर हलवद की गद्दी पर बैठा, मास चार एक के पीछे जब उसका कामकाज ठीक तरह जम गया तब उसने अपने राजपूतों से कहा कि मुझे रणछोड़जी की यात्रा करनी है, सो सब तैयार हो रहो। अपने राज में भी सब जगह सूचना देकर अच्छे राजपूत और अच्छे घोड़े जितने मिले इकट्ठे किये और दो हज़ार सवार और इतने ही पैदलों की भीड़भाड़ लेकर चला। गाँव धोलहर की सीमा में प्रवेश करते ही नगाड़ा बजवाया। जाड़ेचा जसा ने कहा "रे! ऐसा कौन है जो मेरी सीमा में नगाड़ा बजवाता है?" आदमी ख़बर को भेजा, उसने पीछा आकर कहा कि झाला रायसिंह है। जसा अपनी कटक ले सम्मुख आया। रायसिंह ने कहलाया कि इस वक़्त तुम्हारे पास मनुष्य थोड़े हैं, और मुझे भी रणछोड़जी की यात्रा करनी है सो मैं लौटता हुआ इधर से निकलूँगा तब लड़ाई करेंगे। इतने में तुम भी अपना दलबल जोड़ रखना। जसा भी इससे सहमत हुआ। जब रायसिंह श्रीठाकुरजी के दर्शन को गया तो ठाकुरजी की कमर में से कटार छिटक पड़ा और रायसिंह ने उठा लिया, कटार रु० १५००) के मोल का था, इसने रु० २०००) दे दिये। यात्रा कर पीछा फिरा, यहाँ जसा ने भी अपना साथ इकट्ठा कर लिया था, वह ७००० पैदल लेकर चढ़ा। झाला रायसिंह लौटता हुआ जाम रावल से मिलने को नयेनगर

गया। रावल भी बड़े आदर-सत्कार के साथ उससे मिला और मेहमानदारी की। बिदा करते वक्त अपने दो भले आदमी भेजकर रायसिंह को कहलाया कि तुमने और जसा ने वाद-विवाद किया है, परंतु तुम तो समझदार हो, जसा हाल जवान है, अतः जाते वक्त धोलहर से चार कोस के अंतर से निकलना। रायसिंह बोला कि अब तो यह बात तै हो चुकी और सब लोग भी जान गये हैं। उन सर्दारों ने जाम को जाकर रायसिंह का उत्तर सुनाया, तब तो जाम का भी मिज़ाज बिगड़ा, सर्दारों को कहा कि तुम जाकर राय-सिंह से कह दो कि जसा हमारा भाई है। जो तू धोलहर जावेगा तो मेरे जो चार राजपूत हैं वे भी जसा का साथ देंगे। रायसिंह ने कहलाया कि यह बात तो मैं भी जानता हूँ, परंतु क्या करूँ? पहले मुँह से वचन निकल चुके, अब जाम आप स्वयं धोलहर पधारें तो भी मैं टलने का नहीं। इतना कहकर रायसिंह धोलहर के पास आया, नगाड़ा बजाया और वहीं डेरा डाला। जसा को कहलाया—"मैं आ गया हूँ, राज तैयार रहें, अपने कल लड़ाई करेंगे।" जसा भी अपने दल सहित तैयार हो गया। दूसरे दिन रायसिंह चढ़ आया। गाँव के पास ही तालाब है, उसके पीछे के मैदान में दोनों ओर के दल आन इकट्ठे हुए, अणियाँ मिलीं और घमासान युद्ध होने लगा। उभय पक्ष के योद्धाओं ने पागड़े छोड़े और पा पियादे लड़ने लगे। दो सौ सवारों की टुकड़ी लिये जसा एक बाजू खड़ा लड़ाई का तमाशा देख रहा था, उस वक्त रायसिंह ने देखा कि मेरी सेना थोड़ी और विपक्षी बहुत हैं इसलिए कोई घात करूँ तो विजय हो। यह विचार उसने हेरू भेज जसा का पता लगाया कि वह किस अनी में है। हेरू ने आन पता दिया कि परली तरफ जो सवार खड़े हैं उनमें वह है। तब अपने साथ में से ४०० चुने हुए सवार ले रायसिंह

जसा पर टूट पड़ा। वह अत्यंत घायल होकर मरा और उसकी फ़ौज भाग निकली। दोनों ओर के बहुत से योद्धा खेत रहे परंतु खेत रायसिंह के हाथ रहा। फिर उसने गाँव पर हल्ला किया तब जसा की ठकुराणी—रायसिंह की बहन—बीच में आकर कहने लगी—"भाई तूने बहुत काम किया, अब यह गाँव तो मुझे कांचली में दे!" रायसिंह लूट करना छोड़ अपने साथियों की लाशें और घायलों को लेकर हलवद चला गया। साखी का गीत बारहट ईसर का कहा हुआ—

"पंक किसों भपै की अगन प्रकासै, लाखै किसूं संकर गज लेअ।
अपजस राजतणो वायव्रतां, लोहधार रहियो लागेअ।
अमी पचर भंगन आई उत, वंगईसन उपगरियो।
सामां तणौ सरीर सरवही, आधधारां उतरियो।
विहंगा न हुवो न चिंनो विसनरं, भवही तणौ न आयो भाग।
अंग जसराज तणै आफतां, लिख लिख गयो अंगारां लाग।"

रावल जसा को रायसिंह ने मारा जिस पर सब जाड़ेचे ठाकुर मिलकर नवानगर जाम के पास गये और कहा कि राज जाड़ेचों के ठाकर हो, झाला रायसिंह ने जसा को मारा है इसलिए आप हमारी सहायता कीजिए। तब जाम ने जाड़ेचा साहब हमीरोत को (सेना देकर) विदा किया; साथ में बीस सहस्र सवार दिये और कहा कि जाकर रायसिंह को मारो। रायसिंह ने जब यह बात सुनी तो हलवद के गढ़ को सजा, अपने राज के राजपूतों को एकत्रित किया और मरने पर कमर बाँधकर तैयार हो बैठा। जाड़ेचों का कटक हलवद से बीस कोस आन उतरा है। हलवद से ५ कोस की दूरी पर साहब की सुसराल थी सो रात्रि में ५०० सवार साथ ले साहब सुसराल गया। रायसिंह तो उसकी पग

पग की खबर मँगाता था। साहब के सुसराल के गाँव में रायसिंह के गाँव का एक डोम भी ब्याहा था। वह भी इसी अर्से में सुसराल गया था सो साहब के चढ़ आने के समाचार सुन वह रायसिंह के पास आया और आशीष दी। रायसिंह ने पूछा कि तूने भी कोई बात सुनी है? उसने कहा—और तो कुछ सुना नहीं परंतु जाड़ेचा साहब आज सुसराल आया है। रायसिंह बोला कि यह बात मानने में नहीं आती कि मेरे इतने निकट होते हुए कटक छोड़कर साहब सुसराल जावे। डोम बोला कि कहें तो उसके घोड़े के चिह्न बतलाऊँ। रायसिंह ने कहा—बतला। डोम ने सब लक्षण कह सुनाये तब तो विश्वास हुआ, तुरंत अपने साथ में से ५०० अच्छे से अच्छे घोड़े और राजपूत लेकर साहब पर चढ़ दौड़ा। वह सुसराल से विदा होकर पिछले पहर रात रहे चलने लगा। परंतु उन्होंने जाने न दिया, रोक लिया और कहा कि सिरावण तैयार होता है, आप आरोग कर पधारें। पौ फटी, साहब अमल-पाणी से निश्चिंत हो नाश्ता कर सवार होकर चला और तालाब की पाल पर पहुँचा था कि इतने में परली तरफ भालों की झलझलाहट दीख पड़ी। खबर को आदमी भेजा था कि रायसिंह तो पास आकर भिड़ गया। अणियाँ मिलीं और घोर संग्राम हुआ। दोनों ओर के योद्धा एक दूसरे से जुट पड़े। रायसिंह और साहब परस्पर लड़ने लगे, साहब को मार लिया, परंतु रायसिंह के भी साहब के हाथ से घाव पूरे लगे और वह एक खड्डे में जा गिरा। दोनों ओर के राजपूतों में से एक भी जीता न बचा, सब मर मिटे। रायसिंह को जोगी उठाकर ले गये। वह मरा नहीं था, मरहमपट्टी करने से चंगा हो गया। यह खबर जाड़ेचों की कटक में पहुँची कि साहब अपने साथियों सहित मारा गया है तब सेना भी पीछे फिर गई। साक्षी का दोहा—

"झणवे हूंता काळ, साहब जसवंत सारिषा।
झालो झंझेडे गयो, पाछे रह गई पाळ॥"

गीत साहिब हमीरोत का—

"भघणा तोय आजूणो भाजै, विढवा उठियो
वांकम वीप। साहिव एकौ लाष सरीषो,"
"साहिव एकौ कोड़ सरीप। झालै क्यूं साहिव
झालाए, मयंद उठियो निरभै मणो।"
"मुँह झालियो न जाए मल ऐ, त्रिणे
घणेही मंगल तणो। हामावत एकौ हारवसी,"
"दसअर लापदण खग दाहि, कुंजड़ कोर
मिलै जो कारी, सीहझड़फतो तसकै साहि।"
"पंग वंधव पेपै षल पोहण, षत्रो उठियो
धूणै पाग, गुरड़तणो मुहतोय न ग्रहजै,"
"नव कुल जो मिल आवै नाग। मंगल तिणै
अनमयंद मैंगलै पनगै गुरड़न सकियो पाल।"
"एकौ कलह वणै ऊठंतो, झालो साहिब नस किसो झाल।"

(भावार्थ—निर्भय बाँके यमराज के समान साहिब को झाला नहीं पकड़ सका, जैसे आग तृणों से, सिंह हाथियों से, गरुड़ नागों से नहीं रुकता। साहिव अकेला लाख करोड़ जैसा खड्ग धूणता उठा।)

(चारण) जीवा रतनू धर्मदासाणी ने (जाड़ेचा) साहब की बात ऐसे कही—

जाड़ेचा साहब पहले भुजनगर के स्वामी भारा का चाकर था। किसी कारण से रुष्ट होकर चाकरी छोड़ दी और अहमदाबाद में राणी के चाकर मूसाखाँ के पास आ रहा। वहाँ सात महीने रहकर सांतलपुर पट्टे कराया और वहाँ से लौटता हुआ हलवद से

८ कोस रायधण के गाँव मालिये के पास पाँच सौ सवार साथ लिये आ उतरा। इसके समाचार गाँव वाँसवा से वाघेले रणमल ने रायसिंह झाला को पहुँचाये। रणमल रायसिंह का संबंधी था। रायसिंह तीन हज़ार सवार पैदल साथ लेकर चढ़ा और प्रभात होते होते मालिये आ पहुँचा। साहब को इसकी सूचना रायसिंह के प्रधान भाटी गोविंददास के द्वारा पहुँची थी। सो वह भी सज-सजाकर तैयार हो तालाव में दबका हुआ खड़ा था। साहब के साथ पछा जाड़ेचा बड़ा राजपूत, और रायसिंह के साथ भी वीका ईडरिया और पठान हवीब नामी शूरवीर थे। दोनों में युद्ध छिड़ा, रायसिंह और साहब द्वंद्व युद्ध करने लगे और दोनों खेत रहे। मालिये से ७ कोस की दूरी पर गांव अंजार में राव खंगार बारह सहस्र सेना से और जाम वीभा हलवद से एक कोस पर ठहरा हुआ था उसी वक़ यह लड़ाई हुई। रायसिंह और साहब का पतन सुन राव व जाम सवार होकर आगे को चले गये। रायसिंह को जोगियों ने साठ मनुष्यों सहित उठाया (और अपने स्थान को ले आये)। पीछे से रायसिंह का पुत्र चंद्रसेन (हलवद की (गद्दी पर बैठ गया। हालों से वैर चलते वर्ष दस हुए, इन्होंने एक लाख महमूदी (चाँदी का सिक्का) और अपनी दो कन्याएँ देनी की परंतु रायधण ने न स्वीकारी। फिर एक सौ जोगियों को साथ लेकर रायसिंह हलवद के तालाव पर आकर ठहरा, राणा चंद्रसेन को ख़बर हुई कि कोई बड़ा योगीश्वर आया है तो दुपहर को सुखपाल में बैठकर दर्शन को गया। अपने दो बालक पुत्रों को भी साथ लिया। साथ में दस-बारह सवार और पाँच-सात पैदल ही थे। योगियों के चरण छूकर प्रणाम किया और बैठ गया। उन योगियों में से दस बावे उठकर चंद्रसेन के

निकट आ बैठे और पूछा (तुम जानते हो कि) यह आयस कौन है ? चंद्रसेन बोला कि कोई बड़ा सिद्ध है। जोगी ने कहा—सिद्ध नहीं, तेरा पिता है। इतना कहने के साथ ही उसको पकड़-कर क़ब्ज़े किया और साथवालों में से कितनों को तो मार गिराया और बाक़ी भाग गये। चंद्रसिंह को बाँध एक पखाल में डाला और उसके घोड़े पर रायसिंह को चढ़ाकर हलवद के गढ़ में अचानक आन घुसे। वहाँ सात राजपूत फिर मारे गये, शेष भाग छूटे। जोगियों ने रायसिंह की आण दुहाई फिरा दी। चंद्रसेन को गाँव मालणियावास जागीर में देकर विदा किया। रायसिंह के साथ ५७ जोगी आये थे। उनका जोग उतरवाकर अपने-अपने गाँव पीछे दे घरों को विदा किये, और अपने पुत्र भगवानदास और नारायणदास को अपने पास रक्खा। रायसिंह के आने के समाचार सर्वत्र फैल गये। वर्ष एक व्यतीत हुआ कि साहब के (पुत्र) भारा (आरमल) ने सवार १५००० और इतने ही पैदलों से बीस कोस पर अंजार में पड़ाव डाला। तब पंचायण के पुत्र भीम दूसरे ने साहब के पुत्रों को दस सहस्र सवार और दस सहस्र पैदल की सेना सहित रायसिंह पर भेजा। वह भी दो हज़ार सवार और दो हज़ार पैदल ले मुक़ाबले को आया। युद्ध हुआ और रायसिंह अपने ३५० राजपूतों सहित काम आया। जाड़ेचों के आदमी १४० मारे गये। राव भारा ने चंद्रसेन को पाँवों लगाकर हलवद की गद्दी पर विठाया।

मेवाड़ के झाला

खाडाल में झाला मेवाड़ दरबार के बड़े राजपूत हैं। ये बड़ी श्रेणी के उमराव हैं, इनके ऊपर कोई नहीं बैठता है। (झाला) अज्जा और सज्जा को हलवद से भाई आसियों ने निकाला तब वे मेवाड़ में महाराणा सांगा के समय में आये। राणा

राजा, अज्जा राजा का। सीकरी पीलेखाल के पास राणा सांगा की बाबर बादशाह से लड़ाई हुई। राणा सांगा हारकर भागा, तब वहाँ अज्जा काम आया। सिंह अज्जा का चित्तोड़ में मारा गया जब कि हाड़ी करमेती (महाराणा विक्रमादित्य की माता) के समय में बादशाह बहादुरशाह (गुजराती) ने चित्तोड़ फ़तह किया था।

मेवाड़ के झालों की पीढ़ियाँ आढा महेशदास ने सं० १७२२ के आषाढ़ सुदी ७ को लिख भेजी—१ राणा शेखा कल्ला का, २ राणा गीगा, ३ राणा ब्रह्मदेव, ४ राणा जालप, ५ राणा मरीच, ६ राणा वीसम, ७ राणा गोग, ८ राणा मक, ९ राणा हरपाल, १० राणा केहर, ११ राणा हरी, १२ राणा सातल, १३ राणा कान्ह, १४ राणा सूर, १५ राणा विजयपाल, १६ राणा सूंध, १७ राणा पदम, १८ राणा उधीर, १९ राणा वेगड़, २० राणा राम, २१ राणा वीरसिंह, २२ राणा भीम, २३ राणा सत्ता, २४ राणा रणवीर, २५ राणा बाव, २६ राणा राजा (राजधर)।

राजा के एक पुत्र सज्जा ने हाड़ोती का परगना लिया। वहाँ थोड़ा प्रांत छोटी झालावाड़ कहलाता है। गाँव ४० तथा ५० में झाला राजपूत बसते हैं। वे राजपूत भूमिये होकर रहते थे जिनको नवशेरीखाँ ने तोड़ डाला। झालावाड़ के मुख्य गाँव—डरमाल-कोट, सुंडल, रायपुर।

(सिंह)
(जैतसी)
माना
जैसा
भोपत[७]
शत्रुसाल
कल्याण
आसा[६]
राघोदेव
पृथ्वीराज
केसरीसिंह
राजसिंह
पृथ्वीराज
जैत
कान्ह
नाथा
जसवंत
सबला
सुरताण
माला
पूरा
कान्हा
लूणा
किसना
सांवलदास[१]
शत्रुसाल
वाघ
मेघ
केशोदास
नरहरदास
बलभद्र
करमसी
नंगा
रावत दयालदास
सुजानसिंह
सगता
श्यामदास
रावत प्रतापसिंह
नारायण
वाघ
बीदा
हाथी
देदा
वाघ
माधोदास
महेशदास
रायमल
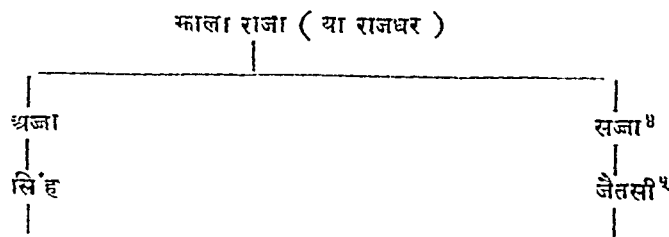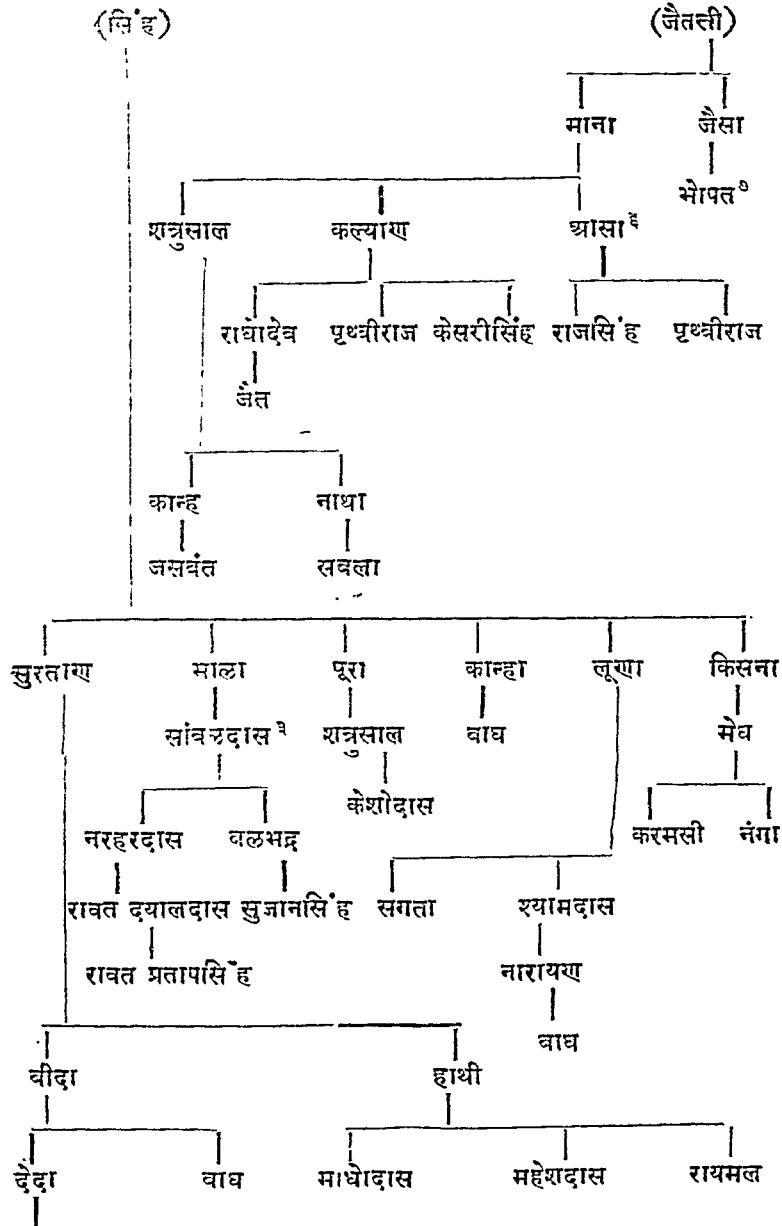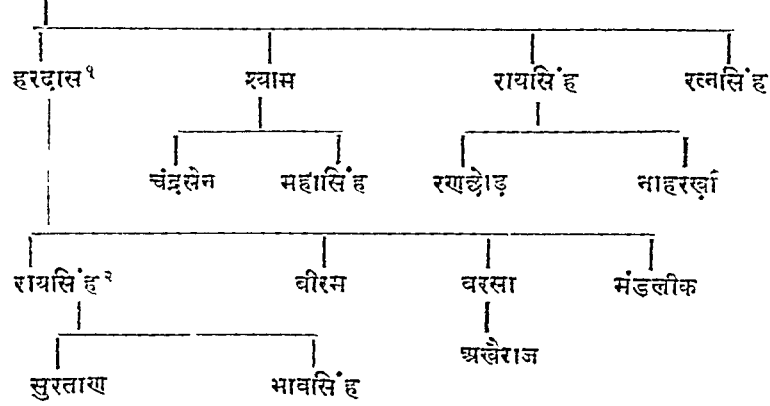
(१) बड़ा राजपूत था, राणा का प्रथम श्रेणी का उमराव, झाड़ोल पट्टे में थी। एक वार बादशाही चाकरी में भी जा रहा था। बादशाह ने मनासा जागीर मे दिया। राणा ने मनाकर पीछा बुलाया फिर सीसोदिया माधोसिंह और श्याम नंगावत ने मारा।

(२) राणा का बड़ा राजपूत, हरदास का पट्टा पाया। एक वार दस वर्ष तक बादशाही सेवा में जा रहा था जहाँ उसे कूंडोरा जागीर में दिया गया था, फिर राणा ने उसको मना लिया, अपनी मृत्यु से मरा।

(३) जोधपुर निवास, गेमलियावास गाँव १५ सहित जागीर में था।

(४) राणा सांगा सीकरी के युद्ध से भागा तब राणा के साथ था। (बहादुरशाह गुजराती ने चित्तोड़ पर चढ़ाई की तब उससे लड़कर मारा गया।)

(५) जोधपुर चाकर, खैरवा जागीर में था। राणी स्वरूपदेवी का पिता था।

(जैतसिंह के बड़े पुत्र मानसिंह को देलवाड़े की जागीर मिली और महाराणा उदयसिंह की कन्या उसको ब्याही गई। हलदीघाटी के प्रसिद्ध युद्ध में मानसिंह शत्रुदल से लड़ता हुआ मारा गया। मानसिंह का पुत्र शत्रुसाल महाराणा का भांजा था, वह किसी कारण से जोधपुर महाराज सूरसिंह के पास जा रहा। उसका भाई कल्याण अपने भाई को मनाने जोधपुर गया। शाहज़ादा ख़ुर्रम उस वक़्त मेवाड़ में महाराणा अमरसिंह से युद्ध कर रहा था। उसके सेनापति अबदुल्लाख़ाँ ने लौटते वक़्त कल्याण को कैद कर लिया। उसके वंश में देलवाड़े के सरदार हैं।)

(६) पृथ्वीराज जैतावत का दोहिता।

(७) राणा अमरसिंह की सेवा में (बादशाही सेना से) लड़कर मारा गया।

तंवर

सं० १३५० में गढ़ ग्वालेर टूटा, बादशाह अलाउद्दीन ने राजा मान 'वर से गढ़ लिया[१]।

चावड़ा

बात अणहिलवाड़ा पाटण की—वनराज चावड़ा बड़ा राजपूत हुआ। उसने एक नया नगर बसाना विचारा। जहाँ यह पाटण है, वहाँ अणहिल नाम का एक सयाना ग्वाल रहता था। उसने एक कौतुक देखा कि एक भेड़ के पीछे एक नाहर लगा, भेड़ा भागा और इस पाटण की जगह आया। वहाँ वह सिंह का मुक़ाबला करने को खड़ा हो गया। अणहिल ने यह घटना देखी और वनराज चावड़े से जाकर मिला जो स्थान ढूँढ़ता फिरता था। ग्वाल ने कहा

---

(१) ग्वालियर का तंवर राजा मान अलाउद्दीन से बहुत पीछे हुआ था। वह सं० १५४२ वि० में गद्दी बैठा, उस पर पहले तो सुलतान बहलोल लोदी ने चढ़ाई की परंतु राजा ने नज़र नज़राना देकर संधि कर ली। बहलोल के उत्तराधिकारी सिकंदरशाह लोदी के सामने राजा मान के एक दूत निहालसिंह ने कुछ ग़ुस्ताख़ी की जिससे सिकंदर ग्वालियर पर चढ़ आया परंतु हार खाकर पीछा फिरा। सं० १५६२-६३ में फिर आया, इस बार भी निराश ही गया। ग्वालियर हाथ न लगा, अंत में सं० १५६४ में बड़ी धूमधाम के साथ आगरे में ग्वालियर पर जाने की तैयारी करता था कि यमदूतों ने आ सँभाला। इसी वर्ष इब्राहीमशाह लोदी का भाई जलालखाँ राजा मान के शरण जा बैठा, इसलिए इब्राहीमशाह ने आज़म हुमायूँ की अध्यक्षता में तीस हज़ार सवार और तीन सौ हाथी का लश्कर ग्वालियर पर भेजा जिसमें सात राजा भी साथ थे। इसी अर्से में राजा मान मर गया और उसका पुत्र विक्रमादित्य गद्दी बैठा। एक वर्ष के घेरे के पीछे ग्वालियर फ़तह हुआ, राजा विक्रम दिल्ली भेजा गया, बादशाह ने ग्वालियर लेकर शमशाबाद का पर्गना उसे जागीर में दिया। इब्राहीमशाह के साथ बाबर के मुक़ाबले में पानीपत की लड़ाई में विक्रमादित्य मारा गया।

कि मैं तुमको नगर बसाने के निमित्त ऐसी भूमि बतलाऊँ कि वह किसी से जय नहीं की जा सके। परंतु इस बात का वचन दो कि उस नगर के साथ मेरा नाम भी जुड़ा रहेगा। वनराज ने वचन दिया। तब अणहिल ने गाडर का वृत्तांत उसे कह सुनाया और अब जहाँ पाटण बसता है वह स्थान वनराज को दिखलाया। उसने उसको अपनी इच्छा के अनुकूल पाया और वहीं नगर बसाकर नाम उसका अणहिलपुर रक्खा। सं० ८०१ वैशाख शुक्ला ३ को रोहिणी नक्षत्र और विजय मुहूर्त्त में पाटण के गढ़ की नींव का पत्थर रक्खा गया। पहले वहाँ गुजराती भील जाति के लोग बसते थे, उसको अलग करके आबू की तलहटी से नई प्रजा बुलाकर वहाँ बसाई।

अणहिलवाड़े पाटण में गाँव ४५८ जिनमें एक सिद्धपुर का तफा ५२ गाँव का है। आय रु० २५०००) की। पाटण पहले रु० ७०००००) वार्षिक आय का १६८२-८३ तक बड़ा स्थान रहा। पीछे सं० १६८७ में उसका भंग हुआ। कोलियों ने सब गाँव उजाड़ डाला। अब तो दो लाख रुपए भी मुश्किल से उपजते हैं। पाटण में चावड़ों का राज रहा जिसकी तफ़सील—वनराज ने राज किया ६० वर्ष ६ मास; राजादित्य तीन वर्ष; खेमराज ३८ वर्ष; गूड़राज १८ वर्ष; जोगराज १० वर्ष; वीरसिंह ११ वर्ष, चूडाव (चामुंड) २७ वर्ष; और भोयंडराव (भूवड़) ने २८ वर्ष राज किया। साखी का छप्पय—

"साठ वरस बनराज वरस दस जोगराज भण,
राजादित त्रण वरस, बरस ग्यारह सिंहसण।"
"खेमराज चालीस, वरस एक ऊण गुणजे,
चुंडराव सत बीस, वरस भोगवी भणीजे॥"
"उगणीस बरस गुडराज कहि, गुणतीस भोवंड भुव,
चामंडराज अणहलनयर, कीध वरस सौ छिनवहन॥"

"आठ छत्र चावंड, कीन्ह पाटण धर रज्जह,
वरस एक सो छिम्तु, गया भोगवैस कज्जह।"
"हुये सोलंकियां वरस सौ सतह......
हुवा पांच बाघेल, वरस भूची सौ सत्तह।।"
"पाँच सौ वरस चालीस सू, वसुह भार साँचो वह्यो,
पचवीस छत्र गूजर धरा, अणहलवाड़ो ऊगह्यो।।"

पहले पाटण चावड़ों के थी, पीछे सोलंकियों ने ली। टोडे की तरफ़ से राज बीज आये, चावड़ों ने उनको अपने यहाँ परणाये, चावड़ों के भांजे, राज के पुत्र और बीज के भतीजे (मूलराज) ने चावड़ों को मारकर पाटण लिया। (सोलंकी राजाओं के राज समय की साची का कवित्त)—

"मूलू ैतालीस वरस, दस कियो चंदगिर,
वलभ अढ़ाई वरस, साढ बारह द्रोणगिर।"
"भीम वरस चालीस, वरस चालीस करण्णह,
एक घाट पंचास, राज जैसिंह वरण्णह।।"
"कंवरपाल तीस किहुँ आगल, वरस तीन मूलराज लह,
विलसीज भीम सतरस हरस, वरस सात अगलोक चह।।"

मूलराज ४५ वर्ष, चंदगिर १० वर्ष, वल्लभराज २॥ वर्ष, द्रोणगिर १२॥ वर्ष, भीमदेव नागसुत ४० वर्ष, करण ४० वर्ष, सिद्धराज जयसिंह ४९ वर्ष, कुँवरपाल ३२ वर्ष, दूसरा मूलदेव ३ वर्ष और मूलराज के छोटे भाई भीमदेव (दूसरे) ने ६४ वर्ष राज किया।

गुजरात देश राज्य वर्णन—सं० ८५२ श्रावण सुदी २ गुरुवार को चावडा वनराज ने अणहिलपुर पाटण बसाया, वर्ष ६० राज किया, उसके पाट उसके पुत्र योगराज ने सं० ८९१ तक ९ वर्ष राज किया। फिर ३ वर्ष तक रत्नादित्य राजा रहा और सं० ८९४

में वैरीसिंह पाट बैठा जिसने वर्ष ११ राज किया। वैरीसिंह के पीछे खेमराज ने ३९ वर्ष; और चामुंड २७ वर्ष राजा रहा। चामुंड के पाट घायड़दे बैठा और ३५ वर्ष तपा, उसका उत्तराधिकारी भड़राज २९ वर्ष राज पर रहा और सं० १०१७ में चावड़ों के दोहिते मूलराज ने उनसे राज ले लिया।

सोलंकियों का राज्य-समय—मूलराज ४५ वर्ष, चंदगिर १० वर्ष, करण ३० वर्ष, सं० ११५० में सिद्धराज जयसिंह पाट बैठा और ४६ वर्ष राज किया। तीन वर्ष तक सिद्धराज की पादुका (गद्दी पर) रखकर उमरावों और कामदारों ने राज-काज चलाया; फिर उसके भाई तिहणपाल के पुत्र कुमारपाल को पाट बिठाया जिसने ३० वर्ष १ मास ७ दिन राज किया। कुमारपाल का उत्तराधिकारी उसका भाई महिपालदे ३ वर्ष २ मास १७ दिन राजा रहा; उसके पीछे उसका पुत्र अजयपाल ३ वर्ष ९ महीने गद्दी पर रहा; उसका पाट लघु मूलदेव ने लिया और ३२ वर्ष ४ मास राज किया। उसके पाट राजा भीम बैठा जिसने ३४ वर्ष ११ महीने ८ दिन राज किया; पीछे सं० १२५३ में बाघेले राजा धारधवल (वीरधवल) ने पाटण लिया और ४५ वर्ष ३ मास १ दिन राज करता रहा। वीरधवल का उत्तराधिकारी (उसका पुत्र) वीसलदेव हुआ जिसने २५ वर्ष ४ मास ३ दिन राज किया। उसके पाट गेहला करण बैठा जिसने नागरिये ब्राह्मण माधव की बेटी घर में डाल ली (आगे वही है जो पहले बाघेलों के वर्णन में लिखा गया है)[1]।

---

(१) चापवंशी राजाओं के प्राचीन लेखों के 'चाप' या 'चावोटक' शब्दों का रूपान्तर ही 'चावड़ा' प्रतीत होता है। चापवंशी राजा व्याघ्रमुख की राजधानी भीनमाल होना ब्रह्मगुप्त के स्फुट आर्य्य-सिद्धांत नामी ग्रंथ और चीनी यात्री हुएन्त्संग के सफ़रनामे से जाना जाता है। यह यात्री सातवीं शताब्दी के

गढ़ बनने और विजय होने का समय

सं० ११०० में नाहरराव पड़िहार ने मंडोर बसाया।

सं० १३०० में जालौर बसा, सं० १३... में अलाउद्दीन बादशाह आया, कान्हड़दे जी अलोप हुए, वीरमदे काम आया।

सं० १६१८ में राव मालदेवजी ने जालौर लिया, दूसरी बार सं० १६४४ में कुँवर गजसिंह ने लिया।

सं० १५१५ जेठ सुदी ११ शनिवार के दोपहर में राव जोधाजी ने जोधपुर बसाया।

सं०...... में चित्रांगद मोरी ने चित्तौड़ गढ़ बनवाया।

सं० १३१० फागुन बदी १३ को मुहम्मद बादशाह ने महमदाबाद बसाया।

सं० १०७७ में भोज पँवार के पुत्र वीरनारायण ने सिवाना बसाया।

सं० १५१५ में वीरसिंह जोधावत ने मेड़ता बसाया, सं० १६११ में राव मालदेवजी ने विजय किया।

सं० १५२५ में कुँवर बीका जोधपुर से आकर जांगलू में बसा।

अंत में भारत में आया था। वह भीनमाल के राजा को क्षत्रिय बतलाता परंतु जैनाचार्य मेरुतुंग और प्रोफ़ेसर व्हूलर ने चावड़ों का गुर्जर-वंशी होना अनुमान किया है। चापोत्कट या चावड़ा एक प्राचीन राजवंश है। फॉर्ब्स कृत रासमाला में उनकी पहली राजधानी दीवू बंदर और फिर पंचासर में होना लिखा है। सं० ७५२ के लगभग चालुक्य राजा भूवड़ ने चावड़े राजा जयशिखरी को युद्ध में पराजित कर मारा। जयशिखरी के पुत्र वनराज ने सोलंकियों का अधिकार गुजरात से उठाकर सं० ८०२ में (राय बहादुर पंडित गौरीशंकर हीराचंद ओझा सं० ८२१ बतलाते हैं) अणहिलपुर पट्टन बसाया और वह सं० ८६२ में मरा। रासमाला और जैनाचार्य्य मेरुतुंग कृत प्रबंध-चिंतामणि में दी हुई चावड़ों की वंशावली के नाम, क्रम और राज-समय में अंतर है।

सं० १६४५ में हमीर ने फलोधी का कोट बनवाया।

सं०…… में राव बीदा ने मेहवा बसाया, पहले भिरड़ में रहते थे।

सं० १६१२ में अकबर बादशाह ने आगरा बसाया।

सं० ८०२ वैशाख सुदी ३ को वनराज चावड़े ने पाटण (अण-हिलपुर) बसाया।

सं० १५१५ (१२१५ हो) में कैमास दाहिमे ने नागोर बसाया।

सं० १५९६ में रावल जाम ने नयानगर बसाया।

सं० १४५२ वैशाख सुदी ७ को देवड़े सहसमल ने सिरोही बसाई।

छत्तीस राजकुलों ने निम्नलिखित स्थानों में राज्य किया

१ कनवजगढ़ राठोर*
२ धार नगर मालवदेश पँवार
३ नाडूलगढ़ चहवाण
४ आहाड़ नगर गोहिल
५ साहिलगढ़ दहिया
६ थोहरगढ़ कावा
७ दुरंगगढ़ सिणवार पाणेचावोर
८ रोहिलगढ़ सोलंकी
९ मांडहडगढ़ खैर
१० चित्तोड़गढ़ मोरी
११ मांडलगढ़ निकुंभ
१२ आसेरगढ़ टांक
१३ खेड़ पाटण गोहिल
१४ मंडोवर पड़िहार
१५ अणहिलपुर पट्टन चावड़ा
१६ पाटड़ी झाला
१७ करनेचगढ़ बूर
१८ कलहटगढ़ कागवा
१९ भूमलियागढ़ जेठवा

* कन्नौज के राजा (जयचंद्र आदि) राठोड़ नहीं, किंतु गहरवार थे जैसा कि उनके ताम्रपत्रों व शिलालेखों से ज्ञात होता है। कन्नौज के राज्य के अंतर्गत बदायूँ ठिकाना राठोड़ों का था जहाँ से राठोड़ राजपूताने में आये—ऐसा पाया जाता है।

२० नारंगगढ़ रहवर
२१ झालणवाड़ै वारड़
२२ जायलचौड़ खीची
२३ वंसहीगढ़ खरवड़
२४ रोहितासगढ़ डोंड
२५ हिरमलगढ़ हरियड
२६ दिल्लीगढ़ तंवर
२७ कपड़वणज डाभी
२८ हथणापुर होरव
२९ संगरोपगढ़ मकवाणा
३० जूनागढ़ यादव
३१ नरवरगढ़ कछवाहा
३२ लुद्रवे भाटो
३३ कच्छदेश सम्मा
३४ सिंधदेश जाम
३५ अजमेर गौड़
३६ धातदेश सोढा
३७ लोहवेगढ़ वूया।
३८ देरावर दहिया

गढ़ फतह हुए

सं० ११२७ दिल्ली तुरकाणा हुआ, चहवाण रतनसी जोहर कर काम आया, ग़ज़नी के वादशाह शहाबुद्दीन ने दिल्ली ली[1]।

सं० १६२४ मंगलर वदी २—अकबर वादशाह ने चित्तौड़ घेरा, चैत वदी ११ को गढ़ टूटा, राठोड़ जयमल, पत्ता सीसोदिया, मालदे पँवार और दूसरे भी वहुत आदमी मारे गये।

सं० १५९२ श्रावण सुदी ११—वादशाह हुमायूँ चांपानेर आया, राव प्रतापसी चहुवाण जोहर कर काम आया।

सं० १३६१—वादशाह अलाउद्दीन की फ़ौज जेसलमेर आई, वारह वर्ष में गढ़ फ़तह हुआ, मूलराज रतनसी काम आये।

सं० १३५२ में वादशाह अलाउद्दीन ने दौलतावाद (देवगिरि) फ़तह किया, यादवराय काम आया।

सं० १३५० में ग्वालियर गढ़ टूटा, वादशाह अलाउद्दीन ने मान तंवर से गढ़ लिया[2]।

---

(१) सुलतान शहाबुद्दीन ग़ोरी ने सं० १२४८–४९ वि० में दिल्ली पृथ्वीराज चौहान से ली थी, सं० ११२७ में तो दिल्ली में तंवर राज करते थे, उनसे सं० १२०८ वि० में वीसलदेव चौहान ने दिल्ली का राज लिया था।

(२) ग्वालियर का तंवर राजा मानसिंह, कल्याणसिंह का पुत्र, सं०

सं० १३५३ में बादशाह अलाउद्दीन ने गुजरात विजय किया, करण गेहलड़ा, नागर ब्राह्मण माधव ने आगे रहकर विजय करवाया।

सं० १३५५ में राणा रत्नसेन (चित्तौड़गढ़) पर बादशाह अलाउद्दीन आया, भड़ लखमसी १२ बेटों सहित काम आया, गढ़ रक्खा, राणा को बढ़ाया (बचाया?)[1]।

सं० १३५८ में रणथंभोर का गढ़ टूटा, राव हमीरदेव चहुवाण काम आया, बादशाह अलाउद्दीन आप आया।

सं० १३६८ में बादशाह अलाउद्दीन ने जालौर लिया, चहुवाण कान्हड़दे वीरमदे सोनगरा काम आये[2]।

सं० १३६४ में बादशाह अलाउद्दीन ने सिवाने का गढ़ लिया, चहुवाण सांतल सोम काम आये।

सं० १३६५ में अलाउद्दीन ने अजमेर लिया।

सं० १३... में राव दूदा तिलोकसी ने जोहर किया, बादशाह फ़ीरोज़शाह (तुग़लक़) की फ़ौज जेसलमेर आई।

१५४२ वि० में गद्दी पर बैठा था, इसके वक्त में दिल्ली के सुलतान बहलोल, सिकंदर और इब्राहीम लोदी ने ग्वालियर पर चढ़ाइयाँ की थीं परन्तु कुछ भी सफलता न हुई। मानसिंह के मरने के पीछे उसके पुत्र विक्रमादित्य पर इब्राहीम लोदी ने फिर चढ़ाई कर ग्वालियर फ़तह किया। ग्वालियर के बदले शमसाबाद दिया गया और सं० १५८३ में विक्रमादित्य इब्राहीमशाह के पक्ष में पानीपत के मुक़ाम बाबर बादशाह की लड़ाई में मारा गया।

(१) चित्तौड़गढ़ सं० १३६० में फ़तह हुआ, महारावल रत्नसिंह युद्ध में काम आया।

(२) तवारीख़ फ़िरिश्ता के मुवाफ़िक़ राव कान्हड़देव सं० १३६९ वि० में मारा गया था।

दिल्ली पाट बैठनेवाले हिंदू राजाओं की नामावली

नं०	नाम	राजत्व-काल	
		वर्ष	मास
१	राजा युधिष्ठिर, द्वापर में राज किया	६३	
२	" परीच्छित् " "	६०	
३	" जनमेजय	८५	५
४	" अश्वमेध	८२	२॥
५	" अर्धसोम	८०	४॥
६	" वर्ततेजस		११॥
७	" आदिसथ	७८	७
८	" चित्ररथ	७२	११
९	" धृतेस्यंद	७५	११
१०	" सुविधि	६९	११
११	" सेनवर्ष	६८	५
१२	" रिष	६५	
१३	" मरु	६४	७
१४	" सिंहवल	६३	
१५	" परिपाल	६२	१०
१६	" कीर्तिवर्ष	५०	२
१७	" सत्र	५६	८
१८	" मेढारि	५२	८
१९	" बीज	५१	१
२०	" अंबुदेव	४८	१०

नं०	नाम	राजत्व-काल	
		वर्ष	मास
२१	राजा निगम	४८	९
२२	" जोधरथ	४५	११
२३	" वसुदान	४४	४
२४	" संडोव	५१	
२५	" आदित्य	५४	१०
२६	" हयनय	५१	
२७	" दंडपाल	४८	
२८	" नीति	५८	१५
२९	" देसावर नीतिकुमार के		
३०	" सूरसेन	४२	८
३१	" वीरसेन	५२	१०
३२	" अनकसिंह	४७	१०
३३	" पराक्षित	३६	९
३४	" विद्रुथ	४४	२
३५	" विजय	३२	८
३६	" आसाबुद्धि	२७	३
३७	" अनेकसाह	२२	११
३८	" शत्रुंजय	४७	
३९	" सुधन	३०	
४०	" परमपथ	४४	१०
४१	" जोधरथ	२५	४
४२	" वीरबल सेन	२१	७

नं०	नाम	राजत्व-काल	
		वर्ष	मास
४३	राजा बड़वे, वीरबल को मार के राज लिया	२७	
४४	" जैसावर	२७	
४५	" शत्रुघ्न	२७	२
४६	" अहिपथ	१५	४
४७	" महावल	४०	१
४८	" कीर्तिसंत	१७	४
४९	" चित्रसेन	२४	४
५०	" अनंगपाल	१७	१०
५१	" अनंतपाल	२८	११
५२	" वलाहक	१९	७
५३	" कलंकी	४२	१०
५४	" सेरमर्दन	८	११
५५	" जीवनजीत	२६	९
५६	" हरिवंस	१३	११
५७	" वीरधन	३५	४
५८	" ओसतव	२८	११
५९	" हंडध, ओसत को मार राज लिया	४२	७
६०	" रसखंडवीज	५५	१०
६१	" महाजोध	३०	१०
६२	" वीरनाथ	२८	५
६३	" जीवराज	४५	२
६४	" उदयसेन	३७	९

नं०	नाम	राजत्व-काल	
		वर्ष	मास
६५	राजा आनंदचंद	५२	१०
६६	" जयपाल	२६	
६७	" सुकायत जयपाल को मार राज लिया	१४	
६८	" विक्रमादित्य	५३	
६९	" समुद्रपाल विक्रम को मार राज लिया	२४	
७०	" चंद्रपाल	२६	५
७१	" नयपाल	२१	४
७२	" देशपाल	१९	१
७३	" शंभुपाल	४	११
७४	" लछपाल	२३	३
७५	" गोविंदपाल	२०	२
७६	" अमृतपाल	१६	१०
७७	" बृषपाल	२२	५
७८	" सहिपाल	१३	९
७९	" हरिपाल	१३	९
८०	" भीमपाल	११	१०
८१	" मदनपाल	१७	६
८२	" वीर्यपाल	१९	३
८३	" विक्रमपाल	१९	११
८४	" मलूकचंद विक्रम को मार राज लिया	२	
८५	" विक्रमचंद	१२	७
८६	" कामकाचंद	१	

नं०	नाम	राजत्व-काल	
		वर्ष	मास
८७	राजा रामचंद्र	१३	११
८८	" सुंदरचंद	१४	१०
८९	" कल्याणचंद	११	५
९०	" भीमचंद	१६	२
९१	" लोदचंद	२६	३
९२	" गोविंदचंद	२१	७
९३	" राणी पद्मावती	१	
९४	" हरभीम, पद्मावती को मार राज लिया	४	५
९५	" गोविंद	२०	२
९६	" गोपीचंद	१५	७
९७	" किशनचंद	६	७
९८	" विजयसेन बंगाल से आया; किशनचंद को मार राज लिया	१८	५
९९	" धनपालसेन	१२	४
१००	" केशवसेन	१५	७
१०१	" लक्ष्मणसेन	३६	१०
१०२	" माधवसेन	११	७
१०३	" सुखसेन	२०	१
१०४	" शिवसेन	५	१०
१०५	" कीर्तिसेन	४	८
१०६	" हरिसेन	१२	
१०७	" दससेन	८	११

नं०	नाम	राजत्व-काल	
		वर्ष	मास
१०८	राजा नारायणसेन	२	२
१०९	" दामोदरसेन	२१	५
११०	"माधोसेन, दामोदरको मार राज लिया	१२	२
१११	" लीलामाधो	११	५
११२	" साधवमाधो	९	
११३	" सुरचंद	१०	१०
११४	" शंकरमाधो	३	५
११५	" देसावलमाधो	३	५
११६	" दससंक्रमाधो	२	७
११७	" हरिसिंह, दससंक्रमाधो को मार राज लिया	१७	२
११८	" रिणसिंह	१४	
११९	" राजसिंह	९	१०
१२०	" बीरसिंह	४५	
१२१	" नरसिंह	१८	
१२२	" कलोलसिंह	८	४
१२३	" पीथेराव	१०	२
१२४	" अभयपाल	१४	५
१२५	" दुर्जनमल	१५	४
१२६	" उदयमल	१३	७
१२७	" विनयमल	३६	७
१२८	" सुरताण सांगो	३२	२

दिल्ली पाट बैठनेवाले मुसलमान बादशाहों की नामावली

नं०	नाम	राजत्व-काल	
		वर्ष	मास
१	कुतुबुद्दीन	४	
२	अलाउद्दीन	१	
३	शमसुद्दीन	१६	
४	रुकनुद्दीन	३	१०
५	शाहज़ादी आछी जोरू (रजिया)	४	
६	रुकनुद्दीन	६	
७	मैजुद्दीन	२	१
८	अलाउद्दीन	४	१
९	नासिरुद्दीन	१९	३
१०	ग़यासुद्दीन बलबन	२१	५
११	कुदाद (कैकुबाद)	३	१०
१२	जलालुद्दीन	७	
१३	अलाउद्दीन	२०	४
१४	कुतबुद्दीन मुबारक	३	
१५	खुसरू		६
१६	ग़यासुद्दीन तुग़लकशाह		
१७	महमुद्दीन आदिल	२७	
१८	फ़ीरोज़शाह		८
१९	तुग़लकशाह खिलचख़ाँ का		६, दिन १९

सं०	नाम	राजत्व-काल	
		वर्ष	मास
२०	अबूबकर	१	६
२१	मुहम्मदशाह	१९	६
२२	अलाउद्दीन	१	१
२३	ख़िज़रख़ाँ	...	२
२४	मुबारकशाह	१३	० दिन २६
२५	मुहम्मदशाह	१०	४
२६	अलाउद्दीन	७	३
२७	बहलोल	३८	५
२८	सिकंदर लोदी	२८	५
२९	बहराम लोदी	७	२
३०	बाबर, ३८ वर्ष फिर वर्ष २९ बलायत में, ३ वर्ष हिंदुस्तान का बादशाह रहा। कुल वर्ष ७०।	३	
३१	हुमायूँ को पठानों ने दिल्ली से निकाला।	८	५
३२	शेरशाह ने बादशाहत ली, हुमायूँ बलायत गया।	५	८
३३	शेरशाह	५	८
३४	सलीमशाह	९	
३५	मुहम्मद अदली	२	२
३६	हुमायूँ बादशाह		६
३७	जलालुद्दीन अकबर	५१	३ मास / १३ दिन
३८	नूरुद्दीन जहाँगीर	२२	६ मास / २५ दिन

सं०	नाम	राजत्व-काल	
		वर्ष	मास
३६	शाहवार (शहरयार)		२, दिन २५
४०	शाहजहाँ ने ३२ वर्ष बादशाहत की। उसके जीतेजी औरंग दखन से आया, दारा शिकोह के साथ श्रावण वदी ६ को राजसखेड़े में समूगढ़ के पास लड़ाई हुई। दारा को भगाकर शाहजहाँ को आगरे के क़िले में नज़र क़ैद किया और दिल्ली जाकर औरंग सं० १७१५ श्रावण सुदी १३ शुक्रवार ता० १ ज़िलक़ाद स० १०६८ हि० को दोपहर दिन पर घड़ी एक गये महलों में तख़्त पर बैठा। औरंगशाह आलमगीर के नाम से प्रसिद्ध हुआ[1]।		

(१) इन वंशावलियों में मुसलमान बादशाहों के कुछ नाम या समय तो ठीक हैं परंतु हिंदू राजाओं की नामावली और समय निरा कपोलकल्पित है। इन राजाओं का कुल समय जोड़ने से ३६६१ वर्ष आते हैं।

दक्षिण का मलिक अंबर

दौलताबाद के उमरा बादशाह जहाँगीर से जा मिले। पहले तो उदयराम ब्राह्मण को पंचहज़ारी मिला और पीछे जादूराय और याकूत ख़ाँ आये। मलिक अंबर ने कहा कि मेरा बेटा फ़तहशाह दौलताबाद खोवेगा। अतः मैं इसको मारूँगा। निज़ामशाह ने कहा कि यह मेरा मामूँ है, इसे मारो मत। मलिक अंबर बोला कि तेरा मामूँ परंतु मेरा तो लड़का है, अंत में मारा नहीं, क़ैद कर लिया और निज़ामशाह को कहा कि इसे दीवान कभी मत बनाना, साधारण सिपाही के तुल्य रोटी देना। मलिक अंबर के मरने पीछे निज़ामशाह ने फ़तहशाह को दीवान बनाया। समय पाकर उसने मोतीमहल में निज़ामशाह को मारा और उसके छोटे बेटे को तख़्त पर बिठाया; मकरबख़ाँ, सरफ़राज़ख़ाँ, हबसख़ाँ और दिलावरख़ाँ आदि उमरा जो क़ैद थे उन्हें छुड़ा दिया; साहजी को कुछ तो मिलाया और कुछ नमाया, वह भी एक बार मिलकर फिर अपने ठिकाने में जा बैठा। बादशाह ने फिर चढ़ाई की। मोहबतख़ाँ ने चक्रतीर्थ की तरफ़ मोरचा लगाया और १५ दिन में उसे फ़तह कर लिया, भीतर का गढ़ छठे महीने लिया। उमरा सब बीजापुर गये, शाहजहाँ भी वहीं पहुँचा। अलीवर्दीख़ाँ को भेजकर दौलताबाद के गढ़ों में से शाहजहाँ को १२ गढ़ दिये गये।

ख़ान दौरान का नाम पहले सबर था, शाहजहाँ बादशाह के आपत्काल में निकल गया था। मलिक अंबर किसी हिंदुस्तानी को गढ़ में घुसने नहीं देता था। ख़ान दौरान (वहाँ पहुँचा,) एक तुर्कानी से जा मिला और उसे कहा कि तू मुझे मलिक अंबर के हाथ बेच दे। तुरकानी ने वैसा ही किया, तब वह गढ़ में पहुँचा। वहाँ का सब भेद लिया और जब शाहजहाँ तख़्त पर बैठा तब उससे

आ मिला और सब हकीक़त अर्ज़ की। याकूतख़ाँ और मुहब्बतख़ाँ के साथ मुहिम में गया, उन्होंने जाना कि यह ख़बर पहुँचाता है। जब याकूतख़ाँ ने देखा कि गढ़ टूटने को है तो बाहर निकल गया। पाँच-छः दिन पीछे दोपहर को नगाड़ा बजाकर चढ़ा। राव दूदा (चंद्रावत) के साथ लड़ाई हुई, दूदा और याकूतख़ाँ दोनों खेत रहे। उस वक़्त पाँच-छः घड़ी दिन शेष रह गया था। खेलूजी मालूजी आये तब यहीं याकूतख़ाँ भी आया।

ख़ानेख़ाना के पीछे शेख़ फ़रीद अकबर बादशाह का दीवान हुआ। प्रयाग से जहाँगीर को बुलाकर बादशाह बनाया तब २ घड़ी के लिए दीवान रहा, फिर २ वर्ष पीछे ख़ानेख़ाना का पद पाया। टोडरमल मरते समय कह गया था सो दफ़्तर ढूँढ़वाया।

खेलूजी मालूजी कनड़ के पहाड़ में रहनेवाले कोलियों के चाकर थे। मलिक अंबर ने उनको कहा कि इन कोलियों को मारो तो यह सब ज़मीन तुमको दे दूँ। उन्होंने कोलियों को मारकर भूमि ली। पीछे याकूतख़ाँ के साथ ये भी आ मिले।

शब्दानुक्रमणिका

(क)

वैयक्तिक

(प० = पहला भाग, दू० = दूसरा भाग)

ऊ

ग

छ

न

व

भौगोलिक

आ

ग

छ

ज

थ

ध

प

य

र

ल